

ओं नमश्शिवाय

ओं नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः

श्री गुरुभ्यो नमः

हरिः ओं

शिव स्तुति

**(With Poorvanga Puja, Mahanyasam, Rudra TriSati,
EkadaSa Rudra Japam, Rudra & Chamaka Kramam,
Rudra Homam & uttaranga Puja)**

Table of Contents

1.	Introduction	12
1.1	Purpose	12
1.2	Language and Versions	12
1.3	Method of compilation	12
1.4	Acknowledgement.....	12
1.5	Important Notes	13
1.6	Rudraikaadasini Kumbha Sthapanam	14
2.	Pooja Preparations	15
2.1	Some Basics	15
2.2	Forms of Rudra Japam	15
2.3	Sadyo Jaatham	16
2.4	Star (Nakshatra) and Rasi Table:	17
2.4.1	Days of the Week:.....	19
2.4.2	Masam, Ruthu, Ayanam	19
3.	पूर्वांग पूजा.....	21
3.1	पूजा प्रारंभ:	21
3.1.1	भाग्य सूक्तं	21
3.1.2	आचम्य ,पवित्रं स्वीकृत्य.....	22
3.1.3	अनुज्ञा	23
3.1.4	अनुज्ञा (प्रदक्षिण मन्त्राः सहित)	23
3.1.5	अनुज्ञा (रुद्र एकदशिनि).....	25
3.2	विघ्नेश्वरपूजा.....	29
3.2.1	घण्ट पूजा	29
3.2.2	आचमनं सङ्कल्पं.....	29
3.2.3	आवाहनं उपचारं.....	31

3.2.4	नैवेद्यं, प्रार्थना	32
3.3	प्रार्थना पूजा प्रारंभः.....	34
3.3.1	प्रार्थना.....	34
3.3.2	आसन पूजा	35
3.4	सङ्कल्पं.....	36
3.4.1	सङ्कल्पं (1)	36
3.4.2	सङ्कल्पं (2).....	37
3.4.3	सङ्कल्पं (3).....	40
3.4.4	सङ्कल्पं (4).....	43
3.4.5	विघ्नेश्वर उद्घापनं	48
3.5	पुण्याहवाचनं.....	49
3.5.1	सङ्कल्पं	49
3.5.2	कुंभ प्रतिष्ठा मन्त्राः.....	50
3.5.3	वेदारंभे जप्याः मन्त्राः.....	54
3.6	पवमान सूक्तं.....	55
3.6.1	वास्तु मन्त्रः	58
3.6.2	वरुण उद्घापनं	58
3.6.3	प्रोक्षण मन्त्राः.....	59
3.6.4	ग्रह प्रीति.....	61
3.6.5	पूर्वाङ्ग नान्दी श्राद्धं.....	62
3.6.6	वैष्णव श्राद्धं.....	62
3.6.7	गोदानं.....	63
3.6.8	दश दानं	63
3.6.9	कृच्छ्राचरणं	64
3.6.10	ऋत्विग् वरणं.....	64

3.6.11	आचार्य वरणं	64
3.6.12	ऋत्विग् वरणं (Rutvik performing Abishekam)	64
3.6.13	आचार्यस्य ऋत्विजां च संकल्पः	65
3.6.14	कलशादिपूजा	66
3.6.15	शंखपूजा.....	67
3.6.16	आत्मपूजा.....	68
3.6.17	पीठपूजा.....	69
3.6.18	नन्दिकेश्वर अनुज्ञा.....	69
3.7	पञ्चकलश स्थापनं.....	70
3.7.1	पश्चिमं.....	70
3.7.2	उत्तरं.....	70
3.7.3	दक्षिणं	70
3.7.4	पूर्व	71
3.7.5	मध्यमं.....	71
3.7.6	उपचारपूजा.....	71
4.	महान्यासः.....	74
4.1	कलश प्रतिष्ठापन मन्त्राः.....	74
4.2	महान्यास मन्त्रपाठ प्रारंभः.....	78
5.	प्रथमः न्यासः.....	79
6.	द्वितीय न्यासः	85
7.	तृतीयन्यासः.....	86
7.1	हंस गायत्री.....	87
7.2	दिक् संपुटन्यासः.....	88
7.3	षोडशांग रौद्रीकरणं.....	93

8.	चतुर्थः न्यासः.....	96
8.1	मनो ज्योतिः.....	96
8.2	आत्मरक्षा.....	97
9.	पञ्चमः न्यासः.....	99
9.1	शिव संकल्पः.....	99
9.2	पुरुष सूक्तं.....	105
9.3	उत्तर नारायणं.....	107
9.4	अप्रतिरथं.....	108
9.5	प्रति पूरुषद्वयं.....	110
9.6	शत रुद्रीयं.....	113
9.7	पञ्चांग जपः.....	115
9.8	अष्टाङ्ग प्रणामः.....	115
9.9	ध्यानं.....	117
10.	षष्ठः न्यासः (लघु न्यासः).....	119
11.	रुद्र जपं (Methods).....	122
11.1	First Method.....	122
11.2	Second Method.....	123
11.3	कुंभ एक कलश (प्रधान कलश) स्थापनं.....	124
11.4	एकादश कलश स्थापनं.....	124
11.5	Sthana Peeta.....	125
11.6	श्री शक्ति पञ्चाक्षरी महामन्त्रः.....	125
12.	रुद्र विदानं.....	128
12.1	कलशेषु ध्यानं.....	128
12.2	आवाहन मन्त्राः.....	130

12.2.1	For Eka kalasam / Ekadasa kalasam.....	130
12.2.2	महागणपति आवाहनं.....	131
12.2.3	सुब्रह्मण्य आवाहनं.....	131
12.2.4	दुर्गा देवी आवाहनं.....	132
12.2.5	महाविष्णु आवाहनं.....	132
12.2.6	महालक्ष्मी आवाहनं.....	132
12.2.7	महासरस्वती आवाहनं	133
12.2.8	सद्गुरु आवाहनं.....	133
12.2.9	अन्नपूर्णि आवाहनं	134
12.2.10	शास्ता आवाहनं	134
12.2.11	अनन्त (सर्प राजा) आवाहनं.....	135
12.2.12	सूर्यनारायण आवाहनं.....	135
12.2.13	नक्षत्र देवता आवाहनं.....	136
12.2.14	नन्दिकेश्वर आवाहनं	136
12.2.15	आयुर्देवता आवाहनं	137
12.2.16	श्री राम आवाहनं.....	137
12.2.17	श्रीकृष्ण आवाहनं	137
12.2.18	आञ्चनेय आवाहनं.....	138
12.3	प्राण प्रतिष्ठा	138
12.4	उपचारं	141
12.5	त्रिशति.....	146
12.6	प्रदक्षिणं.....	164
12.7	नमस्कारः.....	166
12.8	चमक प्रार्थना	169
12.9	अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो	181

12.10	श्री रुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं.....	182
12.11	गणानां त्वा.....	184
12.12	शं च मे	184
12.13	श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः.....	186
12.14	श्री रुद्रं.....	187
13.	Details of “Dravya sampradaayam” in Rudraikaadasini	200
14.	एकादश जपं.....	202
14.1	प्रथम वार – अभिषेकं गन्धतैलं.....	202
14.1.1	चमक अनुवाकः.....	202
14.1.2	उपचार मन्त्राः	203
14.1.3	आशीर्वादं.....	205
14.2	द्वितीयवार अभिषेकं – पञ्चगव्यं	206
14.2.1	द्वितीयः अनुवाकः	206
14.2.2	उपचार मन्त्राः	207
14.2.3	आशीर्वादं.....	208
14.3	तृतीयवार अभिषेकं – पञ्चामृतं	209
14.3.1	तृतीयः अनुवाकः.....	209
14.3.2	उपचार मन्त्राः	210
14.3.3	आशीर्वादं.....	211
14.4	तुरीय (चतुर्थ) वार अभिषेकं – घृतं.....	212
14.4.1	चतुर्थः अनुवाकः.....	212
14.4.2	उपचार मन्त्राः	213
14.4.3	आशीर्वादं.....	214
14.5	पञ्चमवार अभिषेकं – क्षीरं	215
14.5.1	पञ्चमः अनुवाकः	215

14.5.2	उपचार मन्त्राः	216
14.5.3	आशीर्वादं.....	217
14.6	षष्ठमवार अभिषेकं – दधि	218
14.6.1	षष्ठः अनुवाकः	218
14.6.2	उपचार मन्त्राः	219
14.6.3	आशीर्वादं.....	220
14.7	सप्तमवार अभिषेकं – मधु.....	221
14.7.1	सप्तमः अनुवाकः.....	221
14.7.2	उपचार मन्त्राः	222
14.7.3	आशीर्वादं.....	223
14.8	अष्टमवार अभिषेकं – इक्षुरसं.....	224
14.8.1	अष्टमः अनुवाकः.....	224
14.8.2	उपचार मन्त्राः	225
14.8.3	आशीर्वादं.....	226
14.9	नवमवार अभिषेकं–निंबतोय रसं.....	227
14.9.1	नवमः अनुवाकः.....	227
14.9.2	उपचार मन्त्राः	228
14.9.3	आशीर्वादं.....	229
14.10	दशमवार अभिषेकं – नाळिकेरजं.....	230
14.10.1	दशमः अनुवाकः.....	230
14.10.2	उपचार मन्त्राः	231
14.10.3	आशीर्वादं.....	233
14.11	एकादशवार अभिषेकं – गन्धतोयं	233
14.11.1	एकादशः अनुवाकः.....	233
14.11.2	उपचार मन्त्राः	235

14.11.3	आशीर्वादं.....	236
15.	गणपति ध्यानं	238
16.	श्री रुद्र क्रमः	239
16.1	श्री रुद्रक्रमः प्रथमः अनुवाकः.....	239
16.2	श्री रुद्रक्रमः-द्वितीयः अनुवाकः.....	246
16.3	श्री रुद्रक्रमः-तृतीयः अनुवाकः.....	249
16.4	श्री रुद्रक्रमः - चतुर्थः अनुवाकः	253
16.5	श्री रुद्रक्रमः पञ्चमः अनुवाकः.....	256
16.6	श्री रुद्रक्रमः षष्ठः अनुवाकः.....	259
16.7	श्री रुद्रक्रमः - सप्तमः अनुवाकः.....	262
16.8	श्री रुद्रक्रमः - अष्टमः अनुवाकः.....	264
16.9	श्रीरुद्रक्रमः - नवमः अनुवाकः.....	267
16.10	श्रीरुद्रक्रमः- दशमः अनुवाकः	270
16.11	श्री रुद्रक्रमः - एकादशः अनुवाकः.....	278
16.12	त्र्यंबकं यैजामहे	281
17.	श्री चमक क्रमः.....	283
17.1	श्री चमक क्रमः - प्रथमः अनुवाकः.....	283
17.2	श्री चमक क्रमः - द्वितीयः अनुवाकः.....	287
17.3	श्री चमक क्रम :- तृतीयः अनुवाकः	290
17.4	श्री चमक क्रमः- चतुर्थः अनुवाकः.....	294
17.5	श्री चमक क्रमः- पञ्चमः अनुवाकः	297
17.6	श्री चमकः क्रमः - षष्ठः अनुवाकः	300
17.7	श्री चमक क्रमः - सप्तमः अनुवाकः	304
17.8	श्री चमक क्रमः - अष्टमः अनुवाकः	307
17.9	श्री चमक क्रमः - नवमः अनुवाकः	309

17.10	श्री चमक क्रमः – दशमः अनुवाकः.....	311
17.11	श्री चमक क्रमः – एकादशः अनुवाकः.....	314
17.12	इडा देवहूः.....	319
18.	एकोनसप्तत्यधिक शतसंख्याक होमं.....	320
18.1	चमक होमः	335
19.	उत्तराङ्ग पूजा	336
19.1	कलश उद्घापनं	336
19.1.1	रुद्र एकदाशिनि / महा रुद्रं.....	338
19.1.2	धूपं	339
19.1.3	दीपं.....	339
19.1.4	नैवेद्यं.....	339
19.1.5	तांबूलं.....	340
19.1.6	पञ्चमुख दीपं.....	341
19.1.7	कर्पूरनीराजनं.....	341
19.1.8	मन्त्र पुष्पं	342
19.1.9	चतुर्वेद पारायणं.....	343
19.1.10	आपस्तम्ब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः.....	344
19.2	कुंभ /कलश उद्घापनं.....	344
19.2.1	कलश उद्घापन मन्त्राः	344
19.3	अभिषेकं.....	347
19.4	अलङ्कारं, अर्चना, पूजा.....	348
19.4.1	बिल्वाष्टकं.....	348
19.4.2	धूपं	349
19.4.3	दीपं.....	350

19.4.4	नैवेद्यं.....	350
19.4.5	तांबूलं.....	351
19.4.6	पञ्चमुख दीपं.....	351
19.4.7	कर्पूरनीराजनं.....	352
19.4.8	मन्त्र पुष्पं	353
19.4.9	प्रदक्षिण नमस्कार :	356
19.4.10	उपचारं.....	358
19.4.11	चतुर्वेद पारायणं.....	359
19.4.12	आपस्तम्ब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः.....	359
19.5	नन्दिकेश्वर पूजा	360
19.6	क्षमा प्रार्थना.....	361
20.	स्वस्ति वचनं.....	363
20.1	प्राशनं प्रसाद विनियोगं , दक्षिण स्वीकरणं	365
20.1.1	शंखतीर्थ प्रोक्षणं	365
20.1.2	अभिषेक- तीर्थप्राशनं	365
20.1.3	पञ्चगव्य प्राशनं.....	366
20.1.4	प्रसाद विनियोगं (to yajamaanan).....	366
20.1.5	दक्षिण स्वीकरणं.....	367
21.	Appendix	368
21.1	शिवाष्टोत्तर-शत-नामावलिः.....	368

1. Introduction

1.1 Purpose

This book has been compiled, as our sincere and modest effort, to help Veda students and learners to conduct Pradosha Pooja, Rudraa-abhishekam Rudra Ekadasini and Maharudram. This book has been compiled based on the actual experience and practices in poojas/functions. Our heartfelt and sincere thanks to various people, who have contributed to the compilation of this book.

The main purpose of this book is to act as a reference guide and we have tried to provide the subjects in the order in which functions are generally performed. In spite of the same, differences in the order of chanting or additional chanting are followed. Please note that this book is **not Exhaustive**.

1.2 Language and Versions

This book has been prepared in Tamil, Malayalam and Sanskrit versions, with all comments and Notes in English.

1.3 Method of compilation

The main source of various Sukthams and Mahanyaasam has been from the books published in Taittiriya Sakhaa compiled and commented by Shri. Sayanacharya of 13th Century and Shri Bhatta Bhaskaracharya (period unknown). Their manuscript compilations were later converted into books by great Scholars. One of such sets of “Taittiriya” was printed and published during earlier 1900 A.D. at Govt. Branch Press, Mysore and another set later published under “Anandaashram Series”. These Books were referred to by us as our primary source material for this Book.

In addition, we have also referred to standard and reputed publications and internet sites. **(Please seek the guidance of your Guru)**

1.4 Acknowledgement

Our sincere thanks to all well-wishers for proof-reading, typing and guiding in completion of all the three Versions of this book. In spite of rigorous/careful proof-reading, some mistakes might have crept in. We sincerely request the users of the books to send their feedback on corrections to **vedavms@gmail.com**. It is our endeavour to make this book error-free / accurate.

1.5 Important Notes

1. This book is **not meant for any Self Learning** exercise. Veda Mantras and related rituals are to be learnt from respective Gurus to gain experience on the subject over a period of time through practice and observations.
2. This book is meant **only for “Private Circulation”**.
3. It is more appropriate to chant Mantras that sing praise of Lord Parameshwara (or other Deities/Devataas that are worshipped) during the Upachara Puja (Deeparaadhanai) as a part of Ekadasa Japam. Over a period of time, many Vedic Pandits/Scholars have added mantras that seek Abhishtas (wishes) from Deities/Devataas and many of them are in vogue today. We have included 10 sets of upachara mantras in that section which are normally chanted as a practice. Experienced Acharayas may chant different set of Mantras which are not given here.
4. Krama Paatam (Sections 15,16 and 17) has been given in a two-column table for convenience of the reader, representing two teams which render Kramam. One team starts rendering their Paatam after the other team just completes their Paatam. Please note that when a padam is split, there is separator that is given as ‘-’. As per convention please give a pause, when a separator is there.
The rendering needs to be extended/elongated for the **last part of the word/padam**, when it is a Dheerga Swaritam or Anudatta Swaram **and** the letter is a Dheerga letter (e.g. aa, ee, O,) **or** a Anuswaram (letters ending as tam, sam, sham etc. with a dot in Sanskrit). This is indicated through a “>” (arrow pointing to the right). Kindly note there are slight differences in the Font size/format of Sanskrit, Malayalam and Tamil texts. The Method of elongation varies between few schools in actual practice. Please refer to your Guru for further clarifications on rendering. This book follows the convention of Sayanacharya’s Krama Paatam.

<p>Version Note: Version 3.1 dated 31st October 2018 has incorporated corrections found and reported till 31st October 2018. Source Mantra reference has been added wherever required.</p>

1.6 Rudraikaadasini Kumbha Sthapanam

East

10 BHAVOTBHAVAM	1 MAHADEVAM	2 SHIVAM
9 DEVADEVAM	11 ADITYATMAKA RUDRAM	3 RUDRAM
8 BHIMAM		4 SHANKARAM
7 VIJAYAM	6 EESHAANAM	5 NEELA LOHITAM

West

2. Pooja Preparations

2.1 Some Basics

The Word "Rudra" means" the one who drives away all sins which are the root cause of sorrow/sufferings.

The form of Lord Shiva is worshipped in Eleven Rudra forms (Ganams);

They are :-

1. Mahadevam 2. Shivam 3. Rudram 4. Shankaram,
5. Neelalohitam 6. Eeshaanam 7. Vijayam 8. Bheemam,
9. Devadevam 10. Bhavotbhavam and 11. Adityaathmaka Rudram.

In Poojas, each Ganam is represented through a Kumbha/Kalasham. Please see the picture in the preceding page for the position of the Kumbha/Kalashams for Rudra Ekadasani.

In Maharudram and Athirudram, 11 such Ganams are formed, each with the repective name of the rudra shown above in 1 to 11 numbers.

The forms of Rudra worship include Japa, Homa, Arachana, Abhishekam with Prathakshinam /Namaskaaram.

Normally, the homam is performed on the strength/count of total rudrams, and normally the homa count is of 10 percent of the Japam.

2.2 Forms of Rudra Japam

There are **five forms (sampradaaya)** to chant Shree Rudra japa.

The 1st form- We recite the full Shree Rudram (all 11 anuvaakams) and then full Chamakam (all 11 anuvaakams) once. This is called "NAMAKAM". This is for nithya paaraayanam.

2nd Form

Shree Rudram chanted fully Once (all 11 anuvaakams) + 1st Anuvaakam of Chamakam only, and Shree Rudram full for 2nd round + 2nd Anuvaakam of Chamakam only, Shree Rudram full for 3rd round + 3rd Anuvaakam of Chamakam and so on.

If one person chants in this order full Shree Rudram 11 times and each corresponding Chamaka anuvaakam then this is called “Rudram”.

(Total count is 1 person x 11 Rudrams + 1 full Chamakam = 11 Shree Rudrams + 1 Chamakam

3rd Form Rudra Ekadasani - 11 times of chants as per Form number 2 is Rudraikaadasini . 11 Ritviks required.

Total count = 11 persons x 11 shree Rudrams =121 Rudrams

11 persons x 1 Chamakam = 11 Chamakam

4th Form Maharudram-This is equivalent to 11 “Rudraikaadasini”. 121 persons required

Total count = 121 persons x 11 Shree Rudrams =1331 Rudrams

121 persons x 1 Chamakam= 121 Chamakam

Eleven Ganams are arranged/formed with 11 Kalashams each representing the 11 individual Ganas. In each of the Ganas, 11 Rutviks recite 11 Rudram and One Chamakam. The Number of Rutviks is 121. Homam shall be performed by 12 additional Rutvik by repeating Rudra Homam 11 times and Chamaka Homam once, taking the count of Homam to 132 Rudrams and 12 Chamakams. This is normally performed in a single day over a time span of 7/8 hours.

5th Form Athirudram: This is equivalent to 11 Maharudrams.

121 Rutviks chant 121 times Shree Rudram and 11 times Chamakam over 11 days or 5/6 days (as per the event planned).

Total count = 121 persons x 121 Shree Rudrams =14641 Shree Rudrams.

121 persons x 11 Chamakam=1331 Chamakams.

The Homam shall be performed by 12 Rutviks

2.3 Sadyo Jaatham

There are two practices, either to install additional Pancha Kalashams(5) or a single(Eka) Sadyo Jaatha Kalasham.

In case of (Eka) Sadyo Jaatha Kalasham, it is normally kept near the Abhisheka-Sthanam. The aavaahanam is done separately for this Kalasham during Kumbha/Kalasha aavaahanam. Abhishekam to the deity shall be performed first with this Kalasha jalam after

Ekadasa japam/all dravya abhishekam. Therefore, the udvaapanam shall be performed separately to this Kalasham after Ekadasa Japam. “Namo Brahmane....” shall be chanted three times during the Udvaapanam.

When Pancha Kalashams (Paschimam-Sadyo Jaatham, Uttharam, Dakshinam, Poorvam and Madhyamam) are installed, then Sadyo Jaatham will be Paschima Kalasham. The first abhisekham shall be performed from these Pancha Kalashams after Ekadasa japam/all dravya abhishekam.

In case of Rudra Ekadasani, the main Kumbham/Kalasha Jala Abhishekam to the Deities is performed after the Rudra Kramaarchana, Homa and the final udvaapanam of the Kalashams. In case of Rudraekadasani, conducted as a part of Shastyapthapoorthi or Sadaabhisekham, main Kumbha/Kalasha jala abhishekam is performed to the Yajamaana Dampathi.

2.4 Star (Nakshatra) and Rasi Table:

Serial No	Star Name in Tamil / Malayalam	Star Padam	Star Name in Sanskrit	Rasi
1	Ashvathi	1,2,3,4	Ashwini	Mesha
2	Bharani	1,2,3,4	Apa-Bharani	Mesha
3	Karthikai/Karthika	1	Krittikaa	Mesha
4	Karthikai/Karthika	2,3,4	Krittikaa	Vrushabha
5	Rohini	1,2,3,4	Rohini	Vrushabha
6	Mrugasheersham/Makeeryam	1,2	Mrugashirsha	Vrushabha
7	Mrugasheersham/Makeeryam	3,4	Mrugashirsha	Mithuna
8	Thiruvathirai/Thiruvathira	1,2,3,4	Aardraa	Mithuna
9	Punarpoosam	1,2,3	Punarvasu	Mithuna
10	Punarpoosam	4	Punarvasu	Kataka
11	Poosam	1,2,3,4	Pushya	Kataka
12	Aailyam	1,2,3,4	Aashleshaa	Kataka
13	Magham	1,2,3,4	Magha	Simha

शिव स्तुति

14	Pooram	1,2,3,4	Poorva Phalgune	Simha
15	Utthiram	1	Utthara Phalgune	Simha
16	Utthiram	2,3,4	Utthara Phalgune	Kanya
17	Hastham	1,2,3,4	Hastha	Kanya
18	Chitthirai/Chitra	1,2	Chitra	Kanya
19	Chitthirai/Chitra	3,4	Chitra	Thula
20	Swathi	1,2,3,4	Swathi	Thula
21	Vishakam/Vishaka	1,2,3	Vishaka	Thula
22	Vishakam/Vishaka	4	Vishaka	Vrishchika
23	Anusham	1,2,3,4	Anuradha	Vrishchika
24	Kettai/Trikketta	1,2,3,4	Jyeshtha	Vrishchika
25	Moolam	1,2,3,4	Moola	Dhanur
26	Pooradam	1,2,3,4	Poorvashada	Dhanur
27	Utharadam/Uthiradam	1	Uthirashada	Dhanur
28	Utharadam/Uthiradam	2,3,4	Uthirashada	Makara
29	Thiruvonam	1,2,3,4	Sravana	Makara
30	Avittam	1,2	Shravishta	Makara
31`	Avittam	3,4	Shravishta	Kumbha
32	Chathayam	1,2,3,4	Shatabhishak	Kumbha
33	Poorattathi	1,2,3	Poorva Proshtapada	Kumbha
34	Poorattathi	4	Poorva Proshtapada	Meena
35	Uthirattathi	1,2,3,4	Uthira Proshtapada	Meena
36	Revathi	1,2,3,4	Revathee	Meena

2.4.1 Days of the Week:

Sunday	- Bhanu Vasaram
Monday	- Indu or Soma Vasaram
Tuesday	- Bowma Vasaram
Wednesday	- Sowmya Vasaram
Thursday	- Guru Vasaram
Friday	- Brigu (Shukra) Vasaram
Saturday	- Sthira (Mandha) Vasaram

2.4.2 Masam, Ruthu, Ayanam

The start of the Hindu month may vary from 13/14th day of the English Calendar Month to the 18th day of the Calendar month. So kindly refer to the Calendar published in Tamil or Malayalam for the current month.

Middle of the English Month	Masam name in Tamil / Malayalam	Masam	Ruthu	Ayanam
Apr - May	Chithirai/ Medam	Mesha	Vasanta	Uttarayana
May – June	Vaikasi/ Edavam	Vrushabha	Vasanta	Uttarayana
June – July	Aani/Mithunam	Mithuna	Greeshma	Uttarayana
July – August	Adi / Karkatakam	Kataka	Greeshma	Dakshinayana
August – Sept.	Aavani/ Chingam	Simha	Varsha	Dakshinayana
Sept. – October	Purattaasi/ Kanni	Kanya	Varsha	Dakshinayana
Oct. - November	Aippasi/ Thulam	Tula	Sarath	Dakshinayana
Nov - December	Karthikai/ Vruschikam	Vrischika	Sarath	Dakshinayana
Dec. – Januaray	Margazhi/	Dhanur	Hemanta	Dakshinayana

शिव स्तुति

	Dhanu			
Jan. - February	Thai/Makara	Makara	Hemanta	Uttarayana
Feb - March	Maasi/Kumbha	Kumbha	Shishira	Uttarayana
March - April	Panguni/ Meenam	Meena	Shishira	Uttarayana

3. पूर्वांग पूजा

3.1 पूजा प्रारंभः

3.1.1 भाग्य सूक्तं

(TB 2.9.8.7)

प्रा॒तर॒ग्निं प्रा॒तरिन्द्र॑ ह॒वाम॑हे प्रा॒त॒र्मि॒त्रा व॑रुणा प्रा॒तर॒श्विना॑ ॥

प्रा॒त॒र्भ॒गं पू॒षणं॑ ब्र॒ह्म॒णस्प॑तिं प्रा॒त॒स्सोम॑मु॒त रु॒द्रं हु॒वेम॑ ॥ 1

प्रा॒त॒र्जि॒तं भ॑गमु॒ग्रं हु॒वेम॑ व॒यं पु॒त्रम॑दि॒तेर्यो वि॑ध॒र्ता ।

आ॒ध्रश्चि॒द्यं म॑न्यमा॒न-स्तु॑रश्चि॒द्राजा॑ चि॒द्यं भ॑गं भ॒क्षीत्या॑ह ॥ 2

भ॒गप्र॑णे॒तर्भ॑ग-स॒त्यरा॑धो भ॒गेमां धि॑यमु॒द-व॑द॒दन्नः॑ ।

भ॒गप्र॑णो॒ जन॑य गो॒भि-र॒श्वैर् भ॑गप्र॒नृभिर् नृ॑वन्त-स्स्याम ॥ 3

उ॒तेदा॑नीं भ॒गव॑न्त-स्स्यामो॒त प्र॑पि॒त्व उ॒त म॑द्ध्ये अ॒ह्नां ॥

उ॒तोदि॑ता म॒घव॑न्थ्-सूर्य॑स्य व॒यं दे॒वानां॑ सु॒मतौ स्या॑म ॥ 4

भ॒ग ए॒व भ॑गवा॒ अस्तु॑ दे॒वास्ते॑न व॒यं भ॑गवन्त-स्स्याम ।

तं त्वा॑ भ॒ग स॒र्व इ॒ज्जो॑हवीमि॒ सनो॑ भ॒ग पु॒र ए॒ता भ॑वे॒ह ॥ 5

स॒म॒ध्वरा॑-योष॒सो ऽन॑मन्त दधि॒क्रावे॑व शु॒चये॑ प॒दाय॑ ।

अ॒र्वा॒ची॒नं व॑सु॒विदं॑ भ॒गन्नो॑ रथमि॒वाश्वा॑ वा॒जिन॑ आव॒हन्तु॑ ॥ 6

अ॒श्वा॒वती॒र् गो॒मती॒र्न उ॒षा॒सो वी॒रवती॑-स्स॒दमु॒च्छन्तु॑ भ॒द्राः ।
घृ॒तं दु॒हा॒ना वि॒श्वतः॑ प्र॒पी॒ना यू॒यं पा॒त स्व॒स्ति-भि॒स्सदा॑नः ॥ 7

यो मा॑ग्ने भा॒गि॒नं स॒न्तम॑था भा॒गं चि॒कीर्ष॑ति ।
अ॒भा॒ग-म॒ग्ने तं कुरु॑ मा॒मग्ने॑ भा॒गि॒नं कुरु॑ ॥ 8

भा॒ग्य दे॒वता॑यै नमः ॥

3.1.2 आचम्य ,पवित्रं स्वीकृत्य

आ॒गम॑ना॒र्थं तु दे॒वा॒नां ग॑म॒ना॒र्थं तु र॒क्ष॒सां ।

दे॒वता॑ पू॒जा॒र्थाय॑ घ॒ण्ठना॑दं करोम्यहं ॥ (इति घण्ठनादं कृत्वा)

ऋ॒द्ध्या॒स्म ह॒व्यै न॑म॒सोप॑-सद्य । मि॒त्रं दे॒वं मि॒त्र॒धेय॑न्नो अस्तु ।

अ॒नू॒रा॒धान् ह॒विषा॑ वर्धयन्तः । श॒तं जी॒वेम॑ श॒रद॑स्स॒वीराः॑ ॥

(पवित्रं धृत्वा)

नम॑स्स॒द॒से नम॑स्स॒द॒स॒स्प॒तये॑ नमः॒ सखी॑नां पु॒रो॒गा॒णां चक्षु॑षे नमो॑

दि॒वे नमः॑ पृ॒थि॒व्यै ॥ (TS 3.2.4.4)

ह॒रिः ओं । स॒र्वेभ्यो॑ ब्रा॒ह्म॒णेभ्यो॑ नमः ।

(अक्षतान् विकीर्य)

3.1.3 अनुज्ञा

अशेषे हे परिषत् भवत् पादमूले मया समर्पितां इमां सौवर्णीं
यत्किञ्चत् दक्षिणां यथोक्त दक्षिणामिव स्वीकृत्य ।

इदं सांबपरमेश्वर पूजा कर्मकर्तुं योग्यता सिद्धिं अनुग्रहाण ।

(ब्राह्मण प्रति वचनं – "योग्यता सिद्धिरस्तु")

3.1.4 अनुज्ञा (प्रदक्षिण मन्त्राः सहित)

ध्रु॒वं ते॒ राजा॑ वरु॒णो ध्रु॒वं दे॒वो बृ॒हस्प॑तिः ।

ध्रु॒वं त इन्द्र॑-श्चा॒ग्निश्च॑ रा॒ष्ट्रं धा॑रयतां ध्रु॒वं ॥ 1 (RV.10.173.5)

पर्व॑त इ॒वा वि॑शाचलिः । इन्द्र॑ इवे॒ह ध्रु॒वस्तिष्ठ॑ । इ॒ह रा॒ष्ट्र मु॒धा॒रय॑ ।

अ॒भितिष्ठ॑ प॒ृतन्य॑तः । अ॒धरे॑ स॒न्तु श॒त्रवः॑ । इन्द्र॑ इ॒व वृ॒त्रहा॑ तिष्ठ । 2
(TB 2.4.2.9)

दे॒वीं वा॑च-म॒जन॑यन्त दे॒वाः । तां वि॒श्वरू॑पाः प॒शवो॑ वदन्ति ।

सा॒नो म॒न्द्रेष॑ मूर्जं॑ दु॒हाना॑ । धे॒नुर्वा॒गस्मा॑-नु॒पसु॑ष्टतैतु ॥ 3

(TB 2.4.6.10)

आरं॑भ काल मुहूर्तः सुमुहूर्तोस्त्विति भवन्तोनुहन्तू ।

(प्रतिवचनं – "सुमुहूर्तोस्तु, सुप्रतिष्ठितमस्तु ")

ये अ॒र्वा॒ङु॒तवा॑ पु॒रा॒णे वे॒दं वि॒द्वाँ॑ स॒म॒भि॒तो व॒द॒न्त्यादि॒त्य मे॒वते॑
 परि॒वद॑न्ति॒ सर्वे॑ अ॒ग्निं द्वि॒तीयं॑ तृ॒तीयं॑ च ह॒ँ॒समि॒ति याव॑तीर्वै
 दे॒वता॒स्ता स्स॒र्वा वे॒द वि॒दि ब्रा॒ह्म॒णे व॑सन्ति॒ तस्मा॑त् ब्रा॒ह्म॒णेभ्यो॑
 वे॒दवि॒द्भ्यो दि॒वे दि॒वे नम॑स्कुर्या॒न्ना इ॒ली॒लङ्की॑र्तये दे॒ता ए॒व दे॒वताः॑

प्रीणाति ॥ 4 (TA 2.15.1)

नमो॑ मह॒द्भ्यो नमो॑ अ॒र्भके॒भ्यो नमो॑ यु॒वद्भ्यो नम॑ आ॒शिने॒भ्यः ।
 य॒जाम॑ दे॒वान् यदी॑श॒क्नवा॑ म॒मा ज्या॑यसः॒ शं स॒मावृ॑क्षि दे॒वाः ॥ 5
 RV 1.27.13

स॒द॒स॒स्पति॑ म॒द्भु॒तं प्रि॒य-मि॒न्द्रस्य॑ का॒म्यं । स॒निं मे॒धाम॑या॒सिषं॑ ॥ 6
 TA.6.1.4

स॒प्र॒थ स॒भां मे॑ गो॒पाय॑ । ये च स॒भ्या स्स॒भास॑दः ।
 ता॒निन्द्रि॒याव॑तः कुरु । स॒र्वमा॒यु-रु॒पास॑तां ।
 अ॒हे बु॒ध्निय॑ म॒न्त्रं मे॑ गो॒पाय॑ । यमृ॑षयस्त्रै-वि॒दा वि॒दुः ।
 ऋच॑ स्सामा॒नि यजू॑ँषि । सा हि श्री॒रमृ॑ता स॒तां । 7 (TB 1.2.1.26)

अ॒ग्निस्तु॑ वि॒श्रव॑स्तमं तु॒वि ब्र॒ह्माण॑मु॒त्तमं॑ ।
 अ॒तूर्तं॑ श्राव॒यत् प॑तिं पु॒त्रं द॑दाति दा॒शुषे॑ ॥ 8 (RV.5.25.5)

नमः सभाभ्य सभापतिभ्यश्च वो नमः ॥ 9

अशेषे हे परिषत् भवत् पादमूले मया समर्पितां इमां सौवर्णीं
यत्किञ्चित् दक्षिणां यथोक्त दक्षिणामिव स्वीकृत्य । इदं सांबपरमेश्वर
पूजा कर्मकर्तुं योग्यता सिद्धिं अनुग्रहाण ।

(ब्राह्मण प्रति वचनं – "योग्यता सिद्धिरस्तु")

3.1.5 अनुज्ञा (रुद्र एकदशिनि)

(This Anujgya is ideally used for Rudra Ekadasini. However, appropriate changes can be made in the Sankhya (counts) for Japam/Homam in case of Maharudram)

आचम्य । शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं प्रसन्न वदनं ध्यायेत्
सर्व विघ्नोपशान्तये । ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर
प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते, आद्य ब्रह्मणः, द्वितीय परार्द्धे, श्वेतवराह
कल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, अष्टाविंशति तमे कलियुगे, प्रथमे पादे,
जंबूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, मेरोः दक्षिणे पार्श्वे, शकाब्दे, अस्मिन्
वर्तमाने, व्यवहारिके प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
..... नामसंवत्सरेअयने ऋतौ
..... मासेपक्षे(शुभतिथौ).....
वासरयुक्तायां नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण
एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यांशुभतिथौ

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं अनादि
अविद्यावासनया प्रवर्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे विचित्राभिः
कर्मगतिभिः विचित्रासु पशु पक्षी मृगादि योनिषु पुनः पुनः अनेकदा
जनित्वा , केनापि पुण्यकर्म विशेषेण इदानीं तन मानुष्ये द्विजन्मविशेषं
प्राप्तवतःनक्षत्रे राशौ जातस्य
.....शर्मणः मम सकुटुम्बस्य, जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति
एतत् क्षण पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे यौवने वार्धके च जाग्रत्
स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु , मनोवाक्काय कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय व्यापारैः,
कामक्रोध-लोभ-मोह-मदमात्सर्यैः, त्वक्चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राण
वाक्पाणि पादपायु उपस्थाख्यैः दशभिः इन्द्रियैः, मनोबुधि-चित्त-
अहङ्काराख्यैः अन्तरिन्द्रियेश्च कृतानां, इहजन्मनि जन्म-जन्मान्तरेषु वा
ज्ञानतः अज्ञानतो वा रहसि प्रकाशेषु वा संभावितानां पञ्च
महापातकानां उपपातकानां, ज्ञानतः सकृत्कृतानां, अज्ञानतः
असत्कृतानां, ज्ञानतः, अज्ञानतश्च अभ्यस्तानां, निरन्तर अभ्यस्तानां,
चिरकाल अभ्यस्तानां, निरन्तर चिरकाल अभ्यस्तानां, एवं नवानां
नवविधानां , बहूनां बहुविधानां, सर्वेषां पापानां, मद्ध्ये संभावितानां
सर्वेषां पापानां, सद्यः अपनोदनार्थं आदित्यात्मकरुद्र प्रसाद
सिद्ध्यर्थं, महादेवादि एकादश अभिन्नरूप आदित्यात्मकरुद्र प्रसादेन,

अस्माकं सर्वेषां आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैवीक, नवनव
जनित तापत्रय निवृत्त्यर्थं एभिः ब्राह्मणैस्सह, महार्णवोक्त
प्रकारेण, आचार्यमुखेन ऋत्विङ्मुखेन च , ऋग्यजु-स्सामाथ-
र्वणाख्येषु चतुर्षु वेदेषु मध्ये, एकाधिक शतसंख्याक यजुःशाखासु,
आदिभूत संहिताशाखा अन्तर्भूत अग्निकाण्ड अन्तर्गतानां , सर्वेषु
वेदेषु, सर्वासु उपनिषद्सु, स्मृतीतिहास पुराणादिषु, सर्वपाप
निवर्तकत्वेन, दिव्यज्ञान प्रदत्वेन, मोक्ष प्रदत्वेन च, तत्रतत्र उद्धृष्टानां
"चरमेष्टकायां जुहोति" इति चरमेष्टक उपयुक्तानां,
"शतरुद्रान् जपेद्यस्तु द्यायमानो महेश्वरं" इति शैव पुराण वचनेन,
"यः शतरुद्रीयं अधीते , स अग्निपूतो इति कैवल्योपनिषद् वचनेन,
"अथ हैनं ब्रह्मचारिणः ऊचुः । किं जप्येन अमृतत्वं नो भवति ।
सहो वाच याज्ञवल्क्यः शतरुद्रियेणेति ।
एतानि ह वा अमृतस्य नामधेयानि । एतैर्ह वा अमृतो भवति ।"
इति जाबालोपनिषत् वचनेन,
"रुद्राणां जपहोम अर्चना अभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः" इत्यादि
श्रुतिस्मृति पुराणवचनैः पूजाजप होमादि कर्मसु उपयुक्तानां एकादश
अनुवाक आत्मकानां तत्र "नमस्ते रुद्रमन्यवे इति" प्रथमानुवाके
दुष्टसंहारार्थं सङ्क्रुद्ध रुद्रकोप आयुधादिभ्यः अभय प्रार्थना

प्रकाशकानां पञ्चदश-संख्याकानां षोडशोपचार उपयुक्तानां,
"नमो हिरण्यबाहवे इत्यादि" अष्टानुवाकेषु वैश्वरूप्यध्यान एकतो-
नमस्कार उभयतो-नमस्कार रूपाणां एकोनत्रिंशत् उत्तरशत
संख्याकानां त्रिशत्यर्चना उपयुक्तानां,
"द्रापे अन्धसस्पते" इति दशमानुवाके जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति
अवस्तासु जलपात विषभूत शत्रुमृत्यु ज्वरादि स्फोटकादि नानारोगेभ्यः
नानादभिचारेभ्यः अभयप्रार्थना प्रकाशकानां द्वादश संख्याकानां,
प्रदक्षिण उपयुक्तानां "सहस्राणि सहस्रशः" इति एकदशानुवाके
सर्व्वव्यापक रुद्र विभूति प्रकाशकानां साऽनुषंगानां त्रयोदश
संख्याकानां नमस्कार उपयुक्तानां, अभीप्सितार्थं याचानासूचक
चमकानुवाक संयुक्तानां, मूर्त्यष्टक मूर्तपञ्चक मूर्तित्रय अधिष्ठान
पञ्चकृत्य विधान पठीयस्य, शिवया शूलिन्या अधोराख्याया तनुवा
सर्वो-पादानुतया सर्वात्मकतया सर्व्ववेद-बोधित सर्व्वात्मक शर्व्वरीश
शकलधर परमशिवाख्य सदाशिव-ब्रह्ममञ्च पर्यकायमाण
पञ्चाक्षराख्य महामन्त्ररत्न मुख्यकोशानां शतरुद्रीयाणां त्रेधाविभागद्वय
षोढा विभाग षोडशधा-विभाग अष्टा-चत्वारिंशधा विभाग
एकोनसप्तति अधिक शतधा विभागानां, षण्णां विभागानां मध्ये,
एकोन सप्तति अधिक शतधा विभागपक्षं आश्रित्य शतांश दशांश

संपूर्ण-होमानां मध्ये दशांश होमविधानेन द्वात्रिंशदुत्तरशत संख्याक
नमक चमक जपात्मक तद् दशांश परिमित द्विचत्वारिंशत् उत्तर
द्विसहस्र संख्याक नमक चमक आहुत्यात्मकं अन्ते वसोर्धारा सहितं
प्राच्यांग उदीच्यांग गोदान नान्दीश्राध वैष्णवश्राध दशदान सहितं
कर्मानुष्ठान योग्यता संपातक पूतत्व सिद्धिकर प्राजापत्य कृच्छ्र
प्रत्याम्नाय भूत हिरण्यदान पूर्वकं सकल पापनिवर्तकं सर्वाभीष्ट
प्रदायकं रुद्रैकादशिन्याख्य महाप्रायश्चित्त कर्मकर्तुं योग्यतासिधिः
अस्त्विति अनुग्रहाणा ॥

(योग्यता सिद्धिरस्तु – इति ब्राह्मण प्रतिवचनं)

3.2 विघ्नेश्वरपूजा

3.2.1 घण्ट पूजा

घण्टदेवताभ्यो नमः । गन्धपुष्पं समर्पयामि ।
आगमनार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसां ।
देवता पूजानार्थाय घण्टनादं करोम्यहं ॥
(इति घण्टनादं कृत्वा)

3.2.2 आचमनं सङ्कल्पं

आचमनं + शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं ।

प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोप शान्तये ।

ओं भूः, ओं भुवः, ओम् सुवः, ओं महः, ओं जनः, ओं तपः,

ओम् सत्यं । ओं तत्सवितुर्वरेण्यं । भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् । ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म

भूर्भुवस्सुवरो ।

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं, शुभे शोभने

मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धे श्वेतवराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे

अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे

मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यवहारिके प्रभवादि-

षष्ठ्याः -संवत्सराणां मध्ये..... नामसंवत्सरेअयने

ऋतौ मासेपक्षे शुभतिथौवासरयुक्तायां

..... नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण

विशिष्टायां अस्यांशुभतिथौ ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा

श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं करिष्यमाण कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थं

आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये । विघ्नेश्वर पूजां करिष्ये ।

(दर्भान् निरस्य । अप उपस्पृश्य ।

गन्ध-पुष्पान् गृहीत्वा विघ्नेश्वरं आवाहयेत् ।)

3.2.3 आवाहनं उपचारं

ओं ग॒णानां॑ त्वा ग॒णप॑ति॒ः ह॒वाम॑हे क॒विं क॑वी॒ना-मु॑प॒मश्र॑वस्तमं ।
जे॒ष्ठरा॒जं ब्र॑ह्म॒णां ब्र॑ह्म॒णस्प॑त आ नः॑ शृ॒ण्वन्नू॑तिभिः सी॒द सा॑दनं ।
ओं भूर्भु॒वस्सु॒वरो॑ । अस्मिन् हरिद्राबिंबे सपरिवारं विघ्नेश्वरं
ध्यायामि , आवाहयामि । विघ्नेश्वरस्य इदमासनं । विघ्नेश्वराय नमः ।
पाद्यं समर्पयामि । अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।
मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि ।
स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । वस्त्रार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ।
उत्तरीयार्थं पुष्पाणि समर्पयामि । यज्ञोपवीतार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ।
आभरणार्थं पुष्पाणि समर्पयामि । दिव्यगन्धान् धारयामि ।
हरिद्राकुंकुमं धारयामि । अलङ्करणार्थं अक्षतां समर्पयामि ।
पष्पैः पूजयामि ।

ओं सु॒मुखा॑य नमः ।	ओं एक॑दन्ताय नमः ।
ओं क॒पिला॑य नमः ।	ओं ग॒जकर्ण॑काय नमः ।
ओं ल॒ंबो॒धरा॑य नमः ।	ओं वि॒कटा॑य नमः ।
ओं वि॒घ्नरा॑जाय नमः ।	ओं वि॒नाय॑काय नमः ।
ओं धू॒मके॑तवे नमः ।	ओं ग॒णाध्य॑क्षाय नमः ।
ओं फा॒लच॑न्द्राय नमः ।	ओं ग॒जान॑नाय नमः ।

ओं वक्रतुण्डाय नमः ।

ओं शूर्पकर्णाय नमः ।

ओं हेरंबाय नमः ।

ओं स्कन्दपूर्वजाय नमः ।

ओं विघ्नेश्वराय नमः ।

ओं श्री महागणपतये नमः ॥

ननाविध परिमळ पत्रपुष्पाणि समर्पयामि ।

धूपार्थं पुष्पाणि समर्पयामि । दीपार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ।

3.2.4 नैवेद्यं, प्रार्थना

ओं भूर्भुवस्सुवः । ओं तत्सवितु वरेण्यं । भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

देव सवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्त्तेन परिषिञ्चामि ।

ओं विघ्नेश्वराय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहाः । ओं अपानाय स्वाहाः ।

ओं व्यानाय स्वाहाः । ओं उदानाय स्वाहाः ।

ओं समानाय स्वाहाः । ओं ब्रह्मणे स्वाहाः ।

ओं विघ्नेश्वराय नमः । नाळिकेरखण्डद्वयं, कदलीफलं

महानैवेद्यं निवेदयामि । मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि ।

अमृतापिधानमसि । नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

तांबूलं

ओं भूर्भुवस्सुवः । पूगीफल समायुक्तं नगवल्ली-दळैर्युतं ।
कर्पूर-चूर्ण संयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यतां । ओं विघ्नेश्वराय नमः ।
कर्पूर तांबूलं निवेदयामि । (समर्पयामि)

दीपाराधना

नमो ब्रातपतये, नमो गणपतये, नमः प्रमथपतये, नमस्ते अस्तु
लंबोदरा-यैकदन्ताय विघ्न(वि)नाशिने, शिवसुताय, श्री वरदमूर्तये नमः ।
(अथवा)

राजाधिराजाय प्रसह्य साहिनै । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।
कुबेराय वैश्रवणाय । महाराजाय नमः ।
कर्पूर नीराजनं प्रदर्शयामि । नीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पं । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।
श्री विघ्नेश्वराय नमः । वेदोक्त-मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ।
सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि । समस्तोपचरान् समर्पयामि ।

प्रार्थना

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटी समप्रभ ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ 1

नमो नमो गणेशाय नमस्ते शिवसूनवे ।

निर्विघ्नं कुरु मे देवेश नमामि त्वां गणाधिप । 2

विघ्नेश्वर महाभाग सर्व लोकनमस्कृत ।

मयाऽऽरब्धमिदं कर्म निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥ 3

3.3 प्रार्थना पूजा प्रारंभः

(रुद्र विधानेन महान्या-सपूर्वकं पञ्चायतन पूजा प्रारंभः)

3.3.1 प्रार्थना

नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च ।

जगद्धिताय कृष्णाय श्री गोविन्दाय नमो नमः ॥ 1

आब्रह्मलोका-दाशेषादा-लोकाल्लोक पर्वतात् ।

ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमो नमः ॥ 2

ओं नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्या संप्रदाय-कर्तृभ्यो

वंशऋषिभ्यो गुरुभ्यो महद्भ्यः ॥ 3

3.3.2 आसन पूजा

अस्य श्री आसन महामन्त्रस्य, पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः ।

सुतलं छन्दः । कूर्मो देवता । आसने विनियोगः ।

पृथ्वि त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु आसनं ॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाच सर्वतो दिशां ।

सर्वेषा-मविरोधेन पूजाकर्म समारंभे ॥

योगासनाय नमः । वीरासनाय नमः । शरासनाय नमः ।

अधारशक्ति कमलासनाय नमः । (इति भूमी पुष्पाञ्जलि विकिरेत्)

3.4 सङ्कल्पं

(The brief Sankalpam shall be used for Shiva Pooja at home, Rudraabhishekam and Pradosha Poojas)

3.4.1 सङ्कल्पं (1)

आचमनं , शुक्लांबरधरं , प्राणायामं ,
ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,
शुभे शोभने मुहूर्त्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धे श्वेतवराह कल्पे
वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे
भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने
व्यवहारिके प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये नामसंवत्सरे
.....अयने ऋतौ मासेपक्षे शुभतिथौ.
..... वासरयुक्तायां नक्षत्रयुक्तायां, शुभयोग शुभकरण
एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यांशुभतिथौ ममोपात्त
समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं नक्षत्रेराशौ
जातस्यशर्मणः मम नक्षत्रेराशौ
.....जातयाः मम धर्मपत्न्याश्च आवयोः सकुटुम्बायोः
सपुत्रकयोः सबन्धुवर्गयोः साश्रित-जनयोश्च क्षेम-स्थैर्य-वीर्य-
विजय, आयुरारोग्य-ऐश्वर्याणां अभिवृद्ध्यर्थं, धर्मार्थ-काम-मोक्ष-

चतुर्विध फलपुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं, सर्वारिष्ट शान्त्यर्थं,
सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं, सपरिवार सोमास्कन्द परमेश्वर चरणारविन्दयोः
अचञ्चल-निष्कपट-भक्ति सिद्ध्यर्थं ,
यावच्छक्ति परिवार सहित रुद्रविधानेन ध्यान-आवाहनादि-
षोडशोपचार-पूजा पुरस्सरं महान्यासजप (लघुन्यासजप)
रुद्राभिषेक-अर्चनादि सहित सांबशिव पूजां करिष्ये ।
तदंगं कलश-शंख-आत्म-पीठ-पूजां च करिष्ये । (द्वि)
(इति सङ्कल्पं । अप उपस्पृश्य)

3.4.2 सङ्कल्पं (2)

(This Elaborate Sankalpam is ideally used for
Rudraabhishekam in a Samajam, Mandal, Public function.)

आचमनं, शुक्लांबरधरं, प्राणायामं –

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,
एतत् मण्डली भक्तजनानां अखिल भारतीयानां, अखिल भूमण्डल
निवासानां, एतत् कर्म प्रवर्तकानां, प्रोत्साहकानां, साहाय्यकारीणां,
नानाविध द्रव्य दातृकाणां, दर्शनार्थं आगतानां आगमिष्याणां
सकुटुम्बानां साश्रित बन्धुमित्राणां, सर्वेषां महाजनानां, जन्माभ्यासात्
जन्मप्रभृति एतत्क्षण-पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे यौवने वार्द्धके च,
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु, मनोवाक्काय कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय

व्यापारैः, कामक्रोध-लोभ-मोह-मदमात्सर्यैः, रहसि प्रकाशे च
ज्ञाना-ज्ञानकृतानां महापातकानां, अतिपातकानां, उपपातकानां,
सङ्करीकरणानां, मलिनीकरणानां, अपात्रीकरणानां जातिभ्रंश-करणानां
प्रकीर्णकानां ज्ञानतः सकृत्-कृतानां, अज्ञानतः असत्-कृतानां,
ज्ञानातोऽज्ञानाश्च अभ्यस्तानां, निरन्तरा-भ्यस्तानां चिरकाला-भ्यस्तानां,
एवं नवानां नवविधानां बहूनां बहुविधानां पापानां, मद्ध्ये संभाविधानां
सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्थं, महादेवादीनां रुद्राणां प्रसाद-
सिद्ध्यर्थं, महादेवादीनां रुद्राणां प्रसादेन राज्य निर्वाहकानां
मन्त्रिवर्याणां, अन्योन्य मत्सरबुद्धि निरसनद्वारा सद्बुद्धि उदयसिद्ध्यर्थं,
तद्वारा इदानीं अनुभूयमान नित्योपयोग साधन उत्पन्न अलभ्यता
निवृत्तिद्वारा सुलभ्यता-सिद्ध्यर्थं, सर्वद्रव्य निर्माण-शालासु जनित
जायमान अग्निबाधा प्रवृत्ति बन्धनादि निवृत्तिद्वारा उत्तरोत्तरं
लाभाऽभिवृद्ध्यर्थं, आन्तरीक्षात् उत्भूत, उत्पात, उत्पस्यमान सकल
कण्डक निवृत्यर्थं, तद्वारा इन्धन-जल-विद्युश्चक्ति क्षाम निवृत्यर्थं,
अतिवृष्टि-वायुमर्दन-उग्रताप-समुद्र-क्लेशनादि निवृत्तिद्वारा सर्वविध
प्रकृति अनुकूल-सिद्ध्यर्थं, शरीरे बाध्यमान-बाधिष्यमाण चित्तभ्रम-
शिरोरोग-चर्मरोग- मनोरोग-अक्षिरोग पतनाति जनित
अस्थिच्छेदानादि सकलरोग निवृत्यर्थं, भूजलवायु सञ्चारकाल

जनित-जायमान सकलदुरित निवृत्त्यर्थं, आतुराणां रोगीणां वैद्यशालासु
उत्तम भिषग्वर सेवना रोगमुक्त औषधादि सिद्धिद्वारा अरोग्य-दृढगात्रता
सिद्ध्यर्थं, अपमृत्यु निवारणार्थं, क्षेम-स्थैर्य-वीर्य-विजय
आयुरारोग्य-ऐश्वर्याणां अभिवृद्ध्यर्थं, धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विध
फलपुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं, सर्वारिष्ट शान्त्यर्थं, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं,
सकल साम्राज्य अभिवृद्ध्यर्थं, ऐकमत्य सिद्ध्यर्थं, विद्यार्थीनां
विद्यार्थिनीनां च बालपाठशालासु निष्प्रयासेन प्रवेश सिद्ध्यर्थं,
तत्र प्रतिवर्ष परीक्षासु प्रथम गणनीय विजय प्राप्त्यर्थं, अभ्यस्त
नानाबिरुध धारीणां अनुचित स्थिर उद्योग प्राप्त्यर्थं, अलाभौजनित
क्लेश निवृत्तिद्वारा उन्नत उद्योग प्राप्त्यर्थं, चतुर्वर्णानां तत्तत् वर्णाश्रम
कर्मासु पूर्ण उत्सुहता सिद्ध्यर्थं, उत्तमवर्णेन नित्य नैमित्तिक काम्य
श्रौत स्मार्त विहित कर्मानुष्ठाने सोत्साहता सिद्ध्यर्थं, सुहासिनीनां
दीर्घ-सौमंगल्य सिद्ध्यर्थं, कनक-वस्तु-वाहनादि पुत्र-पौत्र सहित
सुखजीवित्व सिद्ध्यर्थं, वर-वधूनां च विवाह प्रतिबन्धकीभूत दुरित
निवृत्तिद्वारा उचितकाले मनोऽभीष्ट विवाह प्राप्त्यर्थं, आस्तिकानां
स्वधर्माभिरुचि सिद्ध्यर्थं, सद्यः सुवृष्ट्या वापी कूप तटाकानां
समृद्ध्यर्थं, सर्व सस्याभिवृद्ध्यर्थं, अन्न समृद्ध्यर्थं, क्षाम-क्षोभ
निवृत्त्यर्थं, सकलश्रेयः प्राप्ति हेतुभूत सांबपरमेश्वर परिपूर्ण अनुग्रह

सिद्ध्यर्थं, कुटुंबक्षेमा-भिवृद्ध्यर्थं, ऐहिक आमुष्मिक सकल-
श्रेयाभिवृद्ध्यर्थं, यावच्छक्ति परिवार सहित रुद्रविधानेन ध्यान-
आवाहनादि-षोडशोपचारपूजा पुरस्सरं महान्यासजप (लघुन्यासजप)
रुद्रजप-सहित एकदशवार रुद्राभिषेक-सहित-यथाशक्ति त्रिशति
अर्चना क्रमार्चना अन्य अर्चनादि सहित सांबशिव पूजां करिष्ये ।
तदंगं कलश-शंख-आत्म-पीठ-पूजां च करिष्ये । (द्वि)

(अप उपस्पृश्य)

3.4.3 सङ्कल्पं (3)

(This Elaborate Sankalpam may be used for Rudra
Ekadasini generally)

आचमनं शुक्लांबरधरं प्राणायामं -ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा
श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं, शुभे शोभने मुहूर्ते आध्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे
श्वेतवराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे
पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरत खण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे
अस्मिन् वर्तमाने व्यवहारिके प्रभवादि- षष्ठ्याः -संवत्सराणां मध्ये
..... नामसंवत्सरेअयने
ऋतौ मासेपक्षे शुभतिथौ
..... वासरयुक्तायां नक्षत्रयुक्तायां

शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्याम्
.....शुभतिथौ ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर
प्रीत्यर्थं,

अनादि अविद्यावासनया प्रवर्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे
विचित्राभिः कर्मगतिभिः विचित्रासु अनेकासु पशु-पक्षी मृगादि
योनिषु पुनः पुनः अनेकधा जनित्वा केनापि पुण्यकर्म विशेषेण
इदानीन्तन मानुष्ये द्विजन्म विशेषं प्राप्तवतःनक्षत्रे

..... राशौ जातस्यशर्मणः नक्षत्रे
.....राशौजातयाः मम धर्मपत्न्याश्च आवयोः

सकुटुम्बयोः सपुत्रकयोः सबन्धुवर्गयोः साश्रित-जनयोश्च
जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्क्षण पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे
यौवने वार्धके च जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु मनोवाक्काय
कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय व्यापारैः कामक्रोध-लोभ-मोह-मदमात्सर्यैः
रहसि प्रकाशे च ज्ञाना-ऽज्ञानकृतानां महापातकानां अतिपातकानां
उपपातकानां सङ्करीकरणानां मलिनीकरणानां अपात्रीकरणानां
जातिभ्रंश-करणानां प्रकीर्णकानां ज्ञानतः सकृत्-कृतानां अज्ञानतः
असत्-कृतानां ज्ञानतोऽज्ञानतश्च अभ्यस्तानां चिरकाला-भ्यस्तानां
निरन्तर चिरकाला-भ्यस्तानां एवं नवानां नवविधानां बहूनां बहुविधानां

पापानां मध्ये संभाविधानां सर्वेषां पापानां सध्यः अपनोदनार्थं,
महादेवादीनां रुद्राणां आदित्यात्मकरुद्रस्य च प्रसाद सिद्ध्यर्थं,
आयुरा-रोग्य-पुत्र-पौत्र-धन-धान्य तेजो-लक्ष्म्यादि सकल-
साम्राज्या-भिवृद्ध्यर्थं, शरीरे वर्तमान-वर्तिष्यमान समस्त-रोगपीडा
परिहारद्वारे क्षिप्रारोग्य सिद्ध्यर्थं, सर्वे ग्रहानुकूल्य सिद्ध्यर्थं,
आरोग्य-दृढगात्रता सिद्ध्यर्थं, अपमृत्यु दोष परिहारार्थं, वार्षिक
जन्मनक्षत्रे तिथिवार नक्षत्रे लग्न-योगकरण-ग्रहास्थित्याभिः संबन्धेन
संसुचित सर्वदोष शान्त्यर्थं, सर्वारिष्ट- शान्त्यर्थं, चित्तशुद्ध्यर्थं,
सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थं, महार्णव-वायुपुराण-उक्तप्रकारेण आचार्यमुखेन
चमकमन्त्र संयुक्तस्य शतरुद्रियस्य एकोन-सप्तत्यधिक-शतधा
विभाग पञ्चाश्रयेण दशांशहोम विधान पक्षाश्रयणे च संभावित
द्वात्रिंशत् उत्तर शत संख्याक नमक-चमक जप तन्मन्त्र जप दशांश
परिमित द्विचत्वारिंशत् उत्तर-द्विसहस्र संख्याक नमकमन्त्र
चमकमन्त्रा-हुत्यात्मकं अन्ते वसोर्धारया सहितं कर्मानुष्ठान योग्यता
संपादक पूतत्वा सिद्धिकर प्राजापत्य कृच्छ्र प्रत्याम्नाय भूत हिरण्यदान
पूर्वकं प्राच्यांग नान्दीश्राद्ध-गोदान-उदिच्छ्यांग वैष्णवश्राद्ध कर्म-
साद्गुण्य प्रद दशदान फलतांबूल सहितं रुद्रैकादशिनि कर्मकर्तुं
योग्यता-सिद्धिरस्तु इति अनुग्रहाणा ।

(योग्यता सिद्धिरस्तु – इति परिषत् ब्राह्मण प्रतिवचनं)

3.4.4 सङ्कल्पं (4)

This very Elaborate and detailed Sankalpam can be used for Rudra Ekadasani and also for Maharudram, where appropriate changes need to be made for various Sankhya(counts) of Japam/Homam.)

आचमनं , शुक्लांबरधरं, प्राणायामं –ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा
श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं , शुभे शोभने मुहूर्त्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे
श्वेतवराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे
जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन्
वर्त्तमाने व्यवहारिके प्रभवादि– षष्ठ्याः –संवत्सराणां मध्ये
नामसंवत्सरेअयनेऋतौ मासे
.....पक्षे शुभतिथौ वासरयुक्तायां
नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां
अस्यांशुभतिथौ ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर
प्रीत्यर्थं ।

अनादि अविद्यावासनया प्रवर्त्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे
विचित्राभिः कर्मगतिभिः विचित्रासु अनेकासु पशुपक्षी मृगादि योनिषु
पुनः पुनः अनेकधा जनित्वा केनापि पुण्यकर्म विशेषेण

इदानींतन मानुष्ये द्विजन्म विशेषं प्राप्तवतःनक्षत्रे
..... राशौ जातस्यशर्मणः मम नक्षत्रे
.....राशौजातयाःमम धर्मपत्न्याश्च
आवयोः सकुटुम्बयोः, सपुत्रकयोः सबन्धुवर्गयोः साश्रित-जनयोश्च,
जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्क्षण पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे
यौवने वार्धके च, जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु मनोवाक्काय
कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय व्यापारैः, कामक्रोध-लोभ-मोह-मदमात्सर्यैः,
त्वक्चक्षुः श्रोत्र जिह्वा-घ्राणा वाक्पाणि पादपायु उपस्थाख्यैः दशभिः
इन्द्रियैः, मनोबुधि-चित्त-अहङ्काराख्यैः अन्तरिन्द्रियैश्च कृतानां,
इहजन्मनि जन्म-जन्मान्तरेषु वा ज्ञानतः अज्ञानतो वा, रहसि प्रकाशेषु
वा संभावितानां, ब्रह्महनन सुरापान स्वर्णस्तेय गुरुतल्पगमन
तत्संखयोगाख्य पञ्चमहापातकानां, महापातक संबन्धित्व ज्ञापयितृत्व
प्रयोजकत्व निमित्तत्व उपदेष्टृत्व प्रोत्साकत्व अनुमन्त्रत्वादीनां
महापातक व्रतातिदेशिक रूपाणां, अविज्ञात गर्भहनन कूट साक्षिपाद
निन्दित-कर्माभ्यास दैवब्राह्मण धन अपहरणादीनां अतिपातकानां,
सोम-यागस्थ क्षत्रिय वैश्य वध सभामद्ध्यगत ब्राह्मण अपमानन,
सदापै शून्यभाषण आदीनां ब्रह्महत्या समानानां वेदविस्मृति वेदनिन्द
समुत्कर्षार्थं अनृतवचन कळंजभक्षण अभक्ष्य-भक्षणादीनां सुरापान

समानानां, निक्षेपहरण गोभूमिहरण, सुहृधन-हरणादीनां स्वर्णस्तेय
समानानां, सती सखिपत्नी ज्येष्ठपत्नी गुरुपत्नी मातुलानी अन्त्यजा
गमनादीनां गुरुतल्पग समानानां पतित, सहवास सहभोजन अन्त्यजा
वाटिका निषेपण आदीनां, तत्संयोगाख्य समानानां, गोवध आत्मार्थ
क्रियारंभ मातृपितृ गुरुत्याग, परदार अभिमर्शन, भैषज्यकरण,
अपण्यविक्रय, ऋण अनपाकरण, नित्यकर्मलोप, दुर्दान प्रतिग्रह आदीनां
उपपातकानां, अजावि गजोष्ट्र मृगेभ मीनाहि महिषीवध साळग्राम
शिवलिंग विक्रय दूर्देशगमन क्रीटान्नभोजन आदीनां, संकरीकरणानां
फलकुसुमस्तेय मखानुगत-भोजन, धान्यहरण, वस्त्रा-पहरणादीनां,
मलिनीकरणानां, कुसीद जीवन, वाणीज्य करण, असत्य भाषण,
अस्नान-भोजन आदीनां, अपात्रीकरणानां, शूद्रान्न-भोजन,
मध्याघ्राण पतित सहवास आदीनां, जातिभ्रंश-करणानां सीमातिक्रम,
शपथोल्लंगन, उच्छिष्ट-भक्षण, अविहितकर्म आचरण विहितकर्म-
त्यागादीनां प्रकीर्णकानां, ज्ञानतः सकृत्कृतानां अज्ञानतः असत्कृतानां
ज्ञानतः अज्ञानतश्च अभ्यस्तानां निरन्तर अभ्यस्तानां चिरकाल
अभ्यस्तानां निरन्तर चिरकाल-अभ्यस्तानां एवं नवानां नवविधानां
बहूनां बहुविधानां सर्वेषु पापानां मध्ये संभावितानां सर्वेषां पापानां
सद्यः अपनोदनार्थं, आदित्यात्मकरुद्र प्रसाद सिद्ध्यर्थं, महादेवादि

एकादश अभिन्नरूप आदित्यात्मकरुद्र प्रसादेन अस्माकं सर्वेषां
आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैवीक नवनवजनित तापत्रय
निवृत्त्यर्थं,(यथोचितं सङ्कल्पं) एभिः ब्राह्मणैस्सह
महार्णवोक्त प्रकारेण आचार्य मुखेन ऋत्विङ्मुखेन च ऋग्यजु-स्साम-
अथर्वणाख्येषु चतुर्षु वेदेषु मध्ये एकाधिक शतसंख्याक
यजुःशाखासु आदिभूत संहिताशाखा अन्तर्भूत अग्निकाण्ड अन्तः
पातिनां सर्वेषु वेदेषु सर्वासु उपनिषत्सु स्मृतीतिहास-पुराणादिषु
सर्वपाप निवर्तकत्वेन, दिव्यज्ञान प्रदत्वेन, मोक्ष प्रदत्वेन, च तत्रतत्र
उद्घुष्टानां चरमायां इष्टकायां जुहोति इति चरमेष्टका उपयुक्तानां,
"शतरुद्रान् जपेद्यस्तु द्यायमानो महेश्वरं" इति शैव पुराण वचनेन,
"यः शतरुद्रीयं अधीते , स अग्निपूतो " इति कैवल्योपनिषद् वचनेन,
"अथ हैनं ब्रह्मचारिणः ऊचुः । किं जप्येन अमृतत्वं नो भवति ।
सहो वाच याज्ञवल्क्यः शतरुद्रियेणेति ।
एतानि ह वा अमृतस्य नामधेयानि । एतैर्ह वा अमृतो भवति" ।
इति जाबालोपनिषत् वचनेन,
"रुद्राणां जपहोम अर्चना अभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः" इत्यादि
श्रुतिस्मृति पुराणवचनैः पूजाजप होमादि कर्मसु उपयुक्तानां एकादश
अनुवाक आत्मकानां तत्र "नमस्ते रुद्रमन्यवे इति" प्रथमानुवाके

दुष्टसंहारार्थं सङ्क्रुद्ध रुद्रकोप आयुधादिभ्यः अभयप्रार्थना
प्रकाशकानां पञ्चदश-संख्याकानां षोडशोपचार उपयुक्तानां,
"नमो हिरण्यबाहवे इत्यादि" अष्टानुवाकेषु वैश्वरूप्यध्यान एकतो-
नमस्कार उभयतो-नमस्कार रूपाणां एकोनत्रिंशत् उत्तरशत
संख्याकानां त्रिशत्यर्चना उपयुक्तानां,
"द्रापे अन्धसस्पते" इति दशमानुवाके जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति
अवस्तासु जलवात विषभूत शत्रुमृत्यु ज्वरादि स्फोटकादि नानारोगेभ्यः
नानाऽभिचारेभ्यः अभयप्रार्थना प्रकाशकानां द्वादश संख्याकानां,
प्रदक्षिण उपयुक्तानां "सहस्राणि सहस्रशः" इति एकदशानुवाके
सर्व्वव्यापक रुद्र विभूति प्रकाशकानां साऽनुषंगाणां त्रयोदश
संख्याकानां नमस्कार उपयुक्तानां, अभीप्सितार्थं याचानासूचक
चमकानुवाक संयुक्तानां, मूर्त्यष्टक मूर्तपञ्चक मूर्तित्रय अधिष्ठान
पञ्चकृत्य विधान पठीयस्य, शिवया शूलिन्या अधोराख्याया तनुवा
सर्वो-पादानतया सर्वात्मकतया सर्व्ववेद-बोधित सर्वात्मक शर्व्वरीश
शकलधर परमशिवाख्य सदाशिव-ब्रह्ममञ्च पर्यं कायमाण
पञ्चाक्षराख्य महामन्त्ररत्न मुख्यकोशानां शतरुद्रीयाणां त्रेधाविभागद्वय
षोढा विभाग षोडशधाविभाग अष्टाचत्वारिंशधा विभाग एकोनसप्तति
अधिक शतधा विभागानां, षण्णां विभागानां मध्ये, एकोन सप्तति

अधिक शतधा विभागपक्षं आश्रित्य शतांश दशांश संपूर्ण-होमानां
मध्ये दशांश होमविधानेन द्वात्रिंशदुत्तरशत संख्याक नमक चमक
जपात्मक तद् दशांश परिमित द्विचत्वारिंशत् उत्तर द्विसहस्र संख्याक
नमक चमक आहुत्यात्मकं अन्ते वसोर्धारा सहितं प्राच्यांग उदीच्यांग
गोदान नान्दीश्राद्ध वैष्णवश्राद्ध दशदान सहितं कर्मानुष्ठान योग्यता
संपातक पूतत्व सिद्धिकर प्राजापत्य कृच्छ्र प्रत्याम्नाय भूत हिरण्यदान
पूर्वकं सकल पापनिवर्तकं सर्वाभीष्ट प्रदायकं
रुद्रैकादशिन्याख्य(महारुद्र*) महाप्रायश्चित्त कर्मकर्तुं योग्यतासिद्धिः
अस्त्विति अनुग्रहाणा ॥

(योग्यता सिद्धिरस्तु – इति परिषत् ब्राह्मण प्रतिवचनं)

3.4.5 विघ्नेश्वर उद्वापनं

ओं ग॒णानां॑ त्वा ग॒णप॑तिꣳ हवामहे क॒वीं क॒वीना॑-मु॒पम॑श्रवस्तमं ।
जे॒ष्ठरा॑जं ब्र॒ह्मणां॑ ब्र॒ह्मण॑स्पत॒ आ नः॑ शृ॒ण्वन्नू॑तिभिः सीद॒ साद॑नं ।

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मात् हरिद्रुबिंबात् विघ्नेश्वरं यथास्थानं
प्रतिष्ठापयामि । (शोभनार्थे क्षेमाय पुनारागमनाय च) ।

3.5 पुण्याहवाचनं

3.5.1 सङ्कल्पं

आचमनं-पवित्रं-दर्भासनं-दर्भान् धारयामाणं – शुक्लांबरधरं –
प्राणायामं । ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,
शुभे शोभने मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वत
मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यवहारिके
प्रभवादि- षष्ठ्याः –संवत्सराणां मध्ये नामसंवत्सरेअयने
..... ऋतौ मासेपक्षे शुभतिथौ
..... वासरयुक्तायां नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण
एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यांशुभतिथौ
ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं (यजमानस्य)
आत्मशुद्ध्यर्थं, शरीरशुद्ध्यर्थं, सर्वोपकरण शुद्ध्यर्थं,
शुद्ध्यर्थ-शुद्धि पुण्याहवाचनं करिष्ये (द्विः)
(इति सङ्कल्प्य दर्भान् निरस्य, अप उपस्पृश्य)

3.5.2 कुंभ प्रतिष्ठा मन्त्राः

उ॒दु॒त्त॒मं॑ व॒रु॒ण पा॒श म॒स्मद॒वा॒ध॒मं॑ वि॒म॒ध्य॒म॒७ श्र॒थाय॑ ।

अ॒था व॒य॒मा॒दि॒त्य व्र॒ते त॒वा॒ना॒ग॒सो अ॒दि॒त॒ये स्या॒म ॥ १

अ॒स्त॒भ् ना॒द्ध्य॒ा मृ॒ष॒भो अ॒न्त॒रि॒क्ष-म॒मि॒मी॒त व॒रि॒मा॒णं पृ॒थि॒व्या
आ॒ऽसी॒द॒द्वि॒श्वा भु॒व॒ना॒नि स॒म्रा॒ट् वि॒श्वे॒त्ता॒नि व॒रु॒णस्य॑ व्र॒ता॒नि ॥ २

य॒त्किञ्चे॒दं व॒रु॒ण दै॒व्ये ज॒नेऽभि॒द्रो॒हं म॒नु॒ष्या॑श्च॒रा॒म॒सि ।

अ॒चि॒त्ती॒ य॒त्त॒व ध॒र्मा यु॒यो॒पि॒म मा न॒स्त॒स्मा दे॒न॒सो दे॒व री॒रि॒षः ॥ ३

कि॒त॒वा॒सो य॒द्रि रि॒पु॒र्न दी॒वि य॒द्वा॒घा स॒त्य-मु॒त॒य॒न्न वि॒द्म ।

स॒र्वा ता॒ वि॒ष्य शि॒थि॒रे॒व दे॒वा॒था ते स्या॒म व॒रु॒ण प्रि॒या॒सः ॥ ४

अ॒व ते॒ हे॒डो व॒रु॒ण न॒मो॒भि॒र॒व य॒ज्ञे-भि॒री॒म॒हे ह॒वि॒र्भिः॑ ।

क्ष॒य॒न्न॒स्मभ्य॑ म॒सुर-प्र॒चे॒तो रा॒ज॒न्ने॒ना॒ऽसि॑ शि॒श्र॒थः कृ॒ता॒नि ॥ ५

त॒त्वा॒या॒मि ब्र॒ह्म॒णा व॒न्द॒मा॒न स्त॒दा शा॒स्ते य॒ज॒मा॒नो ह॒वि॒र्भिः॑ ।

अ॒हे॒ड॒मा॒नो व॒रु॒णे॒ह बो॒द्ध्यु॒रु॒श॒ऽस मा न॒ आ॒युः प्र॒मो॒षीः॑ ॥ ६

or

इ॒मं मे॑ वरु॒ण श्रु॑धि ह॒वम॑ध्या च मृ॒डय॑ । त्वा॒मव॑स्यु रा॒चके॑ ।
तत्त्वा॑ या॒मि ब्र॑ह्म॒णा व॑न्द॒मान॑स्तदा शा॒स्ते य॑ज॒मानो॑ ह॒विर्भिः॑ ।
अहे॑ड॒मानो॑ वरु॒णेह॑ बो॒ध्युरु॑श॒ꣳ स॒ मा न॒ आयुः॑ प्र॒मोषीः॑ ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । अस्मिन् कुंभे वरुणं ध्यायामि ।

वरुणं आवाहयामि । वरुणाय नमः । रत्न सिंहासनं समर्पयामि ।

पाद्यं समर्पयामि । अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि । स्नानानन्तरं आचमनीयं

समर्पयामि । वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि । उपवीतं समर्पयामि ।

पुष्पाणि समर्पयामि । गन्धान् धारयामि । हरिद्रा-कुंकुमं समर्पयामि ।

अक्षतान् समर्पयामि । पुष्पैः पूजयामि ।

1. ओं वरुणाय नमः

2. ओं प्रचेतसे नमः

3. ओं सुरूपिणे नमः

4. ओं अपांपतये नमः

5. ओं मकरवाहनाय नमः

6. जलाधिपतये नमः

7. ओं पाशहस्ताय नमः

8. ओं तीर्थराजाय नमः ।

ओं वरुणाय नमः ।

नानाविध परिमळ पत्र पुष्पाणि समर्पयामि । धूपं आघ्रापयामि ।

दीपं दर्शयामि । धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः । तथ्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो योन प्रचोदयात् । देव सवितः प्रसुवः ।

सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि ।

(रात्रौ – ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि) ।

ओं वरुणाय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहा । ओं अपानाय स्वाहा ।

ओं व्यानाय स्वाहा । ओं उदानाय स्वाहा ।

ओं समानाय स्वाहा । ओं ब्रह्मणे स्वाहा ।

कदलीफलं निवेदयामि ।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । तांबूलं समर्पयामि ।

कर्पूर नीराजनं प्रदर्शयामि । नीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मन्त्र पुष्पं समर्पयामि । सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि ।

समस्तोपचरान् समर्पयामि ॥

शिव स्तुति

<u>ब्राह्मण वचनं</u>	<u>ब्राह्मण प्रतिवचनं</u>
भवद्भि अनुज्ञातः पुण्याहं वाचयिष्ये	वाच्यतां
कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु	पुण्याहं कर्मणोऽस्तु पुण्यं भवतु
कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु	स्वस्ति कर्मणोऽस्तु
सर्वोपकरण शुद्धिकर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु	सर्वोपकरण शुद्धिकर्मणे स्वस्ति
कर्मण ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु	कर्म ऋद्ध्यतां
ऋद्धि समृद्धिः	पुण्याह समृद्धिः
शिवं कर्म	अस्तु

शान्तिरस्तु

पुष्टिरस्तु

तुष्टिरस्तु

ऋद्धिरस्तु

अविघ्नं अस्तु

आयुष्यं अस्तु

आरोग्यं अस्तु

धनधान्य-समृद्धिरस्तु

गोब्राह्मणेभ्यः

शुभं भवतु ।

(ऐशान्यां दिशि बहिर्देशे)

अरिष्टनिरसनमस्तु ।

उत्तरे कर्मणि

अविघ्नमस्तु ।

उत्तरोत्तराभिवृद्धिः

अस्तु ।

सर्वेशोभनमस्तु

सर्वाः संपदः सन्तु ।

3.5.3 वेदारंभे जप्याः मन्त्राः

हरिः ओं , श्री गुरुभ्यो नमः, हरिः ओं ।

ओं भूः । तत्सवितुर्वरेण्यं । ओं भुवः । भर्गो देवस्य धीमहि ।

ओ३ सुवः । धियो योनः प्रचोदयात् ।

ओं भूः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

ओं भुवः । धियो योनः प्रचोदयात् ।

ओ३ सुवः-तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः

प्रचोदयात् । ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सुरभि नो मुखा करत्

प्रण आयु३षि तारिषत् । आपोहिष्ठा मयोभुव-स्तान ऊर्जे दधातन ।

महेरणाय चक्षसे । यो व शिशवतमो रस-स्तस्य भाजयते ह नः ।

उशतीरिव मातरः । तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।

आपो जनयथा च नः ।

आपो॑ वा इ॒दं॑ सर्वं॑ वि॒श्वा भू॒तान्यापः॑ प्रा॒णा वा आपः॑ प॒शव
 आपो॑ऽन्नमापो॑-ऽमृत॑माप-स्सम्रा॒डापो॑ वि॒राडाप-स्स्वरा॒डाप-
 इ॒च्छन्दा॑ऽस्यापो॑ ज्योती॑ऽष्यापो॑ यजू॑ऽष्याप-स्सत्य॑माप-स्सर्वा॑
 दे॒वता॑ आपो॑ भूर्भुव॑स्सुवराप॑ ओं ।

3.6 पवमान सूक्तं

हि॒र॒ण्यव॑र्णाः शु॒चयः॑ पा॒वका॑ यासु॑ जा॒तः क॒श्यपो॑ यास्विन्द्रः॑ ।
 अ॒ग्निं या॑ गर्भं॑ दधिरे वि॒रूपा॑स्ता॒न आप॑श्शऽ स्यो॒ना भव॑न्तु ॥
 यासा॑ऽ राजा॑ वरु॒णो या॑ति म॒ध्ये स॒त्यानृ॑ते अ॒वप॑श्यन् ज॒नानां॑ ।
 म॒धुश्चु॑त-इ॒शुच॑यो याः पा॒वका॑स्ता न आप॑श्शऽ स्यो॒ना भव॑न्तु ॥
 यासां॑ दे॒वा दि॒वि कृ॑ण्वन्ति भ॒क्षं या॑ अ॒न्तरि॑क्षे बहु॒धा भव॑न्ति ।
 याः पृ॒थि॒वीं प॑यसो॒न्दन्ति॑ शु॒क्रास्ता॑ न आप॑श्शऽ स्यो॒ना भव॑न्तु ॥
 शि॒वेन॑ मा चक्षु॑षा प॒श्यता॑प शि॒वया॑ त॒नुवो॑-प॒स्पृश॑त त्वचं॑ मे ।
 सर्वा॑ऽ अ॒ग्नीऽ र॑प्सुषदो॑ हुवे वो मयि॑ वर्चो॑ ब॒लमो॒जो नि॑धत्त ॥
 प॒वमा॑न-स्सुव॑र्जनः । प॒वित्रे॑ण वि॒चर्ष॑णिः ।
 यः पो॒ता स पु॑नातु मा । पु॒नन्तु॑ मा दे॒वज॑नाः ।

पुनन्तु॑ मन॒वो धि॒या । पुनन्तु॑ वि॒श्व आ॒यवः॑ ।
जा॒तवे॒दः प॒वित्र॑वत् । प॒वित्रे॑ण पु॒नाहि॑ मा ।
शु॒क्रेण॑ दे॒व दी॒द्यत् । अ॒ग्ने कृ॒त्वा-कृ॒तूँ र॒नु ॥ १

य॒त्ते प॒वित्र॑-म॒र्चिषि॑ । अ॒ग्ने वि॒तत॑-म॒न्तरा॑ ।
ब्र॒ह्म ते॒न पु॒नीम॑हे । उ॒भाभ्यां॑ दे॒व स॒वितः॑ ।
प॒वित्रे॑ण स॒वेन॑ च । इ॒दं ब्र॒ह्म पु॒नीम॑हे ।
वैश्व॑दे॒वी पु॒नती॑ दे॒व्यागा॑त् । य॒स्यै ब॒ह्वी-स्त॑नु॒वो वी॒तपृ॑ष्ठाः ।
तया॑ म॒दन्त॑-स्स॒धमा॑द्येषु । व॒यँ स्या॑म प॒तयो॑ र॒यीणां॑ । २

वैश्वान॑रो र॒श्मिभि॑र्मा पु॒नातु॑ । वा॒तः प्रा॒णेने॑षि॒रो म॒यो भूः॑ ।
द्या॒वापृ॑थि॒वी प॒यसा॑ प॒योभिः॑ । ऋ॒ताव॑री य॒ज्ञिये॑ मा पु॒नीतां॑ ।
बृ॒हद्भि॑-स्स॒वित॑स्तृ॒भिः । व॒र्षि॑ष्ठै र्दे॒वम॑न्म॒भिः ।
अ॒ग्ने दक्षैः॑ पु॒नाहि॑ मा । ये॒न दे॒वा अ॒पुन॑त । ये॒नापो॑ दि॒व्यं क॑शः ।
ते॒न दि॒व्येन॑ ब्र॒ह्मणा॑ । ३

इ॒दं ब्र॒ह्म पु॒नीम॑हे । यः पा॒वमा॑नी-र॒द्ध्येति॑ ।
ऋ॒षिभि॑-स्सं॒भृत॑ँ र॒सं । स॒र्वँ स॒ पूत॑मश्नाति ।
स्व॒दितं॑ मा॒तरि॑श्व॒ना । पा॒वमा॑नी॒र्यो अ॒द्ध्येति॑ ।

ऋषिभि-स्संभृतं॑ रसं॑ । तस्मै॑ सरस्वती दुहे ।
क्षीरं॑ सर्पि मधूदकं॑ । पावमानी॑ स्स्वस्त्ययनीः॑ ॥ 4

सुदुघा॑ हि पयस्वतीः॑ । ऋषिभि-स्संभृतो॑ रसः॑ ।
ब्राह्मणेष्व-मृतं॑ हितं॑ । पावमानी॑ दिशन्तु नः ।
इमं॑ लोकमथो॑ अमुं॑ । कामान्थ् समर्द्धयन्तु नः ।
देवी॑ देवैः॑ समाभृताः॑ । पावमानी-स्स्वस्त्ययनीः॑ ।
सुदुघा॑ हि घृतश्चुतः॑ । ऋषिभि-स्संभृतो॑ रसः॑ ॥ 5

ब्राह्मणेष्व-मृतं॑ हितं॑ । येन॑ देवाः पवित्रेण॑ ।
आत्मानं॑ पुनते॑ सदा॑ । तेन॑ सहस्र॑ धारेण॑ ।
पावमान्यः॑ पुनन्तु॑ मा । प्राजापत्यं॑ पवित्रं॑ ।
शतोद्यामं॑ हिरण्मयं॑ । तेन॑ ब्रह्म॑ विदो॑ वयं॑ ।
पूतं॑ ब्रह्म॑ पुनीमहे॑ । इन्द्र-स्सुनीती॑ सहमा॑ पुनातु॑ । 6

सोम-स्स्वस्त्या॑ वरुण-स्समीच्या॑ । यमो॑ राजा॑ प्रमृणाभिः॑
पुनातु॑ मा । जातवेदा॑ मोर्जयन्त्या॑ पुनातु॑ । भूर्भुवस्सुवः॑ ॥

तच्छं॑योरा॑ वृणीमहे॑ । गातुं॑ यज्ञाय॑ । गातुं॑ यज्ञपतये॑ ।

दै॒वी॑ स्व॒स्तिरस्तु॑ नः । स्व॒स्ति॑ मा॒नु॒षेभ्यः॑ ।
ऊ॒र्ध्वं॑ जि॒गातु॑ भे॒ष॒जं । श॒न्नो॑ अस्तु द्वि॒पदे॑ । शं चतु॑ष्पदे ॥

3.6.1 वास्तु मन्त्रः

वास्तो॑ष्पते॒ प्रति॑जानी ह्य॒स्मान्त् स्वा॑वेशो॒ अन॑मीवो भ॒वा नः॑ ।
यत्त्वे॑ म॒हे प्रति॑ तन्नो॒ जुष॑स्व श॒न्न ए॒धि द्वि॒पदे॑ शं चतु॑ष्पदे ।
वास्तो॑ष्पते श॒ग्मया॑ स॒ꣳ सदा॑ ते स॒क्षीम॑हि र॒ण्वया॑ गातु॒ मत्या॑ ।
आ वः॑ क्षे॒म उ॒त यो॒गे व॒रन्नो॑ यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॑-स्स॒दानः॑ ।
वास्तो॑ष्पते प्र॒तर॑णो न ए॒धि गो॑भिरश्चे-भिरि॒न्दो ।
अ॒जरा॑सस्ते स॒ख्ये स्या॑म पि॒तेव॑ पु॒त्रान् प्रति॑ नो जुष॑स्व ।
अमी॑वहा वास्तो॑ष्पते वि॒श्वा रू॒पाण्या॑ वि॒शन् ।
सखा॑ सु॒शेव॑ ए॒धिनः॑ । शि॒वꣳ शि॒वं ।
भूर्भु॑वस्सु॒वो भूर्भु॑वस्सु॒वो भूर्भु॑वस्सु॒वः ॥

3.6.2 वरुण उद्घापनं

ओं नमो॑ ब्र॒ह्मणे॑ नमो॑ अ॒स्त्वग्नये॑ नमः॑ पृ॒थिव्यै॑ नम॑ ओष॒धीभ्यः॑ ।
नमो॑ वा॒चे नमो॑ वा॒चस्प॑तये॒ नमो॑ वि॒ष्णवे॑ बृ॒हते॑ करोमि । (त्रिवारं जपेत्)

वरुणाय नमः सकलाराधनैः स्वर्चितं ।

तत्त्वा॑ यामि॑ ब्रह्म॑णा वन्द॑मानस्तदा॑ शास्ते॑ यज॑मानो हवि॑र्भिः ।
अहे॑डमानो वरु॑णेह बो॒ध्युरु॑शं स॒ मा न॒ आयुः॑ प्रमो॑षीः ॥

ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रों । अस्मात् कुं॑भात् आवा॒हितं॑ सकल-ती॒र्थाधि॑पतिं
वरु॑णं यथा॒स्थानं॑ प्रतिष्ठापयामि । शोभ॑नार्थे॒ क्षेमा॑य पुनरागमनाय च ।

3.6.3 प्रोक्षण मन्त्राः

देव॑स्यत्वा सवि॒तुः प्र॑सवे । अ॒श्विनो॑ ब॒र्हुभ्यां॑ । पू॒ष्णो हस्ता॑भ्यां ।
अ॒श्विनो भै॑षज्येन । तेज॑सेऽ ब्रह्म॑वर्चसाया॒ भिषि॑ञ्चामि ॥

देव॑स्यत्वा सवि॒तुः प्र॑सवे । अ॒श्विनो॑ ब॒र्हुभ्यां॑ ।
पू॒ष्णो हस्ता॑भ्यां । सर॑स्वत्यै भैषज्येन ।
वी॒र्या॑या-न्नाद्या॑या भिषि॑ञ्चामि ॥

देव॑स्यत्वा सवि॒तुः प्र॑सवे । अ॒श्विनो॑ ब॒र्हुभ्यां॑ । पू॒ष्णो हस्ता॑भ्यां ।
इन्द्र॑स्ये-न्द्रि॒येण॑ । श्रि॒यै यश॑से ब॒लाया॑ भिषि॑ञ्चामि ।
सोम॑ं राजा॒नं वरु॑ण-मग्नि॑ मन्वा॒रभाम॑हे ।
आदि॑त्यान् विष्णु॑ं सूर्यं॑ ब्रह्मा॑णञ्च बृह॑स्पतिं ॥

दे॒वस्य॑त्वा स॒वितुः॑ प्र॒सवे॑ऽश्वि॒नो॑ ब॒र्हुभ्यां॑ पू॒ष्णो
 ह॒स्ताभ्या॑ꣳ स॒रस्व॑त्यै वा॒चो॑यन्तु र्यन्त्रेणा-ग्नेस्त्वा
 साम्रा॑ज्येना भिषि॑ञ्चामीन्द्र॒स्यत्वा॑ साम्रा॑ज्येना भिषि॑ञ्चामि
 बृ॒हस्प॑तेस्त्वा साम्रा॑ज्येना भिषि॑ञ्चामि ॥
 आ॒युरा॑शास्ते । सु॒प्रजा॑स्त्वमा-शास्ते ।
 सजा॑तवनस्यामा-शास्ते । उत्तरा॑न्देव-यज्यामा-शास्ते ।
 भू॒यो ह॑विष्करणमा-शास्ते । दि॒व्यन्धा॑मा-शास्ते ।
 वि॒श्वं प्रि॑यमा-शास्ते । यद॑नेन ह॒विषा॑-शास्ते ॥

Optional

तद॑ऽया-तद्दृ॒ध्यात् । तद॑स्मै दे॒वारा॑सन्तां ।
 तद॑ग्नि दे॒वो दे॒वेभ्यो॑ वन॑ते । वय॑मग्ने म॒नुषाः॑ ।
 इ॒ष्टं च॑ वी॒तं च॑ । उ॒भेच॑नो द्यावा॑ पृथि॒वी अꣳ ह॑स॒स्यातां॑ ।
 इ॒ह गति॑ व॒र्मस्ये॑दं च॑ । नमो॑ दे॒वेभ्यः॑ ॥

द्रु॒पदा॑दिवेन् मुमु॒चानः॑ । स्वि॒न्नः-स्ना॑त्वी म॒लादि॑व ।
 पू॒तं प॒वित्रे॑णे वा॒ज्यं । आपः॑ शु॒न्धन्तु॑ मै॒नसः॑ ।
 भूर्भु॑वस्सुवो भूर्भु॑वस्सुवो भूर्भु॑वस्सुवः ॥

प्राशन मन्त्रः

आप॒ इ॒द्वा उ॒भे॒ष॒जीः । आपो॑ अमी॒व चा॒तनीः॑ ।
आप॒स्सर्व॑स्य भे॒ष॒जी । तास्ते॑ कृ॒ण्वन्तु॑ भे॒ष॒जं ॥

अकाल मृत्यु हरणं सर्व व्याधि निवारणं ।

सर्व(समस्त) पापक्षयहरं (देवता नाम) वरुण पातोदकं शुभं ।

स्त्रीणां प्राशने

आम॒या॒वी चि॒न्वी॒त । आपो॑ वै भे॒ष॒जं ।
भे॒ष॒जमे॒वास्मै॑ करोति । सर्व॒मायु॑रेति ॥

3.6.4 ग्रह प्रीति

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं
ग्रहप्रीतिकर हिरण्यदानं करिष्ये ।

हिरण्यगर्भं गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।

अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।

मया सङ्कल्पित श्रीरुद्र एकादशिन्याख्य (महारुद्राख्य*) महाप्रायश्चित्त
रूप शिवाराधन कर्म आरंभ मुहूर्त लग्नापेक्षया, आदित्यानां नवानां
ग्रहाणां आनुकूल्य सिद्धर्थं, ये ये ग्रहाः शुभ स्थानेषु स्थिताः ये ये
ग्रहाः शुभ इतर स्थानेषु स्थिताश्च, तेषां तेषां ग्रहाणां अत्यन्त

अतिशयित शुभफल-प्रसातृत्व सिद्ध्यर्थं आदित्यादि नवग्रह पसाद सिद्ध्यर्थं, यत् किञ्चित् हिरण्यं ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

3.6.5 पूर्वांग नान्दी श्राद्धं

सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्मणः

पूर्वांगत्वेन विहित नान्दी श्राद्धे ये विहिताः तेषामिदमासनं ।

(इति सर्वेषां आसनाद्युपचारं कुर्यात्)

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः । अनन्त पुण्य फलतं अतः

शान्तिं प्रयश्चमे । सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*)

कर्मणः पूर्वांगत्वेन विहित नान्दी श्राद्धे ये विहिताः

तेषां प्रीयर्थं इदं हिरण्यं ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ॥

ओं तत् सत् । नान्दीशोभन देवताः प्रीयन्तां ।

3.6.6 वैष्णव श्राद्धं

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः । अनन्त पुण्य फलतं अतः

शान्तिं प्रयश्चमे । सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*)

कर्मणः पूर्वांगत्वेन विहित वैष्णव श्राद्धे महाविष्णु प्रीयर्थं इदं हिरण्यं

ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

3.6.7 गोदानं

परमेश्वर स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनं । सकलाराधनैः स्वर्चितं ।
हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।
अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।
गवामंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ।
तस्मास्वस्याः प्रदानेन अतः शान्तिं प्रयश्च मे ॥
सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्मणः
पुर्वाङ्गत्वेन विहित गोप्रतिनिधि हिरण्यं (गोमूल्यं) सदक्षिणाकं
तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ओं तत् सत् । परमेश्वर प्रीयतां ॥

3.6.8 दश दानं

परमेश्वर स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनं । सकलाराधनैः स्वर्चितं ।
हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।
अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।
गो, भू, तिल, हिरण्य, आज्य, वासः, धान्यः, गुळः, रौप्य लवणाख्य
दशद्रव्यानां प्रतिनिधि यत् किञ्चित इदं हिरण्यं सदक्षिणाकं
तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

3.6.9 कृच्छ्राचरणं

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।

अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।

श्री रुद्रैकादशिन्याख्य (महारुद्राख्य*) महाप्रायश्चित्त शिवाराधन योग्यता सिद्ध्यर्थं पूतत्व सिद्ध्यर्थं कृच्छ्राचरण प्रतिनिधि यत् किञ्चित इदं हिरण्यं सदक्षिणाकं ब्राह्मणेभ्यः तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

3.6.10 ऋत्विग् वरणं

अस्मिन् रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्मणि महादेव (कलश) पूजा रुद्र जप होमार्थं ऋत्विजं वृणे । (एवं भवोद्भव पर्यन्तं वृत्वा)

3.6.11 आचार्य वरणं

अस्मिन् रुद्रैकादशिनी(महारुद्र*) कर्मणि आदित्यामक रुद्र कलश पूजा रुद्र जप होमार्थं सकल कर्म कर्तुं आचार्यं त्वां वृणे ।

3.6.12 ऋत्विग् वरणं (Rutvik performing Abishekam)

अस्मिन् रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्मणि महान्यास पूर्व रुद्रजप एकादशवार रुद्रजप अभिषेकार्थं ऋत्विजं त्वां वृणे ।

सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्म अन्योन्य सहायेन कुरुध्वं । (वयं कुर्मः –इति ब्राह्मण प्रतिवचनं)

3.6.13 आचार्यस्य ऋत्विजां च संकल्पः

आचमनं-पवित्रं-दर्भासनं दर्भान् धारयमाणं- शुक्लांबरधरं
प्राणायामं ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,
शुभे शोभने मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वत
मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने
व्यवहारिके प्रभवादि- षष्ठ्याः -संवत्सराणां मध्ये
नामसंवत्सरे,अयने ऋतौ मासे
.....पक्षे शुभतिथौ वासरयुक्तायां
..... नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल
विशेषण विशिष्टायां अस्यांशुभतिथौ
नक्षत्रे.....राशौ जातस्यशर्मणः अस्य
यजमानस्य सकुटुंबस्य महादेवादीनां रुद्राणां प्रसादसिद्ध्यर्थं
सर्वारिष्ट शान्त्यर्थं सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं यजमान संकल्पित
रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्म अन्योन्य सहायेन वयं करिष्यामः ।
"महादेव पूजां करिष्यामि, शिव रुद्र इत्यादि तत् तत् देवता पूजां
करिष्यामि" ॥ (इति संकल्प्य कलशादि पूजां कुर्युः)

3.6.14 कलशादिपूजा

कलशाय नमः । दिव्यगन्धान् धारयामि ।

गंगायै नमः । यमुनायै नमः । गोदावर्यै नमः । सरस्वत्यै नमः ।

नर्मदायै नमः । सिन्धवे नमः । कावेर्यै नमः ।

सप्तकोटि महातीर्थान् आवाहयामि ।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं॑ सर्वं॑ विश्वा॑ भूतान्यापः॑ प्राणा वा आपः॑ पशव॑
आपोऽन्नमापो-ऽमृतमाप-स्सम्राडापो विराडाप-स्स्वराडाप-
श्छन्दा॑स्यापो ज्योती॑ष्यापो यजू॑ष्याप-स्सत्यमाप-स्सर्वा॑
देवता॑ आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं ।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वणः ।

अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशांबु समाश्रिताः ।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति

नर्मदा सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः ।

आयान्तु शिवपूजार्थं दुरितक्षय-कारकाः ।

ओं भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः ॥

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि, आत्मानं च प्रोक्ष्य ।)

3.6.15 शंखपूजा

(कलशजलेन शंखं प्रक्षाल्य, पुनः कलशजलेन शंखं गायत्र्या प्रपूर्यः)

पाञ्चजन्याय नमः । दिव्यगन्धान् धारयामि ।

(शंखमूले) ब्रह्मणे नमः । (शंखमध्ये) जनार्दनाय नमः ।

(शंखाग्रे) चन्द्रशेखराय नमः ।

(इति अभ्यर्च्य । शंखं स्पृष्ट्वा जपेत् ।)

शंखं चन्द्रार्कदैवत्यं मध्ये वरुणसंयुतं ।

पृष्ठे प्रजापतिश्चैव अग्रे गंगा सरस्वती ॥

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया

शंखे तिष्ठति विप्रेन्द्राः तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ।

त्वं पुरासागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे

पूजितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तुते ।

गर्भा देवारिनारीणां विशीर्यन्ते सहस्रधा
तव नादेन पाताळे पाञ्चजन्य नमोऽस्तुते ।

ओं पाञ्चजन्याय विद्महे पवमानाय धीमहि ।
तन्नः शंखः प्रचोदयात् ॥ (इति त्रिवारं जपित्वा)

अग्रैर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेत सोयं पाञ्चजन्यं बहव-स्समिन्धते ।
विश्वस्यां विशि प्रविविशिवाँ समीमहे स नो मुञ्चत्वँ हसः ।
(इति शंखजलं कलशजले किञ्चित् आसिच्य, शिष्टजलेन
ओं भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः इति सर्वोपकरणानि
प्रोक्ष्य, आत्मानं च प्रोक्ष्य, कलशोदकेन पुनश्च शंखं गायत्र्या
पूरयित्वा)

3.6.16 आत्मपूजा

आत्मने नमः । दिव्यगन्धान् धारयामि । आत्मने नमः ।
अन्तरात्मने नमः । योगात्मने नमः । जीवात्मने नमः ।
परमात्मने नमः । ज्ञानात्मने नमः । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।
देहो जीवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः ।
त्यजेदज्ञान निर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ।

3.6.17 पीठपूजा

आधारशक्त्यै नमः	मूलप्रकृत्यै नमः
आदिकूर्माय नमः	आदिवराहाय नमः
अनन्ताय नमः	पृथिव्यै नमः
रत्नमण्डपाय नमः	रत्नवेदिकायै नमः
स्वर्णस्तंभायै नमः	श्वेतछत्राय नमः .
कल्पकवृक्षाय नमः	क्षीरसमुद्राय नमः
सितचामराभ्यां नमः	योगपीठासनाय नमः

3.6.18 नन्दिकेश्वर अनुज्ञा

वेदान्त-वेद्याखिल विश्वमूर्ते विभो विरूपाक्ष विशेषशून्य ।
विश्वेश्वराशेष-गणेशवन्द्य कवाट-मुद्घाटय कालाकाल
नन्दिकेश्वराय नमः ।
नन्दिकेश्वर सर्वज्ञ शिवध्यान परायण
महेश्वरस्य पूजार्थं अनुज्ञां दातुमर्हसि ।

3.7 पञ्चकलश स्थापनं

3.7.1 पश्चिमं

सद्यो॑ जा॒तं प्र॑पद्यामि सद्यो॑ जा॒ताय॒ वै नमो॑ नमः॑ । भवे॑ भवे॑
नाति॑भवे॑ भव॒स्व मां । भवो॑द्भवाय॒ नमः॑ ॥ ओं भूर्भुव॒स्सुव॒रो ।
अस्मिन् पश्चिमकलशे सद्योजातं ध्यायामि । आवाहयामि ।

3.7.2 उत्तरं

वामदे॒वाय॒ नमो॑ ज्येष्ठाय॒ नमः॑ श्रेष्ठाय॒ नमो॑ रुद्राय॒ नमः॑ काला॒य नमः॑
कल॒विक॒रणा॒य नमो॑ बल॒विक॒रणा॒य नमो॑ बला॒य नमो॑ बलप्रमथना॒य
नमः॑ सर्व॑भूतदमना॒य नमो॑ मनो॒न्मना॒य नमः॑ । ओं भूर्भुव॒स्सुव॒रो ।
अस्मिन् उत्तरकलशे वामदेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

3.7.3 दक्षिणं

अघो॑रे॒भ्यो ऽथ॑घो॑रे॒भ्यो घो॑रघो॑रतरे॒भ्यः । सर्वे॑भ्यः सर्व॑शर्वे॒भ्यो
नम॑स्ते अस्तु रु॒द्ररू॒पेभ्यः॑ ॥ ओं भूर्भुव॒स्सुव॒रो ।
अस्मिन् दक्षिणकलशे अघोरं ध्यायामि । आवाहयामि ।

3.7.4 पूर्व

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥
ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् पूर्वकलशे तत्पुरुषं ध्यायामि ।
आवाहयामि ।

3.7.5 मध्यमं

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोऽधिपति
ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवो ॥ ओं भूर्भुवस्सुवरो ।
अस्मिन् मध्यम कलशे ईशानं ध्यायामि । आवाहयामि ।
स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत् पूजावसानकं तावत् त्वं प्रीतिभावेन
कुंभेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।
आवाहितो भव । स्थापितो भव । सन्निहितो भव । सन्निरुधो भव ।
अवकुण्ठितो भव । सुप्रीतो भव । सुप्रसन्नो भव । वरदो भव ।
स्वागतं अस्तु । प्रसीद प्रसीद ।

3.7.6 उपचारपूजा

सद्यो जाताय वै नमो नमः – रत्नसिंहासनं समर्पयामि ।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां – पाद्यं समर्पयामि ।
भवोद्भवाय नमः – अर्घ्यं समर्पयामि ।

वामदेवाय नमः	– आचमनीयं समर्पयामि ।
ज्येष्ठाय नमः	– मधुपर्कं समर्पयामि ।
श्रेष्ठाय नमः	– स्नानं समर्पयामि ।
स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।	
रुद्राय नमः	– वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि ।
कालाय नमः	– यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि ।
कलविकरणाय नमः	– गन्धाक्षतान् समर्पयामि ।
बलविकरणाय नमः	– पुष्पाणि समर्पयामि ।
बलाय नमः	– धूपं आघ्रापयामि ।
बलप्रमथनाय नमः	– दीपं दर्शयामि ।
सर्वभूतदमनाय नमः	– नैवेद्यं निवेदयामि ।
मनोन्मनाय नमः	– तांबूलं समर्पयामि ।
सपरिवार श्री सांबपरमेश्वराय नमः ।	
सर्वोपचारार्थं कर्पूरनीराजनं प्रदर्शयामि ।	
अघोरैभ्यो ऽथघोरैभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।	
सर्वैभ्यः सर्व शर्वैभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥	

शिव स्तुति

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरसर्व भूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणो
ऽधिपति ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवों ॥

(नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये ऽंबिकापतय
उमापतये पशुपतये नमो नमः ॥)

=====

4. महान्यासः

4.1 कलश प्रतिष्ठापन मन्त्राः

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमत-स्सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्निया उपमा अस्य विष्ठा-स्सतश्च योनि-मसतश्च विवः ।

नाके सुपर्ण मुपयत् पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्ष-तत्त्वा ।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युं ।

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णियं । भवा वाजस्य संगथे ।
यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा
भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु । १ (अप उपस्पृश्य)

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं । समूढमस्य पाञ्च सुरे ।

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त् समुद्रव्यचसं गिरः ।
रथीतमञ्च रथीनां वाजानाञ्च सत्यतिं पतिं ।

आपो वा इदं॑ सर्वं॑ विश्वा॑ भू॒तान्यापः॑ प्रा॒णा वा आपः॑ प॒शव॑
 आपोऽन्न॑मापो-ऽमृत॑माप-स्सम्राडापो॑ वि॒राडाप॑-स्स्वराडाप-
 इ॒च्छन्दा॑स्यापो॒ ज्योती॑ष्यापो॒ यजू॑ष्याप-स्सत्य॑माप-स्सर्वा॑
 दे॒वता॒ आपो॒ भूर्भुव॑स्सुवराप॒ ओं । 2

अपः॑ प्रणयति । श्रद्धा॑ वा आपः॑ । श्रद्धा॑मे॒वारभ्य॑ प्र॒णीय॑ प्रचरति ।
 अपः॑ प्रणयति ।

यज्ञो॑ वा आपः॑ । यज्ञ॑मे॒वारभ्य॑ प्र॒णीय॑ प्रचरति । अपः॑ प्रणयति ।
 वज्रो॑ वा आपः॑ । वज्र॑मे॒व भ्रातृ॑व्येभ्यः प्र॒हृत्य॑ प्र॒णीय॑ प्रचरति ।
 अपः॑ प्रणयति ।

आपो॑ वै रक्षो॒घ्नीः॑ । रक्ष॑सामप॒हत्यै॑ । अपः॑ प्रणयति ।
 आपो॑ वै दे॒वानां॑ प्रि॒यं धाम॑ । दे॒वाना॑मे॒व प्रि॒यं धाम॑ प्र॒णीय॑ प्रचरति ।
 अपः॑ प्रणयति ।

आपो॑ वै सर्वा॑ दे॒वताः॑ । दे॒वता॑ ए॒वारभ्य॑ प्र॒णीय॑ प्रचरति ।
 अपः॑ प्रणयति ।

आपो॑ वै शान्ताः॑ । शान्ता॑भिरे॒वास्य॑ शुचं॑ शमयति । दे॒वो वः॑
 स॒वितो॑त् पु॒नात्व॑-च्छि॒द्रेण॑ प॒वित्रे॑ण वसो॒स्सूर्य॑स्य र॒श्मिभिः॑ ॥ 3

कूर्चाग्रै रक्षसान् घोरान् छिन्धि कर्मविघातिनः ।

त्वामर्पयामि कुंभेऽस्मिन् साफल्यं कुरु कर्मणि ।

वृक्षराज समुद्भूताः शाखायाः पल्लवत्व चः ।

युष्मान् कुंभेष्वर्पयामि सर्वपापापनुत्तये ।

नाळिकेर-समुद्भूत त्रिनेत्र हर सम्मित ।

शिखया दुरितं सर्वं पापं पीडां च मे नुद ।

स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः ।

तं भागं चित्रमीमहे । (ऋग्वेद मन्त्रः)

तत्त्वा॑ यामि॑ ब्रह्म॑णा॒ वन्द॑मान-स्तदा॑शास्ते॒ यज॑मानो ह॒विर्भिः॑ ।

अहे॑डमानो वरु॒णेह॑ बो॒ध्युरु॑श॒ऽस मा॒ न आयुः॑ प्रमो॒षीः ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । अस्मिन् कुंभे वरुणमावाहयामि ।

वरुणस्य इदमासनं । वरुणाय नमः । सकलाराधनैः स्वर्चितं ।

रत्नसिंहासनं समर्पयामि । पाद्वं समर्पयामि ।

अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि ।

स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि । उपवीतं समर्पयामि ।

गन्धान् धारयामि । अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पाणि समर्पयामि ।

- | | |
|---------------------|----------------------|
| 1. ओं वरुणाय नमः | 2. ओं प्रचेतसे नमः |
| 3. ओं सुरूपिणे नमः | 4. ओं अपांपतये नमः |
| 5. ओं मकरवाहनाय नमः | 6. जलाधिपतये नमः |
| 7. ओं पाशहस्ताय नमः | 8. ओं तीर्थराजाय नमः |

ओं वरुणाय नमः । नानाविध परिमळ पत्र पुष्पाणि समर्पयामि ।

धूपं आघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि ।

धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः । तथ्स॑वितुर्व॑रि॒ण्यं॑ भ॒र्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि ।

धियो॑ यो॒न प्रचो॑दयात् ।

देव सवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि ।

(रात्रौ – ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि) ।

ओं वरुणाय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहा । ओं अपानाय स्वाहा । ओं व्यानाय स्वाहा ।

ओं उदानाय स्वाहा । ओं समानाय स्वाहा । ओं ब्रह्मणे स्वाहा ।

कदलीफलं निवेदयामि । मध्येमध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि ।

अमृतापिधानमसि । नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

तांबूलं समर्पयामि । कर्पूर नीराजनं प्रदर्शयामि ।

नीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । मन्त्र पुष्पं समर्पयामि ।

सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि । समस्तोपचरान् समर्पयामि ॥

4.2 महान्यास मन्त्रपाठ प्रारंभः

अथातः पञ्चांगरुद्राणां न्यासपूर्वकं जप-होमा-र्चना-भिषेक-

विधिं व्याख्यास्यामः

Note: The Mahanyasa Rishi here explains to his students the vidhi (method) and vyakyaanam (pooja) while teaching Mahanayasam and hence he uses the words

“विधिं व्याख्यास्यामः”.

Here you, as the kartha, are not doing "vidhi" ("vidhi" meaning the trial method as how to conduct the pooja) or "pooja vyakyaanam" (pooja explanation) but actually doing the pooja itself. Hence it would be more appropriate to say

“अथातः पञ्चांगरुद्राणां न्यासपूर्वकं जप-होमा-र्चनाभिषेकं

करिष्यमाणः ” ।

5. प्रथमः न्यासः

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा-ऽपापकाशिनी । तया न स्तनुवा
शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि । (शिखायै नमः) । 1

अस्मिन् महत्यर्णवे-ऽन्तरिक्षे भवा अधि ।
तेषां सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि । (शिरसे नमः) । 2

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यां ।
तेषां सहस्र-योजने-ऽवधन्वानि तन्मसि । (ललाटाय नमः) । 3

हंस-श्शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसब्धोता वेदिषदतिथिर् दुरोणसत् ।
नृषद्वर-सदृत-सद्व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ।
(भ्रुवोर्मध्याय नमः) । 4

त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं । उर्वारुकमिव बन्धनान्
मृत्योर् मुक्षीय मामृतात् । (नेत्राभ्यां नमः) । 5

नमः सुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च ।
(कर्णाभ्यां नमः) । 6

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
 वीरान्मानो रुद्र भामितो वधीर् हविष्मन्तो नमसा विधेम ते ।
 (नासिकाभ्यां नमः) । 7

अवतत्य धनुस्त्वꣳ सहस्राक्ष शतैषुधे ।
 निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव । (मुखाय नमः) । 8

नीलग्रीवा शिशितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः ।
 तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वानि तन्मसि । (कण्ठाय नमः) । 9A

नीलग्रीवा-शिशितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः ।
 तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वानि तन्मसि । (उपकण्ठाय नमः) । 9B

नमस्ते अस्त्वायुधाया-नातताय धृष्णवे ।
 उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने । (बाहुभ्यां नमः) । 10

या ते हेतिर् मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
 तयाऽस्मान् विश्वतस्त्व-मयक्ष्मया परिब्भुज । (उपबाहुभ्यां नमः) । 11

परि॑णो रु॒द्रस्य॑ हे॒तिर् वृ॑णक्तु॒ परि॑त्वेषस्य॒ दुर्म॑तिरघायोः ।
अव॑ स्थि॒रा म॒घवद्भ्यः॑ तनु॒ष्व मी॒द्वस्तो॑काय॒ तन॑याय मृडय ।

(मणिबन्धाभ्यां नमः) । 12

ये ती॒र्थानि॑ प्र॒चर॑न्ति सृ॒काव॑न्तो निष॒ङ्गिणः॑ ।
तेषां॑ सहस्रयो॒जनेऽ व॒धन्वा॑नि तन्मसि । (हस्ताभ्यां नमः) । 13

सद्यो॑ जा॒तं प्र॑पद्यामि सद्यो॑ जा॒ताय॑ वै नमो॒ नमः॑ । भवे॑ भवे॒ नाति॑ भवे॒
भव॑स्व मां । भवोद्-भवाय॒ नमः॑ ॥ (अंगुष्ठाभ्यां नमः) । 14A

वाम॑देवाय॒ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ नमः॒ श्रे॒ष्ठाय॑ नमो॒ रुद्रा॑य॒ नमः॑ का॒लाय॑ नमः॒
कल॑विकर॒णाय॑ नमो॒ बल॑विकर॒णाय॑ नमो॒ बला॑य॒ नमो॑ बलप्रमथनाय॒
नमः॑ सर्व॑भूतदमनाय॒ नमो॑ मनो॒न्मनाय॑ नमः॒ । (तर्जनीभ्यां नमः) 14B

अ॒घोरे॑भ्यो ऽथ॒घोरे॑भ्यो॒ घोर॑घोरतरेभ्यः । सर्वे॑भ्यः सर्व॒ शर्वे॑भ्यो॒ नम॑स्ते
अस्तु॑ रु॒द्र रू॒पेभ्यः॑ ॥ (मध्यमाभ्यां नमः) । 14 C

तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ म॒हादे॒वाय॑ धीमहि ।
तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॒चोद॑यात् ॥ (अनामिकाभ्यां नमः) । 14D

ई॒शानः॑ सर्व॑विद्या॒ना-मी॒श्वरः॑ सर्व॑भू॒तानां॑ ब्र॒ह्माधि॑पति॒र् ब्र॒ह्म॒णोऽधि॑पति॒र् ब्र॒ह्मा॑ शिवो मे अस्तु सदाशिवो॑ ॥ (कनिष्ठिकाभ्यां नमः) 14E

नमो॑ वः कि॒रि॒केभ्यो॑ दे॒वानां॑ हृ॒दये॑भ्यः । (हृदयाय नमः) । 15

नमो॑ ग॒णेभ्यो॑ ग॒णप॑तिभ्यश्च वो नमः॑ । (पृष्ठाय नमः) । 16

नमो॑ हि॒र॒ण्यबा॑हवे से॒नान्ये॑ दि॒शाञ्च॑ पत॒ये नमः॑ । (पार्श्वाभ्यां नमः) । 17

विज्यं॑ धनुः॑ कप॒र्दिनो॑ वि॒शल्यो॑ बा॒णवा॑ उ॒त ।

अने॑शन्नस्येषव आ॒भुर॑स्य निष॒ङ्ग॒थिः॑ । (जठराय नमः) । 18

हि॒र॒ण्यग॑र्भ स्समव॑र्त्तता॒ग्रे भू॒तस्य॑ जा॒तः प॑तिरेक॑ आसीत् । सदा॑धार
पृ॒थि॒वीं द्या॑मु॒तेमां॑ कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ वि॒धेम॑ । (नाभ्यै नमः) । 19

मी॒ढु॒ष्टम॑ शिव॑तम शिवो नस्सु॒मना॑ भव । पर॑मे वृ॒क्ष आ॑यु॒धं नि॒धाय॑
कृ॒त्तिं व॑सान आ॒चर॑ पिना॒कं बि॒भ्रदा॑गहि । (कठ्यै नमः) । 20

ये भू॒ताना॑-मधि॑पतयो वि॒शिखा॑सः॑ कप॒र्दिनः॑ ।

तेषां॑ सह॒स्रयो॑जने ऽव॒धन्वा॑नि तन्म॒सि । (गुह्याय नमः) । 21

ये अ॒न्नेषु॑ वि॒विध्यन्ति॑ पा॒त्रेषु॑ पि॒बतो॑ ज॒नान् ।
तेषां॑ स॒हस्र॑यो॒जनेऽ॒वध॑न्वा॒नि तन्म॑सि । (अण्डाभ्यां नमः) । 22

स शि॒रा जा॒तवे॑दा अ॒क्षरं॑ प॒रमं॑ प॒दं । वेदा॑नां॒ शिर॑सि मा॒ता
आ॒युष्म॑न्तं करो॒तु मां । (अ॒पा॒नाय॑ नमः) । 23

मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न उ॒क्षन्त॑मु॒त मा न उ॒क्षितं॑ ।
मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र री॑रिषः ।
(ऊ॒रुभ्यां॑ नमः) । 24

ए॒ष ते रु॒द्रभा॑ग-स्त॒ञ्जुष॑स्व तेना॒वसे॑न प॒रो मू॒जव॑तो-ऽती॒ह्यव॑तत-
ध॒न्वा पि॑ना॒कह॑स्तः कृ॒त्तिवा॑साः । (जा॒नुभ्यां॑ नमः) 25

सं सृ॒ष्टजि॑त्सोमपा बा॒हु-श॒र्ध्यूर्ध्व॑ ध॒न्वा प्र॑तिहि॒ता-भि॑रस्ता ।
बृ॒हस्प॑ते परि॒दीया॑ रथे॒न रक्षो॑हा-ऽमि॒त्रा अप॑बाध॒मानः॑ ।
(जं॒घाभ्यां॑ नमः) 26

वि॒श्वं भू॑तं भु॒वनं चि॒त्रं बहु॑धा जा॒तं जा॑य॒मानं च॑ यत् ।
सर्वो॑ ह्ये॒ष रु॒द्र-स्त॑स्मै रु॒द्राय॑ नमो॑ अस्तु ॥ (गुल्फाभ्यां नमः) 27

ये प॒थां प॒थिर॒क्षय॑ ऐ॒ल॒बृ॒दा य॒व्यु॒धः ।

तेषां॑ सह॒स्रयो॒जने॒ ऽव॒ध॒न्वा॒नि त॒न्म॒सि । (पा॒दाभ्यां॑ नमः) । 28

अ॒ध्य॒वो॒च-द॒धि॒व॒क्ता प्र॒थ॒मो दै॒व्यो भि॒षक् । अ॒ही॒श्च॒ सर्वा॑न्
ज॒भय॑न् थ्स॒र्वाश्च॑ या॒तु धा॒न्यः । (क॒व॒चाय॑ हुं) । 29

नमो॑ बि॒ल्मि॒ने च॑ क॒व॒चि॒ने च॑ नमः॑ श्रु॒ताय॑ च॑ श्रु॒तसे॒नाय॑ च॑ ।
(उ॒प॒क॒व॒चाय॑ हुं) 30

नमो॑ अस्तु॑ नी॒ल॒ग्री॒वाय॑ सह॒स्रा॒क्षाय॑ मी॒ढुषे॑ । अथो॒ ये अ॒स्य
स॒त्वा॒नोऽहं॑ तेभ्यो॑ ऽक॒र॒न्नमः॑ । (ने॒त्र॒त्रया॑य॒ वौषट्) 31

प्र॒मु॒ञ्च॑ ध॒न्व॒न॒स्त्व-मु॒भयो॑-रा॒र्त्तियो॒ज्या ।
याश्च॑ ते॒ हस्त॑ इ॒षवः॑ प॒रा ता॑ भ॒गवो॑ वप । (अ॒स्त्राय॑ फट्) 32

य ए॒ताव॑न्तश्च॒ भूया॑स्सश्च॒ दि॒शो रु॒द्रा वि॒त॒स्थि॒रे ।
तेषां॑ सह॒स्रयो॒जने॒ ऽव॒ध॒न्वा॒नि त॒न्म॒सि । (इति॑ दि॒ग्ब॒न्धः) 33

-----इति प्रथम न्यासः-----

(शिखादि अस्त्रपर्यन्तं एकत्रिंशदंगन्यासः दिग्बन्ध सहितः प्रथमः)

6. द्वितीय न्यासः

(ओं नमो भगवते रुद्रायेति नमस्कारान् न्यसेत्)

ओं नमः (मूर्ध्नि) ।

नं नमः (नासिकाग्रे) ।

मों नमः (ललाटाय) ।

भं नमः (मुखाय) ।

गं नमः (कण्ठाय) ।

वं नमः (हृदयाय) ।

तें नमः (दक्षिण हस्ताय) ।

रुं नमः (वाम हस्ताय) ।

द्रां नमः (नाभ्यै) ।

यं नमः (पादाभ्यां) ॥

-----इति द्वितीय न्यासः-----

मूर्धादि पादान्तं दशांग न्यासः द्वितीयः

7. तृतीयन्यासः

सद्यो॑ जा॒तं प्र॑पद्यामि सद्यो॑ जा॒ताय॑ वै नमो॑ नमः॑ । भवे॑ भवे॑ नाति॑भवे॑
भव॑स्व मां । भवो॑द् भवा॒य नमः॑ ॥ (पादाभ्यां नमः) । 1

वाम॑देवाय॑ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॑ नमो॑ रु॒द्राय॑ नमः॑ का॒लाय॑ नमः॑
कल॑विकर॒णाय॑ नमो॑ बल॑विकर॒णाय॑ नमो॑ बला॒य नमो॑ बल॑प्रमथ॒नाय॑
नम॑ स्सर्व॑भू॒तद॑मनाय॑ नमो॑ मनो॑न्मनाय॑ नमः॑ । (ऊरुभ्यां नमः) । 2

अ॒घोरे॑भ्यो ऽथ॒घोरे॑भ्यो घोर॑घोर॒तरे॑भ्यः । सर्वे॑भ्यः सर्व॑ शर्वे॑भ्यो नम॑स्ते
अस्तु॑ रु॒द्ररू॑पेभ्यः ॥ (हृदयाय नमः) । 3

तत्पु॑रुषाय॑ वि॒द्महे॑ महा॒देवाय॑ धीमहि॑ ।
तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॑चोदयात् ॥ (मुखाय नमः) । 4

ई॒शानः॑ सर्व॑विद्या॒ना-मी॑श्वर॒सर्व॑ भू॒तानां॑ ब्रह्मा॒धिप॑तिर्
ब्रह्म॑णोऽधि॒पति॑र् ब्रह्मा॑ शि॒वो मे॑ अस्तु॑ सदा॒शिवो॑ ॥
हंस॑ हंस॑ । (मूर्ध्ने नमः) । 5

7.1 हंस गायत्री

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्त्रस्य, अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः,
अनुष्टुप् छन्दः, परमहंसो देवता ।

हंसां बीजं, हंसीं शक्तिः । हंसूं कीलकं ।

परमहंस प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ 1

हंसां अंगुष्ठाभ्यां नमः । हंसीं तर्जनीभ्यां नमः ।

हंसूं – मध्यमाभ्यां नमः । हंसै – अनामिकाभ्यां नमः ।

हंसौ – कनिष्ठिकाभ्यां नमः । हंसः – करतल करपृष्ठाभ्यां नमः । 2

हंसां – हृदयाय नमः । हंसीं – शिरसे स्वाहा ।

हंसूं – शिखायै वषट् । हंसै – कवचाय हुं ।

हंसौ – नेत्रत्रयाय वौषट् । हंसः – अस्त्राय फट् ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः । 3

॥ ध्यानं ॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद् रूपदीपं तिमिरापहारं ।

पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपं ॥ 4

हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि । तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥ 5

(इति त्रिवारं जपित्वा)

हंस हंसेति यो ब्रूयाद् हंसो (ब्रूयाद्धंसो) नाम सदाशिवः ।

एवं न्यास विधिं कृत्वा ततः संपुटमारभेत् ॥ 6

7.2 दिक् संपुटन्यासः

देवता – इन्द्रः

दिक् – पूर्व

ओं भूर्भुवस्सुवरो । लं ।

त्रा॒ता॒र॒मिन्द्र॑-मवि॒तार॑-मिन्द्र॒ ॐ हवे॑ हवे सु॒हव॒ ॐ शूर॑मिन्द्रं ॥

हुवे॒ नु श॒क्रं पु॒रु॒हू॒तमिन्द्र॑ ॐ स्व॒स्ति नो॑ म॒घवा॑ धा॒त्विन्द्रः॑ ॥

लं इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावत वाहनाय सांगाय सायुधाय
सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । लं इन्द्राय नमः ।

पूर्व दिग्भागे (ललाटस्थाने) इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु । 1

देवता- अग्निः

दिक्- दक्षिणपूर्व (आग्नेय दिक्)

ओं भूर्भुवस्सुवरो । रं ।

त्व॒न्नो अ॒ग्ने व॒रु॒णस्य॑ वि॒द्वान् दे॒वस्य॑ हे॒डो॒ऽव या॑सि॒सी॒ष्ठाः ।

यजि॑ष्ठो व॒ह्नि॒तमः॑ शो॒शु॒चानो॑ वि॒श्वा द्वे॒षा॒ ॐ सि॒ प्र॒मु॒मु॒ग्ध्य॒स्मत् ॥

रं अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय सांगाय सायुधाय
सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । रं अग्नये नमः ।

आग्नेय दिग्भागे (नेत्रस्थाने) अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु । 2

देवता- यमः

दिक् - दक्षिणं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । हं ।

सु॒गन्त्रः॑ पन्थाम॒भयं॑ कृ॒णोतु॑ । यस्मिन्नक्ष॑त्रे यम एति॑ राजा॑ ॥

यस्मिन्ने॒न-म॒भ्यषि॑ञ्चन्त दे॒वाः । तदस्य॑ चि॒त्रं ह॒विषा॑ यजाम ।

अप॑ पा॒प्मानं॑ भ॒रणी॑ भ॒रन्तु॑ ।

हं यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय सांगाय सायुधाय

सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । हं यमाय नमः ।

दक्षिणदिग्भागे (कर्णस्थाने) यमः सुप्रीतो वरदो भवतु । 3

देवता- निर्ऋति

दिक् - दक्षिण पश्चिमं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । षं ।

असु॑न्वन्तम॒ यज॑मान-मिच्छ॑ स्तेन-स्येत्या॑न्त-स्कर॑स्यान्वेषि॑ ।

अ॒न्य-म॒स्म-दि॑च्छ॒ सा त॑ इत्या॒ नमो॑ दे॒वि निर्ऋ॑ते तुभ्यमस्तु ॥

षं निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय सांगाय सायुधाय

सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः ।

षं निर्ऋतये नमः । नैर्ऋत दिग्भागे (मुखस्थाने) निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु । 4

देवता- वरुणः

दिक् - पश्चिमं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । वं ।

तत्त्वा॑ यामि॒ ब्रह्म॑णा॒ वन्द॑मानस्तदा॒ शास्ते॑ यज॒मानो॑ ह॒विर्भिः॑ ।

अहे॑ड॒मानो॑ वरु॒णेह॑ बो॒द्ध्युरु॑श॒ः स॒ मा न॒ आयुः॑ प्रमो॒षीः॑ ॥

वं वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय सांगाय सायुधाय
सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । वं वरुणाय नमः ।

पश्चिमदिग्भागे (बाहुस्थाने) वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु । 5

देवता - वायुः

दिक्- उत्तर पश्चिमं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । यं ।

आ नो॑ नि॒युद्धि॑-॒शति॑नी-भि॒रध्व॑रं । स॒हस्रि॑णी॒भिरु॑प॒याहि॑ य॒ज्ञं ।

वायो॑ अ॒स्मिन् ह॒विषि॑ मादयस्व । यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॑स्सदा॒ नः ॥

यं वायवे सांकुशध्वज हस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय सांगाय
सायुधाय सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः ।

यं वायवे नमः । वायव्य दिग्भागे (नासिकास्थाने) वायुः

सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ 6

देवता – सोमः

दिक् – उत्तरं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । सं । वय॑ꣳ सोम॑ व्र॒ते तव॑ ।

मन॑स्त॒नूषु॑ बिभ्र॑तः । प्र॒जाव॑न्तो अशीमहि ॥

सं सोमाय॑ अमृतकलश॑ हस्ताय॑ नक्षत्राधिपतये॑ अश्ववाहनाय॑
सांगाय॑ सायुधाय॑ सशक्ति॑ परिवाराय॑ उमामहेश्वर॑ पार्षदाय॑ नमः ।

सं सोमाय॑ नमः । उत्तर दिग्भागे (हृदयस्थाने) सोमः

सुप्रीतो॑ वरदो॑ भवतु ॥ 7

देवता – ईशानः

दिक् – उत्तर पूर्व

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । शं ।

तमी॑शानं॑ (तमी॑शानं॑) जग॑त-स्त॒स्थुष॑स्पतिं॑ ।

धियं॑ जि॒न्वम॑वसे॒ हूम॑हे वयं॑ । पू॒षा नो॑ यथा॒ वेद॑ साम॒सद् वृ॒धे
रक्षि॑ता पा॒युरद॑ब्धः स्वस्त्ये॑ ॥

शं ईशानाय॑ शूलहस्ताय॑ विद्याधिपतये॑ वृषभवाहनाय॑ सांगाय॑ सायुधाय॑
सशक्ति॑ परिवाराय॑ उमामहेश्वर॑ पार्षदाय॑ नमः ।

शं ईशानाय॑ नमः । ऐशान दिग्भागे (नाभिस्थाने) ईशानः सुप्रीतो
वरदो॑ भवतु ॥ 8

देवता- ब्रह्मा

दिक् - ऊर्ध्व

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । अं ।

अ॒स्मे रु॒द्रा मे॒हना॒ पर्व॑तासो वृ॒त्रह॑त्ये भर॑ हूतौ सजोषाः॑ ॥

यश्शंस॑ते स्तु॒वते॒ धायि॑ प॒ञ्च इन्द्र॑ज्येष्ठा अ॒स्मा अव॑न्तु दे॒वाः ॥

अं ब्रह्म॑णे पद्म॒हस्ता॑य लोकाधिपतये हंसवाहनाय सांगाय सायुधाय

सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । अं ब्रह्म॑णे नमः ।

ऊर्ध्वदिग्भागे (मूर्धस्थाने) ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ 9

देवता-विष्णुः

दिक् - अधो दिक्

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । ह्रीं ।

स्यो॒ना पृ॒थिवि॑ भवा॑ ऽनृ॒क्षरा॑ नि॒वेश॑नी । यच्छा॑ नः शर्म॑ सप्र॒थाः ॥

ह्रीं विष्ण॑वे चक्र॒हस्ता॑य नागाधिपतये गरुडवाहनाय सांगाय सायुधाय

सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । ह्रीं विष्ण॑वे नमः ।

अधो दिग्भागे (पादस्थाने) विष्णुस्सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ 10

7.3 षोडशांग रौद्रीकरणं

(TS 1.3.3.1)

वि॒भूर॑सि प्र॒वाह॑णो रौ॒द्रेणानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 1

व॒हिर॑सि ह॒व्यवा॑हनो रौ॒द्रेणानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 2

श्वा॒त्रो॒सि प्र॒चे॒ता रौ॒द्रेणानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 3

तु॒थो॒सि वि॒श्ववे॑दा रौ॒द्रेणानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 4

उ॒शि॒ग॒सि क॒वी रौ॒द्रेणानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 5

अ॒ंघा॒रि॒र॒सि ब॒ंभा॒री रौ॒द्रेणानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 6

अ॒व॒स्यु॒र॒सि॒ दु॒व॒स्वा॒न् रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 7

शु॒न्ध्यु॒र॒सि॒ मा॒र्जा॒ली॒यो रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 8

स॒म्रा॒ड॒सि॒ कृ॒शा॒नू रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 9

प॒रि॒षद्यो॒सि॒ प॒व॒मा॒नो रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 10

प्र॒त॒क्वा॒सि॒ न॒भ॒स्वा॒न् रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 11

अ॒सं॒मृ॒ष्टो॒सि॒ ह॒व्य॒सू॒दो रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 12

ऋ॒त॒धा॒मा॒सि॒ सु॒व॒ज्यो॒ती रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 13

ब्र॒ह्मज्योति॑रसि॒ सुव॑र्द्धा॒मा रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ऽग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 14

अ॒जो॑स्येक॒पाद् रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ऽग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 15

अ॒हि॒रसि॑ बु॒ध्नियो॑ रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ऽग्ने
पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 16

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते । सर्वभूतेष्वपराजितो भवति ।
तथो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शाकिनी-
डाकिनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद् उपद्रवाद् उपघाताः ।
सर्वे (ग्रहाः) ज्वलन्तं पश्यन्तु । मां रक्षन्तु ।
यजमानं सकुटुम्बं रक्षन्तु । सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु ।

-----इति तृतीयः न्यासः-----

पादाति मूर्धान्तं पञ्चांग न्यासः तृतीयः

8. चतुर्थः न्यासः

8.1 मनो ज्योतिः

मनो॑ ज्योति॑ र्जुषता॑-माज्यं॑ विच्छिन्नं॑ यज्ञं॑ समिमं॑ दधातु ।
या इ॒ष्टा उ॒षसो॑ नि॒मृचश्च॑ तास्सन्दधामि॑ ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑ ।

(गुह्याय नमः) । 1 (TS 1.5.10.2)

अ॒बो॒द्ध्यग्निः॑ स॒मिधा॑ ज॒नानां॑ प्र॒तिधे॑नु-मि॒वाय॑ती मु॒षासं॑ ।
य॒ह्वा इ॒व प्र॒वया॑-मु॒ज्जिहा॑नाः प्र॒भान॑वः सि॒स्रते॑ नाक॒मच्छ॑ ।

(नाभ्यै नमः) । 2 (TS 4.4.4.2)

अ॒ग्नि मूर्धा॑ दि॒वः क॒कुत्प॑तिः पृ॒थिव्या॑ अ॒यं ।
अ॒पां रे॒तांसि॑ जि॒न्वति॑ । (हृदयाय नमः) । 3 (TS 1.5.5.1)

मूर्धा॑नं दि॒वो अ॒रतिं॑ पृ॒थिव्या॑ वै॒श्वान॑र-मृ॒ताय॑ जा॒तम॑ग्निं ।
क॒विं स॒म्राज॑-म॒तिथिं॑ ज॒नाना॑-मा॒सन्ना॑ पा॒त्रं ज॑नयन्त दे॒वाः ।
(कण्ठाय नमः) । 4 (TS 1.4.13.1)

म॒र्माणि॑ ते॒ वर्म॑भि॒रु॒च्छा-द॑यामि॒ सोम॑स्त्वा॒ राजा॑ऽमृते॒ नाभि॑वस्तां ।
उ॒रो॒ व॒री॒यो॒ वरि॑वस्ते॒ अस्तु॑ जयन्तं॒ त्वा म॑नु॒मद॑न्तु दे॒वाः ।

(मुखाय नमः) । 5 (TS 4.6.4.5)

जा॒तवे॑दा॒ यदि॑ वा पा॒वको॑ऽसि । वै॒श्वान॑रो॒ यदि॑ वा वै॒द्युतो॑ऽसि ।
शं प्र॒जाभ्यो॑ यज॒मानाय॑ लो॒कं । ऊ॒र्जं पु॒ष्टिं द॑द॒ द॒भ्याव॑ वृ॒थस्व ॥
(शिरसे नमः) ॥ 6 (TB 3.10.5.1)

8.2 आत्मरक्षा

(T.B.2.3.11.1 to T.B.2.3.11.4) for para for full "8.2")

ब्र॒ह्मा॒त्मन् व॑दसृ॒जत॑ । तद॑का॒मय॑त । स॒मा॒त्म॒ना प॑द्येयेति॒ ।
आ॒त्म॒न्ना-॒त्म॒न्नित्या॑-म॒न्त्रय॑त । तस्मै॑ द॒शम॑ हू॒तः प्र॑त्य॒शृणो॑त् ।
स द॑शहू॒तोऽभ॑वत् । द॑शहू॒तो ह॒वै ना॑मैषः । तं वा॑ ए॒तं द॑शहू॒तं स॑न्तं ।
द॑शहो॒तेत्या॑ चक्षते॒ परो॑क्षेण । प॒रोक्ष॑प्रि॒या इ॒व हि॑ दे॒वाः ॥ 1

आ॒त्म॒न्ना-॒त्म॒न्नित्या॑-म॒न्त्रय॑त । तस्मै॑ स॒प्तम॑ हू॒तः प्र॑त्य॒शृणो॑त् ।
स स॑प्तहू॒तोऽभ॑वत् । स॑प्तहू॒तो ह॒वै ना॑मैषः । तं वा॑ ए॒तं स॑प्तहू॒तं स॑न्तं ।
स॑प्तहो॒तेत्या॑ चक्षते॒ परो॑क्षेण । प॒रोक्ष॑प्रि॒या इ॒व हि॑ दे॒वाः ॥ 2

आ॒त्म॒न्ना-॒त्म॒न्नित्या-॒मन्त्र॑यत । तस्मै॑ ष॒ष्ठ॒ꣳ हू॒तः प्र॒त्य॒शृ॒णोत् ।
 स ष॒ड्भू॒तोऽभ॑वत् । ष॒ड्भू॒तो ह॒वै ना॒मैषः॑ । तं वा॑ ए॒त॒ꣳ ष॒ड्भू॒त॒ꣳ सन्तं॑ ॥
 ष॒ड्भू॒तेत्या च॑क्षते प॒रोक्षे॑ण । प॒रोक्ष॑प्रिया इ॒व हि दे॒वाः ॥ 3

आ॒त्म॒न्ना-॒त्म॒न्नित्या-॒मन्त्र॑यत । तस्मै॑ प॒ञ्च॒म॒ꣳ हू॒तः प्र॒त्य॒शृ॒णोत् ।
 स प॒ञ्च॒हू॒तोऽभ॑वत् । प॒ञ्च॒हू॒तो ह॒वै ना॒मैषः॑ । तं वा॑ ए॒तं प॒ञ्च॒हू॒त॒ꣳ सन्तं॑ ॥
 प॒ञ्च॒हो॒तेत्या च॑क्षते प॒रोक्षे॑ण । प॒रोक्ष॑प्रिया इ॒व हि दे॒वाः ॥ 4

आ॒त्म॒न्ना-॒त्म॒न्नित्या-॒मन्त्र॑यत । तस्मै॑ च॒तु॒र्थ॒ꣳ हू॒तः प्र॒त्य॒शृ॒णोत् ।
 स च॒तु॒र्हू॒तोऽभ॑वत् । च॒तु॒र्हू॒तो ह॒वै ना॒मैषः॑ । तं वा॑ ए॒तं च॒तु॒र्हू॒त॒ꣳ सन्तं॑ ॥
 च॒तु॒र्हो॒तेत्या च॑क्षते प॒रोक्षे॑ण । प॒रोक्ष॑प्रिया इ॒व हि दे॒वाः ॥ 5

तम॑ब्रवीत् । त्वं वा॑ मे नेदि॒ष्ठ॒ꣳ हू॒तः प्र॒त्य॒श्रौ॒षीः ।
 त्वयै॑ ना॒ना॒ख्या॒तार॑ इति । तस्मा॑न्नु॒हैना॒ꣳ-श्च॒तु॒र्हो॒तार॑ इत्याच॑क्षते ।
 तस्मा॑च्छु॒श्रू॒षुः पु॒त्राणा॑ꣳ हृ॒द्य॒तमः॑ । नेदि॒ष्ठो हृ॒द्य॒तमः॑ ।
 नेदि॒ष्ठो ब्र॒ह्म॒णो भ॑वति । य ए॒वं वा॑ वे॒द ॥ 6 (आ॒त्म॒ने नमः॑)

-----इति चतुर्थ न्यासः-----

गुह्यादि मस्तकान्त षडंगन्यासः चतुर्थः

9. पञ्चमः न्यासः

9.1 शिव संकल्पः

(Rig veda Khila Kaandam , 4th Capter , 11 Suktam – for full 9.1)

येन॑ दं॒ भू॒तं॑ भु॒वनं॑ भविष्यत् परिगृहीत-ममृतेन॑ सर्वं॑ । येन॑ य॒ज्ञस्ता॑यते
(य॒ज्ञस्त्रा॑यते) स॒प्तहो॑ता तन्मे॒ मनः॑ शिवसं॑कल्पमस्तु ॥ 1

येन॑ कर्मा॑णि प्रचरन्ति॑ धीरा॑ यतो॑ वाचा॑ मनसा॑ चारुयन्ति॑ ।
यथ् स॒म्मित॑मनु सँयन्ति॑ प्राणि॑नस्तन्मे॒ मनः॑ शिवसं॑कल्पमस्तु ॥ 2

येन॑ कर्मा॑ण्यपसो॑ मनी॒षिणो॑ य॒ज्ञे कृ॑ण्वन्ति विदथे॑षु धीराः॑ ।
यद॒पूर्वं॑ यक्ष॑मन्तः प्र॒जानां॑ तन्मे॒ मनः॑ शिवसं॑कल्पमस्तु ॥ 3

यत्प्र॒ज्ञान-मु॒त चे॒तो धृ॑तिश्च यज्ज्योति॑ रन्तरमृ॒तं प्र॒जासु॑ ।
यस्मान्न॑ ऋ॒ते किञ्च॑न कर्म॑ क्रियते तन्मे॒ मनः॑ शिवसं॑कल्पमस्तु ॥ 4

सुषा॑रथि-रश्वा॑निव यन्मनु॑ष्यान्ने नीयते-ऽभी॑शुभि॒र्वाजिन॑ इव ।
हृत्प्रति॑ष्ठं यदजि॑रं जवि॑ष्ठं तन्मे॒ मनः॑ शिवसं॑कल्पमस्तु ॥ 5

यस्मिन् ऋ॒चस्साम-यजू॑ँषि यस्मिन् प्रति॑ष्ठिता रथ॑नाभा॒ विवा॑राः ।
यस्मि॑ँश्चित्त॑ँ सर्व॑मोतं प्र॒जानां॑ तन्मे॒ मनः॑ शिवसं॑कल्पमस्तु ॥ 6

यदत्र षष्ठं त्रिंशत् सुवीरं यज्ञस्य गुह्यं नव नावमाय्यं ।
दश पञ्च त्रिंशत् यत्परं च तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 7

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 8

येनेदं विश्वं जगतो बभूव ये देवापि महतो जातवेदाः ।
तदेवाग्नि-स्तमसो ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 9

येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशश्च ।
येनेदं जगद् व्याप्तं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 10

ये मनो हृदयं ये च देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यरश्मिः ।
ते श्रोत्रे चक्षुषी सञ्चरन्तं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 11

अचिन्त्यं चा प्रमेयं च व्यक्ता-व्यक्तं परं च यत् ।
सूक्ष्मात् सूक्ष्मतरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 12

एका च दश शतं च सहस्रं चायुतं च नियुतं च प्रयुतं
 चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्च तन्मे मनः
 शिवसंकल्पमस्तु ॥ 13

ये पञ्च पञ्च दश शतं सहस्रं-मयुत-न्यर्बुदं च ।
 ते अग्नि-चित्येष्टकास्तं शरीरं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 14

वेदाहमेतं पुरुषं महान्त-मादित्य-वर्णं तमसः परस्तात् ।
 यस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 15

यस्येदं धीराः पुनन्ति कवयो ब्रह्माणमेतं त्वा वृणत इन्दुं ।
 स्थावरं जंगमं-द्यौराकाशं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 16

परात् परतरं चैव यत् पराश्चैव यत्परं ।
 यत्परात् परतो ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 17

परात् परतरो ब्रह्मा तत्परात् परतो हरिः ।
 तत्परात् परतो ऽधीशस्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 18

या वेदादिषु गायत्री सर्वव्यापी महेश्वरी ।
 ऋग् यजु-स्सामा-थर्वैश्च तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 19

यो वै देवं महादेवं प्रणवं परमेश्वरं ।

यः सर्वे सर्व वेदैश्च तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 20

प्रयतः प्रणवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तमं ।

ओंकारं प्रणवात्मानं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 21

योऽसौ सर्वेषु वेदेषु पठ्यते ह्यज ईश्वरः ।

अकायो निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 22

गोभिर्जुष्टं धनेन ह्यायुषा च बलेन च ।

प्रजया पशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 23

कैलासशिखरे रम्ये शंकरस्य शिवालये ।

देवतास्तत्र मोदन्ते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 24

त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं । उर्वारुकमिव बन्धनान्

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 25

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त उत विश्वतस्पात् ।

सं॒बा॒हु॒भ्यां॑-न॒मति॑ सं॒पत॒त्रै॑ द्या॒वा पृ॒थि॒वी ज॒नय॑न् दे॒व ए॒क॒स्त॒न्मे॒ मनः॑
शिव॑सं॒कल्प॑मस्तु ॥ 26

च॒तु॒रो वे॒दान॑धी॒यीत॑ सर्व॑ शा॒स्त्र॒मयं॑ वि॒दुः ।
इति॑हा॒स पु॒रा॒णा॒नां त॒न्मे॒ मनः॑ शिव॑सं॒कल्प॑मस्तु ॥ 27

मा नो॑ मा॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न॒ उक्ष॑न्तमु॒त मा न॑ उ॒क्षितं॑ ।
मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र री॒रिष॑स्त॒न्मे॒
मनः॑ शिव॑सं॒कल्प॑मस्तु ॥ 28

मा न॑स्तो॒के त॒नये॑ मा न॒ आयु॑षि मा नो॒ गोषु॑ मा नो॒ अश्वे॑षु री॒रिषः॑ ।
वी॒रा॒न्मा॒नो रु॒द्र भा॒मितो॑व॒धी र्ह॒विष्म॑न्तो न॒मसा॑ वि॒धेम॑ ते त॒न्मे॒ मनः॑
शिव॑सं॒कल्प॑मस्तु ॥ 29

ऋ॒तꣳ स॒त्यं प॑रं ब्र॒ह्म पु॒रुषं॑ कृ॒ष्णपि॑ङ्ग॒लं । ऊ॒र्ध्वरे॑तं वि॒रूपा॑क्षं
वि॒श्वरू॑पाय वै न॒मो न॒मस्त॒न्मे॒ मनः॑ शिव॑सं॒कल्प॑मस्तु ॥ 30

कद् रु॒द्राय॑ प्र॒चे॒तसे॑ मी॒ढुष्ट॑माय॒ तव्य॑से । वो॒चेम॑ श॒न्तमꣳ ह॒दे ।
सर्वो॑ ह्ये॒ष रु॒द्रस्त॑स्मै रु॒द्राय॑ न॒मो अस्तु॑ त॒न्मे॒ मनः॑ शिव॑सं॒कल्प॑मस्तु ॥ 31

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमत-स्सुरुचो वेन आवः ।
 स बुध्निया उपमा अस्य विष्ठा-स्सतश्च योनि-मसतश्च विवस्तन्मे
 मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 32

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
 य ईशो अस्य द्विपद-श्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम तन्मे मनः
 शिवसंकल्पमस्तु ॥ 33

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
 यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम तन्मे मनः
 शिवसंकल्पमस्तु ॥ 34

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश
 तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 35

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं । ईश्वरीं सर्व भूतानां तामि
 होपह्वये श्रियं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 36

य इदं॑ शिवसं॑कल्पं॑ सदा॑ ध्याय॑न्ति ब्राह्म॑णाः ।
ते परं॑ मोक्षं॑ गमिष्य॑न्ति तन्मे॑ मनः॑ शिवसं॑कल्पमस्तु॑ ॥ 37

(हृदयाय नमः)

9.2 पुरुष सूक्तं

(T.A.3.12.1 to T.A.3.12.7)

सहस्र॑शीर्षा॑ पुरु॑षः । सहस्रा॑क्षः सहस्र॑पात् ।
स भूमिं॑ विश्वतो॑ वृत्वा । अत्य॑तिष्ठद् दशाङ्गु॑लं ।
पुरु॑ष एवेदं॑ सर्वं॑ । यद् भू॑तं यच्च॑ भव्यं॑ ।
उता॑मृत॒त्वस्येशा॑नः । यदन्ने॑ना-तिरो॑हति ।
एता॑वानस्य॒ महि॑मा । अतो॒ ज्याया॑ञ्च॒ पुरु॑षः ॥ 1
पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑ । त्रि॒पाद॑स्या-मृतं॑ दि॒वि ।
त्रि॒पादू॑र्ध्व उदै॑त् पुरु॑षः । पादो॑ ऽस्येहाऽऽभ॑वात् पुनः॑ ।
ततो॑ विष्व॑ङ् व्यक्राम॑त् । सा॒शना॑न॒शने॑ अ॒भि ॥
तस्मा॑द् वि॒राड्जा॑यत । वि॒राजो॑ अ॒धि पू॑रुषः ।
स जा॑तो अत्य॑रिच्यत । प॒श्चाद् भूमि॑मथो॒ पुरः॑ ॥ 2
यत्पु॑रुषेण॒ हवि॑षा । दे॒वा य॑ज्ञम॒तन्व॑त ।
वस॑न्तो अस्या॑सीदाज्यं॑ । ग्री॒ष्म इ॒द्ध्म र॒शर॑द्ध॒विः ।

सप्तास्यासन् परिधयः । त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
 देवायद् यज्ञं तन्वानाः । अबध्नन् पुरुषं पशुं ॥
 तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् । पुरुषं जातमग्रतः ॥ 3

तेन देवा अयजन्त । साद्ध्या ऋषयश्च ये ।
 तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः । संभृतं पृषदाज्यं ।
 पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान् । आरण्यान् ग्राम्याश्च ये ।
 तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः । ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
 छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात् । यजुस्तस्मादजायत ॥ 4

तस्मादश्वा अजायन्त । ये के चोभयादतः ।
 गावो ह जज्ञिरे तस्मात् । तस्माज्जाता अजावयः ।
 यत्पुरुषं व्यदधुः । कतिधा व्यकल्पयन् ।
 मुखं किमस्य कौ बाहू । कावूरू पादावुच्येते ।
 ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् । बाहू राजन्यः कृतः ॥ 5

ऊरू तदस्य यद् वैश्यः । पद्भ्याँ शूद्रो अजायत ।
 चन्द्रमा मनसो जातः । चक्षोः सूर्यो अजायत ।

मुखा-दिन्द्रश्चाग्निश्च । प्राणाद् वायुरजायत ।
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं । शीष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमि दिशः श्रोत्रात् । तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥ 6

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं । आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे ।
सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः । नामानि कृत्वाभिवदन् यदास्ते ।
धाता पुरस्ता-द्यमुदाजहार । शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः ।
तमेवं विद्वानमृत इह भवति । नान्यः पन्था अयनाय विद्यते ।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः । तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमान-स्सचन्ते । यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः ॥ 7
(शिरसे स्वाहा)

9.3 उत्तर नारायणं

(T.A.3.13.1 to T.A.3.13.2)

अद्भ्यः संभूतः पृथिव्यै रसाच्च । विश्वकर्मणः समवर्तताधि ।
तस्य त्वष्टा विदधद् रूपमेति । तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे ।
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं । आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेवं विद्वानमृत इह भवति । नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ।
प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः । अजायमानो बहुधा विजायते ।

तस्य॑ धी॒राः॑ परि॒जान॑न्ति॒ योनिं॑ । मरी॑चीनां प॒दमि॑च्छन्ति वे॒धसः॑ ॥ १

यो दे॒वेभ्य॑ आ॒तप॑ति । यो दे॒वानां॑ पु॒रोहि॑तः ।

पूर्वो॑ यो दे॒वेभ्यो॑ जा॒तः । नमो॑ रु॒चाय॑ ब्रा॒ह्मये॑ ।

रुचं॑ ब्रा॒ह्मं ज॑नयन्तः । दे॒वा अ॒ग्रे तद॑ब्रुवन् ।

यस्त्वै॒वं ब्रा॒ह्मणो॑ वि॒द्यात् । तस्य॑ दे॒वा अ॒सन् व॑शे ।

ह्रीश्च॑ ते लक्ष्मीश्च॑ पत्न्यौ॑ । अ॒होरा॑त्रे पा॒र्श्वे ।

नक्ष॑त्राणि रू॒पं । अ॒श्विनौ॑ व्या॒त्तं । इ॒ष्टं म॑निषाण ।

अ॒मुं म॑निषाण । स॒र्वं म॑निषाण ॥ २

(शिखायै वषट्)

9.4 अप्रतिरथं

(TS 4.6.4.1 to TS 4.6.4.5)

आ॒शुः शि॒शानो॑ वृष॒भो न॑ यु॒ध्मो घ॑नाघनः क्षो॒भण-॑श्च॒र्षणी॑नां ।

सं॒क्रन्द॑नो-ऽनि॒मिष॑ एक॒ वीर॑श्शत॒ः से॒ना अ॑जय॒त्सा-क॑मिन्द्रः ।

सं॒क्रन्द॑नेना॒ निमि॑षेण॒ जिष्णु॑ना यु॒त्कारे॑ण दु॒श्च्यव॑नेन॒ धृष्णु॑ना ।

तदि॒न्द्रेण॑ जय॒त तथ्स॑ह॒ध्वं यु॑धो॒ नर॑ इ॒षु ह॑स्तेन॒ वृष्णा॑ ।

स इ॒षुह॑स्तैः स॒ निष॑ंगिभि॒र्वशी॑ स॒ऽस्र॑ष्टा स॒युध॑ इन्द्रो॒ गणे॑न ।

स॒ꣳसृष्ट-जि॒त्सोम॑पा बा॒हु श॒र्द्ध्यू॒र्ध्व-ध॒न्वा प्र॑तिहि॒ता-भि॒रस्ता॑ ।
बृ॒हस्प॑ते परि॒दीया॑ रथे॒न रक्षो॑हाऽमि॒त्राꣳ अप॑ बा॒धमा॑नः । 1

प्र॒भंज॑न् त्सेनाः॑ प्र॒मृणो॑ यु॒धा ज॑यन्त॒स्माक॑-मे॒द्ध्यवि॑ता रथानां ।
गो॒त्रभि॑दं गो॒विदं॑ व॒ज्रबा॑हुं ज॒यन्त॑म॒ज्म प्र॑मृ॒णन्त॑-मो॒जसा॑ ।
इ॒मꣳ स॑जा॒ता अनु॑वीर-य॒ध्वमि॑न्द्रꣳ स॒खायोऽनु॑ स॒रभ॑ध्वं ।
ब॒लवि॑ज्ञाय-स्स्थ॒विरः॑ प्र॒वीर-स्स॑ह॒स्वान् वा॒जी स॑ह॒मान॑ उ॒ग्रः ।
अ॒भिवी॑रो अ॒भिस॑त्वा स॒होजा॑ जै॒त्रमि॑न्द्र रथ॒माति॑ष्ठ गो॒वित् । 2

अ॒भि गो॒त्राणि॑ स॒हसा॑ गा॒हमा॑नो-ऽदा॒यो वी॒र श॑श॒त-म॑न्यु॒रिन्द्रः॑ ।
दु॒श्च्यव॑नः पृ॒तना॑षाड॒ युध्यो॑-ऽस्मा॒कꣳ से॒ना अव॑तु प्र॒युत्सु॑ ।
इ॒न्द्र आ॑सां ने॒ता बृ॒हस्प॑ति॒ रक्षि॑णा य॒ज्ञः पु॒र ए॒तु सो॑मः ।
दे॒वसे॑नाना-म॒भिभं॑ ज॒तीनां॑ ज॒यन्ती॑नां म॒रुतो॑ यन्त्व॒ग्रे ।
इ॒न्द्रस्य॑ वृ॒ष्णो व॑रु॒णस्य॑ रा॒ज्ञ आ॑दि॒त्यानां॑ म॒रुताꣳ श॒र्द्ध उ॒ग्रं ।

म॒हाम॑नसां भु॒वन॑च्य॒वानां॑ घो॒षो दे॒वानां॑ ज॒यता॑ मु॒दस्था॑त् ।
अ॒स्माक॑-मि॒न्द्रः-स॑मृ॒तेषु॑-ध्व॒जे-ष्व॒स्माकं॑ या॒ इष॑वस्ता॒ जय॑न्तु । 3

अ॒स्माकं॑ वी॒रा उत्त॑रे भव॒न्त्वस्मा॑नु दे॒वा अव॑ता ह॒वेषु॑ ।
 उ॒द्धर्ष॑य म॒घव॑न्ना-यु॒धा-न्यु॑त्स॒त्वन॑नां मा॒मका॑नां म॒हाऽसि॑ ।
 उ॒द्वृत्र॑हन् वा॒जिनां॑ वा॒जिना॑-न्यु॒द्रथा॑नां ज॒यता॑मेतु॒ घोषः॑ ।
 उप॑प्रेत ज॒यता॑ नरः स्थि॒रा वः स॑न्तु बा॒हवः॑ ।
 इन्द्रो॑ वः श॒र्म य॑च्छ॒त्वना॑-धृ॒ष्या यथा॑ऽसथ ।
 अव॑सृष्टा॒ परा॑पत शर॒व्ये ब्र॒ह्म स॑ऽशि॒ता ।
 ग॒च्छा॒मित्रा॑न् प्रवि॒श मै॒षां कञ्च॑नोच्छिषः ।
 म॒र्माणि॑ ते वर्म॑भिश्छा-द॒यामि॑ सोम॒स्त्वा रा॒जाऽमृ॑ते॒ना-भि॑वस्तां ।
 उ॒रो व॑री॒यो व॑रि॒वस्ते॑ अस्तु॒ जय॑न्तं त्वा॒मनु॑ म॒दन्तु॑ दे॒वाः ।
 यत्र॑ बा॒णाः संप॑तन्ति कु॒मारा॑ वि॒शिखा॑ इव ।
 इन्द्रो॑ नस्तत्र वृ॒त्रहा॑ वि॒श्वाहा॑ श॒र्म य॑च्छतु ॥ 4 ॥ (कवचाय हुं)

9.5 प्रति पुरुषद्वयं

(TS 1.8.6.1 to TS 1.8.6.2 for para 1 to 2

(T.B.1.6.10.1 to T.B.1.6.10.5 for para 3 to 7)

प्र॒तिपू॑रुष मे॒कक॑पा॒लान् निर्व॑पत्ये-क॒मति॑रि॒क्तं या॑व॒न्तो गृ॒ह्याः॑
 स्म॒स्तेभ्यः॑ क॒मकरं॑ प॒शूना॑ऽश॒र्मासि॑ श॒र्म य॑ज॒मान॑स्य श॒र्म मे॑
 य॒च्छैक॑ ए॒व रु॒द्रो न॑ द्वि॒तीया॑य तस्थ आ॒खुस्ते॑ रु॒द्र प॒शुस्तं॑ जुष॒स्वैष॑
 ते रु॒द्र भा॒गः स॒ह स्व॑स्रां-ऽबि॒कया॑ तंजुष॒स्व भे॒षजं॑ ग॒वेऽश्वा॑य

पुरुषाय भेषजमथो अस्मभ्यं भेषजं सुभेषजं यथाऽसति । 1

सुगं मेषाय मेष्या अवांब रुद्रमदि-मह्यव देवं त्र्यंबकं ।
यथा नः श्रेयसः करद्यथा नो वस्य सः करद्यथा नः पशुमतः
करद्यथा नो व्यवसाययात् । त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्यो मुक्षीय माऽमृतात् ।
एषते रुद्र भाग स्तंजुषस्व तेनावसेन परो मूजवतो-ऽतीह्यवतत
धन्वा पिनाकहस्तः कृत्तिवासाः ॥ 2

प्रतिपूरुष-मेककपालान् निर्वपति । जाता एव प्रजा रुद्रान्
निरवदयते । एकमतिरिक्तं । जनिष्यमाणा एव प्रजा रुद्रान् निरवदयते ।
एककपाला भवन्ति । एकधैव रुद्रं निरवदयते । नाभिधारयति ।
यदभिधारयेत् । अन्तरव-चारिणं रुद्रं कुर्यात् ।
एकोल्मुकेन यन्ति । 3

तद्धि रुद्रस्य भागधेयं । इमां दिशं यन्ति । एषा वै रुद्रस्य दिक् ।
स्वाया मेव दिशि रुद्रं निरवदयते । रुद्रो वा अपशुकाया आहुत्यै
नातिष्ठत । असौ ते पशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात् । यमेव द्वेष्टि ।
तमस्मै पशुं निर्दिशति । यदि न द्विष्यात् ।

आ॒खु॒स्ते॑ प॒शु॒रिति॑ ब्रूयात् । 4

न॒ ग्रा॒म्यान् प॒शून् हि॒नस्ति॑ । ना॒र॒ण्यान् । च॒तु॒ष्प॒थे जु॑होति ।

ए॒ष वा अ॒ग्नी॒नां प॒ड्बी॒शो ना॑म । अ॒ग्नि॒व॒त्ये॒व जु॑होति ।

म॒ध्य॒मे॒न प॒र्णे॒न जु॑होति । सु॒ग॒ध्ये॒षा । अ॒थो ख॒लु ।

अ॒न्त॒मे॒नै॒व हो॑त॒व्यं । अ॒न्त॒त ए॒व रु॒द्रं नि॒र॒व॒द॒य॒ते । 5

ए॒ष ते रु॒द्र॒भा॒गः स॒ह॒स्व॒स्रां-ऽबि॑क॒ये॒त्या॒ह । श॒र॒द्वा अ॒स्यां॒बि॒का स्व॒सा॑ ।

त॒या वा ए॒ष हि॒नस्ति॑ । य॒ः हि॒नस्ति॑ । त॒यै॒वैन॑ः स॒ह श॑म॒य॒ति ।

भे॒ष॒जंग॑व इ॒त्या॒ह । या॒व॒न्त ए॒व ग्रा॒म्याः प॒श॒वः । ते॒भ्यो भे॒ष॒जं क॑रोति ।

अ॒वां॒ब रु॒द्र॒म॒दि म॒ही॒त्या॒ह । आ॒शि॒ष॒मे॒वै-ता॒मा शा॑स्ते । 6

त्र्यं॒ब॒कं य॑जा॒म॒ह इ॒त्या॒ह । मृ॒त्यो मु॑क्षी॒य मा॒ऽमृ॒ता-दि॒ति वा वै त॑दा॒ह ।

उ॒त्कि॑रन्ति । भ॒ग॒स्य ली॑फ॒स॒न्ते । मू॒ते कृ॑त्वा स॒ज॒न्ति ।

य॒था ज॒नं य॑ते॒ऽव॒सं क॑रोति । ता॒दृ॒गे॒व त॑त् ।

ए॒ष ते रु॒द्र॒भा॒ग इ॒त्या॒ह नि॒र॒व॒त्यै । अ॒प्र॒ती॒क्ष-मा॑यन्ति ।

अ॒पः प॒रि॒षि॒ञ्च॒ति । रु॒द्र॒स्या॒न्त हि॑त्यै ।

प्र॒वा ए॒तै॒ऽस्मा-ल्लो॒का-च॑च्य॒व॒न्ते । ये त्र्यं॒ब॒कै-श्च॑रन्ति ।

आ॒दि॒त्यं च॒रुं पु॒न॒रे॒त्य नि॒र्व॒प॒ति । इ॒यं वा अ॑दि॒तिः ।

अस्यामेव प्रतितिष्ठन्ति ॥ 7 (नेत्रत्रयाय वौषट्)

9.6 शत रुद्रीयं

T.B.3.11.2.1 to T.B.3.11.2.4 for full 9.6

त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः । त्वञ् शब्दो मारुतं पृक्ष ईशिषे ।
 त्वं वातैररुणै र्यासि शंगयः । त्वं पूषा विधतः पासि नुत्मनाः ।
 देवा देवेषु श्रयद्ध्वं । प्रथमा द्वितीयेषु श्रयद्ध्वं ।
 द्वितीया-स्तृतीयेषु श्रयद्ध्वं । तृतीया-श्चतुर्थेषु श्रयद्ध्वं ।
 चतुर्थाः पञ्चमेषु श्रयद्ध्वं । पञ्चमाः षष्ठेषु श्रयद्ध्वं । 1

षष्ठाः सप्तमेषु श्रयद्ध्वं । सप्तमा अष्टमेषु श्रयद्ध्वं ।
 अष्टमा नवमेषु श्रयद्ध्वं । नवमा दशमेषु श्रयद्ध्वं ।
 दशमा एकादशेषु श्रयद्ध्वं । एकदशा द्वादशेषु श्रयद्ध्वं ।
 द्वादशा-स्त्रयोदशेषु श्रयद्ध्वं । त्रयोदशा-श्चतुर्दशेषु श्रयद्ध्वं ।
 चतुर्दशाः पञ्चदशेषु श्रयद्ध्वं । पञ्चदशाः षोडशेषु श्रयद्ध्वं । 2

षोडशाः सप्तदशेषु श्रयद्ध्वं । सप्तदशा अष्टादशेषु श्रयद्ध्वं ।
 अष्टादशा एकान्नविंशेषु श्रयद्ध्वं ।
 एकान्नविंशा विंशेषु श्रयद्ध्वं ।

वि॒॒शा॒ एक॒वि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।
 एक॒वि॒॒शा॒ द्वा॒वि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।
 द्वा॒वि॒॒शा॒ स्त्रयो॒वि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।
 त्रयो॒वि॒॒शा॒ चतु॒र्वि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।
 चतु॒र्वि॒॒शाः॑ पञ्च॒वि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।
 पञ्च॒वि॒॒शाः॑ षड्॒वि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ । 3

षड्॒वि॒॒शा॒ सप्त॒वि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ । सप्त॒वि॒॒शा॒ अष्टा॒वि॒॒शेषु॑
 श्रय॒द्ध्वं॑ । अष्टा॒वि॒॒शा॒ एका॒न॒त्रि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।

एका॒न॒त्रि॒॒शा॒ स्त्रि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।

त्रि॒॒शा॒ एक॒त्रि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।

एक॒त्रि॒॒शा॒ द्वा॒त्रि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।

द्वा॒त्रि॒॒शा॒ स्त्रय॒स्त्रि॒॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।

दे॒वा॒स्त्रि॒रेका॑द॒शा॒ स्त्रि॒स्त्रय॑स्त्रि॒॒शाः॑ ।

उत्त॑रे भव॒त । उत्त॑र॒ वर्त॑मान॒ उत्त॑र॒ सत्वा॑नः । यत्काम॑ इ॒दं जु॒होमि॑ ।

तन्मे॑ स॒मृ॒द्ध्य॑तां । व॒य॒॒स्याम॑ प॒तयो॑ र॒यीणां॑ । भूर्भु॒व॒स्व॒स्वाहा॑ ॥ 4

(अस्त्राय फट्)

9.7 पञ्चांग जपः

ह॒स-॑श्शुचिषद् वसु॑रन्तरिक्ष॒ स॒द्धो॒ता वेदि॑ष दति॒थि-॑र्दुरोण॒सत् ।
 नृ॒षद्व॑र-स॒धृ॒त-स॒द्व्यो॒म स॒द॒ब्जा गो॒जा ऋ॒त॒जा
 अ॒द्रि॒जा ऋ॒तं बृ॒हत् । 1 (TS 4.2.1.5)

प्र॒तद्वि॑ष्णु-स्तव॒ते वी॒र्या॑य । मृ॒गो न भी॑मः कु॒चरो॑ गि॒रि॒ष्ठाः । य॒स्यो॒रुषु॑
 त्रि॒षु वि॒क्रम॑णेषु । अधि॒क्षि॒यन्ति॑ भुव॒नानि॑ वि॒श्वा ॥ 2 (T.B.2.4.3.4)

त्र्य॑ंबकं य॒जाम॑हे सु॒गन्धिं॑ पु॒ष्टि॒वर्द्ध॑नं ।
 उ॒र्वारु॑कमि॒व ब॑न्ध॒नान् मृ॒त्यो मु॑क्षी॒य मा॒मृता॑त् । 3
 तथ्स॑वि॒तु वृ॑णीमहे । व॒यं दे॒वस्य॑ भो॒जनं॑ ।
 श्रेष्ठ॑ सर्व॒-धा॒तमं॑ । तुरं॑ भग॒स्य धी॑महि । 4 (TA 1.11.3)

वि॒ष्णु र्यो॑निं कल्प॒यतु॑ । त्व॒ष्टा रू॒पाणि॑ पि॒शतु॑ ।
 आ॒सिंच॑तु प्र॒जाप॑तिः । धा॒ता गर्भं॑ दधातु ते । 5 (EAK 1.13.1)

9.8 अष्टाङ्ग प्रणामः

हि॒रण्य॑गर्भ-स्स॒मव॑र्त-ता॒ग्रे भू॒तस्य॑ जा॒तः प॑तिरेक॒ आसी॑त् ।
 सदा॑धा॒र पृ॒थि॒वीं द्या॒मु॒तेमां॑ कस्मै॒ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ वि॒धेम॑ ।
 (उ॒माम॑हेश्वराभ्यां नमः) । 1 (TS 4.1.8.3)

यः प्रा॑णतो॒ निमि॑षतो॒ महि॑त्वैक इ॒द्राजा॑ जग॒तो ब॑भूव ।
य ई॒शो अ॒स्य द्वि॒पद॑-श्चतु॒ष्पदः॑ कस्मै॒ देवा॑य ह॒विषा॑ वि॒धेम ॥
(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । 2 (TS 4.1.8.4)

ब्र॒ह्मज॑ज्ञानं प्रथ॒मं पु॒रस्ता॑द् वि॒सीम॑त-स्सु॒रुचो॑ वे॒न आ॑वः ।
स बु॒ध्निया॑ उप॒मा अ॒स्य वि॒ष्टा-स्स॒तश्च॑ यो॒निम॑-स॒तश्च॑ वि॒वः ।
(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । 3 (TS 4.2.8.2.)

म॒ही द्यौः पृ॑थि॒वी च॑ न इ॒मं य॑ज्ञं मि॒मिक्ष॑तां ।
पि॒पृता॑न्नो भ॒रीम॑भिः । (उमामहेश्वराभ्यां नमः) । 4 (TS 3.3.10.2)

उप॑श्वासय पृथि॒वी-मु॒त द्यां॑ पु॒रुत्रा॑ ते म॒नुतां॑ वि॒ष्टितं॑ जग॒त् ।
स दु॑न्दु॒भे स॒जूरि॑न्द्रेण दे॒वै-र्दू॒राद्वी॑यो अप॒सेध॑ शत्रून् ।
(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । 5 (TS 4.6.6.6)

अ॒ग्ने न॑य सु॒पथा॑ रा॒ये अ॒स्मान् वि॒श्वा॒नि दे॒व व॒युना॑नि वि॒द्वान् ।
यु॒यो॒ध्यस्म॑-ज्जु॒हुरा॑ण-मे॒नो भू॑यि॒ष्ठान्ते॑ नम॒ उक्तिं॑ वि॒धेम ॥
(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । 6 (TS 1.1.14.3)

या ते अग्ने रुद्रिया तनूस्तया नः पाहि तस्यास्ते स्वाहा ।

(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । 7 (TS 1.2.11.2)

इमं यम प्रस्तरमाहि सीदांगिरोभिः पितृभिस्संविदानः ।

आत्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व ॥

(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । 8 (TS 2.6.12.6)

Note: The following is only a sloka which says as to what are the 8 angas with which one has to do Pranamam / Namaskaram. This is not a Mantra.

(उरसा, शिरसा, दृष्ट्या, मनसा, वचसा तथा ।

पद्भ्यां, कराभ्यां, कर्णाभ्यां, प्रणामोऽष्टांग उच्यते)

9.9 ध्यानं

अथात्मानं शिवात्मानं श्री रुद्ररूपं ध्यायेत् ॥

शुद्धस्फटिक सङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्च वक्त्रकं ।

गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरण भूषितं ॥ 1

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नाग यज्ञोपवीतिनं ।

व्याघ्र चर्मोत्तरीयं च वरेण्य-मभय प्रदं ॥ 2

कमण्डल्वक्ष सूत्रेच दधानं शूलपाणिनं । or

(or कमण्डल्वक्ष सूत्राणां धारिणं शूलपाणिनं)

ज्वलन्तं पिङ्गलजटं (or जटा) शिखा मध्योद-धारिणं ॥ 3

वृषस्कन्ध समारूढं उमा देहाब्ध् धारिणं ।

अमृतेनाप्लुतं हृष्टं (शान्तं) दिव्यभोग समन्वितं ॥ 4

दिग्देवता समायुक्तं सुरासुर नमस्कृतं ।

नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुव-मक्षर-मव्ययं ।

सर्व व्यापिन-मीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणं ॥ 5

(उमामहेश्वराभ्यां नमः ।)

-----इति पञ्चमः न्यासः-----

हृदयादि अस्त्रान्तं षडंग न्यासः पञ्चमः

10. षष्ठः न्यासः (लघु न्यासः)

(This mantra seems to be broken into Ruks, from some source and the Swaram marking does not follow some basic conventions.e.g. swaritam at the beginning of a Ruk which are not definitely Nitya swara formation. Many Vedic Schools render the following nyasa without swaram as there is no authentic source with swaram for this mantra in classic Vedic text according to them.)

प्र॒जन॑ने ब्र॒ह्मा ति॑ष्ठतु । पा॒दयो॑ वि॒ष्णुस्ति॑ष्ठतु । ह॒स्तयो॑ ह॒रस्ति॑ष्ठतु ।
बा॒ह्वोरि॒न्द्रस्ति॑ष्ठतु । ज॒ठरेऽग्नि॑स्तिष्ठतु । हृ॒दये॑ शि॒वस्ति॑ष्ठतु ।
क॒ण्ठे व॒सव॑स्तिष्ठन्तु । व॒क्त्रे स॒रस्वती॑ तिष्ठतु ।
ना॒सिक॑यो वा॒युस्ति॑ष्ठतु । न॒यन॑यो-श्च॒न्द्रादि॑त्यौ ति॒ष्ठेतां॑ ।
कर्ण॑यो-र॒श्विनौ ति॑ष्ठेतां । ल॒लाटे रु॒द्रास्ति॑ष्ठन्तु ।
मू॒र्धन्या॑-दि॒त्यास्ति॑ष्ठन्तु । शि॒रसि॑ म॒हादे॒वस्ति॑ष्ठतु ।
शि॒खायां॑ वा॒मदे॒वस्ति॑ष्ठतु । पृ॒ष्ठे पि॒नाकी॑ तिष्ठतु ।
पु॒रतः॑ शू॒ली ति॑ष्ठतु । पा॒र्श्वयोः॑ शि॒वाशङ्क॑रौ ति॒ष्ठेतां॑ ।
सर्व॑तो वा॒युस्ति॑ष्ठतु । ततो॑ ब॒हिः सर्व॑तो॒ग्नि ज्वा॑लामालापरिवृतस्तिष्ठतु ।
सर्वे॑ष्वङ्गेषु सर्वा देवताः यथास्थानं तिष्ठन्तु । 1

मां रक्षन्तु । यजमानं सकुटुम्बं रक्षन्तु । सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु ।

अ॒ग्नि॒र्मे॑ वा॒चि श्रि॒तः॑

(T̄.B.3.10.8.4 to T̄.B.3.10.8.10) for para 2

अ॒ग्नि॒र्मे॑ वा॒चि श्रि॒तः॑ । वाक् हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ मयि॑ ।

अ॒हम॑मृ॒ते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

वा॒युर्मे॑ प्रा॒णे श्रि॒तः॑ । प्रा॒णो हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ मयि॑ ।

अ॒हम॑मृ॒ते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

सू॒र्यो मे॑ चक्षु॒षि श्रि॒तः॑ । चक्षु॒ हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ मयि॑ ।

अ॒हम॑मृ॒ते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

च॒न्द्र॒मा मे॑ मन॒सि श्रि॒तः॑ । मनो॑ हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ मयि॑ ।

अ॒हम॑मृ॒ते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

दि॒शो मे॑ श्रो॒त्रे श्रि॒ताः॑ । श्रो॒त्रं हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ मयि॑ ।

अ॒हम॑मृ॒ते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

आ॒पो मे॑ रेत॒सि श्रि॒ताः॑ । रेतो॑ हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ मयि॑ ।

अ॒हम॑मृ॒ते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

पृ॒थि॒वी मे॑ शरी॒रे श्रि॒ता । शरी॒रं हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ मयि॑ ।

अ॒हम॑मृ॒ते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

ओषधि-वनस्पतयो मे लोमसु श्रिताः । लोमानि हृदये ।
 हृदयं मयि । अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।
 इन्द्रो मे बलै श्रितः । बलं हृदये । हृदयं मयि ।
 अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।
 पर्जन्यो मे मूर्ध्नि श्रितः । मूर्धा हृदये । हृदयं मयि ।
 अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।
 ईशानो मे मन्यौ श्रितः । मन्यु हृदये । हृदयं मयि ।
 अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।
 आत्मा म आत्मनि श्रितः । आत्मा हृदये । हृदयं मयि ।
 अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।
 पुनर्म आत्मा पुनरायु-रागात् । पुनः प्राणः पुनराकूतमागात् ॥
 वैश्वानरो रश्मिभिर्वावृधानः । अन्तस्तिष्ठ-त्वमृतस्य गोपाः ॥ 2

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवासुरादिभिः ।
 आराधयामि भक्त्या त्वाऽनुग्रहाण महेश्वर ॥ 3

(Note for point No.3)

Given as per existing convention in use, source not available in classic vedic texts.

11. रुद्र जपं (Methods)

There are generally 2 methods in practice before chanting
1st Avarti (round) Rudram Japam.

11.1 First Method

The order of first method is as follows:

1. कलश ध्यानं "ध्यायेन्निरामयं वस्तु " (item No.12.1)
2. आवाहनं (item No.12.2.1 to 12.2.18)
3. प्राण प्रतिष्ठा (item No.12.3)
4. उपचारं (item No.12.4)
5. त्रिशति (item No. 12.5)
6. प्रदक्षिणं (item No. 12.6)
7. नमस्कारः (item No. 12.7)
8. चमक प्रार्थना (item No. 12.8)
9. अघोरेभ्यो (item No. 12.9)
10. श्रीरुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं (item No. 12.10)
11. ओं गणानां त्वा (item No. 12.11)
12. शं च मे (item No.12.12)
13. श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः (item No.12.13)
14. रुद्रं (item No. 12.14)

11.2 Second Method

1. शक्ति पञ्चाक्षरी (item No. 11.6)
 2. श्रीरुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं (item No.12.10)
 3. कलश ध्यानं "ध्यायेन्निरामयं वस्तु " (item No.12.1)
 4. आवाहनं (item No.12.2.1 to 12.2.18)
 5. प्राण प्रतिष्ठा (item No.12.3)
 6. उपचारं (item No.12.4)
 7. त्रिशति (item No. 12.5)
 8. प्रदक्षिणं (item No. 12.6)
 9. नमस्कारः (item No. 12.7)
 10. चमक प्रार्थना (item No. 12.8)
 11. अघोरेभ्यो (item No. 12.9)
 12. ओं गणानां त्वा॑ (item No. 12.11)
 13. शं च मे॑ (item No.12.12)
 14. श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः (item No.12.13)
 15. रुद्रं (item No. 12.14)
-

11.3 कुंभ एक कलश (प्रधान कलश) स्थापनं

(धान्य-ताण्डुलोपरि आम्रपल्लव-नाळिकेर सहित आदित्यात्मकरुद्रं /
वरुणं आवाहयेत्)

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कलशे आदित्यात्मकरुद्रं /
वरुणं ध्यायामि । आवाहयामि ।

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतस्सुरुचो वेन आवः ।

सुवर्णपुष्पं समर्पयामि । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

11.4 एकादश कलश स्थापनं

प्राच्यां एक कलशः । आग्नेयीमारभ्य नैऋतिकलश पर्यन्तं चत्वारः
कलशाः । प्रतीच्यां एकः । वायवीमारभ्य ऐशानी पर्यन्तं
चत्वारकलशाः । मध्ये प्रधानकलशः ।

एवं एकादशकलशान् प्रतिष्ठाप्य पूजा कर्तव्या)

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कुंभे महादेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

(एवं क्रमेण शिवं, रुद्रं, शङ्करं, नीललोहितं, ईशानं, विजयं, भीमं,
देवदेवं, भवोद्भवं मध्ये आदित्यात्मकरुद्रं)

(इति तत्तत् कलशेष तदनु प्राण प्रतिष्ठा च कुर्यु)

11.5 Sthana Peeta

इति घण्टनादं कृत्वा, संप्राथ्र्य, निर्माल्यं उधृत्य , देवताः स्नानपीठे स्थापयेत्, तद्यथा मध्ये शंभूः, आग्नेयां सूर्यः, नैर्ऋत्यां विघ्नेश्वरः , वायव्यां अंबिका, ऐशान्यां हरिः इति क्रमेण शिवलिङ्गादीनि तत्तत् स्थानेषु स्थापयित्वा, पञ्चकलशांश्च (चतस्रषु दिक्षु, चतुरः, मध्ये, एकं च) स्थापयित्वा लघुन्यास पूर्वकं देवताः स्वदेह तत्तदंगेषु विन्यसेत् ।

11.6 श्री शक्ति पञ्चाक्षरी महामन्त्रः

One should get proper “deeksha” from guru to recite this mahamantram as per tradition. This is only followed under Second Method. (see 11.2)

अस्य श्री शक्ति पञ्चाक्षरी महामन्त्रस्य,
वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्चन्द्रः, श्री सांबसदाशिवो देवता,
हां बीजं, ह्रीं शक्तिः, हूं कीलकं, श्री सांबसदाशिव प्रसाद
सिद्ध्यर्थे जपे, पूजायां, होमे च विनियोगः ।

करन्यासः

ओं हां सर्वज्ञशक्तिधाम्ने	अंगुष्ठाभ्यां नमः
नं ह्रीं नित्यतृप्तिशक्तिधाम्ने	तर्जनीभ्यां नमः
मं हूं अनादिबोधशक्तिधाम्ने	मध्यमाभ्यां नमः

शिं हैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने	अनामिकाभ्यां नमः
वां हौं अलुप्तशक्तिधाम्ने	कनिष्ठिकाभ्यां नमः
यं हः अनन्त शक्तिधाम्ने	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः

अंगन्यासः

ओं हां सर्वज्ञशक्तिधाम्ने	हृदयाय नमः
नं हीं नित्यतृप्तिशक्तिधाम्ने	शिरसे स्वाहा
मं हूं अनादिबोधशक्तिधाम्ने	शिखायै वषट्
शिं हैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने	कवचाय हुं
वां हौं अलुप्तशक्तिधाम्ने	नेत्रत्रयाय वौषट्
यं हः अनन्त शक्तिधाम्ने	अस्त्राय फट्
भूर्भुवस्सुवरों	इति दिग्बन्धः

ध्यानं

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकन-कनिभं चारुपद्मा-सनस्थं
वामाङ्गारूढ गौरी निबिडकुचभरा भोग-गाढोपगूडं
नानालङ्कार-दीप्तं वरपरशु मृगाभीतिहस्तं त्रिनेत्रं
वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदन-गुहाश्लिष्टपार्श्वं महेशं ॥

पञ्चोपचार पूजा

लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि । हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि ।

यं वाय्वात्मने धूपं आघ्रापयामि । रं वह्न्यात्मने दीपं दर्शयामि

वं अमृतात्मने अमृतं निवेदयामि ।

सं सर्वात्मने सर्वोपचारान् समर्पयामि

मूलमन्त्रः – " ओं ह्रीं नमश्शिवाय "

(अष्टोत्तरं वा, द्वात्रिंशतं वा, यथाशक्ति जपेत्)

12. रुद्र विदानं

12.1 कलशेषु ध्यानं

ध्यायेन्निरामयं वस्तु सर्गस्थिति लयादिकं ।
निर्गुणं निष्कलं नित्यं मनो वाचामगोचरं ॥ 1
गंगाधरं शशिधरं जटामकुट शोभितं ।
श्वेतभूति त्रिपुण्ड्रेण विराजित ललाटकं ॥ 2
लोचनत्रय संपन्नं स्वर्ण-कुण्डल शोभितं
स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोप-शोभितं ॥ 3
अक्षमालां सुधाकुंभं चिन्मयीं मुद्रिकामपि
पुस्तकं च भुजैर्दिव्यैर्दधानं पार्वतीपतिं ॥ 4
श्वेतांबरधरं श्वेतं रत्नसिंहा-सनस्थितं
सर्वाभीष्ट प्रदातारं वटमूल-निवासिनं ॥ 5
वामांगे संस्थितां गौरीं बालार्कायुत सन्निभां
जपाकुसुम-साहस्र समानश्रिय-मीश्वरीं ॥ 6
सुवर्ण-रत्नखचित मकुटेन विराजितां
ललाटपट्ट-संराजत् संलग्न-तिलकाञ्चितां ॥ 7

राजीवायत-नेत्रान्तां नीलोत्पल दळेक्षणां

संतप्त हेमरचित ताटङ्का-भरणान्वितां ॥ 8

तांबूल चर्वणरत रक्त जिह्वा विराजितां

पताका भरणोपेतां मुक्ता हारोप शोभितां ॥ 9

स्वर्ण कंकण संयुक्तैश्चतुर्भिर्बाहुभिर्युतां ।

सुवर्ण रत्नखचित काञ्चीदाम विराजितां ॥ 10

कदली-ललितस्तंभ सन्निभोरु-युगान्वितां

श्रिया विराजितपदां भक्तत्राण परायणां ॥ 11

अन्योन्या-श्लिष्टहृद् बाहु गौरीशङ्कर-संज्ञकं

सनातनं परंब्रह्म परमात्मान-मव्ययं ॥ 12

(मंगलाय तनं देवं युवान-मतिसुन्दरं । ध्यायेत् कलपतरोर्मूले

सुखासीनं सहोमया ॥ आवाहयामि जगता-मीश्वरं परमेश्वरं ।) 13

(आगच्छाऽऽगच्छ भगवन् देवेश परमेश्वर ।

सच्चिदानन्द भूतेश पार्वती च नमोऽस्तुते)

आ॒त्वा॑ व॒हन्तु॑ ह॒रय॑स्सचै॒तसः॑ श्वेतैर॒श्वै॑स्सह॒ के॒तु॑म॒द्भिः॑ ।

वा॒ता॒जि॒तै॑र्ब॒लव॑द्भि॒र्मनो॑ज॒वै॒ रा॒या॒हि॒ शी॒घ्रं॑ म॒म ह॒व्या॒य॑ श॒र्वो॑ ।

12.2 आवाहन मन्त्राः

12.2.1 For Eka kalasam / Ekadasa kalasam

त्र्य॑ंबकं॒ य॑जामहे सु॒गन्धिं॑ पु॒ष्टिव॑र्धनं ।

उ॒र्वारु॑कमि॒व ब॑न्ध॒नान् मृ॒त्यो मु॑क्षी॒य माऽमृ॑तात् ॥

गौरी॑ मि॒माय॑ स॒लिलानि॑ तक्ष॒त्येक॑पदी द्वि॒पदि॑ सा चतु॑ष्पदी ।

अ॒ष्टा॒पदी॑ न॒वप॑दी ब॒भूवु॑षी स॒हस्रा॑क्षरा प॒रमे॑ व्यो॒मन् ।

(for Eka Kalasam)

(ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ । स॒द्योजा॑तं प्र॒पद्या॑मि । ओं भूर्भू॒वस्सु॒वरो॑ ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री सोमास्कन्द परमेश्वरं ध्यायामि ।

आवाहयामि ।)

(for Ekadasa Kalasam)

नम॑स्ते रु॒द्र म॒न्यव॑ उ॒तोत॑ इ॒षवे॑ नमः॑ ।

नम॑स्ते अस्तु॒ धन्व॑ने बा॒हुभ्या॑मु॒त ते नमः॑ । ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ ।

स॒द्योजा॑तं प्र॒पद्या॑मि । ओं भूर्भू॒वस्सु॒वरो॑ ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे महादेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

शिवं ध्यायामि । आवाहयामि । रुद्रं ध्यायामि । आवाहयामि ।

शङ्करं ध्यायामि । आवाहयामि । नीललोहितं ध्यायामि । आवाहयामि ।

ईशानं ध्यायामि । आवाहयामि । विजयं ध्यायामि । आवाहयामि ।
भीमं ध्यायामि । आवाहयामि । देवदेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।
भवोद्भवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

आदित्यात्मकरुद्रं ध्यायामि । आवाहयामि ।

(Note: Some of the Aavahana mantras are from Slokas and not from Vedas.
Scholars from various schools use different swarams.
We have not provided the swarams consciously.)

12.2.2 महागणपति आवाहनं

ओं । ग॒णाना॑न्त्वा ग॒णप॑ति॒ ॐ ह॒वाम॑हे क॒विं क॒वीना॑मु॒प-म॑श्रवस्तमं ।
ज्ये॒ष्ठरा॑जं ब्र॒ह्मणां॑ ब्र॒ह्मण॑स्पत॒ आन॑श्शृ॒ण्वन्नू॑तिभिः सीद॒ साद॑नं ॥
तत्पु॑रुषाय॒ विद्म॑हे व॒क्रतु॑ण्डाय॒ धीम॑हि ।
तन्नो॑ दन्तिः प्रचो॒दया॑त् ॥ ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो ।
अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री महागणपतिं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.3 सुब्रह्मण्य आवाहनं

नि॒घृष्वै र॑स॒मायु॑तैः । कालै॑ ह॒रित्व॑मापन्नैः । इन्द्रा॑याहि स॒हस्र॑युक् ।
अ॒ग्नि वि॒भ्राष्टि॑ व॒सनः॑ । वा॒यु-इ॒श्वेत॑ सि॒कद्रु॑कः ।
स॒ंवत्स॑रो वि॒षूवर्णैः॑ ॥ नि॒त्यास्ते॑ ऽनु॒चरा॑स्तव ।
सुब्र॑ह्मण्यो॒ ॐ सुब्र॑ह्मण्यो॒ ॐ सुब्र॑ह्मण्यो॒ । तत्पु॑रुषाय॒ विद्म॑हे
महा॑सेनाय॒ धीम॑हि । तन्नः॑ षण्मुखः प्रचो॒दया॑त् ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । अस्मिन् कुंभे/कलशे वळिळदेवसेना समेत
श्री सुब्रह्मण्यस्वामिनं॑ ध्यायामि आवाहयामि ।

12.2.4 दुर्गा देवी आवाहनं

जा॒तवे॑द॒से सु॒नवाम॑ सोम॑ म॒राती॑यतो नि॒दहा॑ति वेदः ।
सनः॑ पर्ष॒दति॑ दु॒र्गाणि॑ वि॒श्वा ना॑वेव सि॒न्धुं दु॒रिता॑त्यग्निः ।
का॒त्याय॑नाय वि॒द्महे॑ क॒न्यकु॑मा॒रि धी॑महि । तन्नो॑ दु॒र्गिः प्र॒चोद॑यात् ॥
ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री दुर्गादेवीं/अंबिकां
ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.5 महाविष्णु आवाहनं

सह॑स्र॒शीर्षा॑ पु॒रुषः॑ । स॒हस्रा॑क्षः स॒हस्र॑पात् । स भू॒मिं वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वा ।
अत्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लं ।
ना॒राय॑णाय वि॒द्महे॑ वा॒सुदे॑वाय धी॑महि । तन्नो॑ वि॒ष्णुः प्र॒चोद॑यात् । ओं
भूर्भुवस्सुवरो॑ । अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री भूमि समेत
श्री महाविष्णुं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.6 महालक्ष्मी आवाहनं

हि॒र॒ण्यव॑र्णां हि॒रिणीं॑ सु॒वर्ण॑रजतस्रजां ।
च॒न्द्रां हि॒र॒ण्य॒मीं ल॒क्ष्मीं॑ जा॒तवे॑दो म॒ आव॑ह ।

महादे॒व्यै च वि॒द्महे वि॒ष्णुप॒त्न्यै च धी॒महि ।

तन्नो लक्ष्मीः प्रचो॒दयात् ॥ ओं भूर्भुव॒स्सुव॒रो ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे महालक्ष्मीं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.7 महासरस्वती आवाहनं

प्रणो दे॒वी सर॑स्वती वा॒जेभि॑ वा॒जिनी॑वति । धी॒नाम॑ वि॒त्र्यव॑तु ॥

वाग्दे॒व्यै च वि॒द्महे वि॒रिञ्चि॑ प॒त्न्यै च धी॒महि । तन्नो वा॒णी प्रचो॒दयात् ॥

अस्मिन् कुंभे/कलशे महासरस्वतीं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.8 सद्गुरु आवाहनं

गुरु॒वे सर्व॑लोकानां भिष॒जे भव॑रोगिणां । निधये सर्व विद्यानां ।

श्री दक्षिणा मूर्तये नमः ।

गुरु॒र्ब्रह्मा गुरु॑र्विष्णुः गुरु॑र्दे॒वो महे॑श्वरः ।

गुरु॒साक्षात् परं॑ ब्रह्मा तस्मै श्री गुरु॒वे नमः॑ ॥

ओं गुरु॒देवाय॑ वि॒द्महे पर॑ब्रह्मणे धी॒महि । तन्नो गुरुः प्रचो॒दयात् ।

ओं भूर्भुव॒स्सुव॒रो । अस्मिन् कुंभे/कलशे सद्गुरुं ध्यायामि ।

आवाहयामि ।

12.2.9 अन्नपूर्णि आवाहनं

आ॒व॒ह॒न्ती॑ वि॒त॒न्वा॒ना । कु॒र्वा॒णा ची॒र-मा॒त्म॒नः॑ । वा॒सा॒ँ॒सि॒ म॒म गा॒वश्च॑ ।
अ॒न्न॒पा॒ने च॑ स॒र्व॒दा । ततो॑ मे श्रि॒य॒मा॒व॒ह ।
लो॒म॒शां प॒शु॒भि॒स्सह॑ स्वाहा॑ ।

ओं भ॒ग॒व॒त्यै च॑ वि॒द्महे॑ मा॒हेश्व॑र्यै च धी॒महि॑ ।

तन्नो॑ अ॒न्न॒पूर्णी॑ प्र॒चो॒द॒यात् ।

ओं भूर्भु॒व॒स्सु॒व॒रों । अ॒स्मिन् कुं॒भे/क॒ल॒शे अ॒न्न॒पूर्णी॑ ध्या॒यामि॑ ।

आ॒वा॒ह॒यामि॑ ।

12.2.10 शास्ता आवाहनं

धा॒ता वि॒धा॒ता प॒र॒मो॒त स॒न्दृक् प्र॒जा॒प॒तिः प॒र॒मे॒ष्ठी वि॒रा॒जा॑ ।
स्तो॒माश्च॑न्दा॒ँ॒सि नि॒वि॒दो॒म आ॒हु॒रे॒त॒स्मै रा॒ष्ट्र-म॒भि॒स॒न्न॒माम॑ ।
अ॒भ्या॒व॒र्त्त॒ध्व-मु॒प॒मे॒त॒सा॒क॒म॒य॒ँ॒ शा॒स्ताऽधि॑पति॒र्वो अ॒स्तु॑ ।
अ॒स्य वि॒ज्ञा॒न-म॒नु॒स॒ँ॒ र॒भ॒ध्व॒मि॒मं प॒श्चा॒द॒नु॒जी॒वा॒थ स॒र्वे॑ ।

ओं भू॒त॒ना॒थाय॑ वि॒द्महे॑ भ॒व॒पु॒त्राय॑ धी॒महि॑ । तन्नः॑ शा॒स्ता प्र॒चो॒द॒यात् ।

ओं भूर्भु॒व॒स्सु॒व॒रों । अ॒स्मिन् कुं॒भे/क॒ल॒शे पूर्णा॑-पुष्क॒ला॒म्बा स॒मे॒त

श्री॑ ह॒रि॒ह॒र॒पु॒त्र स्वामि॑नं ध्या॒यामि॑ । आ॒वा॒ह॒यामि॑ ।

12.2.11 अनन्त (सर्प राजा) आवाहनं

नमो॑ अस्तु॑ सर्पे॒भ्यो॒ ये के॑ च॒ पृथि॒वीमनु॑ ।
ये अ॒न्तरि॑क्षे॒ ये दि॒वि तेभ्य॑ स्सर्पे॒भ्यो नमः॑ ।
ये दो॒ऽरो॒चने॑ दि॒वो ये॒वा सूर्य॑स्य रश्मि॒षु । ये॒षाम॒प्सु सदः॑ कृतं तेभ्य॑
स्सर्पे॒भ्यो नमः॑ । या इ॒षवो॑ यातु॒ धाना॑नां॒ ये॒वा व॒नस्प॑तीं॒ रनु॑ ।
ये॒वाऽव॑टे॒षु शे॑रते तेभ्य॑ स्सर्पे॒भ्यो नमः॑ ।
सर्प॑राजाय विद्महे॒ सह॑स्रफ॒णाय॑ धीमहि । तन्नो॑ अनन्तः प्रचोदयात् ।
ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो । अस्मिन् कुंभे/कलशे॑ सर्पराजं ध्यायामि
आवाहयामि ।

12.2.12 सूर्यनारायण आवाहनं

ओं आ॒स॒त्येन॑ रज॒सा वर्त॑मानो निवेशय॒न्नमृतं॑ म॒र्त्यं च॑ ।
हि॒रण्य॑येन॒ सवि॒ता रथे॑ना॒ ऽदे॒वो या॑ति भुवना विपश्यन् ।
भा॒स्क॒राय॑ विद्महे॒ मह॑द्युति॒कराय॑ धीमहि । तन्नो॑ आदित्य प्रचोदयात् ॥
ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो । अस्मिन् कुंभे/कलशे॑ छाया-सुवर्च्छलांबा समेत
श्री सूर्यनारायणं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.13 नक्षत्र देवता आवाहनं

अ॒ग्नि॒र्नः॑ पा॒तु कृ॒त्ति॒काः । नक्ष॑त्रं दे॒वमि॑न्द्रि॒यं ।
इ॒दमा॑सां-वि॒चक्ष॑णं । ह॒वि॒रासं॑ जु॒होत॑न । यस्य॑ भा॒न्ति रश्म॑यो यस्य॑
के॒तवः॑ । यस्ये॒मा वि॒श्वा भु॒वनानि॑ सर्वा॑ । स कृ॒त्ति॒का-भि॒रभि-
स॒म्-व॑सानः । अ॒ग्नि॒र्नो दे॒वस्सु॑वि॒ते द॑धातु ॥

(अ॒प॒पा॒प्मानं॑ भ॒रणी॑ भ॒रन्तु॑) ।

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । अस्मिन् कुंभे/कलशे नक्षत्रदेवतां ध्यायामि ।
आवाहयामि ।

12.2.14 नन्दिकेश्वर आवाहनं

शू॒लाङ्कु॑शध॒रं दे॒वं म॒हादे॒वस्य॑ व॒ल्लभं॑ ।
शि॒वका॑र्य वि॒धानञ्च॑ ध्यायेत् त्वां न॒न्दिके॑श्वरं ।
तत् पु॒रुषा॑य वि॒धम॑हे च॒क्रतु॑ण्डाय॒ धीम॑हि । तन्नो॑ न॒न्दिः प्र॒चोद॑यात् ॥
ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । अस्मिन् कुंभे/कलशे नन्दिकेश्वरं ध्यायामि ।
आवाहयामि ।

12.2.15 आयुर्देवता आवाहनं

आयु॑ष्ठे वि॒श्वतो॑ दध॒ दय॑ मग्नि॒ वरि॑ण्यः । पुन॑स्ते प्राण॒ आय॑ति
(or आया॑ति) परा॒यक्ष्म॑ सु॒वामि॑ते । आयु॑र्द्धा अ॒ग्ने ह॒विषो॑ जुषा॒णो
घृ॒तप्र॑तीको घृ॒तयो॑ निरे॒धि । घृ॒तं पी॒त्वा मधु॑ चा॒रु ग॒व्यं पि॒तेव॑
पु॒त्रम॒भि-र॑क्षतादि॒मं ।

ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो । अस्मिन् कुंभे/कलशे आयुर्देवतां ध्यायामि ।
आवाहयामि ।

12.2.16 श्री राम आवाहनं

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेदसे । रघुनाथाय नाथाय सीतायाः
पतये नमः ।

दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि ।

तन्नो रामः प्रचोदयात् । ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत् समेत
श्री रामचन्द्रस्वामिनं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.17 श्रीकृष्ण आवाहनं

कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नन्दनाय च । नन्दगोप कुमाराय

श्री गोविन्दाय नमो नमः । देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।

तन्नो कृष्णः प्रचोदयात् । ओं भूर्भुवस्सुवरो ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे रुक्मणी-सत्यभामा समेत श्री कृष्णस्वामिनं
ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.18 आज्चनेय आवाहनं

बुद्धिर्बलं यशोधैर्यं निर्भयत्वं अरोगता ।

अजाव्यं वाक्पटुत्वं च हनुमत् स्मरणात् भवेत् ।

श्री रामदूताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि । तन्नो हनुमन्तः प्रचोदयात् ।

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कुंभे/कलशे वेदशास्त्र पण्डित परम
भागवतोत्तम श्री आज्चनेयस्वामिनं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.3 प्राण प्रतिष्ठा

आदित्यात्मक-रुद्रस्य, आवाहितानां सर्वासां देवतानां प्राणप्रतिष्ठा-
महामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुस्सामाथर्वाणि
छन्दांसि । सकलजगत् सृष्टि-स्थिति-संहार कारिणी प्राणशक्तिः
परादेवता ।

आं बीजं । ह्रीं शक्तिः । क्रों कीलकं ।

आदित्यात्मक-रुद्रस्य आवाहितानां सर्वासां देवतानां प्राणप्रतिष्ठार्थं
जपे विनियोगः ॥

आं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
क्रों मद्ध्यमाभ्यां नमः । आं अनामिकाभ्यां नमः ।
ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । क्रों करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।
आं हृदयाय नमः । ह्रीं शिरसे स्वाहा ।
क्रों शिखायै वषट् । आं कवचाय हुं ।
ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । क्रों अस्त्राय फट् ॥
भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

ध्यानं

रक्तांभोधिस्थ-पोतोल्लसदरुण-सरोजा धिरूढा-कराब्जैः ।
पाशं कोदण्डमिक्षूद् भव मळिगुण-मप्यंकुशं पञ्चबाणान् ।
बिभ्राणा-सृक्कपालां त्रिनयन लसिता पीन-वक्षोरुहाढ्या ।
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणाशक्तिः परा नः ॥
आं ह्रीं क्रों । क्रों ह्रीं आं । य र ल व श ष स हों ।
क्षं, हंसःसोहं, सोहं हंसः ।
आदित्यात्मक-रुद्रस्य, आवाहितानां सर्वासां देवतानां
प्राणा इह प्राणाः ।
आं ह्रीं क्रों । क्रों ह्रीं आं । य र ल व श ष स हों ।

क्षं , हंसः सोहं, सोहं हंसः ।

आदित्यात्मक-रुद्रस्य आवाहितानां सर्वासां देवतानां जीव इह स्थितः ।

आं ह्रीं क्रों । क्रों ह्रीं आं । य र ल व श ष स हों ।

क्षं, हंसः सोहं सोहं हंसः ।

आदित्यात्मक-रुद्रस्य, आवाहितानां सर्वासां देवतानां सर्वेन्द्रियाणि
वाङ्मनश्चक्षु-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-प्राणापान-व्यानोदान-समाना
इहैवागत्य इहैवास्मिन् (एषु कुंभेषु/कलशेषु, अस्यां प्रतिमायां,
अस्मिन् लिङ्गे, अस्मिन् सालग्रामे, शिला चक्रे) सुखं चिरं तिष्ठन्तु
स्वाहा ॥

अ॒सु॒नी॒ते पुन॑र॒स्मासु॑ चक्षुः पुनः प्राणामिह नो धेहि भोगं ।
ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्त-मनुमते मृडया नस्स्वस्ति ॥

आवाहितो भव । स्थापितो भव । सन्निहितो भव । सन्निरुद्धो भव ।

अवकुण्ठितो भव । सुप्रीतो भव । सुप्रसन्नो भव । वरदो भव ।

प्रसीद प्रसीद ॥

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकं तावत् त्वं प्रीतिभावेन
कुंभेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।

आदित्यात्मक-रुद्रस्य प्राणान् प्रतिष्ठापयामि ॥

(पञ्चोपचार पूजा, धूप, दीप, नैवेद्यं, तांबूलं, नीराजनं) ॥

यत्किञ्चिन्निवेदनं ॥)

12.4 उपचारं

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः । शिवा शरव्या या तव तया
नो रुद्र मृडय । ओं ह्रीं नमः शिवाय । सद्यो जाताय वै नमो नमः ।
रत्नसिंहासनं समर्पयामि ॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपाप काशिनी । तया नस्तनुवा शन्तमया
गिरिशन्ता-भिचाकशीहि ॥ ओं ह्रीं नमः शिवाय ।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां । पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे । शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हिंसीः
पुरुषं जगत् । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।
भवोद्भवाय नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि । यथा नस्सर्वमिज्जगद
यक्ष्म सुमना असत् । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।
वामदेवाय नमः । आचमनीयं समर्पयामि ॥

अ॒ध्य॒वोच॑-द॒धि॒वक्ता॑ प्र॒थ॒मो दै॒व्यो भि॒षक् । अ॒ही॒ऽश्च॑ स॒र्वान्
ज॒भय॑न् त्स॒र्वाश्च॑ या॒तु॒धा॒न्यः ॥ ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ ।
ज्ये॒ष्ठाय॑ नमः॑ । म॒धु॒पर्कं॑ स॒मर्प॑यामि ॥

अ॒सौ य॒स्ताम्रो॑ अ॒रुण॑ उ॒त ब॒भ्रुस्सु॑म॒ङ्गलः॑ । ये चे॒मा॒ऽरु॒द्रा अ॒भितो॑
दि॒क्षु श्रि॒ताः स॒हस्र॑शो ऽवै॒षा॒ऽहे॒ड ई॒महे॑ । ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ ।
श्रे॒ष्ठाय॑ नमः॑ । स्ना॒नं स॒मर्प॑यामि । स्ना॒नान॑न्तरं आ॒चम॑नीयं स॒मर्प॑यामि ।

अ॒सौ यो॑ऽव॒सर्प॑ति नी॒लग्री॑वो वि॒लो॒हितः॑ । उ॒तैनं॑ गो॒पा अ॒दृ॒शन्न॑दृ॒शन्
उ॒दहा॑र्यः । उ॒तैनं॑-वि॒श्वा भू॒तानि॑ स दृ॒ष्टो मृ॒डया॑ति नः ।
ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ । रु॒द्राय॑ नमः॑ । वस्त्रो॒त्तरी॑यं स॒मर्प॑यामि ।

नमो॑ अस्तु नी॒लग्री॑वाय स॒हस्रा॑क्षाय मी॒ढुषे॑ । अथो॒ ये अ॒स्य
स॒त्वानो॑ऽहं तेभ्यो॑ऽक॒रन्न॑मः । ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ ।
का॒लाय॑ नमः॑ । यज्ञो॒पवी॑ताभरणानि स॒मर्प॑यामि ।

प्र॒मु॒ञ्च ध॒न्व॒नः त्वमु॑भयो-रा॒र्त्तियो॑ ज्यौ । याश्च॑ ते ह॒स्त इ॒षवः॑ प॒रा ता
भग॑वो वप । ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ ।

क॒ल॒वि॒कर॑णाय नमः॑ । गन्धा॑न् धा॒रयामि॑ । गन्धो॒परि॑ अक्ष॒तान्

समर्पयामि ।

अवतत्य धनुस्त्व॑ सहस्राक्ष॑ शते॑षुधे । निशीर्य॑ शल्यानां॑ मुखा॑ शिवो॑
नः सुमना॑ भव । ओं ह्रीं नमः॑ शिवाय॑ ।
बलविकरणा॑य नमः॑ । पुष्पाणि॑ सर्पयामि ।

- | | |
|---------------------------|------------------------|
| 1. ओं भवाय देवाय नमः । | ओं शर्वाय देवाय नमः । |
| 2. ओं ईशानाय देवाय नमः । | ओं पशुपतये देवाय नमः । |
| 3. ओं रुद्राय देवाय नमः । | ओं उग्राय देवाय नमः । |
| 4. ओं भीमाय देवाय नमः । | ओं महते देवाय नमः । |

- | | |
|-------------------------------------|---------------------------------|
| 1. ओं भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः । | ओं शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः । |
| 2. ओं ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः । | ओं पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः । |
| 3. ओं रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः । | ओं उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः । |
| 4. ओं भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः । | ओं महतो देवस्य पत्न्यै नमः । |

नानाविद परिमळ पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि ॥

विज्यं धनुः॑ कपर्दिनो॑ विशल्यो॑ बाणवा॑ उत । अने॑शन्नस्येष॑व
आभुरस्य॑ निषङ्ग॑थिः । ओं ह्रीं नमः॑ शिवाय॑ ।
बला॑य नमः॑ । धूपमाघ्रापयामि ।

या ते हेति मी॑दुष्ट॒म ह॒स्ते ब॒भूव॑ ते ध॒नुः । तया॑ऽस्मान् वि॒श्वतः॑
त्वम॑य॒क्ष्मया॑ परि॒ब्भुज॑ । ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ । ब॒लप्र॑मथ॒नाय॑ नमः॑ ।
दीपं द॒र्श्यामि॑ । धूप-दी॒पान॑न्तरं आच॒मनी॑यं स॒मर्प॑यामि ।

नैवेद्यं

ओं भूर्भु॑वस्सु॒वः । तथ्स॑वि॒तुर्व॑रेणं॑ भ॒र्गो दे॒वस्य॑ धी॒महि॑ । धि॒यो यो नः॑
प्रचो॑दयात् । दे॒व स॒वितः॑ प्र॒सुवः॑ । स॒त्यं त्व॑र्त्तेन परि॒षिञ्जामि॑ ।
आ॒वाहि॑ताभ्यः सर्वा॒भ्यो दे॒वता॑भ्यो नमः॑ । अ॒मृतं॑ भवतु ।
अ॒मृतो॑पस्तरणम॒सि । ओं प्रा॑णाय स्वाहा । ओं अ॒पाना॑य स्वाहा ।
ओं व्या॒नाय॑ स्वाहा । ओं उ॒दाना॑य स्वाहा । ओं स॒माना॑य स्वाहा ।
ओं ब्र॒ह्मणे॑ स्वाहा ।

नम॑स्ते अ॒स्त्वायु॑धा॒याना॑त॒ताय॑ धृ॒ष्णवे॑ । उ॒भाभ्या॑मु॒त ते नमो॑ बा॒हुभ्यां॑
तव॑ ध॒न्वने॑ । ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ । स॒र्वभू॑तद॒मना॑य नमः॑ ।

..... महानै॒वेद्यं॑ नि॒वेद॑यामि । म॒ध्ये म॒ध्ये अ॒मृत॑पा॒नीयं॑
स॒मर्प॑यामि । अ॒मृता॑पि॒धान॑म॒सि । ह॒स्तप्र॑क्षा॒ळनं॑ स॒मर्प॑यामि ।
पाद॑प्रक्षा॒ळनं॑ स॒मर्प॑यामि । नै॒वेद्या॑न॒न्तरं॑ आच॒मनी॑यं स॒मर्प॑यामि ।

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः । अथो य इषुधिस्तवारे
अस्मन्निधैहितं ॥ ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूरतांबूलं निवेदयामि ।

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यंबकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय शङ्कराय श्रीमन्महादेवाय नमः ॥

ओं महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

सर्वोपचारात्थे कर्पूरनीराजनदीपं प्रदर्शयामि ।

नीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

बृहत्साम क्षत्रभृद् वृद्धवृष्णियं त्रिष्टुभौजश्शुभित-मुग्रवीरं ।

इन्द्रस्तोमेन पञ्चदशेन मद्ध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष ।

रक्षां धारयामि । ओं हर, ओं हर, ओं हर ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वोपचारान् समर्पयामि ।

12.5 त्रिशति

"प्रणवेन विहीनो यः मन्त्रः प्राणहीनकः

सर्व मन्त्रेषु मन्त्राणं प्राणः प्रणव उच्यते" ।

According to the above sloka "OM" has to be added before each naama archana.)

1. ओं नमो हिरण्यबाहवे नमः ।
2. ओं सेनान्ये नमः ।
3. ओं दिशां च पतये नमः ।
4. ओं नमो वृक्षेभ्यो नमः ।
5. ओं हरिकेशेभ्यो नमः ।
6. ओं पशूनां पतये नमः ।
7. ओं नमः सस्विञ्जराय नमः ।
8. ओं त्विषीमते नमः ।
9. ओं पथीनां पतये नमः ।
10. ओं नमो बभ्रुशाय नमः ।
11. ओं विव्याधिने नमः ।
12. ओं अन्नानां पतये नमः ।

13. ओं नमो हरिकेशाय नमः ।
14. ओं उपवीतिने नमः ।
15. ओं पुष्टानां पतये नमः ।
16. ओं नमो भवस्य हेत्यै नमः ।
17. ओं जगतां पतये नमः ।
18. ओं नमो रुद्राय नमः ।
19. ओं आतताविने नमः ।
20. ओं क्षेत्राणां पतये नमः ।
21. ओं नमः सूताय नमः ।
22. ओं अहन्त्याय नमः ।
23. ओं वनानां पतये नमः ।
24. ओं नमो रोहिताय नमः ।
25. ओं स्थपतये नमः ।
26. ओं वृक्षाणां पतये नमः ।
27. ओं नमो मन्त्रिणे नमः ।
28. ओं वाणिजाय नमः ।
29. ओं कक्षाणां पतये नमः ।

30. ओं नमो॑ भुव॒न्तये॑ नमः॑ ।
31. ओं वारि॒वस्कृ॑ताय॒ नमः॑ ।
32. ओं ओष॑धीनां पतये॑ नमः॑ ।
33. ओं नम॑ उच्चै॒र्घोषाय॑ नमः॑ ।
34. ओं आ॒क्रन्द॑यते नमः॑ ।
35. ओं प॒त्तीनां॑ पतये॑ नमः॑ ।
36. ओं नमः॑ कृ॒थस्न॑वीताय॒ नमः॑ ।
37. ओं धाव॑ते नमः॑ ।
38. ओं स॒त्त्वनां॑ पतये॑ नमः॑ ।
39. ओं नमः॑ स॒हमा॑नाय॒ नमः॑ ।
40. ओं नि॒व्याधि॑ने नमः॑ ।
41. ओं आ॒व्याधि॑नीनां पतये॑ नमः॑ ।
42. ओं नमः॑ ककु॒भाय॑ नमः॑ ।
43. ओं नि॒षङ्गि॑णे नमः॑ ।
44. ओं स्ते॒नानां॑ पतये॑ नमः॑ ।
45. ओं नमो॑ नि॒षङ्गि॑णे नमः॑ ।

46. ओं इ॒षु॒धि॒मते॑ नमः ।
47. ओं त॒स्करा॑णां पतये॑ नमः ।
48. ओं नमो॑ व॒ञ्चते॑ नमः ।
49. ओं प॒रिव॒ञ्चते॑ नमः ।
50. ओं स्ता॒यूनां॑ पतये॑ नमः ।
51. ओं नमो॑ नि॒चेर॑वे नमः ।
52. ओं प॒रिच॑राय नमः ।
53. ओं अ॒र॒ण्यानां॑ पतये॑ नमः ।
54. ओं नमः॑ सृ॒कावि॑भ्यो नमः ।
55. ओं जि॒घा॒ꣳस॒द्भ्यो॑ नमः ।
56. ओं मु॒ष्णातां॑ पतये॑ नमः ।
57. ओं नमो॑ऽसि॒मद्भ्यो॑ नमः ।
58. ओं न॒क्तं॑ च॒रद्भ्यो॑ नमः ।
59. ओं प्र॒कृ॒न्तानां॑ पतये॑ नमः ।
60. ओं नम॑ उ॒ष्णी॒षिणे॑ नमः ।
61. ओं गि॒रि॒च॒राय॑ नमः ।
62. ओं कु॒लु॒ञ्चानां॑ पतये॑ नमः ।

63. ओं नम॑ इ॒षु॒म॒द्भ्यो॑ नमः॑ ।
64. ओं ध॒न्वा॒वि॒भ्यश्च॑ नमः॑ ।
65. ओं वो॑ नमः॑ ।
66. ओं नम॑ आ॒त॒न्वा॒ने॒भ्यो॑ नमः॑ ।
67. ओं प्र॒ति॒द॒धा॒ने॒भ्यश्च॑ नमः॑ ।
68. ओं वो॑ नमः॑ ।
69. ओं नम॑ आ॒य॒च्छ॒द्भ्यो॑ नमः॑ ।
70. ओं वि॒सृ॒ज॒द्भ्यश्च॑ नमः॑ ।
71. ओं वो॑ नमः॑ ।
72. ओं नमो॑ऽस्य॒द्भ्यो॑ नमः॑ ।
73. ओं वि॒ध्य॒द्भ्यश्च॑ नमः॑ ।
74. ओं वो॑ नमः॑ ।
75. ओं नम॑ आ॒सी॒ने॒भ्यो॑ नमः॑ ।
76. ओं श॒या॒ने॒भ्यश्च॑ नमः॑ ।
77. ओं वो॑ नमः॑ ।
78. ओं नमः॑ स्व॒प॒द्भ्यो॑ नमः॑ ।
79. ओं जा॒ग्र॒द्भ्यश्च॑ नमः॑ ।

80. ओं वो नमः ।
81. ओं नमस्तिष्ठद्भ्यो नमः ।
82. ओं धावद्भ्यश्च नमः ।
83. ओं वो नमः ।
84. ओं नमस्सभाभ्यो नमः ।
85. ओं सभापतिभ्यश्च नमः ।
86. ओं वो नमः ।
87. ओं नमो अश्वैभ्यो नमः ।
88. ओं अश्वपतिभ्यश्च नमः ।
89. ओं वो नमः ।
90. ओं नम आव्याधिनीभ्यो नमः ।
91. ओं विविध्यन्तीभ्यश्च नमः ।
92. ओं वो नमः ।
93. ओं नम उगणाभ्यो नमः ।
94. ओं तृहतीभ्यश्च नमः ।
95. ओं वो नमः ।
96. ओं नमो गृथ्सेभ्यो नमः ।

97. ओं गृ॒थ्स॑पति॒भ्यश्च॑ नमः ।
98. ओं वो॒ नमः॑ ।
99. ओं नमो॒ व्रा॒तै॑भ्यो॒ नमः॑ ।
100. ओं व्रा॒तप॑ति॒भ्यश्च॑ नमः ।
101. ओं वो॒ नमः॑ ।
102. ओं नमो॒ ग॒णे॑भ्यो॒ नमः॑ ।
103. ओं ग॒णप॑ति॒भ्यश्च॑ नमः ।
104. ओं वो॒ नमः॑ ।
105. ओं नमो॒ वि॒रू॒पे॑भ्यो॒ नमः॑ ।
106. ओं वि॒श्वरू॑पे॒भ्यश्च॑ नमः ।
107. ओं वो॒ नमः॑ ।
108. ओं नमो॒ म॒हद्॑भ्यो॒ नमः॑ ।
109. ओं क्षु॒ल्ल॒के॑भ्यश्च॑ नमः ।
110. ओं वो॒ नमः॑ ।
111. ओं नमो॒ र॒थि॑भ्यो॒ नमः॑ ।
112. ओं अ॒र॒थे॑भ्यश्च॑ नमः ।
113. ओं वो॒ नमः॑ ।

114. ओं नमो रथेभ्यो नमः ।
115. ओं रथपतिभ्यश्च नमः ।
116. ओं वो नमः ।
117. ओं नमस्सेनाभ्यो नमः ।
118. ओं सेनानिभ्यश्च नमः ।
119. ओं वो नमः ।
120. ओं नमः क्षत्तृभ्यो नमः ।
121. ओं संग्रहीतृभ्यश्च नमः ।
122. ओं वो नमः ।
123. ओं नमस्तक्षभ्यो नमः ।
124. ओं रथकारेभ्यश्च नमः ।
125. ओं वो नमः ।
126. ओं नमः कुलालेभ्यो नमः ।
127. ओं कमरिभ्यश्च नमः ।
128. ओं वो नमः ।
129. ओं नमः पुंजिष्टेभ्यो नमः ।
130. ओं निषादेभ्यश्च नमः ।

131. ओं वो नमः ।
132. ओं नम इषुकृद्भ्यो नमः ।
133. ओं धन्वकृद्भ्यश्च नमः ।
134. ओं वो नमः ।
135. ओं नमो मृगयुभ्यो नमः ।
136. ओं श्वनिभ्यश्च नमः ।
137. ओं वो नमः ।
138. ओं नमः श्वभ्यो नमः ।
139. ओं श्वपतिभ्यश्च नमः ।
140. ओं वो नमः ॥
141. ओं नमो भवाय च नमः ।
142. ओं रुद्राय च नमः ।
143. ओं नमश्शर्वाय च नमः ।
144. ओं पशुपतये च नमः ।
145. ओं नमो नीलग्रीवाय च नमः ।
146. ओं शितिकण्ठाय च नमः ।

147. ओं नमः कपर्दिने च नमः ।
 148. ओं व्युप्तकेशाय च नमः ।
 149. ओं नमस्सहस्राक्षाय च नमः ।
 150. ओं शतधन्वने च नमः ।
 151. ओं नमो गिरिशाय च नमः ।
 152. ओं शिपिविष्टाय च नमः ।
 153. ओं नमो मीढुष्टमाय च नमः ।
 154. ओं इषुमते च नमः ।
 155. ओं नमो ह्रस्वाय च नमः ।
 156. ओं वामनाय च नमः ।
 157. ओं नमो बृहते च नमः ।
 158. ओं वर्षीयसे च नमः ।
 159. ओं नमो वृद्धाय च नमः ।
 160. ओं संवृध्वने च नमः ।
 161. ओं नमो अग्रियाय च नमः ।
 162. ओं प्रथमाय च नमः ।
 163. ओं नम आशवे च नमः ।

164. ओं अजिराय च नमः ।
 165. ओं नमः शीघ्रियाय च नमः ।
 166. ओं शीभ्याय च नमः ।
 167. ओं नम ऊर्म्याय च नमः ।
 168. ओं अवस्वन्याय च नमः ।
 169. ओं नमः स्त्रोतस्याय च नमः ।
 170. ओं द्वीप्याय च नमः ।
 171. ओं नमो ज्येष्ठाय च नमः ।
 172. ओं कनिष्ठाय च नमः ।
 173. ओं नमः पूर्वजाय च नमः ।
 174. ओं अपरजाय च नमः ।
 175. ओं नमो मध्यमाय च नमः ।
 176. ओं अपगल्भाय च नमः ।
 177. ओं नमो जघन्याय च नमः ।
 178. ओं बुध्नियाय च नमः ।
 179. ओं नमः सोभ्याय च नमः ।

180. ओं॑ प्र॒ति॒स॒र्या॑य च॒ नमः॑ ।
181. ओं॑ नमो॑ या॒म्या॑य च॒ नमः॑ ।
182. ओं॑ क्षे॒म्या॑य च॒ नमः॑ ।
183. ओं॑ नम॑ उ॒र्व॒र्या॑य च॒ नमः॑ ।
184. ओं॑ ख॒ल्या॑य च॒ नमः॑ ।
185. ओं॑ नमः॑ इ॒लो॒क्या॑य च॒ नमः॑ ।
186. ओं॑ अ॒व॒सा॒न्या॑य च॒ नमः॑ ।
187. ओं॑ नमो॑ व॒न्या॑य च॒ नमः॑ ।
188. ओं॑ क॒क्ष्या॑य च॒ नमः॑ ।
189. ओं॑ नमः॑ श्र॒वा॑य च॒ नमः॑ ।
190. ओं॑ प्र॒ति॒श्र॒वा॑य च॒ नमः॑ ।
191. ओं॑ नम॑ आ॒शु॒षे॒णाय॑ च॒ नमः॑ ।
192. ओं॑ आ॒शु॒र॒था॑य च॒ नमः॑ ।
193. ओं॑ नमः॑ शू॒रा॑य च॒ नमः॑ ।
194. ओं॑ अ॒व॒भि॒न्द॒ते॑ च॒ नमः॑ ।
195. ओं॑ नमो॑ वर्मि॒णे॑ च॒ नमः॑ ।
196. ओं॑ व॒रू॒थि॒ने॑ च॒ नमः॑ ।

197. ओं नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च॒ नमः॑ ।
198. ओं क॒वचि॑ने च॒ नमः॑ ।
199. ओं नमः॑ श्रु॒ताय॑ च॒ नमः॑ ।
200. ओं श्रु॒तसे॑नाय च॒ नमः॑ ।
201. ओं नमो॑ दु॒न्दुभ्या॑य च॒ नमः॑ ।
202. ओं आ॒हन॒न्याय॑ च॒ नमः॑ ।
203. ओं नमो॑ धृ॒ष्णवे॑ च॒ नमः॑ ।
204. ओं प्र॒मृशाय॑ च॒ नमः॑ ।
205. ओं नमो॑ दू॒ताय॑ च॒ नमः॑ ।
206. ओं प्र॒हिताय॑ च॒ नमः॑ ।
207. ओं नमो॑ नि॒षङ्गि॑णे च॒ नमः॑ ।
208. ओं इ॒षुधि॑मते च॒ नमः॑ ।
209. ओं नमः॑ स्ती॒क्ष्णेष॑वे च॒ नमः॑ ।
210. ओं आ॒युधि॑ने च॒ नमः॑ ।
211. ओं नमः॑ स्वा॒युधाय॑ च॒ नमः॑ ।
212. ओं सु॒धन्व॑ने च॒ नमः॑ ।

213. ओं नमः सु॒त्याय च नमः ।
 214. ओं प॒थ्याय च नमः ।
 215. ओं नमः का॒त्याय च नमः ।
 216. ओं नी॒प्याय च नमः ।
 217. ओं नमः सू॒द्याय च नमः ।
 218. ओं सर॒स्याय च नमः ।
 219. ओं नमो ना॒द्याय च नमः ।
 220. ओं वै॒शन्ताय च नमः ।
 221. ओं नमः कू॒प्याय च नमः ।
 222. ओं अ॒वत्याय च नमः ।
 223. ओं नमो व॒र्ष्याय च नमः ।
 224. ओं अ॒वर्ष्याय च नमः ।
 225. ओं नमो मे॒घ्याय च नमः ।
 226. ओं वि॒द्युत्याय च नमः ।
 227. ओं नम ई॒ध्रियाय च नमः ।
 228. ओं आ॒तप्याय च नमः ।
 229. ओं नमो वा॒त्याय च नमः ।

230. ओं रेष्मियाय च नमः ।
231. ओं नमो वास्तव्याय च नमः ।
232. ओं वास्तुपाय च नमः ।
- 233. ओं नमः सोमाय च नमः ।**
234. ओं रुद्राय च नमः ।
235. ओं नमस्ताम्राय च नमः ।
236. ओं अरुणाय च नमः ।
237. ओं नमः शङ्गाय च नमः ।
238. ओं पशुपतये च नमः ।
239. ओं नम उग्राय च नमः ।
240. ओं भीमाय च नमः ।
241. ओं नमो अग्रेवधाय च नमः ।
242. ओं दूरेवधाय च नमः ।
243. ओं नमो हन्त्रे च नमः ।
244. ओं हनीयसे च नमः ।
245. ओं नमो वृक्षेभ्यो नमः ।

246. ओं हरिकेशेभ्यो नमः ।
247. ओं नमस्ताराय नमः ।
248. ओं नमश्शंभवे च नमः ।
249. ओं मयोभवे च नमः ।
250. ओं नमश्शंकराय च नमः ।
251. ओं मयस्कराय च नमः ।
252. ओं नमः शिवाय च नमः ।
253. ओं शिवतराय च नमः ।
254. ओं नमस्तीर्थ्याय च नमः ।
255. ओं कूल्याय च नमः ।
256. ओं नमः पार्याय च नमः ।
257. ओं अवार्याय च नमः ।
258. ओं नमः प्रतरणाय च नमः ।
259. ओं उत्तरणाय च नमः ।
260. ओं नम आतार्याय च नमः ।
261. ओं आलाद्याय च नमः ।
262. ओं नमः शष्याय च नमः ।

263. ओं फे॒न्याय॑ च॒ नमः॑ ।
264. ओं नमः॑ सि॒क्त्या॑य च॒ नमः॑ ।
265. ओं प्र॒वा॒ह्याय॑ च॒ नमः॑ ।
266. ओं नम॑ इ॒रि॒ण्याय॑ च॒ नमः॑ ।
267. ओं प्र॒प॒थ्या॑य च॒ नमः॑ ।
268. ओं नमः॑ कि॒ञ्चि॒लाय॑ च॒ नमः॑ ।
269. ओं क्ष॒य॒णाय॑ च॒ नमः॑ ।
270. ओं नमः॑ क॒प॒र्दि॒ने च॒ नमः॑ ।
271. ओं पु॒ल॒स्तये॑ च॒ नमः॑ ।
272. ओं नमो॑ गो॒ष्ठ्या॑य च॒ नमः॑ ।
273. ओं गृ॒ह्याय॑ च॒ नमः॑ ।
274. ओं नम॑स्त॒ल्प्या॑य च॒ नमः॑ ।
275. ओं गे॒ह्याय॑ च॒ नमः॑ ।
276. ओं नमः॑ का॒त्याय॑ च॒ नमः॑ ।
277. ओं ग॒ह्व॒रे॒ष्ठाय॑ च॒ नमः॑ ।
278. ओं नमो॑ हृ॒द॒य्याय॑ च॒ नमः॑ ।

279. ओं नि॒वे॒ष्या॒य च॑ नमः ।
280. ओं नमः॑ पा॒ञ्च॒स॒व्या॒य च॑ नमः ।
281. ओं रज॑स्याय च नमः ।
282. ओं नमः॑ शु॒ष्क्या॒य च॑ नमः ।
283. ओं हरि॑त्याय च नमः ।
284. ओं नमो॑ लो॒प्या॒य च॑ नमः ।
285. ओं उल॑प्याय च नमः ।
286. ओं नमः॑ ऊ॒र्व्या॒य च॑ नमः ।
287. ओं सू॒र्म्या॒य च॑ नमः ।
288. ओं नमः॑ प॒र्ण्या॒य च॑ नमः ।
289. ओं प॒र्ण॒श॒द्या॒य च॑ नमः ।
290. ओं नमो॑ऽप॒गु॒र॒मा॒णाय॑ च नमः ।
291. ओं अ॒भि॒घ्न॒ते च॑ नमः ।
292. ओं नमः॑ आ॒क्खि॒द॒ते च॑ नमः ।
293. ओं प्र॒क्खि॒द॒ते च॑ नमः ।
294. ओं नमो॑ वो नमः ।
295. ओं कि॒रि॒के॒भ्यो॑ नमः ।

296. ओं दे॒वानां॑ हृ॒दये॑भ्यो नमः ।

297. ओं नमो॑ वि॒क्षी॒णके॑भ्यो नमः ।

298. ओं नमो॑ वि॒चिन् व॒त्के॑भ्यो नमः ।

299. ओं नम॑ आ॒निर्ह॑तेभ्यो नमः ।

300. ओं नम॑ आ॒मीव॑त्केभ्यो नमः ।

12.6 प्रदक्षिणं

द्रा॒पे अ॒न्धस॑स्प॒ते द॑रि॒द्र॒न्त्री-ल॑लो॒हित ।

ए॒षां पु॑रु॒षाणा॑मे॒षां प॑शू॒नां मा॑ भे॒र्माऽरो॑ मो ए॒षां किञ्च॑ ना॒मम॑त् । 1

या ते॑ रु॒द्र शि॒वा त॑नू॒रिशि॒वा वि॒श्वाह॑भेष॒जी ।

शि॒वा रु॒द्रस्य॑ भेष॒जी तया॑ नो मृ॒ड जी॒वसे॑ । 2

इ॒मां रु॒द्राय॑ तव॒से क॑प॒र्दिने॑ क्षय॒द्वीरा॑य प्र॒भराम॑हे म॒तिं ।

यथा॑ नः श॒मस॑द्-द्वि॒पदे॑ चतु॒ष्पदे॑ वि॒श्वं पु॒ष्टं ग्रा॑मे अ॒स्मि-न्न॑ना॒तुरं । 3

मृ॒डा नो॑ रु॒द्रो त॑नो मय॒स्कृ॒धि क्षय॑द्वी॒राय॑ नम॒सा वि॑धेम ते ।

यच्छ॑ञ्च योश्च॑ म॒नुरा॑य॒जे पि॒ता तद॑श्याम॒ तव॑ रु॒द्र प्र॑णी॒तौ । 4

मा नो॑ म॒हान्तमु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न॒ उक्षन्तमु॒त मा न॒ उक्षि॑तं ।
मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्तनु॒वो रु॒द्र री॑रिषः । 5

मा न॑स्तो॒के तन॑ये मा न॒ आयु॑षि मा नो॒ गोषु॑ मा नो॒ अश्वे॑षु रीरिषः ।
वी॒रान्मा॑नो रु॒द्र भा॑मि॒तो व॒धी ह॒विष्म॑न्तो नम॒सा वि॑धेम ते । 6

आ॒रा॒त्ते गो॑घ्न उ॒त पू॑रुष॒घ्ने क्ष॑यद्वी॒राय सु॒म्न-म॒स्मे ते अ॑स्तु ।
र॒क्षा च नो॑ अ॒धि च दे॒व ब्रू॑ह॒धा च नः॑ श॒र्म य॑च्छद्वि॒बर्हाः॑ । 7

स्तु॒हि श्रु॑तं ग॒र्त्तस॑दं यु॒वानं॑ मृ॒गन्न भी॒म-मु॑प॒हन्तु॑-मु॒ग्रं ।
मृ॒डा ज॑रि॒त्रे रु॒द्र स्त॑वा॒नो अ॒न्यन्ते॑ अ॒स्मन्नि॑व॒पन्तु॑ से॒नाः । 8

प॒रि॒णो रु॒द्रस्य॑ हे॒ति वृ॑णक्तु प॒रित्वे॑षस्य दु॒र्मति॑र॒घायोः॑ ।
अ॒व स्थि॑रा म॒घव॑द्भ्य-स्तनु॒ष्व मी॑द्वस्तो॒काय॑ तनयाय मृ॒डय॑ । 9

मी॑दुष्ट॒म शि॒वत॑म शि॒वो न॑स्सु॒मना॑ भव । प॒रमे॑ वृ॒क्ष आ॑यु॒धन्नि॒धाय॑
कृ॒त्तिं व॑सान॒ आच॑र पि॒नाकं॑ बिभ्र॒दाग॑हि । 10

वि॒कि॒रि॒द वि॒लो॒हित॑ नम॒स्ते अ॑स्तु भगवः ।
या॒स्ते स॒हस्र॑ हे॒तयो॒ऽन्य-म॑स्मन्नि॒वप॑न्तु ताः । 11

स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑धा बा॒हु॒वो॒स्तव॑ हे॒तयः॑ ।
ता॒सामी॑शा॒नो भ॒गवः॑ प॒रा॒ची॒ना मु॒खा कृ॒धि । 12

12.7 नमस्कारः

स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑शो ये रु॒द्रा अ॒धि भू॒म्यां॑ ।
तेषां॑ स॒हस्र॑यो॒जने॒ ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । 1

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

अ॒स्मिन्-म॒ह॒त्य॒र्ण॒वै-ऽन्त॑रि॒क्षे भ॒वा अ॒धि ।
तेषां॑ स॒हस्र॑यो॒जने॒ ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । 2

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

नी॒ल॒ग्री॒वाः शि॒ति॒क॒ण्ठाः॑ श॒र्वा अ॒धः क्ष॑मा॒च॒राः ।
तेषां॑ स॒हस्र॑यो॒जने॒ ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । 3

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

नी॒ल॒ग्री॒वा-शि॒ति॒क॒ण्ठा दि॒व॒ः रु॒द्रा उ॒प॒श्रि॒ताः ।
तेषां॑ स॒हस्र॑यो॒जने॒ ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । 4

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

ये वृ॒क्षेषु॑ स॒स्पिञ्ज॑रा नी॒लग्री॑वा विलो॒हिताः॑ ।

तेषां॑ सहस्र॒योज॑ने ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । 5

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

ये भू॒ताना॑-मधि॒पत॑यो विशि॒खासः॑ कप॒र्दिनः॑ ।

तेषां॑ सहस्र॒योज॑ने ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । 6

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

ये अ॒न्नेषु॑ वि॒विध्य॑न्ति पा॒त्रेषु॑ पिब॒तो ज॑नान् ।

तेषां॑ सहस्र॒योज॑ने ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । 7

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

ये प॒थां प॑थि॒रक्ष॑य ऐ॒लबृ॑दा यव्यु॒धः ।

तेषां॑ सहस्र॒योज॑ने ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । 8

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

ये ती॒र्थानि॑ प्र॒चर॑न्ति सृ॒काव॑न्तो निष॒ङ्गिणः॑ ।

तेषां॑ सहस्र॒योज॑ने ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । 9

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

य ए॒ता॒वन्तश्च॑ भू॒या॒ꣳसश्च॑ दि॒शो॑ रु॒द्रा वि॒तस्ति॑थिरे ।

तेषा॑ꣳ स॒हस्र॑यो॒जने॑ ऽव॒धन्वा॑नि तन्म॒सि । 10

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये पृ॒थि॒व्यां येषा॑म॒न्नमि॑षव-स्तेभ्यो॑ द॒श प्रा॒ची
दर्श॑दक्षि॒णा द॒शप्र॑ती॒ची दर्शो॑दी॒ची दर्शो॑र्ध्वा-स्तेभ्यो॑ नमस्ते नो॑
मृड॑यन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो द्वेष्टि॒ तं वो॑ जंभे॑ दधामि ॥ 11

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ येऽन्तरि॑क्षे येषां॑ वा॒त इ॒षव॑-स्तेभ्यो॑ द॒श प्रा॒ची
दर्श॑दक्षि॒णा द॒शप्र॑ती॒ची दर्शो॑दी॒ची दर्शो॑र्ध्वा-स्तेभ्यो॑ नमस्ते नो॑
मृड॑यन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो द्वेष्टि॒ तं वो॑ जंभे॑ दधामि ॥ 12

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये दि॒वि येषां॑ व॒र्षमि॑षव-स्तेभ्यो॑ द॒श
प्रा॒ची दर्श॑दक्षि॒णा द॒शप्र॑ती॒ची दर्शो॑दी॒ची दर्शो॑र्ध्वा-स्तेभ्यो॑ नमस्ते
नो॑ मृड॑यन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो द्वेष्टि॒ तं वो॑ जंभे॑ दधामि ॥ 13

महादे॒वादि॑भ्यो रु॒द्रेभ्यो॑ नमः ।

12.8 चमक प्रार्थना

प्रथमः अनुवाकः

ओं अ॒ग्ना॒विष्णू॑ स॒जोष॑से॒मा व॑र्द्धन्तु वा॒ङ्गिरः॑ ।

द्यु॒नैर्वा॒जे-भि॒रा॒गतं ॥

वा॒जश्च॑ मे,

प्र॒सव॑श्च मे,

प्र॒यति॑श्च मे,

प्र॒सिति॑श्च मे,

धी॒तिश्च॑ मे,

क्र॒तुश्च॑ मे,

स्व॒रश्च॑ मे,

इ॒लोक॑श्च मे,

श्रा॒वश्च॑ मे,

श्रु॒तिश्च॑ मे,

ज्यो॒तिश्च॑ मे,

सु॒वश्च॑ मे,

प्रा॒णश्च॑ मे,

ऽपान॑श्च मे,

व्या॒नश्च॑ मे,

ऽसु॑श्च मे,

चि॒त्तं च॑ म ,

आ॒धी॒तं च॑ मे,

वाक्च॑ मे,

म॒नश्च॑ मे,

चक्षु॑श्च मे ,

श्रो॒त्रं च॑ मे,

दक्ष॑श्च मे,

ब॒लं च॑ म,

ओजश्च मे ,
 आयुश्च मे,
 आत्मा च मे,
 शर्म च मे,

सहश्च म,
 जरा च म,
 तनूश्च मे,
 वर्म च मे,

ऽङ्गानि च मे,
 परूष्णि च मे,

ऽस्थानि च मे,
 शरीराणि च मे ॥ 1 (36)

द्वितीयः अनुवाकः

ज्यैष्ठ्यं च म,
 मन्युश्च मे,
 ऽमश्च मे,
 जेमा च मे,

आधिपत्यं च मे,
 भामश्च मे,
 ऽभश्च मे,
 महिमा च मे,

वरिमा च मे,
 वर्षा च मे,
 वृद्धं च मे,
 सत्यं च मे,

प्रथिमा च मे,
 द्राघुया च मे,
 वृद्धिश्च मे,
 श्रद्धा च मे,

जगच्च॑ मे,
व॑शश्च॒ मे,
क्री॑डा च॒ मे,
जा॑तं च॒ मे,

सू॒क्तं च॑ मे,
वि॒त्तं च॑ मे,
भू॒तं च॑ मे,
सु॒गं च॑ मे,

ऋ॒द्धं च॑ म,
क्लृ॒प्तं च॑ मे,
म॒तिश्च॑ मे,

तृतीयः अनुवाकः

शं॑ च॒ मे,
प्रि॒यं च॑ मे,
का॒मश्च॑ मे,
भ॒द्रं च॑ मे,

ध॒नं च॑ मे,
त्वि॒षिश्च॑ मे,
मो॒दश्च॑ मे,
ज॒निष्य॑माणं च॒ मे,

सु॒कृतं॑ च॒ मे,
वे॒द्यं च॑ मे,
भ॒विष्य॑च्च॒ मे,
सु॒पथं॑ च॒ म,

ऋ॒द्धिश्च॑ मे,
क्लृ॒प्तिश्च॑ मे,
सु॒म॒तिश्च॑ मे ॥ 2 (38)

म॒यश्च॑ मे,
ऽनु॒का॒मश्च॑ मे,
सौ॒म॒न॒सश्च॑ मे,
श्रे॒यश्च॑ मे,

वस्यश्च मे,
भगश्च मे,
यन्ता च मे,
क्षेमश्च मे,

विश्वं च मे,
सँविच्च मे,
सूश्च मे,
सीरं च मे,

ऋतं च मे,
ऽयक्ष्मं च मे,
जीवातुश्च मे,
ऽनमित्रं च मे,

सुगं च मे,
सूषा च मे,

यशश्च मे,
द्रविणं च मे,
धर्ता च मे,
धृतिश्च मे,

महश्च मे,
ज्ञात्रं च मे,
प्रसूश्च मे,
लयश्च म ,

ऽमृतं च मे,
ऽनामयच्च मे,
दीर्घायुत्वं च मे,
ऽभयं च मे,

शयनं च मे,
सुदिनं च मे ॥ 3 (36)

चतुर्थः अनुवाकः

ऊ॒र्क्च॑ मे,

प॒यश्च॑ मे,

घृ॒तं च॑ मे,

स॒ग्धिश्च॑ मे,

कृ॒षिश्च॑ मे,

जै॒त्रं च॑ मे,

र॒यिश्च॑ मे,

पु॒ष्टं च॑ मे,

वि॒भु च॑ मे,

ब॒हु च॑ मे,

पू॒र्णं च॑ मे,

ऽक्षि॑तिश्च मे,

सू॒नृता॑ च॒ मे,

र॒सश्च॑ मे,

म॒धु च॑ मे ,

स॒पीति॑श्च मे,

वृ॒ष्टिश्च॑ मे,

औ॒द्भिद्यं॑ च॒ मे ,

रा॒यश्च॑ मे ,

पु॒ष्टिश्च॑ मे,

प्र॒भु च॑ मे,

भू॒यश्च॑ मे,

पू॒र्णतरं॑ च॒ मे,

कू॒यवा॑श्च मे,

ॐ॑ च॒ मे,
 व्री॒हयश्च॑ मे,
 मा॒षाश्च॑ मे,
 मु॒द्गाश्च॑ मे,

गो॒धूमाश्च॑ मे,
 प्रि॒यंग॑वश्च मे,
 श्या॒माक॑स्श्च मे,

पञ्चमः अनुवाकः

अ॒श्मा च॑ मे,
 गि॒रय॑श्च मे,
 सि॒कता॑श्च मे,
 हि॒रण्यं च॑ मे,

सी॒सं च॑ मे,
 श्या॒मं च॑ मे,
 अ॒ग्निश्च॑ म,
 वी॒रुध॑श्च म,

अ॒क्षुच्च॑ मे,
 य॒वाश्च॑ मे,
 ति॒लाश्च॑ मे,
 ख॒ल्वाश्च॑ मे,

म॒सुरा॑श्च मे,
 अ॒णव॑श्च मे,
 नी॒वार॑स्श्च मे ॥ 4 (38)

मृ॒त्तिका च॑ मे,
 प॒र्वता॑श्च मे,
 वन॑स्पतयश्च मे,
 अ॒यश्च॑ मे,

त्र॒पुश्च॑ मे,
 लो॒हं च॑ मे,
 आ॒पश्च॑ मे,
 ओ॒षध॑यश्च मे,

कृ॒ष्टप॑च्यं च॒ मे,
ग्रा॒म्याश्च॑ मे,

वि॒त्तं च॑ मे,
भू॒तं च॑ मे,
वसु॑ च॒ मे,
कर्म॑ च॒ मे,

ऽर्थ॑श्च॒ म,
इति॑श्च॒ मे,

ऽकृ॒ष्टप॑च्यं च॒ मे,
प॒शव॑ आ॒रण्या॑श्च॒ यज्ञे॑न कल्पन्तां ,

वि॒त्तिश्च॑ मे,
भू॒तिश्च॑ मे,
वस॑तिश्च॒ मे,
शक्ति॑श्च॒ मे,

ए॒मश्च॒ म,
गति॑श्च॒ मे ॥ 5 (32)

षष्ठः अनुवाकः

अ॒ग्निश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,
सवि॑ता च॒ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,

पू॒षा च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,
मि॒त्रश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,

त्व॒ष्टा च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,
विष्णु॑श्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे ,

सोम॑श्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,
सर॑स्वती च॒ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,

बृ॒हस्प॑तिश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,
वरु॑णश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,

धा॒ता च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,
ऽश्वि॑नौ च॒ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,

म॒रु॒तश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,
पृ॒थि॒वी च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,

द्यौश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,
मूर्धा॑ च॒ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,

वि॒श्वे च॑ मे, दे॒वा इन्द्र॑श्च॒ मे,
ऽन्त॑रि॒क्षं च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,

दि॒शश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे,
प्र॒जा॒प॒तिश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॒ मे ॥ 6 (21)

सप्तमः अनुवाकः

अ॒ञ्शु॑श्च॒ मे,
ऽदा॑भ्यश्च॒ मे,
उपा॑ञ्शुश्च॒ मे,
ऐन्द्र॑वा॒यव॑श्च॒ मे,

आ॒श्विन॑श्च॒ मे,
शु॒क्रश्च॑ मे,
आ॒ग्र॒य॒णश्च॑ मे,
ध्रु॒वश्च॑ मे,

ऋ॒तु॒ग्र॒हाश्च॑ मे,
ऐन्द्रा॑ग्नश्च॒ मे,

र॒श्मि॑श्च॒ मे,
ऽधि॑प॒तिश्च॑ म॒,
ऽन्त॑र्या॒मश्च॑ म॒,
मै॒त्रा॒व॒रु॒णश्च॑ म॒,

प्र॒ति॒प्र॒स्था॒नश्च॑ मे,
म॒न्थी च॑ म॒,
वै॒श्व॒दे॒वश्च॑ मे,
वै॒श्वान॑रश्च॒ म॒,

ऽति॑ग्राह्याश्च॒ म॒,
वै॒श्व॒दे॒वश्च॑ मे,

मरुत्वतीयाश्च मे,
आदित्यश्च मे,

सारस्वतश्च मे,
पालीवतश्च मे,

माहेन्द्रश्च मे,
सावित्रश्च मे,

पौष्णश्च मे,
हारियोजनश्च मे ॥ 7 (28)

अष्टमः अनुवाकः

इद्धमश्च मे,
वेदिश्च मे,
सुचश्च मे,
ग्रावाणश्च मे,

उपरवाश्च मे,
द्रोणकलशश्च मे,
पूतभृच्च मे,
आग्नीध्रं च मे,

गृहाश्च मे,
पुरोडाशाश्च मे,
ऽवभृथश्च मे,

बर्हिश्च मे,
धिष्ण्याश्च मे,
चमसाश्च मे,
स्वरवश्च मे,

ऽधिषवणे च मे,
वायव्यानि च मे,
आधवनीयश्च मे,
हविर्धानं च मे,

सदश्च मे,
पचताश्च मे,
स्वगाकारश्च मे ॥ 8 (22)

नवमः अनुवाकः

अ॒ग्निश्च॑ मे॒,

ऽर्क॑श्च मे॒,

प्रा॒णश्च॑ मे॒,

पृ॒थि॒वी च॑ मे॒,

दि॒तिश्च॑ मे॒,

श॒क्व॒रीर॒ङ्गु॒लयो॑ दि॒शश्च॑ मे॒,

सा॒म च॑ मे॒,

य॒जुश्च॑ मे॒,

त॒पश्च॑ मे॒,

व्र॒तं च॑ मे॒,

बृ॒ह॒द्र॒थ॒न्त॒रे च॑ मे॒

घ॒र्मश्च॑ मे॒

सूर्य॑श्च मे॒,

ऽश्व॑मे॒धश्च॑ मे॒,

ऽदि॒तिश्च॑ मे॒,

द्यौश्च॑ मे॒,

य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पन्ता॒-मृ॒क्च॑ मे॒,

स्तो॒मश्च॑ मे॒,

दी॒क्षा च॑ मे॒,

ऋ॒तुश्च॑ मे॒,

ऽहो॒रा॒त्रयो॑ वृ॒ष्ट्या॒,

य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पेतां॑ ॥ 9 (21)

दशमः अनुवाकः

ग॒र्भाश्च॑ मे॒,

त्रि॑श्च मे॒,

व॒थ॒साश्च॑ मे॒,

त्रि॑च मे॒,

दित्य॒वाट् च॑ मे,
पञ्चा॒विश्व॑ मे,

दित्यौ॒ही च॑ मे,
पञ्चा॒वी च॑ मे,

त्रिव॒थ्सश्च॑ मे,
तुर्य॒वाट् च॑ मे,
पष्ठ॒वाट् च॑ मे,
उक्षा॑ च॑ मे,

त्रिव॒थ्सा च॑ मे,
तुर्यौ॒ही च॑ मे,
पष्ठौ॒ही च॑ म,
वशा॑ च॑ म,

ऋष॑भश्च॑ मे,
ऽन॒ड्वान् च॑ मे,

वेह॑च्च॑ मे,
धेनु॑श्च॑ म,

आयु॑र्यज्ञेन॑ कल्पतां,
मपा॒नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ,
चक्षु॑र्यज्ञेन॑ कल्पता॑ऽ,
मनो॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ,
मात्मा॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ,

प्रा॒णो य॒ज्ञेन॑ कल्पता—
व्या॒नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां
श्रोत्रं॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पतां
वा॒ग्य॒ज्ञेन॑ कल्पता—
य॒ज्ञो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ॥ 10 (29)

एकादशः अनुवाकः

एका॑ च॑ मे,
पञ्च॑ च॑ मे,

तिस्र॑श्च॑ मे,
सप्त॑ च॑ मे,

न॒व च॑ म॒,

त्रयो॑दश च॒ मे॒,

सप्त॑दश च॒ मे॒,

एक॑विंशतिश्च॒ मे॒,

पञ्च॑विंशतिश्च॒ मे॒,

नव॑विंशतिश्च॒ म॒,

त्रय॑स्त्रिंशच्च॒ मे॒,

ऽष्टौ॑ च॒ मे॒,

षोड॑श च॒ मे॒,

चतु॑र्विंशतिश्च॒ मे॒,

द्वात्रि॑ंशच्च॒ मे॒,

चत्वारि॑ंशच्च॒ मे॒,

ऽष्टा॑चत्वारिंशच्च॒ मे॒,

वा॒जश्च॑ प्र॒सव॑श्चा-पि॒जश्च॑ क्र॒तुश्च॑ सु॒वश्च॑ मूर्धा॒ च॒ व्य॒श्नि॒जय॑-

श्चा॒न्त्या॒यन॑-श्चा॒न्त्यश्च॑ भौ॒वन॑श्च॒ भु॒वन॑श्चा-धि॒पति॑श्च ॥ 11 (41)

एका॑दश च॒ मे॒,

पञ्च॑दश च॒ मे॒,

नव॑दश च॒ म॒,

त्रयो॑विंशतिश्च॒ मे॒,

सप्त॑विंशतिश्च॒ मे॒,

एक॑त्रिंशच्च॒ मे॒,

चत॑स्रश्च॒ मे॒,

द्वाद॑श च॒ मे॒,

वि॒ंशति॑श्च॒ मे॒,

ऽष्टा॑विंशतिश्च॒ मे॒

षट्त्रि॑ंशच्च॒ मे॒,

चतु॑श्चत्वारिंशच्च॒ मे॒,

इ॒डा दे॒वहू॑ र्म॒नु र्य॒ज्ञनी॑र् बृ॒हस्प॑ति-रु॒क्थाम॑द॒नि
श॒ऽसि॑षद्-वि॒श्वे-दे॒वाः सू॒क्तवा॑चः पृ॒थिवि॑मा॒त मा॑ हि॒सी
म॒धु म॑नि॒ष्ये म॒धु ज॑नि॒ष्ये म॒धु व॑क्ष्यामि म॒धु व॑दिष्यामि म॒धुम॑तीं
दे॒वेभ्यो॑ वा॒चमु॑द्यास॒ऽशु॑श्रू॒षेण्यां॑ म॒नुष्ये॑भ्यस्तं मा॑ दे॒वा
अ॒वन्तु॑ शो॒भायै॑ पि॒तरो॑ ऽनु॒मद॑न्तु ॥

ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

=====

12.9 अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो

अ॒घोरे॑भ्यो ऽथ॒घोरे॑भ्यो घोर॒घोर॑तरेभ्यः ।

सर्वे॑भ्यः सर्वे॑शर्वे॑भ्यो नम॒स्ते अस्तु॑ रु॒द्ररू॑पेभ्यः ॥

तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ म॒हादे॒वाय॑ धीमहि । तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॑चोदयात् ॥

ई॒शानः॑ सर्व॒विद्या॑ना-मी॒श्वरः॑ सर्व॒भूता॑नां ब्र॒ह्माधि॑पति ब्र॒ह्मणो॑ऽधि॒पति
ब्र॒ह्मा शि॒वो मे॑ अस्तु सदा॒शिवो॑ ॥

((नमो॑ हि॒रण्य॑बा॒हवे॑ हि॒रण्य॑वर्णाय हि॒रण्य॑रूपाय हि॒रण्य॑पतये ऽंबिका॑पतये
उ॒माप॑तये प॒शुप॑तये नमो॑ नमः॑ ॥))

12.10 श्री रुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं

अस्य श्री रुद्राध्याय प्रश्न महामन्त्रस्य

अघोर ऋषिः, अनुष्टुप् चन्दः, संकर्षणमूर्ति स्वरूपो योऽसावादित्य स
एष मृत्युञ्जयरुद्रो देवता ।

नमः शिवायेति बीजं, शिवतरायेति शक्तिः,

नमः सोमायेति (महादेवायेति) कीलकं, (श्री साम्ब सदाशिव)

सोमास्कन्द-परमेस्वर प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

करन्यासः

अग्निहोत्रात्मने

अंगुष्ठाभ्यां नमः

दर्शपूर्णमासात्मने

तर्जनीभ्यां नमः

चातुर्मास्यात्मने

मध्यमाभ्यां नमः

निरूढपशुबन्धात्मने

अनामिकाभ्यां नमः

ज्योतिष्ठोमात्मने

कनिष्ठिकाभ्यां नमः

सर्वक्रत्वात्मने

करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः

अंगन्यासः

अग्निहोत्रात्मने

हृदयाय नमः

दर्शपूर्णमासात्मने

शिरसे स्वाहा

चातुर्मास्यात्मने	शिखायै वषट्
निरूढपशुबन्धात्मने	कवचाय हुं
ज्योतिष्ठोमात्मने	नेत्रत्रयाय वौषट्
सर्वक्रत्वात्मने	अस्त्राय फट्
भूर्भुवस्सुवरो	इति दिग्बन्धः

ध्यानं

आपाताळ-नभस्थलान्तभुवन ब्रह्माण्ड-माविस्फुरत्-
ज्योति-स्फाटिक-लिंगमौळि-विलसत्पूर्णन्दुवान्तामृतैः ।
अस्तोकाप्लुतमेक-मीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन्-
ध्यायेत्-दीप्सितसिद्धये ऽद्रुवपदं विप्रो-ऽभिषिञ्चेच्छिवं ॥ 1

पीठं यस्य धरित्री जलधरकलशं लिंगमाकाश मूर्तिं
नक्षत्रं पुष्पमाल्यं ग्रहकणकुसुमं चन्द्र-वहन्यर्क-नेत्रं
कुक्षिः सप्तसमुद्रं भुजगिरि-शिखरं सप्त पाताळपादं
वेदं वक्त्रं षडंगं दशदिशि वसनं दिव्यलिंगं नमामि ॥ 2

ब्रह्माण्ड-व्याप्तदेहा भसितहिम रुचा भासमाना भुजंगैः
कण्ठे कालाः कपर्दी-कलित शशिकला श्रण्ड कोदण्डहस्ताः
त्र्यक्षा रुद्राक्षमाला प्रणत भयहराः (प्रकटितविभवाः) शांभवा मूर्तिभेदाः

रुद्राः श्रीरुद्र-सूक्त प्रकटितविभवाः नः प्रयच्छन्तु सौख्यं ॥ 3

12.11 गणानां त्वा

ओं ग॒णानां॑ त्वा ग॒णप॑ति॒ ह॒वाम॑हे क॒विं क॑वी॒ना-मु॒पम॑श्रवस्तमं ।

जे॒ष्ठरा॒जं ब्र॑ह्म॒णां ब्र॑ह्म॒णस्प॑त आ नः शृ॒ण्वन्नू॑तिभिः सी॒द सा॑दनं ।

श्री महा गणपतये नमः ।

12.12 शं च मे

शं च मे,

प्रि॒यं च मे,

का॒मश्च मे,

भ॒द्रं च मे,

व॒स्यश्च मे,

भ॒गश्च मे,

य॒न्ता च मे,

क्षे॒मश्च मे,

वि॒श्वं च मे,

सँ॒वि॒च्च मे,

म॒यश्च मे,

ऽनु॒का॒मश्च मे,

सौ॒म॒न॒सश्च मे,

श्रे॒यश्च मे,

य॒शश्च मे,

द्र॒वि॒णं च मे,

ध॒र्ता च मे,

धृ॒तिश्च मे,

म॒हश्च मे,

ज्ञा॒त्रं च मे,

सू॒श्च॑ मे॒,

सी॒रं च॑ मे॒,

ऋ॒तं च॑ मे॒,

ऽय॒क्ष्मं च॑ मे॒,

जी॒वातु॑श्च मे॒,

ऽन॒मित्रं॑ च॑ मे॒,

सु॒गं च॑ मे॒,

सू॒षा च॑ मे॒,

प्र॒सू॒श्च॑ मे॒,

ल॒यश्च॑ म॒,

ऽमृ॒तं च॑ मे॒,

ऽना॒मय॑च्च मे॒,

दी॒र्घायु॑त्वं च॑ मे॒,

ऽभ॒यं च॑ मे॒,

श॒यनं॑ च॑ मे॒,

सु॒दिनं॑ च॑ मे॒ ॥ 3 (36)

ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ।

12.13 श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः

अस्य श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रस्य, बोधायन ऋषिः, पङ्क्तिः छन्दः,
सदाशिव रुद्रो देवता ।

ध्यानं

कैलासाचल-सन्निभा त्रिनयनं पञ्चास्यमम्बायुतं
नीलग्रीव-महीश-भूषणधरं व्याघ्रत्वचा प्रावृतं
अक्षस्रग्वर-कुण्डिका-भयकरं चान्द्रीं कलां बिभ्रतं
गंगाभोविलसज्जटं दशभुजं वन्दे महेशं परं ॥

मूलमन्त्रः

"ओं नमो भगवते रुद्राय"

It is customary to chant "Shree Rudram" after this Dyanam
and Moola Mantram.

12.14 श्री रुद्रं

पथमः अनुवाकः

ओं नमो भगवते रुद्राय ॥

ओं नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः ।

नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः । 1.1

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः ।

शिवा शरव्या या तव तया नो रुद्र मृडय । 1.2

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा ऽपापकाशिनी ।

तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ता भिचाकशीहि । 1.3

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।

शिवाङ्-गिरित्र ताङ्कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत् । 1.4

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।

यथा नस्सर्वमि-ज्जगद यक्ष्मं सुमना असत् । 1.5

अध्यवोच-दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।

अहींश्च सर्वान् जंभयन् त्सर्वाश्च यातु धान्यः । 1.6

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुस्सुमङ्गलः । ये चेमाँ रुद्रा
अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो ज्वैषाँ हेड ईमहे । 1.7

असौ यो ज्वसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
उतैनं गोपा अदृशन्-नदृशन्-नुदहार्यः ।
उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः । 1.8

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्यो ऽकरन्नमः । 1.9

प्रमुञ्च धन्वन-स्त्वमुभयो-रार्णियोज्या ।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप । 1.10

अवतत्य धनुस्त्वँ सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव । 1.11

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ उत ।
अनेशन्नस्येषव आभुरस्य निषङ्गथिः । 1.12

या ते हेति मी॒ढुष्ट॑म ह॒स्ते ब॒भूव॑ ते ध॒नुः ।
तयाऽस्मा॑न् वि॒श्वत॑ स्त्व॒मय॑क्ष्मया परि॒ब्भुज॑ । 1.13

नम॑स्ते अ॒स्त्वायु॑धाया-ना॒तताय॑ धृ॒ष्णवे॑ ।
उ॒भाभ्या॑मु॒त ते नमो॑ बा॒हुभ्यां॑ तव ध॒न्वने॑ । 1.14

परि॑ ते ध॒न्वनो॑ हेतिर॒स्मान् वृ॑णक्तु वि॒श्वतः॑ ।
अथो॒ य इ॒षुधि॑स्त॒वारे अ॒स्मन्नि॑धेहि तं ॥ 1.15

नम॑स्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय
त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय
नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय सदाशिवाय
शङ्कराय श्रीमन्-महादेवाय नमः ॥

द्वितीयः अनुवाकः

नमो॑ हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशांच पतये नमो 2.1

नमो॑ वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो 2.2

नम॑स्सस्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो 2.3

नमो॑ बभ्रुशाय विव्याधिने-ऽन्नानां पतये नमो 2.4

नमो॑ हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमो 2.5

नमो॑ भव॒स्य हे॒त्यै जग॑तां पतये नमो॑	2.6
नमो॑ रु॒द्राया॑-त॒तावि॑ने क्षे॒त्राणां॑ पतये नमो॑	2.7
नमः॑ सू॒ताया॑-ह॒न्त्याय॑ व॒नानां॑ पतये नमो॑	2.8
नमो॑ रो॒हिताय॑ स्थपतये वृ॒क्षाणां॑ पतये नमो॑	2.9
नमो॑ म॒न्त्रिणे॑ वा॒णिजाय॑ क॒क्षाणां॑ पतये नमो॑	2.10
नमो॑ भुव॒न्तये॑ वा॒रिव॑स्कृ॒ता-यौष॑धीनां पतये नमो॑	2.11
नम॑ उच्चै॑ र्घोषायाक्रन्दयते प॒त्तीनां॑ पतये नमो॑	2.12
नमः॑ कृ॒त्स्नवी॑ताय धावते स॒त्त्वनां॑ पतये नमः॑ ॥	2.13

तृतीयः अनुवाकः

नमस्सह॑मानाय नि॒व्याधि॑न आ॒व्याधि॑नीनां पतये नमो॑	3.1
नमः॑ ककु॒भाय॑ निष॒ङ्गिणे॑ स्ते॒नानां॑ पतये नमो॑	3.2
नमो॑ निष॒ङ्गिण॑ इषु॒धिम॑ते तस्कराणां पतये नमो॑	3.3
नमो॑ वञ्च॑ते परि॒वञ्च॑ते स्तायू॒नां पतये॑ नमो॑	3.4
नमो॑ नि॒चेर॑वे परि॒चरा॑या-र॒ण्यानां॑ पतये नमो॑	3.5
नमः॑ सृ॒कावि॑भ्यो जिघा॒सद्भ्यो॑ मु॒ष्णतां॑ पतये नमो॑	3.6
नमो॑ ऽसि॒मद्भ्यो॑ न॒क्तं च॑रद्भ्यः प्र॒कृन्ता॑नां पतये नमो॑	3.7
नम॑ उष्णी॒षिणे॑ गि॒रिच॑राय कु॒लुञ्चा॑नां पतये नमो॑	3.8

नम॑ इ॒षुम॑द्भ्यो ध॒न्वावि॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	3.9
नम॑ आ॒तन्वा॑नेभ्यः॑ प्र॒तिद॑धानेभ्यश्च वो॒ नमो॑	3.10
नम॑ आ॒यच्छ॑द्भ्यो वि॒सृज॑द्भ्यश्च वो॒ नमो॑	3.11
नमो॑ऽस्य॑द्भ्यो वि॒ध्यभ्य॑श्च वो॒ नमो॑	3.12
नम॑ आ॒सीने॑भ्यः श॒याने॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	3.13
नम॑स्स्व॒पद्भ्यो॑ जा॒ग्रद्भ्य॑श्च वो॒ नमो॑	3.14
नम॑स्तिष्ठ॑द्भ्यो धा॒वद्भ्य॑श्च वो॒ नमो॑	3.15
नम॑स्स॒भाभ्य॑-स्स॒भाप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॑	3.16
नमो॑ अ॒श्वेभ्यो॑ ऽश्व॑पतिभ्यश्च वो॒ नमः॑ ॥	3.17

चतुर्थः अनुवाकः

नम॑ आ॒व्याधि॑नीभ्यो वि॒विद्ध्य॑न्तीभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.1
नम॑ उ॒गणा॑भ्य स्तृ॒हती॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.2
नमो॑ गृ॒थ्सेभ्यो॑ गृ॒थ्स॑पतिभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.3
नमो॑ व्रा॒तैभ्यो॑ व्रा॒तप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.4
नमो॑ ग॒णेभ्यो॑ ग॒णप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.5
नमो॑ वि॒रूपे॑भ्यो वि॒श्वरूपे॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.6
नमो॑ म॒हद्भ्यः॑ क्षु॒ल्लके॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.7

नमो॑ रथि॑भ्यो-ऽरथे॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.8
नमो॑ रथे॑भ्यो रथ॑पतिभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.9
नमः॑ से॒नाभ्य-स्से॒नानि॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.10
नमः॑ क्ष॒त्तृभ्य-स्संग्र॑हीतृभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.11
नमस्त॑क्षभ्यो रथ॑कारेभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.12
नमः॑ कु॒लाले॑भ्यः क॒मरि॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.13
नमः॑ पु॒ञ्जिष्टे॑भ्यो निषा॑देभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.14
नम॑ इषु॒कृद्भ्यो धन्व॑कृद्भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.15
नमो॑ मृ॒गयु॑भ्यः श्वनि॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.16
नमः॑ श्व॒भ्यः श्व॑पतिभ्यश्च वो॒ नमः॑ ॥	4.17

पञ्चमः अनुवाकः

नमो॑ भ॒वाय॑ च रु॒द्राय॑ च नम॑श्श॒र्वाय॑ च पशु॑पतये च
नमो॑ नी॒लग्री॑वाय च शि॒तिक॑ण्ठाय च नमः॑ क॒पर्दि॑ने च व्यु॒प्तके॑शाय च
नम॑-स्सह॒स्राक्ष॑ाय च श॒तध॑न्वने च नमो॑ गि॒रिशा॑य च शि॒पिवि॑ष्टाय च
नमो॑ मी॒ढुष्ट॑माय चे॒षुम॑ते च नमो॑ ह्र॒स्वाय॑ च वा॒मना॑य च
नमो॑ बृ॒हते॑ च वर्षी॑यसे च नमो॑ वृ॒द्धाय॑ च स॒म्वृ॑ध्वने च
नमो॑ अ॒ग्रिया॑य च प्र॒थमा॑य च नम॑ आ॒शवे॑ चाजि॒राय॑ च

नमः॑ शी॒घ्रियाय॑ च॒ शी॒भ्याय॑ च॒ नमः॑ ऊ॒र्म्याय॑ चाव॒स्वन्याय॑ च॒
नमः॑ स्रो॒तस्याय॑ च॒ द्वी॒प्याय॑ च ॥ 5

षष्ठः अनुवाकः

नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ च॒ कनि॒ष्ठाय॑ च॒ नमः॑ पू॒र्वजाय॑ चाप॒रजाय॑ च॒
नमो॑ म॒ध्यमाय॑ चाप॒गल्भाय॑ च॒ नमो॑ ज॒घन्याय॑ च॒ बु॒ध्नियाय॑ च॒
नमस्सो॒भ्याय॑ च॒ प्र॒तिस॒र्याय॑ च॒ नमो॑ या॒म्याय॑ च॒ क्षे॒म्याय॑ च॒
नम॑ उ॒र्वर्याय॑ च॒ ख॒ल्याय॑ च॒ नम॑ इ॒लोक्याय॑ चाव॒सान्याय॑ च॒
नमो॑ व॒न्याय॑ च॒ क॒क्ष्याय॑ च॒ नम॑ इ॒श्रवाय॑ च॒ प्र॒तिश्र॒वाय॑ च॒
नम॑ आ॒शुषे॒णाय॑ चा॒शुर॒थाय॑ च॒ नमः॑ शू॒राय॑ चाव॒भिन्दते॑ च॒
नमो॑ वर्मि॒णे च॒ वरू॒थिने॑ च॒ नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च॒ क॒वचि॒ने च॒
नमः॑ श्रु॒ताय॑ च॒ श्रु॒तसे॒नाय॑ च ॥ 6

सप्तमः अनुवाकः

नमो॑ दु॒न्दु॒भ्याय॑ चाह॒नन्याय॑ च॒ नमो॑ धृ॒ष्णवे॑ च॒ प्रमृ॒शाय॑ च॒
नमो॑ दू॒ताय॑ च॒ प्र॒हि॒ताय॑ च॒ नमो॑ निष॒ङ्गि॒णे चेषु॑धि॒मते॑ च॒
नम॑ स्ती॒क्ष्णेष॑वे चायु॒धिने॑ च॒ नमः॑ स्वायु॒धाय॑ च॒ सु॒धन्व॑ने च॒
नमस्सु॒त्याय॑ च॒ प॒थ्याय॑ च॒ नमः॑ का॒त्याय॑ च॒ नी॒प्याय॑ च॒
नमः॑ सू॒द्याय॑ च॒ सर॒स्याय॑ च॒ नमो॑ ना॒द्याय॑ च॒ वैश॒न्ताय॑ च॒

नमः॑ कू॒प्याय॑ चाव॒द्याय॑ च॒ नमो॑ वर्ष्पा॒य चाव॑र्ष्पा॒य च॒
 नमो॑ मे॒घ्याय॑ च वि॒द्युत्या॑य च॒ नम॑ ई॒ध्रिया॑य चात॒प्याय॑ च॒
 नमो॑ वा॒त्याय॑ च रे॒ष्मिया॑य च॒ नमो॑ वास्त॒व्याय॑ च वास्तु॒पाय॑ च ॥ 7

अष्टमः अनुवाकः

नमः॑ सो॒माय॑ च रु॒द्राय॑ च॒ नमस्ता॑म्राय॒ चारु॑णाय॒ च॒
 नम॑श्शङ्गा॒य च॑ पशु॒पत॑ये च॒ नम॑ उ॒ग्राय॑ च भी॒माय॑ च॒
 नमो॑ अ॒ग्रेव॑धाय॒ च दू॒रेव॑धाय॒ च नमो॑ ह॒न्त्रे च॑ ह॒नीय॑से च॒
 नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॑ ह॒रिके॑शेभ्यो॒
 नमस्ता॑राय॒
 नम॑श्शं॒भवे॑ च म॒योभ॑वे च॒ नम॑श्शङ्क॒राय॑ च म॒यस्क॑राय॒ च॒
 नम॑श्शि॒वाय॑ च शि॒वत॑राय॒ च नम॑स्ती॒र्थ्याय॑ च कू॒ल्याय॑ च॒
 नमः॑ पा॒र्याय॑ चावा॒र्याय॑ च॒ नमः॑ प्र॒तर॑णाय॒ चोत्त॑रणाय॒ च॒
 नम॑ आ॒ता॒र्याय॑ चा॒लाद्या॑य च॒ नम॑श्श॒ष्याय॑ च फे॒न्याय॑ च॒
 नमः॑ सि॒क्त्याय॑ च प्र॒वाह्या॑य च ॥ 8

नवमः अनुवाकः

नम॑ इ॒रिण्या॑य च प्र॒प॒थ्याय॑ च॒ नमः॑ कि॒ञ्चि॑लाय॒ च क्ष॑य॒णाय॑ च॒
 नमः॑ क॒पर्दि॑ने च पु॒ल॒स्तये॑ च॒ नमो॑ गो॒ष्ठ्याय॑ च गृ॒ह्याय॑ च॒

नम-स्तल्प्याय च गेह्याय च नमः कात्याय च गह्वरेष्ठाय च
 नमो हृदय्याय च निवेष्ट्याय च नमः पा॒सव्याय च रजस्याय च
 नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च
 नम ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमः पण्य्याय च पर्णशद्याय च
 नमोऽपगुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आक्खिदते च प्रक्खिदते च
 नमो वः किरिकेभ्यो देवानां॑ हृदयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो
 नमो विचिन्वत्केभ्यो नम अनिर्हतेभ्यो नम आमीवत्केभ्यः ॥ 9

दशमः अनुवाकः

द्रा॒पे अ॒न्धस॒स्पते॒ दरि॒द्र-न्नी॒ललो॒हित ।

ए॒षां पु॒रुषा॒णामे॒षां प॒शूनां॑ मा भे र्मा॒ऽरो मो ए॒षां किञ्च॑ नाम॒मत् । 10.1

या ते॑ रु॒द्र शि॒वा त॒नूश्शि॒वा वि॒श्वाह॑भेष॒जी ।

शि॒वा रु॒द्रस्य॑ भेष॒जी तया॑ नो मृ॒ड जी॒वसे॑ । 10.2

इ॒मां रु॒द्राय॑ तव॒से क॒प॒र्दि॒ने क्ष॒यद्वी॑राय प्र॒भ॒राम॑हे म॒तिं ।

यथा॑ नः श॒मस॑द्-द्वि॒पदे॑ चतु॒ष्पदे॑ वि॒श्वं पु॒ष्टं ग्रा॒मे अ॒स्मि-न्न॑ना॒तुरं । 10.3

मृ॒डा नो॑ रु॒द्रो त॒नो म॒यस्कृ॑धि क्ष॒यद्वी॑राय नम॒सा वि॒धेम॑ ते ।

यच्छ॑ञ्च योश्च॑ म॒नुरा॒यजे॑ पि॒ता तद॑श्याम॒ तव॑ रु॒द्र प्र॒णीतौ॑ । 10.4

मा नो॑ महान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न॒ उक्ष॑न्तमु॒त मा न॑ उक्षि॒तं ।
मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र री॑रिषः । 10.5

मा न॑स्तो॒के तन॑ये मा न॒ आयु॑षि मा नो॒ गोषु॑ मा नो॒ अश्वे॑षु रीरिषः ।
वी॒रान्मा॑नो रु॒द्र भा॑मितो व॒धी ह॒विष्म॑न्तो नम॒सा वि॑धेम ते । 10.6

आ॒रा॒त्ते गो॑घ्न उ॒त पू॑रुष॒घ्ने क्ष॑यद्वी॒राय॑ सु॒म्न-म॒स्मे ते॑ अस्तु ।
र॒क्षा च॑ नो॒ अधि॑ च दे॒व ब्रू॑ह॒धा च॑ नः श॒र्म य॑च्छद्वि॒बर्हाः॑ । 10.7

स्तु॒हि श्रु॑तं ग॒र्तस॑दं यु॒वानं॑ मृ॒गन्न॑ भी॒म-मु॑प॒हन्तु॑-मु॒ग्रं ।
मृ॒डा ज॑रि॒त्रे रु॒द्र स्त॑वानो अ॒न्यन्ते॑ अ॒स्मन्नि॑व॒पन्तु॑ से॒नाः । 10.8

प॒रि॒णो रु॒द्रस्य॑ हे॒ति वृ॑ण॒क्तु प॑रि॒त्वेष॑स्य दु॒र्मति॑र॒घायोः॑ ।
अ॒व स्ति॑रा म॒घव॑द्भ्य-स्त॒नुष्व॑ मी॒ढ्वस्तो॑काय तनयाय मृ॒डय॑ । 10.9

मी॒ढुष्ट॑म शि॒वत॑म शि॒वो न॑स्सु॒मना॑ भव ।
प॒रमे॑ वृ॒क्ष आ॑यु॒धन्नि॑धाय कृ॒त्तिं व॑सा॒न आ॑च॒र पि॑ना॒कं बि॒भ्रदा॑गहि । 10.10

वि॒कि॒रि॒द वि॒लो॒हित॑ नम॒स्ते अस्तु॑ भगवः ।
या॒स्ते स॒हस्र॑ हे॒तयो॑ऽन्य-म॒स्मन्नि॑व॒पन्तु॑ ताः । 10.11

सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तव हेतयः ।

तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ।

10.12

एकादशः अनुवाकः

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यां ।

तेषां सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि ।

11.1

अस्मिन्-महत्यर्णवे-ऽन्तरिक्षे भवा अधि ।

11.2

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः ।

11.3

नीलग्रीवा-शितिकण्ठा दिवः रुद्रा उपश्रिताः ।

11.4

ये वृक्षेषु सस्मिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः ।

11.5

ये भूताना-मधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः ।

11.6

ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।

11.7

ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा यव्युधः ।

11.8

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः ।

11.9

य एतावन्तश्च भूयांसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे ।

तेषां सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि ।

11.10

नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातो

वर्षमिषव-स्तेभ्यो दश प्राची दशदक्षिणा दशप्रतीची

दर्शो॑दी॒ची दर्शो॑र्ध्वा-स्तेभ्यो॑ नमस्ते नो मृ॒डयन्तु॑ ते यं द्वि॒ष्मो
यश्च॑ नो द्वेष्टि॑ तं वो॑ जंभे॑ दधामि ॥ 11.11

त्र्यंबकादि महामन्त्रः

त्र्य॑ंबकं य॑जामहे सुगन्धिं पु॒ष्टिव॑र्धनं ।

उ॒र्वारु॑कमि॒व ब॑न्धनान् मृत्यो॑ मु॒क्षीय॑ माऽमृ॒तात् ॥ 1

यो रु॒द्रो अ॒ग्नौ यो अ॒प्सु य ओष॑धीषु यो रु॒द्रो वि॒श्वा
भुव॑ना ऽऽवि॒वेश॑ तस्मै॑ रु॒द्राय॑ नमो॑ अस्तु । 2

तमु॑ष्टुहि यः स्वि॒षुः सु॒धन्वा॑ यो वि॒श्वस्य॑ क्षयति भेष॒जस्य॑ ।
यक्ष्वा॑महे सौम॒नसा॑य रु॒द्रं नमो॑भि दे॒वम॑सुरं दुवस्य । 3

अयं॑ मे हस्तो॑ भग॒वानयं॑ मे भग॒वत्तरः॑ ।
अयं॑ मे वि॒श्व-भै॑षजो॒यञ् शि॒वाभि॑मर्शनः । 4

ये ते स॒हस्र॑मयु॒तं पा॒शा मृत्यो॑ म॒र्त्याय॑ हन्त॒वे ।
तान् य॒ज्ञस्य॑ मा॒यया॑ सर्वा॒नव॑ यजामहे । 5

मृत्य॑वे स्वाहा॑ मृत्य॑वे स्वाहा॑ । 6

ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि ॥

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा विशान्तकः । तेनान्नेनाप्यायस्व ॥ 7

नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि ॥

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

13.Details of “Dravya sampradaayam” in Rudraikaadasini

प्रथमं गन्धतैलं च	द्वितीयं पञ्चगव्यकं
पञ्चामृतं तृतीयं च	चतुर्थं घृतमेव च
पञ्चमं पयसा स्नानं	दध्ना स्नानं तु षष्ठकं
सप्तमं मधुना स्नानं	अष्टमं चेषुदण्डजं
नवमं निंबतोयं च	दशमं नाळिकेरजं
एकादशं गन्धतोयं च	अथ कुंभाभिषेचनं

द्रव्य संप्रदायं (Purushasookta abhishekam)

तोयं तु शान्तिदं प्रोक्तं	गन्धतैलं सुखप्रदं
पञ्चगव्यं पवित्रं च	जयं पञ्चामृतं तथा
घृतं मोक्षप्रदं विद्यात्	क्षीरमायुष्यवर्द्धनं
दधि संपत्प्रदं चैव	मधु माधवतोषदं
इक्षुसारं बलारोग्यं	लिकुचं ज्ञानवर्द्धनं
नाळिकेरोदकं चैव	सालोक्या-नन्ददायकं
रजनी राजवश्यं च	पिष्टं तु ऋणमोचनं
आमलकं पित्तशमनं	क्षौद्रं वित्त-विवर्द्धनं

द्राक्षारूक्षहरा नित्यं

दाडिमी राज्यदायिका

गन्धोदकैश्च संस्नाप्य

ज्ञानवान् भक्तिमान् भवेत्

इहलोके सुखंभुक्त्वा

अन्ते वैकुण्ठमाप्नुयात्.

(रजनी = Sandal paste

पिष्टं = rice flour

आमलकं = Gooseberry

क्षौद्रं = Champaka flower juice

द्राक्ष रसं = Grape juice

दाडिमी = pomegranate)

14. एकादश जपं

14.1 प्रथम वार – अभिषेकं गन्धतैलं

14.1.1 चमक अनुवाकः

ओं । अ॒ग्ना॒वि॒ष्णू॒ स॒जोष॑से॒मा व॑र्द्धन्तु वाङ्गि॒रः ।

द्यु॒नैर्-वा॒जे-भि॒रा॒गतं ॥

वा॒जश्च॑ मे, प्र॒सव॑श्च मे, प्र॒यति॑श्च मे, प्र॒सि॒तिश्च॑ मे,
धी॒तिश्च॑ मे, क्र॒तुश्च॑ मे, स्वर॑श्च मे, श्लो॒कश्च॑ मे,

श्रा॒वश्च॑ मे, श्रु॒तिश्च॑ मे, ज्यो॒तिश्च॑ मे, सु॒वश्च॑ मे,
प्रा॒णश्च॑ मे, ऽपा॒नश्च॑ मे, व्या॒नश्च॑ मे, ऽसु॑श्च मे,

चि॒त्तं च॑ म, आ॒धी॒तं च॑ मे, वाक्च॑ मे, म॒नश्च॑ मे,
चक्षु॑श्च मे, श्रो॒त्रं च॑ मे, दक्ष॑श्च मे, ब॒लं च॑ म,

ओ॒जश्च॑ मे, स॒हश्च॑ म, आ॒युश्च॑ मे, ज॒रा च॑ म,
आ॒त्मा च॑ मे, त॒नूश्च॑ मे, श॒र्म च॑ मे, वर्म॑ च मे,

ऽङ्गा॒नि च॑ मे, ऽस्थानि॑ च मे, प॒रू॒षि च॑ मे, शरी॑राणि च मे ।

ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः । दीपं दर्शयामि ।
धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ----- (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदलीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । मनोन्मनाय नमः ।

कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.1.2 उपचार मन्त्राः

1. पुरुषस्य विद्म सहस्राक्षस्य महादेवस्य धीमहि ।

तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । 1.1 (T.A.6.1.5)

2. यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद् विश्वा धियो रुद्रो महर्षिः ।

हिरण्यगर्भं पश्यत जायमानं सनो देवशुभया

स्मृत्या-सँय्युनक्तु । 1.2 (T.A.6.12.3)

3. ब्राह्मण एक होता । स यज्ञः । स मे ददातु प्रजां पशून्

पुष्टिं यशः । यज्ञश्च मे भूयात् । 1.3 (T.A.3.7.1)

4. प्र॒भ्राज॑मानाना॒ꣳ रु॒द्राणा॑ꣳ स्था॒ने स्व॑तेजसा॒ भानि॑ ।
प्र॒भ्राज॑मानीना॒ꣳ रु॒द्राणी॑नाꣳ स्था॒ने स्व॑तेजसा॒ भानि॑ । 1.4 TA 1.14.4
5. ए॒ष वै वि॒भुर्ना॑म॒ यज्ञः॑ । सर्व॑ ह॒वै तत्र॑ वि॒भु भ॑वति ।
ये॒त्रैते॑न॒ यज्ञे॑न॒ यज॑न्ते । 1.5 (T.B.3.9.19.1)
6. प्रा॒णापा॑न-व्या॒नोदा॑न-समा॒ना मे शु॑ध्यन्तां॒ ज्योति॑-र॒हं वि॒रजा॑
वि॒पाप्मा॑ भू॒यास॑ꣳ स्वाहा॑ ॥ 1.6 (T.A.6.65.1)
7. अ॒ग्नि॒र्मे वा॒चि श्रि॑तः । वा॒ग्घृ॑दये । हृ॒दयं॑ म॒यि ।
अ॒हम॑मृते॑ ॥ अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 1.7 (T.B.3.10.8.4)
8. वि॒भूर॑सि प्र॒वाह॑णो रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृहि॑
मा॒ मा मा॑ हि॒ꣳसीः॑ । 1.8 (T.S.1.3.3.1)
9. स॒त्यं परं॑ पर॒ꣳ स॒त्यꣳ स॒त्येन॑ न सु॒वर्गा॑ल्-लो॒काच्च॑वन्ते
क॒दाच॑न स॒ताꣳ हि स॒त्यं तस्मा॑त् स॒त्ये र॑मन्ते । 1.9 (T.A.6.78.1)
10. आ॒ज्येन॑ जुहोति । अ॒ग्नेर्वा॑ ए॒तद्रू॑पं । यदा॒ज्यं॑ । यदा॒ज्येन॑ जुहोति ।
अ॒ग्निमे॒व तत्प्री॑णाति । 1.10 (T.B.3.8.14.2)

सर्वोपचारार्थे कर्पूर नीराजनं प्रदर्शयामि ।

रक्षां धारयामि । ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

(नमश्शंभवे च मयोभवे च नमश्शङ्कराय च मयस्कराय च
नमश्शिवाय च शिवतराय च) । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

14.1.3 आशीर्वादं

अनेन प्रथमवार प्रयुक्त श्री रुद्र महामन्त्र जप सहित गन्धतैलाभिषेकेन
च भगवान् सर्वात्मकः श्री महादेवः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा ,
अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य,
अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां
समस्त दुरिदोपशमनद्वारा आयुरारोग्य पुत्र पौत्र धन ध्यान्य तेजो
लक्ष्म्यादि सकल साम्राज्यसिद्धि प्रदः, शान्ति प्रदः ,
पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्धि प्रदः , समस्त कल्याण परन्परावाप्ति प्रदः,
लोक क्षेमादिवृद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥
(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.2 द्वितीयवार अभिषेकं – पञ्चगव्यं

14.2.1 द्वितीयः अनुवाकः

ज्यैष्ठ्यं च मे, आधिपत्यं च मे, मन्युश्च मे, भामश्च मे,
ऽमश्च मे, ऽभश्च मे, जेमा च मे, महिमा च मे,
वरिमा च मे, प्रथिमा च मे, वर्षा च मे, द्राघुया च मे,
वृद्धं च मे, वृद्धिश्च मे, सत्यं च मे, श्रद्धा च मे,
जगच्च मे, धनं च मे, वशश्च मे, त्विषिश्च मे,
क्रीडा च मे, मोदश्च मे, जातं च मे, जनिष्यमाणं च मे,
सूक्तं च मे, सुकृतं च मे, वित्तं च मे, वेद्यं च मे,
भूतं च मे, भविष्यच्च मे, सुगं च मे, सुपथं च मे,
ऋद्धं च मे, ऋद्धिश्च मे, क्लृप्तं च मे, क्लृप्तिश्च मे,
मतिश्च मे, सुमतिश्च मे ॥ 2 (38)

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

ब॒लाय॑ नमः॑ । धू॒पं आ॒घ्राप॑यामि । ब॒लप्र॑मथ॒नाय॑ नमः॑ ।

दी॒पं दर्श॑यामि । धू॒प-दी॒पान॑न्तरं आच॒मनी॑यं स॒मर्प॑यामि ।

ओं भूर्भु॒वस्सु॒वः ----- (नैवेद्य॑ मन्त्रं) ।

सर्व॑भू॒तद॑म॒नाय॑ नमः॑ । कद॒ळी॑फलं निवेद॒यामि॑ ।

नैवेद्या॑नन्तरं आच॒मनी॑यं स॒मर्प॑यामि ।

म॒नोन्म॑नाय॑ नमः॑ । कर्पू॒र ता॑बूलं निवेद॒यामि॑ ।

14.2.2 उपचार मन्त्राः

1. तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ महा॒देवा॑य धीमहि । तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॒चोद॑यात् ॥ 2.1

2. यस्मा॑त्प॒रं ना॑प॒रम॑स्ति किञ्चि॒द् यस्मा॑-न्नाणी॒यो न ज्यौ॑ऽस्ति
कश्चित् । वृ॒क्ष इ॒व स्तब्धो॑ दि॒वि तिष्ठ॑-त्येक॒स्तेने॒दं पूर्णं॑ पु॒रुषे॑ण
सर्वं॑ ॥ 2.2

3. अ॒ग्निर्द्वि॑हो॒ता । स भ॒र्ता । स मे॑ द॒दातु॑ प्र॒जां प॒शून् पु॒ष्टिं य॑शः ।
भ॒र्ता च॑ मे भूयात् ॥ 2.3

4. व्य॒वदा॑ता॒नां रु॒द्राणां॑ स्थाने स्व॒तेज॑सा भानि ।
व्य॒वदा॑ती॒नां रु॒द्राणी॑नां स्थाने स्व॒तेज॑सा भानि ॥ 2.4

5. ए॒ष वै प्र॒भुर्नाम॑ य॒ज्ञः । सर्व॑ ह॒वै तत्र॑ प्र॒भु भ॑वति ।
ये॒त्रैते॑न य॒ज्ञेन॑ यजन्ते ॥ 2.5

6. वाङ्मन-श्चक्षुश्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-रेतो-बुद्ध्याकूतिः संकल्पा मे
शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा॥ 2.6
7. वायुर्मे प्राणे श्रितः । प्राणो हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । 2.7
8. वह्निरसि हव्यवाहनो रौद्रेणानीकेन पाहि माग्ने पिपृहि
मा मा मा हिंसीः । 2.8
9. तप इति तपो नानशनात्परं यद्धि परं तप-स्तदुर्ध्वं
तदुराध्वं तस्मा-त्तपसि रमन्ते । 2.9
10. मधुना जुहोति । महत्यैवा एतद्देवतायै रूपं । यन्मधु ।
यन्मधुना जुहोति । महतीमेव तद्देवतां प्रीणाति । 2.10

14.2.3 आशीर्वादं

अनेन द्वितीयवार प्रयुक्त श्री रुद्र महामन्त्र जप सहित पञ्चगव्य
अभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्री शिवः,
सर्वान्तरयामि सकल कल्याण गुण गणैक निलयः, सुप्रीत सुप्रसन्नो
वरदो भूत्वा अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां
महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां, सर्वोपद्रव-सर्वरोग-

सर्वपीडा-सर्वबाधादि निवृत्तिप्रदः, मनः शान्त्यादिप्रदः,
नित्य मंगळावाप्ती प्रदश्च भूयासुरिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.3 तृतीयवार अभिषेकं – पञ्चामृतं

14.3.1 तृतीयः अनुवाकः

शं च॑ मे, मय॑श्च मे, प्रियं॑ च मे, ऽनु॒काम॑श्च मे,
काम॑श्च मे, सौमन॑सश्च मे, भद्रं॑ च मे, श्रेय॑श्च मे,
वस्य॑श्च मे, यश॑श्च मे, भग॑श्च मे, द्रवि॑णं च मे,
यन्ता॑ च मे, धर्ता॑ च मे, क्षेम॑श्च मे, धृति॑श्च मे,
विश्वं॑ च मे, मह॑श्च मे, सँवि॑च्च मे, ज्ञात्रं॑ च मे,
सू॑श्च मे, प्र॒सू॑श्च मे, सीरं॑ च मे, लय॑श्च मे,
ऋतं॑ च मे, ऽमृतं॑ च मे, ऽय॒क्ष्मं॑ च मे, ऽना॑मयच्च मे,
जीवा॑तुश्च मे, दीर्घा॑युत्वं च मे, ऽन॒मित्रं॑ च मे, ऽभयं॑ च मे,
सु॒गं॑ च मे, शय॑नं च मे, सू॒षा च॑ मे, सु॒दिनं॑ च मे ॥ 3 (36)
ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि । बलाय नमः ।

धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ----- . (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदलीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.3.2 उपचार मन्त्राः

1. तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥ 3.1

2. न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्व-मानशुः ।

परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजदेत- द्यतयो विशन्ति । 3.2

3. पृथिवी त्रि होता । स प्रतिष्ठा । स मे ददातु प्रजां पशून्

पुष्टिं यशः । प्रतिष्ठा च मे भूयात् । 3.3

4. वासुकि-वैद्युतानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि ।

वासुकि-वैद्युतीनां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि । 3.4

5. ए॒ष वा ऊ॒र्ज॒स्वाना॑म॒ य॒ज्ञः । सर्व॑ ह॒वै तत्रो॑र्ज॒स्वद् भव॑ति ।

ये॒त्रैते॑न॒ य॒ज्ञेन॑ यजन्ते । 3.5

6. त्वक् च॒र्म-मा॑ꣳ स रु॒धिर-मे॑दो-म॒ज्जा-स्ना॑यवोऽस्थी॒नि

मे शु॒ध्यन्तां॑ ज्योति॒-रहं॑ वि॒रजा॑ वि॒पाप्मा॑ भू॒यास॑ꣳ स्वाहा॑ ॥ 3.6

7. सूर्यो॑ मे चक्षु॒षि श्रि॑तः । चक्षु॒र्हृद॑ये । हृद॒यं मयि॑ ।

अ॒हम॒मृते॑ ॥ अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 3.7

8. श्वा॒त्रोसि॑ प्र॒चेता॑ रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृहि

मा॒ मा॒ मा॒ हि॑ꣳसीः । 3.8

9. द॒म इति॑ नि॒यतं॑ ब्र॒ह्मचा॑रिण-स्तस्मा॒-द्दमे॑ र॒मन्ते॑ । 3.9

10. तण्डु॒लैर्जु॑होति । वसू॒नांवा॑ ए॒तद् रू॒पं । यत्तण्डु॒लाः ।

यत्तण्डु॒लैर्जु॑होति । वसू॒नेव॑ तत्प्रीणाति । 3.10

14.3.3 आशीर्वादं

अनेन तृतीयवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित पञ्चामृत अभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीरुद्रः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां सर्वानन्दसिद्धि प्रदः, सर्वाभीष्टसिद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥
(तथास्तु - इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.4 तुरीय (चतुर्थ) वार अभिषेकं – घृतं

14.4.1 चतुर्थः अनुवाकः

ऊ॒र्क्च॑ मे, सू॒नृ॒ता च॑ मे, प॒यश्च॑ मे, र॒सश्च॑ मे,
 घृ॒तं च॑ मे, म॒धु च॑ मे, स॒ग्धिश्च॑ मे, स॒पी॒तिश्च॑ मे,
 कृ॒षिश्च॑ मे, वृ॒ष्टिश्च॑ मे, जै॒त्रं च॑ मे, औ॒द्भि॒द्यं च॑ मे,
 र॒यिश्च॑ मे, रा॒यश्च॑ मे, पु॒ष्टं च॑ मे, पु॒ष्टिश्च॑ मे,
 वि॒भु च॑ मे, प्र॒भु च॑ मे, ब॒हु च॑ मे, भू॒यश्च॑ मे,
 पू॒र्णं च॑ मे, पू॒र्ण॒तरं॑ च॑ मे, ऽक्षि॑तिश्च मे, कू॒य॒वाश्च॑ मे,
 ऽन्नं॑ च॑ मे, ऽक्षु॑च्च मे, व्री॒ह॒यश्च॑ मे, य॒वाश्च॑ मे,
 मा॒षाश्च॑ मे, ति॒लाश्च॑ मे, मु॒द्गाश्च॑ मे, ख॒ल्वाश्च॑ मे,
 गो॒धू॒माश्च॑ मे, म॒सु॒राश्च॑ मे, प्रि॒यंग॑वश्च मे, ऽण॒वश्च॑ मे,
 श्या॒माका॑श्च मे, नी॒वा॒रास्श्च॑ मे ॥ 4 (38)

ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

ब॒लाय॑ नमः॑ । धू॒पं आ॒घ्राप॑यामि । ब॒लप्र॑मथ॒नाय॑ नमः॑ ।

दी॒पं दर्श॑यामि । धू॒प-दी॒पान॑न्तरं आच॒मनी॑यं स॒मर्प॑यामि ।

ओं भूर्भु॒वस्सु॒वः ----- . (नैवेद्य॑ मन्त्रं) ।

सर्व॑भू॒तद॑म॒नाय॑ नमः॑ । कद॒लीफ॑लं निवेद॒यामि॑ ।

नैवे॒द्यान॑न्तरं आच॒मनी॑यं स॒मर्प॑यामि ।

म॒नोन्म॑नाय॑ नमः॑ । कर्पू॒र ता॑बू॒लं निवे॑द॒यामि॑ ।

14.4.2 उपचार मन्त्राः

1. तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ चक्र॒तुण्डा॑य धीम॒हि । तन्नो॑ नन्दिः प्रचोद॒यात् ॥ 4.1

2. वे॒दान्त॑-वि॒ज्ञान॑ सुनिश्चि॒तार्था॑-स्स॒न्यास॑ यो॒गाद्य॑त-यश्शु॒द्ध स॒त्वाः ॥
ते ब्र॑ह्मलो॒केतु॑ परा॒न्तका॑ले परा॒मृता॑त् परिमु॒च्यन्ति॑ सर्वे॑ ॥ 4.2

3. अ॒न्तरि॑क्षं चतु॒र्होता॑ । स वि॒ष्टाः । स मे॑ ददातु प्र॒जां प॒शून्
पुष्टिं॑ य॒शः । वि॒ष्टाश्च॑ मे भू॒यात् ॥ 4.3

4. रज॑तानाञ् रु॒द्राणाञ् स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भानि ।

रज॑तानाञ् रु॒द्राणी॑नाञ् स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भानि । 4.4

5. ए॒ष वै प॑यस्वान्नाम॒ यज्ञः॑ । सर्व॑ञ् ह॒वै तत्र॑ प॑यस्व॒द्भव॑ति ।
येत्रै॑तेन॒ यज्ञे॑न॒ यज॑न्ते । 4.5

6. शिरः पाणि-पाद-पार्श्व-पृष्ठोरूदर-जङ्घ-शिश्नोपस्थ-पायवो मे
शुध्यन्तां ज्योति-रहं विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा ॥ 4.6
7. चन्द्रमा मे मनसि श्रितः । मनो हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । 4.7
8. तुथोसि विश्ववेदा रौद्रेणानीकेन पाहि माग्ने पिपृहि
मा मा मा हि७सीः । 4.8
9. शम इत्यरण्ये मुनय-स्तस्माच्छमे रमन्ते । 4.9
10. पृथुकैर्जुहोति । रुद्राणां वा एतद् रूपं । यत्पृथुकाः ।
यत्पृथुकैर्जुहोति । रुद्रानेव तत्प्रीणाति । 4.10

14.4.3 आशीर्वादं

अनेन तुरीयवार (चतुर्थवार) प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित
घृताभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीशङ्करः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो
भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां
महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां तापत्रय निवृत्तिद्वारा
क्षेमाभिवृद्धिप्रदो भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥
(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रतिवचनं)

14.5 पञ्चमवार अभिषेकं – क्षीरं

14.5.1 पञ्चमः अनुवाकः

अ॒श्मा च मे॒, मृ॒त्ति॒का च मे॒, गि॒रय॑श्च मे॒, पर्व॑ताश्च मे॒,
सि॒क॒ताश्च मे॒, वन॑स्पतयश्च मे॒, हि॒रण्यं च मे॒, ज्य॑श्च मे॒,
सी॒सं च मे॒, त्र॒पुश्च मे॒, श्या॒मं च मे॒, लो॒हं च मे॒,
ऽग्नि॑श्च म॒, आ॒पश्च मे॒, वी॒रु॒धश्च म॒, ओष॑धयश्च मे॒,
कृ॒ष्टप॑च्यं च मे॒, ऽकृ॒ष्टप॑च्यं च मे॒,
ग्रा॒म्याश्च मे॒ प॒शव॑ आ॒रण्या॑श्च य॒ज्ञेन॑ कल्पन्तां ,
वि॒त्तं च मे॒, वि॒त्तिश्च मे॒, भू॒तं च मे॒, भू॒तिश्च मे॒,
व॒सु च मे॒, व॒स॒तिश्च मे॒, क॒र्म च मे॒, श॒क्तिश्च मे॒,
ऽर्थ॑श्च म॒, ए॒मश्च म॒, इ॒तिश्च मे॒, ग॒तिश्च मे॒ ॥ 5 (32)

ओं शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॒ ॥

अमृ॒ताभि॑षेकोऽस्तु । आवा॒हिता॑भ्यः सर्वा॒भ्यो दे॒वता॑भ्यो नमः ।

दि॒व्य ग॑न्धान् धारयामि । पु॒ष्पाणि॑ समर्पयामि ।

ब॒लाय॑ नमः । धू॒पं आ॑घ्रापयामि । ब॒लप्र॑मथनाय नमः ।

दी॒पं दर्श॑यामि । धू॒प-दी॒पान॑न्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ----- . (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्व॑भू॒तद॑मनाय॒ नमः॑ । कद॑लीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्या॑नन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनो॑न्मनाय॒ नमः॑ । कर्पू॑र तांबूलं निवेदयामि ।

14.5.2 उपचार मन्त्राः

1. तत्पु॑रुषाय विद्महे॑ महा॒सेनाय॑ धीमहि ।

तन्नः॑ षण्मुखः प्रचो॑दयात् ॥ 5.1

2. द॒हं वि॒पापं॑ पर॒मेश्व॑भूतं यत्पु॑ण्डरीकं पु॒रम॑ध्य स॒स्थं ।

तत्रा॑पि द॒हं ग॒गनं॑ वि॒शोक॑-स्तस्मिन् यद॒न्तस्त॑-दुपा॑सितव्यं । 5.2

3. वा॒युः पञ्च॑ होता । स प्रा॒णः । स मे॑ ददातु प्र॒जां प॒शून्

पुष्टिं॑ य॒शः । प्रा॒णश्च॑ मे भूयात् । 5.3

4. पर॑षाणां रु॒द्राणां॑ स्था॒ने स्व॑तेजसा भानि ।

पर॑षाणां रु॒द्राणीनां॑ स्था॒ने स्व॑तेजसा भानि । 5.4

5. ए॒ष वै वि॑धृतो नाम य॒ज्ञः । सर्व॑ ह॒वै तत्र॑ वि॑धृतं भवति ।

येत्रै॑तेन य॒ज्ञेन॑ यजन्ते । 5.5

6. उत्तिष्ठ॑ पुरुष हरित-पिङ्गल लोहिताक्षि देहि देहि ददापयिता मे॑

शु॒ध्यन्तां॑ ज्योति॑-र॒हं वि॒रजा॑ विपा॒प्मा भू॑यास॒ स्वाहा॑ ॥ 5.6

7. दि॒शो॑ मे॒ श्रोत्रे॑ श्रि॒ताः । श्रोत्र॑ꣳ हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ म॒यि ।
अ॒हम॑मृ॒ते । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 5.7
8. उ॒शि॒ग॒सि॒ क॒वी रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृहि॑
मा॒ मा॒ मा॒ हि॒ꣳसीः । 5.8
9. दा॒न-मि॒ति॒ सर्वा॑णि भू॒तानि॑ प्र॒शꣳ स॑न्ति दा॒ना-न्ना॑ति दु॒श्चरं॑
तस्मा॑-द्दाने॑ रम॒न्ते । 5.9
10. ला॒जैर्जु॑होति । आ॒दि॒त्यानां॑ वा ए॒तद्रू॑पं । य॒ल्ला॒जाः ।
य॒ल्ला॒जैर्जु॑होति । आ॒दि॒त्याने॒व तत्प्री॑णाति । 5.10

14.5.3 आशीर्वादं

अनेन पञ्चमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित पयसाभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीनीललोहितः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां शरीरे वर्तमान वर्तिष्यमान समस्त रोग-पीडा परिहारद्वारा क्षिप्रारोग्य सिद्धि प्रदो भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥ (तथास्तु - इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.6 षष्ठमवार अभिषेकं – दधि

14.6.1 षष्ठः अनुवाकः

अ॒ग्निश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे, सोम॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे,
स॒विता च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे, सर॑स्वती च म॒ इन्द्र॑श्च मे,
पू॒षा च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे, बृ॒हस्प॑तिश्च म॒ इन्द्र॑श्च मे,
मि॒त्रश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे, वरु॑णश्च म॒ इन्द्र॑श्च मे,
त्व॒ष्टा च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे, धा॒ता च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,
वि॒ष्णुश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे, ऽश्वि॑नौ च म॒ इन्द्र॑श्च मे,
म॒रुत॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे, वि॒श्वे च॑ मे, दे॒वा इन्द्र॑श्च मे,
पृ॒थि॒वी च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे, ऽन्त॑रिक्षं च म॒ इन्द्र॑श्च मे,
द्यौश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे, दि॒शश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,
मूर्धा॑ च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे, प्र॒जाप॑तिश्च म॒ इन्द्र॑श्च मे ॥ 6 (21)
ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

ब॒लाय॑ नमः॑ । धू॒पं आ॒घ्राप॑यामि । ब॒लप्र॑मथ॒नाय॑ नमः॑ ।

दी॒पं दर्श॑यामि । धू॒प-दी॒पान॑न्तरं आच॒मनी॑यं स॒मर्प॑यामि ।

ओं भूर्भु॒वस्सु॒वः ----- (नैवेद्य॑ मन्त्रं) ।

सर्व॑भू॒तद॑म॒नाय॑ नमः॑ । कद॒लीफ॑लं निवेद॒यामि॑ ।

नैवेद्य॑ानन्तरं आच॒मनी॑यं स॒मर्प॑यामि ।

म॒नोन्म॑नाय॑ नमः॑ । कर्पू॒र ता॑बूलं निवेद॒यामि॑ ।

14.6.2 उपचार मन्त्राः

1. तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ सुव॒र्णप॑क्षाय॒ धीम॑हि ।

तन्नो॑ गरुडः प्रचोद॒यात् । 6.1

2. यो वेदा॑दौ स्वरः प्रो॒क्तो वेदा॑न्ते च प्र॒तिष्ठि॑तः ।

तस्य॑ प्र॒कृति॑-लीन॒स्य यः॑ पर॒स्स म॑हेश्वरः । 6.2

3. च॒न्द्रमा॑ षड्ढो॒ता । स ऋ॑तून् कल्प॒याति॑ । स मे॑ ददातु

प्र॒जां प॒शून् पु॒ष्टिं य॑शः । ऋ॒तव॑श्च मे॒ कल्प॑न्तां । 6.3

4. श्या॑मानाँ रु॒द्राणाँ॑ स्था॒ने स्व॑तेजसा॒ भानि॑ ।

श्या॑मानाँ रु॒द्राणी॑ना स्था॒नेँ स्व॑तेजसा॒ भानि॑ । 6.4

5. ए॒ष वै व्या॑वृ॒त्तो ना॑म य॒ज्ञः । सर्व॑ँ ह॒वै

तत्र॑ व्या॒वृ॒तं भ॑वति । ये॒त्रैते॑न य॒ज्ञेन॑ यज॒न्ते । 6.5

6. पृथिव्याप-स्तेजो-वायु-राकाशा मे शुध्यन्तां ज्योति-रहं
विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा ॥ 6.6
7. आपो मे रेतसि श्रिताः । रेतो हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते ॥ अमृतं ब्रह्मणि ॥ 6.7
8. अंघारिरसि बंभारी रौद्रेणानीकेन पाहि माग्ने पिपृहि
मा मा मा हि७सीः ॥ 6.8
9. धर्म इति धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतं धर्मान्नाति-दुष्करं
तस्मा-धर्मे रमन्ते ॥ 6.9
10. करम्बैर्जुहोति । विश्वेषां वा एतद्देवतानां रूपं । यत्करम्बाः ।
यत्करम्बैर्जुहोति । विश्वानेव तद्देवान्प्रीणाति ॥ 6.10

14.6.3 आशीर्वादं

अनेन षष्ठवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित दध्याभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीईशानः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां आयुर्बलं यशोवर्चः पशवस्थैर्य सिद्धिर्लक्ष्मीः क्षमाकान्तिः सद्गुणानन्दो नित्योत्सवो नित्यश्रीर् नित्यमंगळं इत्येषां सर्वदाभि-वृद्धि भूयासुरिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.7 सप्तमवार अभिषेकं – मधु

14.7.1 सप्तमः अनुवाकः

अ॒ञ्शु॒श्च॑ मे, र॒श्मि॒श्च॑मे, उ॒दा॒भ्य॒श्च॑ मे, उ॒धि॒प॒ति॒श्च॑ म,
उपा॒ञ्शु॒श्च॑ मे, उ॒न्त॒र्या॒म॒श्च॑ म, ऐ॒न्द्र॒वा॒य॒व॒श्च॑ मे, मै॒त्रा॒व॒रु॒ण॒श्च॑ म,
आ॒श्वि॒न॒श्च॑ मे, प्र॒ति॒प्र॒स्थान॑श्च मे, शु॒क्र॒श्च॑ मे, म॒न्थी॑ च॒ म,
आ॒ग्र॒य॒ण॒श्च॑ मे, वै॒श्व॒दे॒व॒श्च॑ मे, ध्रु॒व॒श्च॑ मे, वै॒श्वान॑रश्च॒ म,
ऋ॒तु॒ग्र॒हा॒श्च॑ मे, उ॒ति॒ग्रा॒ह्या॑श्च॒ म, ऐ॒न्द्रा॒ग्न॒श्च॑ मे, वै॒श्व॒दे॒व॒श्च॑ मे,
म॒रु॒त्व॒ती॒या॑श्च॒ मे, मा॒हे॒न्द्र॒श्च॑ म, आ॒दि॒त्य॒श्च॑ मे, सा॒वि॒त्र॒श्च॑ मे,
सा॒र॒स्व॒त॒श्च॑ मे, पौ॒ष्ण॒श्च॑ मे, पा॒त्नी॒व॒त॒श्च॑ मे, हा॒रि॒यो॒ज॒न॒श्च॑ मे ॥ 7 (28)
ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

बलाय॑ नमः । धूपं॑ आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय॑ नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः॑ ----- (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभू॒तद॑मनाय॒ नमः॑ । कद॒ली॒फलं॑ निवेदयामि ।

नैवेद्या॑नन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनो॑न्मनाय॒ नमः॑ । कर्पू॒र ता॑ंबूलं निवेदयामि ।

14.7.2 उपचार मन्त्राः

1. वे॒दा॒त्म॒नाय॑ वि॒द्महे॑ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भाय॑ धीमहि । तन्नो॑ ब्र॒ह्म प्र॒चो॒दया॑त् ॥ 7.1
2. सद्यो॑जातं प्रपद्यामि सद्यो॑ जा॒ताय॑ वै नमो॑ नमः॑ ।
भवे॑ भवे॑ नाति॑भवे॑ भव॒स्व मां॑ । भवो॒द्भवा॑य॒ नमः॑ ॥ 7.2
3. अन्नं॑ स॒प्त॒हो॒ता । स॒प्रा॒णस्य॑ प्रा॒णः । स मे॑ ददातु प्र॒जां
प॒शून् पु॒ष्टिं य॑शः । प्रा॒णस्य॑ च मे॑ प्रा॒णो भू॑यात् ॥ 7.3
4. क॒पि॒ला॒नां रु॒द्रा॒णां स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भानि ।
क॒पि॒ला॒नां रु॒द्रा॒णीनां॑ स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भानि ॥ 7.4
5. ए॒ष वै प्र॑ति॒ष्ठि॒तो ना॑म॒ यज्ञः॑ । सर्वं॑ ह॒वै तत्र॑ प्र॒ति॒ष्ठि॒तं भव॑ति ।
ये॒त्रै॒तेन॑ य॒ज्ञेन॑ यजन्ते ॥ 7.5
6. श॒ब्द-स्पर्श॑-रूप-रस-गन्धा॑ मे शु॒ध्यन्तां॑ ज्योति॑-र॒हं
वि॒र॒जा वि॒पा॒प्मा भू॑यास॒ स्वाहा॑ ॥ 7.6

7. पृ॒थि॒वी मे॒ शरी॑रे श्रि॒ता । शरी॑रं हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ मयि॑ ।
अ॒हम॑मृ॒ते । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 7.7
8. अ॒वस्यु॑रसि॒ दुव॑स्वान् रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृहि॑
मा॒ मा॒ मा॒ हि॑ऽसीः । 7.8
9. प्र॒जन॑ इति॒ भूया॑ऽस-स्तस्मा॒द्भूयि॑ष्ठाः प्रजा॑यन्ते तस्मा॒द्भूयि॑ष्ठाः
प्र॒जन॑ने रमन्ते । 7.9
10. धा॒नाभि॑ जु॒होति॑ । नक्ष॑त्राणां वा ए॒तद्रू॑पं । य॒द्धानाः॑ ।
य॒द्धाना॑भि जु॒होति॑ । नक्ष॑त्राण्ये॒व तत्प्री॑णाति । 7.10

14.7.3 आशीर्वादं

अनेन सप्तमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित मध्वाभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीविजयः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां अनेक कोट्यार्जित काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्याख्य सकल दुरितिघ्नौ शमनद्वारा, महैश्वर्याव्याप्ति प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.8 अष्टमवार अभिषेकं – इक्षुरसं

14.8.1 अष्टमः अनुवाकः

इ॒ध्मश्च॑ मे, ब॒र्हिश्च॑ मे, वे॒दिश्च॑ मे, धि॒ष्णि॒याश्च॑ मे,
सु॒चश्च॑ मे, च॒म॒साश्च॑ मे, ग्रा॒वा॒णश्च॑ मे, स्वर॑वश्च म,
उ॒पर॒वाश्च॑ मे, ऽधि॒ष॒व॒णे च॑ मे, द्रो॒ण॒क॒ल॒शश्च॑ मे, वा॒य॒व्या॒नि च॑ मे,
पू॒त॒भृ॒च्च॑ म, आ॒ध॒व॒नी॒यश्च॑ म, आ॒ग्नी॒ध्रं च॑ मे, ह॒वि॒र्धा॒नं च॑ मे,
गृ॒हाश्च॑ मे, स॒दश्च॑ मे, पु॒रो॒डा॒शाश्च॑ मे, प॒च॒ताश्च॑ मे,
ऽव॒भृ॒थश्च॑ मे, स्व॒गा॒का॒रश्च॑ मे ॥ 8 (22)

ओं शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॑ ॥

अमृ॒ताभि॑षेकोऽस्तु । आ॒वा॒हि॒ता॒भ्यः सर्वा॑भ्यो दे॒वता॑भ्यो नमः ।

दि॒व्य ग॒न्धा॒न् धा॒रया॑मि । पु॒ष्पा॒णि स॒मर्पा॑यामि ।

ब॒ला॒य नमः॑ । धू॒पं आ॒घ्रा॒पया॑मि । ब॒ल॒प्र॒म॒थ॒ना॒य नमः॑ ।

दी॒पं दर्श॑यामि । धू॒प-दी॒पा॒न॒न्तरं॑ आ॒च॒म॒नी॒यं स॒मर्प॑यामि ।

ओं भूर्भु॒वस्सु॒वः ----- (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभू॒तद॑मनाय॒ नमः॑ । कद॒ली॒फलं॑ निवेदयामि ।

नैवेद्या॑नन्तरं आचमनीयं॑ समर्पयामि ।

मनो॑न्मनाय॒ नमः॑ । कर्पू॒र ता॑ंबूलं॑ निवेदयामि ।

14.8.2 उपचार मन्त्राः

1. ना॒रा॒य॒णा॒य वि॒द्महे॑ वा॒सु॒दे॒वा॒य धी॑महि । तन्नो॑ वि॒ष्णुः प्र॒चो॒दया॑त् ॥ 8.1
2. वा॒म॒दे॒वा॒य नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॑ नमो॑ रु॒द्राय॑ नमः॑ का॒ला॒य नमः॑
कल॑विक॒र॒णाय॑ नमो॑ बल॑विक॒र॒णाय॑ नमो॑ ब॒ला॒य नमो॑ बल॑प्रमथ॒नाय॑
नमः॑ सर्व॑भू॒तद॑मनाय॒ नमो॑ मनो॑न्मनाय॒ नमः॑ । 8.2
3. द्यौ॒र॒ष्ट होता॑ । सो॒ऽना-धृ॑ष्यः । स मे॑ ददातु प्र॒जां प॒शून्
पु॒ष्टिं य॑शः । अ॒ना॒धृ॒ष्यश्च॑ भूयासं । 8.3
4. अ॒तिलो॑हि॒ताना॑ रु॒द्राणा॑ स्थाने स्व॒तेज॑सा भानि ।
अ॒तिलो॑हि॒तीना॑ रु॒द्राणी॑ना स्थाने स्व॒तेज॑सा भानि । 8.4
5. ए॒ष वै ते॑ज॒स्वी ना॑म॒ यज्ञः॑ । सर्व॑ ह॒वै तत्र॑ तेज॒स्वी भ॑वति ।
ये॒त्रैते॑न॒ यज्ञे॑न॒ यज॑न्ते । 8.5
6. मनो॑-वाक्का॒य-क॑र्माणि मे॑ शु॒ध्यन्तां॑ ज्योति॑-र॒हं वि॒रजा॑ वि॒पाप्मा॑
भूया॑स॒ स्वाहा॑ ॥ 8.6

7. ओषधि-वनस्पतयो मे लोमसु श्रिताः । लोमानि हृदये ।
हृदयं मयि । अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । 8.7
8. शुन्ध्यूरसि मार्जालीयो रौद्रेणानीकेन पाहि माग्ने पिपृहि
मा मा मा हिंसीः । 8.8
9. अग्नय इत्याह तस्मा-दग्नय आधातव्या अग्निहोत्र-मित्याह
तस्मा-दग्निहोत्रे रमन्ते । 8.9
10. सक्तुभिर्जुहोति । प्रजापते र्वा एतद्रूपं । यथ्सक्तवः ।
यथ्सक्तुभिर्जुहोति । प्रजापतिमेव तत्प्रीणाति । 8.10

14.8.3 आशीर्वादं

अनेन अष्टमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित इक्षुसारा-भिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीभीमः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां भगवत् पादार विन्दयोः अचञ्चल निष्कपट भक्ति प्रदः समस्त कल्याणगुण प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥ (तथास्तु - इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.9 नवमवार अभिषेकं-निंबतोय रसं

14.9.1 नवमः अनुवाकः

अ॒ग्निश्च॑ मे, घ॒र्मश्च॑ मे ऽर्क॑श्च मे, सूर्य॑श्च मे,
प्रा॒णश्च॑ मे, ऽश्व॑मे॒धश्च॑ मे, पृ॒थि॒वी च॑ मे, ऽदि॒तिश्च॑ मे,
दि॒तिश्च॑ मे, द्यौश्च॑ मे, श॒क्व॒रीर॒ङ्गु॒लयो दि॒शश्च॑ मे, य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पन्ता॒-
मृ॒क्च॑ मे, सा॒म च॑ मे, स्तो॒मश्च॑ मे, य॒जुश्च॑ मे, दी॒क्षा च॑ मे,
तप॑श्च म, ऋ॒तुश्च॑ मे, व्र॒तं च॑ मे, ऽहो॒रा॒त्रयो॑र्वृ॒ष्ट्या, बृ॒ह॒द्र॒थन्त॑रे च॑ मे
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पेतां॑ ॥ 9 (21)

ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

अमृ॒ताभि॑षेकोऽस्तु । आवा॒हिता॑भ्यः सर्वा॑भ्यो दे॒वता॑भ्यो नमः ।

दि॒व्य ग॑न्धान् धारयामि । पु॒ष्पाणि॑ समर्पयामि ।

ब॒लाय॑ नमः । धूपं॑ आघ्रापयामि । ब॒लप्र॑मथनाय॑ नमः ।

दी॒पं दर्श॑यामि । धूप-दी॒पानन्तरं॑ आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भु॒वस्सु॒वः ----- . (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्व॑भू॒तद॑मनाय॒ नमः॑ । कद॑लीफलं निवेदयामि ।

नैवे॑द्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनो॑न्मनाय॒ नमः॑ । कर्पू॑र तांबूलं निवेदयामि ।

14.9.2 उपचार मन्त्राः

1. वज्र॑नखाय॒ विद्महे॑ तीक्ष्णद॑ष्ट्राय॒ धीमहि॑ ।
तन्नो॑ नारसि॒ंहः प्र॑चोदयात् । 9.1
2. अघो॑रै॒भ्योऽथ॑घो॒रै॒भ्यो घोर॑घोरतरेभ्यः । सर्वे॑भ्यः सर्व॑शर्वे॑भ्यो
नमस्ते॑ अस्तु रु॒द्ररू॒पेभ्यः॑ । 9.2
3. आ॒दि॒त्यो न॑व होता । स ते॑जस्वी । स मे॑ ददातु प्र॒जां प॒शून्
पुष्टिं॑ य॒शः । ते॒ज॒स्वी च॑ भूयासं । 9.3
4. ऊ॒र्ध्वा॒नां रु॒द्राणां॑ स्थाने स्वतेजसा भानि ।
ऊ॒र्ध्वा॒नां रु॒द्राणी॒नां॑ स्थाने स्वतेजसा भानि । 9.4
5. एष॑ वै ब्र॒ह्मव॑र्चसी नाम यज्ञः । आह॑वै तत्र ब्राह्म॒णो
ब्र॒ह्मव॑र्चसी जायते । येनै॒तेन॑ य॒ज्ञेन॑ यजन्ते । 9.5
6. अव्य॑क्तभा॒वै-र॑हंकारै॒ ज्योति॑-र॒हं वि॒रजा॑ विपा॒प्मा
भूया॑स॒ स्वाहा॑ । 9.6

7. इन्द्रो॑ मे॒ बलै॑ श्रितः॑ । बल॑ हृदये॑ । हृदयं॑ मयि॑ ।
अ॒हम॑मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 9.7
8. सं॒म्राड॑सि कृ॒शानू॑ रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृहि॑
मा॒ मा॒ मा॒ हि॑सीः । 9.8
9. य॒ज्ञ इति॑ य॒ज्ञो हि॑ दे॒वा-स्तस्मा॑ध्य॒ज्ञे र॑मन्ते । 9.9
10. म॒सू॒स्यै जु॑होति । सर्वा॑सां वा॒ एत॑द्दे॒वता॑नां रूपं । यन्म॒सू॒स्यानि॑ ।
यन्म॒सू॒स्यै जु॑होति । सर्वा॑ ए॒व तद्दे॒वताः॑ प्रीणाति । 9.10

14.9.3 आशीर्वादं

अनेन नवमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित निंबुतोयाभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीदेवदेवः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां सकल श्रेयप्राप्ति हेतु भूत सांबपरमेश्वर परिपूर्णा-नुग्रह सिद्धि प्रदो भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥
(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.10 दशमवार अभिषेकं – नाळिकेरजं

14.10.1 दशमः अनुवाकः

गर्भा॑श्च मे, व॒थ्सा॑श्च मे, त्रि॑श्च मे, त्री॑च मे,
दि॒त्य॒वाट् च मे, दि॒त्यौ॒ही च मे, पञ्चा॑विश्च मे, पञ्चा॑वी च मे,

त्रि॒व॒थ्सश्च॑ मे, त्रि॒व॒थ्सा च॑ मे, तु॒र्य॒वाट् च॑ मे, तु॒र्यौ॒ही च॑ मे,
प॒ष्ठ॒वाट् च॑ मे, प॒ष्ठौ॒ही च॑ म, उ॒क्षा च॑ मे, व॒शा च॑ म,

ऋ॒षभ॑श्च मे, वे॒ह॒च्च मे, ऽन॒ड्वां च॑ मे, धे॒नुश्च॑ म,
आ॒युर्-य॒ज्ञेन॑ कल्पतां, प्रा॒णो य॒ज्ञेन॑ कल्पता-
म॒पा॒नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां, व्य॒ानो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां

चक्षु॑ र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां७ श्रो॒त्रं य॒ज्ञेन॑ कल्पतां
म॒नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां, वा॒ग्य॒ज्ञेन॑ कल्पता-
मा॒त्मा य॒ज्ञेन॑ कल्पतां, य॒ज्ञो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ॥ 10(41)

ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

ब॒लाय॑ नमः॑ । धू॒पं आ॒घ्राप॑यामि । ब॒लप्र॑मथ॒नाय॑ नमः॑ ।

दी॒पं दर्श॑यामि । धू॒प-दी॒पान॑न्तरं आ॒चम॑नीयं स॒मर्प॑यामि ।

ओं भूर्भु॒वस्सु॒वः ----- . (नैवेद्य॑ मन्त्रं) ।

सर्व॑भू॒तद॑म॒नाय॑ नमः॑ । कद॒ळी॑फलं नि॒वेद॑यामि ।

नैवे॒द्यान॑न्तरं आ॒चम॑नीयं स॒मर्प॑यामि ।

म॒नो॒न्म॒नाय॑ नमः॑ । क॒र्पूर॑ ता॒ंबूलं॑ नि॒वेद॑यामि ।

14.10.2 उपचार मन्त्राः

1. भा॒स्क॒राय॑ वि॒द्महे॑ म॒हद्यु॑ति॒कराय॑ धी॒महि॑ ।

तन्नो॑ आ॒दित्यः॑ प्र॒चोद॑यात् ॥ 10.1

2. तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ म॒हादे॒वाय॑ धी॒महि॑ । तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॒चोद॑यात् ॥ 10.2

3. प्र॒जाप॑ति॒र्दश॑ होता । स इ॒दं सर्वं॑ ।

स मे॑ द॒दातु॑ प्र॒जां प॒शून् पु॒ष्टिं य॑शः । स॒र्वञ्च॑ मे भू॒यात् । 10.3

4. अ॒वप॑त॒न्तानां॑ रु॒द्राणां॑ स्था॒ने स्व॑तेज॒सा भा॑नि ।

अ॒वप॑त॒न्तीनां॑ रु॒द्राणी॑ना स्था॒ने स्व॑तेज॒सा भा॑नि । 10.4

5. ए॒ष वा अ॑ति॒व्याधी॑ नाम॒ यज्ञः॑ । आ॒हवै॑ तत्र॒ राज॑न्योऽति॒व्याधी॑

जा॑यते । ये॒त्रैते॑न॒ यज्ञे॑न॒ यज॑न्ते । 10.5

6. आ॒त्मा मे॑ शु॒ध्यन्तां॑ ज्योति॑-रहं॑ वि॒रजा॑ वि॒पाप्मा॑ भू॒यास॑ ॥ स्वाहा॑ ।
 अ॒न्तरा॑त्मा मे॑ शु॒ध्यन्तां॑ ज्योति॑-रहं॑ वि॒रजा॑ वि॒पाप्मा॑ भू॒यास॑ ॥
 स्वाहा॑ । पर॒मात्मा॑ मे॑ शु॒ध्यन्तां॑ ज्योति॑-रहं॑ वि॒रजा॑ वि॒पाप्मा॑
 भू॒यास॑ ॥ स्वाहा॑ । क्षु॒धे स्वाहा॑ । क्षु॒त्पिपा॑साय स्वाहा॑ ।
 वि॒वि॒द्यै स्वाहा॑ । ऋ॒ग्वि॒धाना॑य स्वाहा॑ । क॒षो॒त्का॒य स्वाहा॑ ।
 क्षु॒त्पिपा॑साम॒लां ज्ये॒ष्ठाम॒लक्ष्मी॑ न॒शयाम्य॑हं ।
 अ॒भूति॑-म॒समृ॑द्धिं च॒ सर्वा॑ निर्णु॒द मे॑ पा॒प्मान॑ ॥ स्वाहा॑ । 10.6
7. प॒र्जन्यो॑ मे॒ मूर्ध्नि॑ श्रि॒तः । मूर्धा॑ हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ म॒यि ।
 अ॒हम॑मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 10.7
8. प॒रिष॑द्यो॒सि प॑व॒मानो॑ रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ग्ने पि॒पृहि॑
 मा॒ मा मा॑ हि॒सीः । 10.8
9. मा॒नस॑-मि॒ति वि॒द्वाँस॑-स्त॒स्मा-द्वि॒द्वाँस॑ ए॒व मा॒नसे॑ र॒मन्ते॑ । 10.9
10. प्रि॒यङ्गु॑-तण्डु॒लैर् जु॑होति । प्रि॒याङ्गा॑ ह॒ वै ना॑मैते ।
 ए॒तैर्वै॑ दे॒वा अ॒श्वस्या॑ङ्गानि॒ सम॑दधुः । यत्प्रि॒यङ्गु॑-तण्डु॒लैर् जु॑होति ।
 अ॒श्वस्यै॑-वा॒ङ्गानि॑ स॒न्दधा॑ति । 10.10

14.10.3 आशीर्वादं

अनेन दशमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित नाळिकेरजा-
भिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीभवोद्भवः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो
भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां
महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां क्षेम-स्थैर्य-वीर्य-विजय-
आयुरारोग्य पुत्रपौत्र धनधान्य कनकवास्तु वाहनादि समस्तैश्वर्य प्रदः
तेजो-लक्ष्म्यादी समस्त पुरुषार्थ सिद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो
महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.11 एकादशवार अभिषेकं – गन्धतोयं

14.11.1 एकादशः अनुवाकः

एका च मे, तिस्रश्च मे, पञ्च च मे, सप्त च मे,
नव च म, एकादश च मे, त्रयोदश च मे, पञ्चदश च मे,
सप्तदश च मे, नवदश च म, एकविंशतिश्च मे, त्रयोविंशतिश्च मे,
पञ्चविंशतिश्च मे, सप्तविंशतिश्च मे,
नवविंशतिश्च म, एकत्रिंशच्च मे,

शिव स्तुति

त्रयस्त्रिंशच्च मे, चतस्रश्च मे, ऽष्टौ च मे, द्वादश च मे,
षोडश च मे, विंशतिश्च मे, चतुर्विंशतिश्च मे, ऽष्टाविंशतिश्च मे,
द्वात्रिंशच्च मे, षट्-त्रिंशच्च मे, चत्वारिंशच्च मे
चतुश्-चत्वारिंशच्च मे ऽष्टाचत्वारिंशच्च मे,
वाजश्च प्रसवश्चा-पिजश्च क्रतुश्च सुवश्च मूर्धा च
व्यश्जिय-श्चान्त्यायन-श्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चा-धिपतिश्च । 11
इडा देवहू र्मनुर्यज्ञनी बृहस्पति-रुक्थामदानि शंसिषद्-विश्वे-देवाः
सूक्तवाचः पृथिविमात मा मा हिंसी र्मधु मनिष्ये मधु जनिष्ये मधु
वक्ष्यामि मधु वदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासं
शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मा देवा अवन्तु शोभायै पितरो ऽनुमदन्तु ॥
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।
दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।
बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।
दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।
ओं भूर्भुवस्सुवः ----- . (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभू॒तद॑मनाय॒ नमः॑ । कद॒ली॒फलं॑ निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनो॒न्मनाय॑ नमः । कर्पू॒र ता॑ंबूलं निवेदयामि ।

14.11.2 उपचार मन्त्राः

1. वै॒श्वा॒नराय॑ वि॒द्महे॑ ला॒ली॒लाय॑ धीमहि । तन्नो॑ अ॒ग्निः प्र॒चो॒दया॑त् ॥
का॒त्या॒यनाय॑ वि॒दम॑हे क॒न्यकु॑मारि धीमहि ।
तन्नो॑ दु॒र्गिः प्र॒चो॒दया॑त् ॥ 11.1

2. ई॒शानः॑ सर्व॒विद्या॑ना-मी॒श्वरः॑ सर्व॒भूता॑नां ब्र॒ह्माधि॑पति
ब्र॒ह्म॒णोऽधि॑पति ब्र॒ह्मा शि॒वो मे॑ अस्तु सदा॒शिवो॑ ॥ 11.2

3. हि॒र॒ण्यपा॑न्नं म॒धोः पूर्णं॑ द॒दाति॑ । म॒दव्यो॑ सा॒नीति॑ । ए॒कदा॑ ब्र॒ह्म॒ण
उप॑हरति । ए॒कदै॒व यज॑मानं॒ आयु॑स्तेजो॑ द॒दाति॑ । 11.3

((नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये

ऽंबिकापतये उमापतये पशुपतये नमो नमः ॥))

4. वैद्यु॒तानां॑ रु॒द्राणां॑ स्था॒ने स्व॑तेजसा भानि ।
वैद्यु॒तीनां॑ रु॒द्राणी॑नां स्था॒ने स्व॑तेजसा भानि । 11.4

5. ए॒ष वै दी॒र्घो नाम॑ य॒ज्ञः । दी॒र्घायु॑षो ह॒वै तत्र॑ म॒नुष्या॑ भवन्ति ।

ये॒त्रै॒तेन॑ य॒ज्ञेन॑ यज॒न्ते । ए॒ष वै क्लृ॑प्तो नाम॒ यज्ञः॑ ।

कल्प॑ते ह॒वै तत्र॑ प्र॒जाभ्यो॑ योगक्षे॒मः । ये॒त्रै॒तेन॑ य॒ज्ञेन॑ यज॒न्ते । 11.5

6. अन्न॑मय-प्राण॑मय-मनो॑मय-विज्ञा॑नामय-मान॑न्दमय-मात्मा॑ मे
शु॒ध्यन्तां॑ ज्योति॑-रहं॑ विरजा॑ विपा॒प्मा भू॑यास॒ स्वाहा॑ ॥ 11.6

7. ई॒शानो॑ मे म॒न्यौ श्रि॒तः । म॒न्यु हृ॑दये । हृद॑यं म॒यि ।
अ॒हम॑मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 11.7

8. प्र॒तक्वा॑सि नभ॒स्वान् रौ॒द्रेणा॑नीकेन पा॒हि मा॑ग्ने पिपृ॒हि
मा॒ मा॒ मा॒ हि॒सीः । 11.8

9. न्या॑स इति॑ ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मा हि॑ परः॑ परो॑ हि ब्र॒ह्मा ता॑नि वा ए॒तान्य
वरा॑णि प॒राँसि॑ न्या॑स ए॒वात्य॑रेच य॒ध्य ए॒वं वेदे॑-त्युप॒निषत् ॥ 11.9

10. द॒शान्ना॑नि जुहोति॑ । द॒शाक्ष॑रा वि॒राट् ।
वि॒राट् कृ॒त्स्न-स्या॒न्ना-ध्य॒स्या-वरु॑द्ध्यै ॥ 11.10

14.11.3 आशीर्वादं

अनेन एकादशवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित

गन्धतोयाभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीआदित्यात्मकरुद्रः

सर्व मंगलाजानि, प्रकृष्टै-श्वर्यशालि, सीमातित-वैभवः, नागराज भूषः,

सर्वपाप हरणः, सर्वप्राणिगण समुज्जीवकः, ब्रह्माण्ड-नायकः,

सकल कल्याण-गुणनिलयः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा,
अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां,
निखिल भूमण्डल निवासिनां सर्वानन्द सिद्धिप्रदः, सांसारिक रोग
गणनिवारकः, सर्वाभीष्ट सिद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो-
ऽनुगृह्णन्तु ॥ (तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

(Note: During Vibhuti Abhishekam the Rutvik performing the abhishekam shall recite “Mrutha Sanjeevani Suktham”).

In case of Rudraabhishekam, please proceed to Chapter 19 for
Uttaranga / Punar Pooja and perform Abhishekam thereafter. For
Rudra Ekadasani or Maha Rudram, proceed to Rudra Kramam)

ओं नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः ।

नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते करोमि ॥ (3 times)

(Perform the Udvaapanam of Sadyo Jaatha Kalasham or Pancha Kalashams and perform abhishekam to the deities)

15. गणपति ध्यानं

ओं ग॒णानां॑ त्वा	त्वा ग॒णपतिं॑
ग॒णपति॑ ह॒वामहे॑	ग॒णपति॑मि॒ति ग॒ण - पतिं॑ >
ह॒वामहे॑ क॒विं	क॒विं क॒वीनां॑
क॒वीनामु॑पमश्रवस्तमं	उ॒पम॑श्र/वस्तम/मि॒त्युप॑मश्रवः - तमं॑ >
ज्येष्ठ॑राजं ब्रह्म॒णां	ज्येष्ठ॑राजमि॒ति ज्येष्ठ॑ - राजं॑ >
ब्रह्म॒णां ब्रह्म॑णः	ब्रह्म॑णस्पते >
पत॑ आ	आ नः॑
न॒शृण्व॑न्	शृण्व॑न्भूतिभिः॑
ऊ॒तिभि॑स्सीद	ऊ॒तिभि॑रित्यूति - भिः॑
सीद॑ सादनं	सा॒दनमि॒ति सा॒दनं॑

16. श्री रुद्र क्रमः

16.1 श्री रुद्रक्रमः प्रथमः अनुवाकः

ओं नमो भगवते रुद्राय

ओं, नमस्ते	ते रुद्र
रुद्र मन्यवे >	मन्यव उतो
उतो ते >	उतो इत्युतो
त इषवे	इषवे नमः
नम इति नमः	नमस्ते
ते अस्तु	अस्तु धन्वने
धन्वने बाहुभ्यां >	बाहुभ्यामुत
बाहुभ्यामिति बाहु - भ्यां >	उत ते >
ते नमः	नम इति नमः
या ते >	त इषुः
इषुश्शिवतमा	शिवतमा शिवं
शिवतमेति शिव - तमा >	शिवं बभूव
बभूव ते	ते धनुः
धनुरिति धनुः	शिव शरव्या >
शरव्या या	या तव

शिव स्तुति

तव॑ तया॑ >	तया॑ नः
नो॑ रुद्र॑	रुद्र॑ मृडय॑
मृडयेति॑ मृडय॑	या ते॑ >
ते॑ रुद्र॑	रुद्र॑ शिवा॑
शिवा॑ तनूः	तनूरघोरा॑
अघोरा॑पापकाशिनी॑	अपापकाशिनी॑त्यपाप - काशिनी॑ >
तया॑ नः	नस्तनुवा॑ >
तनुवा॑ शन्तमया॑	शन्तमया॑ गिरिशन्त॑
शन्तमयेति॑ शं - तमया॑ >	गिरिशन्ताभि॑
गिरिशन्तेति॑ गिरि-शन्त॑	अभिचाकशीहि॑
चाकशीहीति॑ चाकशीहि॑	यामिषुं॑ >
इषुं॑ गिरिशन्त॑	गिरिशन्त॑ हस्ते॑ >
गिरिशन्तेति॑ गिरि - शन्त॑	हस्ते॑ बिभर्षि॑
बिभर्ष्यस्तवे॑	अस्तव॑ इत्यस्तवे॑
शिवां॑ गिरित्र॑	गिरित्र॑ तां
गिरित्रेति॑ गिरि - त्र॑	तां कुरु॑
कुरु॑ मा	मा हि॑सीः
हि॑सीः पुरुषं॑	पुरुषं॑ जगत्

शिव स्तुति

जगदिति जगत्	शिवेन वचसा
वचसा त्वा	त्वा गिरिश
गिरिशाच्छ	अच्छावदामसि
वदामसीति वदामसि	यथा नः
नः सर्वं >	सर्वमित्
इज्जगत्	जगदयक्ष्मं
अयक्ष्मं सुमनाः >	सुमना असत्
सुमना इति सु - मनाः >	असदित्यसत्
अध्यवोचत्	अवोचदधिवक्ता
अधिवक्ता प्रथमः	अधिवक्तेत्यधि - वक्ता
प्रथमो दैव्यः	दैव्यो भिषक्
भिषगिति भिषक्	अहीञ्च
च सर्वान्	सर्वान् जंभयन्
जंभयन्त् सर्वाः >	सर्वाश्च
च यातुधान्यः	यातुधान्य इति यातु - धान्यः
असौ यः	यस्ताम्रः
ताम्रो अरुणः	अरुण उत
उत बभ्रुः	बभ्रुः सुमंगलः
सुमङ्गल इति सु-मङ्गलः	ये च

शिव स्तुति

चे मां	इमां रुद्राः
रुद्रा अभितः	अभितो दिक्षु
दिक्षुः श्रिताः	श्रिताः सहस्रशः
सहस्रशोऽव	सहस्रश इति सहस्र - शः
अवैषां	एषां हेडः
हेड ईमहे	ईमह इतीमहे
असौ यः	योऽवसर्पति
अवसर्पति नीलग्रीवः	अवसर्पतीत्यव - सर्पति
नीलग्रीवो विलोहितः	नीलग्रीव इति नील - ग्रीवः
विलोहित इति वि - लोहितः	उतैनं >
एनं गोपाः	गोपा अदृशन्
गोपा इति गो-पाः	अदृशन्नदृशन्
अदृशन्नुदहार्यः	उदहार्य इत्युद-हार्यः
उतैनं >	एनं विश्वा >
विश्वा भूतानि	भूतानि सः
स दृष्टः	दृष्टो मृडयाति
मृडयाति नः	न इति नः
नमो अस्तु	अस्तु नीलग्रीवाय

शिव स्तुति

नी॒लग्री॒वाय॑ सह॒स्राक्षाय॑	नी॒लग्री॒वाये॑ति नी॒ल – ग्री॒वाय॑
सह॒स्राक्षाय॑ मी॒ढुषे॑ >	सह॒स्राक्षाय॑ेति सह॒स्र – अक्षाय॑
मी॒ढुष इति॑ मी॒ढुषे॑ >	अथो॒ ये
अथो॒ इत्यथो॑ >	ये अस्य॑
अस्य॑ स॒त्वानः॑	स॒त्वानोऽहं॑
अह॒न्तेभ्यः॑	तेभ्योऽ॒करं॑
अ॒कर॒न्नमः॑	नम॑ इति॑ नमः॑
प्रमु॒ञ्च	मु॒ञ्च ध॒न्वनः॑
ध॒न्वन॒स्त्वं	त्वमु॒भयोः॑ >
उ॒भयो॒रान्नियोः॑	आ॒र्न्नियो॒र्ज्यां॑
ज्या॒मिति॑ ज्यां॑	याश्च॑
च ते >	ते ह॒स्ते >
ह॒स्त इ॒षवः॑	इ॒षवः॑ परा॑ >
परा॑ ताः॑	ता भ॒गवः॑
भ॒गवो॒ वप॑	भ॒गव इति॑ भ॒ग – वः॑
व॒पेति॑ वप॑	अ॒वत॑त्य ध॒नुः
अ॒वत॑त्येत्य॒व – त॒त्य	ध॒नुस्त्वं
त्व॒ सह॒स्राक्ष॑	सह॒स्राक्ष॑ श॒तेषु॑धे
सह॒स्राक्षे॑ति सह॒स्र – अक्ष॑	श॒तेषु॑ध इति॑ श॒त – इ॒षुधे॑ >

शिव स्तुति

नि॒शी॒र्य॑ श॒ल्या॒नां॑ >	नि॒शी॒र्ये॑ति नि - शी॒र्य॑
श॒ल्या॒नां॑ मु॒खा॑ >	मु॒खा॑ शिवः
शि॒वो नः॑	नः सु॒मनाः॑ >
सु॒मना॑ भव	सु॒मना॑ इति सु - मनाः॑ >
भवे॑ति भव	वि॒ज्यं॑ धनुः
वि॒ज्यमि॑ति वि - ज्यं >	धनुः॑ क॒पर्दि॑नः
क॒पर्दि॑नो वि॒शल्यः॑	वि॒शल्यो॑ बा॒णवा॑न्
वि॒शल्य॑ इति वि - श॒ल्यः॑	बा॒णवा॑न् उ॒त
बा॒णवा॑नि॒ति बा॒ण - वा॑न्	उ॒तेत्यु॑त
अ॒ने॒शन्न॑स्य	अ॒स्ये॒षवः॑
इ॒षवः॑ आ॒भुः॑	आ॒भुर॑स्य
अ॒स्य नि॒षङ्ग॑थिः	नि॒षङ्ग॑थि॒रिति॑ नि॒षङ्ग॑थिः
या ते॑ >	ते हे॒तिः॑
हे॒तिर्मी॑दुष्ट॒म	मी॑दुष्ट॒म ह॒स्ते॑ >
मी॑दुष्ट॒मेति॑ मी॒दुः - त॒म	ह॒स्ते॑ ब॒भूव॑
ब॒भूव॑ ते	ते धनुः॑
धनु॑रिति धनुः॑	तया॑ऽस्मा॒न्
अ॒स्मा॒न् वि॒श्वतः॑	वि॒श्वत॑स्त्वं

शिव स्तुति

त्वमयक्ष्मया >	अयक्ष्मया परि
परिभुज	भुजेति भुज
नमस्ते	ते अस्तु
अस्त्वायुधाय	आयुधायानातताय
अनातताय धृष्णवे >	अनाततायेत्यना - तताय
धृष्णव इति धृष्णवे >	उभाभ्यामुत
उत ते >	ते नमः
नमो बाहुभ्यां >	बाहुभ्यान्तव
बाहुभ्यामिति बाहु - भ्यां >	तव धन्वने
धन्वन इति धन्वने	परि ते
ते धन्वनः	धन्वनो हेतिः
हेतिरस्मान्	अस्मान् वृणक्तु
वृणक्तु विश्वतः	विश्वत इति विश्वतः
अथो यः	अथो इत्यथो >
य इषुधिः	इषुधिस्तव
इषुधिरितीषु - धिः	तवारे
आरे अस्मत्	अस्मन्नि
निधेहि	धेहितं
तमिति तं	

16.2 श्री रुद्रक्रमः-द्वितीयः अनुवाकः

नमो॑ हिर॑ण्यबा॒हवे॑	हिर॑ण्यबा॒हवे॑ से॒नान्ये॑ >
हिर॑ण्यबा॒हव॑ इति॑ हिर॑ण्य - बा॒हवे॑ >	से॒नान्ये॑ दि॒शां
से॒नान्य॑ इति॑ से॒ना - न्ये॑ >	दि॒शाञ्च॑
च॒ पत॑ये	पत॑ये नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमो॑ वृ॒क्षेभ्यः॑
वृ॒क्षेभ्यो॑ हरि॑केशेभ्यः॑	हरि॑केशेभ्यः॑ प॒शूनां॑
हरि॑केशेभ्य॑ इति॑ हरि॑ - के॒शेभ्यः॑	प॒शूनां॑ पत॑ये
पत॑ये नमः॑	नमो॑ नमः॑
नमः॑ स॒स्पिञ्ज॑राय॑	स॒स्पिञ्ज॑राय॑ त्वि॒षीम॑ते
त्वि॒षीम॑ते प॒थीनां॑	त्वि॒षीम॑त इति॑ त्वि॒षी - म॑ते >
प॒थीनां॑ पत॑ये	पत॑ये नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमो॑ ब॒भ्लु॒शाय॑
ब॒भ्लु॒शाय॑ वि॒व्याधि॑ने >	वि॒व्याधि॑ने अ॒न्नानां॑
वि॒व्याधि॑न इति॑ वि - व्या॑धिने॑ >	अ॒न्नानां॑ पत॑ये
पत॑ये नमः॑	नमो॑ नमः॑

शिव स्तुति

नमो हरिकेशाय	हरिकेशायोपवीतिने >
हरिकेशायेति हरि - केशाय	उपवीतिने पुष्टानां >
उपवीतिन इत्युप - वीतिने >	पुष्टानां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नमो भवस्य	भवस्य हेत्यै
हेत्यै जगतां	जगतां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नमो रुद्राय	रुद्रायातताविने >
आतताविने क्षेत्राणां	आतताविन इत्या - तताविने >
क्षेत्राणां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमः सूताय
सूतायाहन्त्याय	अहन्त्याय वनानां
वनानां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमो रोहिताय
रोहिताय स्थपतये	स्थपतये वृक्षाणां >
वृक्षाणां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमो मन्त्रिणे >

शिव स्तुति

मन्त्रिणे वाणिजाय	वाणिजाय कक्षाणां
कक्षाणां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमो भुवन्तये >
भुवन्तये वारिवस्कृताय	वारिवस्कृतायौषधीनां
वारिवस्कृतायेति वारिवः – कृताय	ओषधीनां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नम उच्चैर्घोषाय	उच्चैर्घोषाया क्रन्दयते
उच्चैर्घोषायेत्युच्चैः – घोषाय	आक्रन्दयते पत्तीनां
आक्रन्दयत इत्या – क्रन्दयते	पत्तीनां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नमः कृथस्नवीताय	कृथस्नवीताय धावते
कृथस्नवीतायेति कृथस्न – वीताय	धावते सत्त्वनां
सत्त्वनां पतये	पतये नमः
नम इति नमः	

16.3 श्री रुद्रक्रमः-तृतीयः अनुवाकः

नमः॑ सह॒मानाय॑	सह॒मानाय॑ नि॒व्याधि॑ने॑ >
नि॒व्याधि॑न आ॒व्याधि॑नी॒नां	नि॒व्याधि॑न इति॑ नि - व्या॒धिने॑ >
आ॒व्याधि॑नी॒नां पत॑ये	आ॒व्याधि॑नी॒नामि॒त्या - व्या॒धिनी॑नां
पत॑ये नमः॑	नमो॑ नमः॑
नमः॑ ककु॒भाय॑	ककु॒भाय॑ नि॒षङ्गि॑णे॑ >
नि॒षङ्गि॑णे॑ स्ते॒नानां॑ >	नि॒षङ्गि॑ण इति॑ नि - स॒ङ्गिने॑ >
स्ते॒नानां॑ पत॑ये	पत॑ये नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमो॑ नि॒षङ्गि॑णे॑ >
नि॒षङ्गि॑ण इ॒षुधि॑मते॑ >	नि॒षङ्गि॑ण इति॑ नि - स॒ङ्गिने॑ >
इ॒षुधि॑मते॑ तस्करा॒णां	इ॒षुधि॑मत इती॒षुधि - मते॑ >
तस्करा॒णां पत॑ये	पत॑ये नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमो॑ वञ्च॑ते
वञ्च॑ते परि॒वञ्च॑ते	परि॒वञ्च॑ते स्तायू॒नां
परि॒वञ्च॑त इति॑ परि - वञ्च॑ते	स्तायू॒नां पत॑ये
पत॑ये नमः॑	नमो॑ नमः॑
नमो॑ नि॒चेर॑वे॑ >	नि॒चेर॑वे॑ परि॒चरा॑य

शिव स्तुति

नि॒चे॒र॒व॒ इति॑ नि॒ – चे॒र॒वै॑ >	परि॑च॒रा॒या॒र॒ण्य॒नां॑
परि॑च॒रा॒ये॒ति॑ परि॒ – च॒रा॒य॑	अ॒र॒ण्य॒नां॑ प॒त॒ये॑
प॒त॒ये॑ नमः॑	नमो॑ नमः॑
नमः॑ सृ॒का॒वि॒भ्यः॑	सृ॒का॒वि॒भ्यो॑ जि॒घा॒ञ्स॒द्भ्यः॑
सृ॒का॒वि॒भ्य इति॑ सृ॒का॒वि॒ – भ्यः॑	जि॒घा॒ञ्स॒द्भ्यो॑ मु॒ष्ण॒तां॑
जि॒घा॒ञ्स॒द्भ्य इति॑ जि॒घा॒ञ्स॒त्-भ्यः॑	मु॒ष्ण॒तां॑ प॒त॒ये॑
प॒त॒ये॑ नमः॑	नमो॑ नमः॑
नमो॑ऽसि॒म॒द्भ्यः॑	अ॒सि॒म॒द्भ्यो॑ न॒क्तं॑ >
अ॒सि॒म॒द्भ्य इत्य॑सि॒म॒त् – भ्यः॑	न॒क्तञ्च॒र॒द्भ्यः॑
च॒र॒द्भ्यः॑ प्र॒कृ॒न्ता॒नां॑ >	च॒र॒द्भ्य इति॑ च॒र॒त् – भ्यः॑
प्र॒कृ॒न्ता॒नां॑ प॒त॒ये॑	प्र॒कृ॒न्ता॒नामि॒ति॑ प्र॒ – कृ॒न्ता॒नां॑ >
प॒त॒ये॑ नमः॑	नमो॑ नमः॑
नम॑ उ॒ष्णी॒षि॒णै॑ >	उ॒ष्णी॒षि॒णै॑ गि॒रि॒च॒रा॒य॑
गि॒रि॒च॒रा॒य॑ कु॒लु॒ञ्चा॒नां॑ >	गि॒रि॒च॒रा॒ये॒ति॑ गि॒रि॒ – च॒रा॒य॑
कु॒लु॒ञ्चा॒नां॑ प॒त॒ये॑	प॒त॒ये॑ नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमः॑ इ॒षु॒म॒द्भ्यः॑
इ॒षु॒म॒द्भ्यो॑ ध॒न्वा॒वि॒भ्यः॑	इ॒षु॒म॒द्भ्य इती॑षु॒म॒त् – भ्यः॑

शिव स्तुति

धन्वाविभ्यश्च	धन्वाविभ्य इति धन्वावि - भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नम आतन्वानेभ्यः
आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यः	आतन्वानेभ्य इत्या॥ - तन्वानेभ्यः
प्रतिदधानेभ्यश्च	प्रतिदधानेभ्य इति प्रति - दधानेभ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नम आयच्छद्भ्यः
आयच्छद्भ्यो विसृजद्भ्यः	आयच्छद्भ्य इत्यायच्छत् - भ्यः
विसृजद्भ्यश्च	विसृजद्भ्य इति विसृजत् - भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमोऽस्यद्भ्यः
अस्यद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यः	अस्यद्भ्य इत्यस्यत् - भ्यः
विद्ध्यद्भ्यश्च	विद्ध्यद्भ्य इति विद्ध्यत् - भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नम आसीनेभ्यः
आसीनेभ्यः शयानेभ्यः	शयानेभ्यश्च
च वः	वो नमः

शिव स्तुति

नमो॑ नमः॑	नमः॑ स्वपद्भ्यः॑
स्वपद्भ्यो॑ जाग्रद्भ्यः॑	स्वपद्भ्य इति॑ स्वपत् - भ्यः॑
जाग्रद्भ्यश्च॑	जाग्रद्भ्य इति॑ जाग्रत् - भ्यः॑
च वः॑	वो नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमस्तिष्ठद्भ्यः॑
तिष्ठद्भ्यो॑ धावद्भ्यः॑	तिष्ठद्भ्य इति॑ तिष्ठत् - भ्यः॑
धावद्भ्यश्च॑	धावद्भ्य इति॑ धावत् - भ्यः॑
च वः॑	वो नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमः॑ सभाभ्यः॑
सभाभ्यः॑ सभापतिभ्यः॑	सभापतिभ्यश्च॑
सभापतिभ्य इति॑ सभापति - भ्यः॑	च वः॑
वो नमः॑	नमो॑ नमः॑
नमो॑ अश्वे॑भ्यः॑	अश्वे॑भ्योऽश्वपतिभ्यः॑
अश्वपतिभ्यश्च॑	अश्वपतिभ्य इत्यश्वपति - भ्यः॑
च वः॑	वो नमः॑
नम इति॑ नमः॑	

16.4 श्री रुद्रक्रमः – चतुर्थः अनुवाकः

नम॑ आव्या॒धिनी॑भ्यः	आ॒व्याधिनी॑भ्यो वि॒विद्ध्य॑न्तीभ्यः
आ॒व्याधिनी॑भ्य इत्या॑ – व्या॒धिनी॑भ्यः	वि॒विद्ध्य॑न्तीभ्यश्च
वि॒विद्ध्य॑न्तीभ्य इति॑ वि – वि॒द्ध्य॑न्तीभ्यः	च वः
वो नमः॑	नमो॑ नमः
नम॑ उगणा॒भ्यः	उगणा॒भ्यस्तृ॒हती॑भ्यः
तृ॒हती॑भ्यश्च	च वः
वो नमः॑	नमो॑ नमः
नमो॑ गृ॒थ्से॑भ्यः	गृ॒थ्से॑भ्यो गृ॒थ्से॑पतिभ्यः
गृ॒थ्स॑पतिभ्यश्च	गृ॒थ्स॑पतिभ्य इति॑ गृ॒थ्स॑पति – भ्यः
च वः	वो नमः॑
नमो॑ नमः	नमो॑ व्रा॒ते॑भ्यः
व्रा॒ते॑भ्यो व्रा॒त॑पतिभ्यः	व्रा॒त॑पतिभ्यश्च
व्रा॒त॑पतिभ्य इति॑ व्रा॒त॑पति – भ्यः	च वः
वो नमः॑	नमो॑ नमः
नमो॑ ग॒णे॑भ्यः	ग॒णे॑भ्यो ग॒ण॑पतिभ्यः

शिव स्तुति

गणपतिभ्यश्च —	गणपतिभ्य इति गणपति – भ्यः — — — —
च वः — —	वो नमः —
नमो नमः —	नमो विरूपेभ्यः —
विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यः —	विरूपेभ्य इति वि – रूपेभ्यः — — — —
विश्वरूपेभ्यश्च —	विश्वरूपेभ्य इति विश्व – रूपेभ्यः — — — —
च वः — —	वो नमः —
नमो नमः —	नमो महद्भ्यः —
महद्भ्यः क्षुल्लकेभ्यः —	महद्भ्य इति महत् – भ्यः — — — —
क्षुल्लकेभ्यश्च — —	च वः — —
वो नमः —	नमो नमः —
नमो रथिभ्यः —	रथिभ्यो ऽरथेभ्यः — —
रथिभ्य इति रथि – भ्यः — — — —	अरथेभ्यश्च — —
च वः — —	वो नमः —
नमो नमः —	नमो रथेभ्यः —
रथेभ्यो रथपतिभ्यः —	रथपतिभ्यश्च —
रथपतिभ्य इति रथपति – भ्यः — — — —	च वः — —
वो नमः —	नमो नमः —

शिव स्तुति

नमः॑ से॒नाभ्यः॑	से॒नाभ्य॑ स्से॒नानि॑भ्यः
से॒नानि॑भ्यश्च	से॒नानि॑भ्य इति॑ से॒नानि॑ – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो॑ नमः	नमः॑ क्षत्तृ॑भ्यः
क्षत्तृ॑भ्यः सङ्ग्र॑हीतृ॒भ्यः	क्षत्तृ॑भ्यः इति॑ क्षत्तृ॑ – भ्यः
सङ्ग्र॑हीतृ॒भ्यश्च	सङ्ग्र॑हीतृ॒भ्य इति॑ सङ्ग्र॑हीतृ॒ – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो॑ नमः	नमस्तक्ष॑भ्यः
तक्ष॑भ्यो रथ॑का॒रेभ्यः॑	तक्ष॑भ्य इति॑ तक्ष॑ – भ्यः
रथ॑का॒रेभ्यश्च	रथ॑का॒रेभ्य इति॑ रथ॑ – का॒रेभ्यः॑
च वः	वो नमः
नमो॑ नमः	नमः॑ कु॒लाले॑भ्यः
कु॒लाले॑भ्यः क॒मरि॑भ्यः	क॒मरि॑भ्यश्च
च वः	वो नमः
नमो॑ नमः	नमः॑ पु॒ञ्जिष्टे॑भ्यः
पु॒ञ्जिष्टे॑भ्यो निषा॑दे॒भ्यः	निषा॑दे॒भ्यश्च
च वः	वो नमः

शिव स्तुति

नमो॒ नमः॑	नम॑ इ॒षुकृद्भ्यः॑
इ॒षुकृद्भ्यो॑ ध॒न्वकृद्भ्यः॑	इ॒षुकृद्भ्य॑ इती॒षुकृत् - भ्यः॑
ध॒न्वकृद्भ्यश्च॑	ध॒न्वकृद्भ्य॑ इति॑ ध॒न्वकृत् - भ्यः॑
च॒ वः॑	वो॒ नमः॑
नमो॒ नमः॑	नमो॑ मृ॒गयु॒भ्यः॑
मृ॒गयु॒भ्यः॑ श्व॒निभ्यः॑	मृ॒गयु॒भ्य॑ इति॑ मृ॒गयु - भ्यः॑
श्व॒निभ्यश्च॑	श्व॒निभ्य॑ इति॑ श्व॒नि - भ्यः॑
च॒ वः॑	वो॒ नमः॑
नमो॒ नमः॑	नमः॑ श्व॒भ्यः॑
श्व॒भ्य॑ इ॒श्वप॒तिभ्यः॑	श्व॒भ्यः॑ इति॑ श्व - भ्यः॑
श्व॒पति॒भ्यश्च॑	श्व॒पति॒भ्य॑ इति॑ श्व॒पति - भ्यः॑
च॒ वः॑	वो॒ नमः॑
नम॑ इति॑ नमः॑	

16.5 श्री रुद्रक्रमः पञ्चमः अनुवाकः

नमो॒ भवाय॑	भवाय॑ च
च॒ रुद्राय॑	रुद्राय॑ च
च॒ नमः॑	नम॑ इ॒शर्वाय॑

शिव स्तुति

श॒र्वाय॑ च॒	च॒ प॒शु॒प॒तये॑
प॒शु॒प॒तये॑ च॒	प॒शु॒प॒तय॑ इति प॒शु - प॒तये॑
च॒ नमः॑	नमो॑ नी॒लग्री॑वाय
नी॒लग्री॑वाय च॒	नी॒लग्री॑वायेति नी॒ल - ग्री॒वाय॑
च॒ शि॒ति॒क॒ण्ठाय॑	शि॒ति॒क॒ण्ठाय॑ च॒
शि॒ति॒क॒ण्ठाये॑ति शि॒ति - क॒ण्ठाय॑	च॒ नमः॑
नमः॑ क॒प॒र्दि॒ने >	क॒प॒र्दि॒ने च॒
च॒ व्यु॒प्त॒केशा॑य	व्यु॒प्त॒केशा॑य च॒
व्यु॒प्त॒केशा॑येति व्यु॒प्त - केशा॑य	च॒ नमः॑
नमः॑ स॒हस्रा॑क्षाय	स॒हस्रा॑क्षाय च॒
स॒हस्रा॑क्षायेति स॒हस्र - अ॒क्षाय॑	च॒ श॒त॒ध॒न्व॒ने
श॒त॒ध॒न्व॒ने च॒	श॒त॒ध॒न्व॒न इति॑ श॒त - ध॒न्व॒ने >
च॒ नमः॑	नमो॑ गि॒रि॒शाय॑
गि॒रि॒शाय॑ च॒	च॒ शि॒पि॒वि॒ष्टाय॑
शि॒पि॒वि॒ष्टाय॑ च॒	शि॒पि॒वि॒ष्टाये॑ति शि॒पि - वि॒ष्टाय॑
च॒ नमः॑	नमो॑ मी॒दुष्ट॑माय
मी॒दुष्ट॑माय च॒	मी॒दुष्ट॑मायेति मी॒दुः - त॒माय॑

शिव स्तुति

चे॒षु॒म॒ते	इ॒षु॒म॒ते च
इ॒षु॒म॒त इ॒ती॒षु - म॒ते >	च नमः
नमो॑ ह॒स्वाय॑	ह॒स्वाय॑ च
च वा॒म॒नाय॑	वा॒म॒नाय॑ च
च नमः	नमो॑ बृ॒ह॒ते
बृ॒ह॒ते च	च वर्षी॑यसे
वर्षी॑यसे च	च नमः
नमो॑ वृ॒द्धाय॑	वृ॒द्धाय॑ च
च स॒म् वृ॒द्ध॒ने	स॒म् वृ॒द्ध॒ने च
स॒म् वृ॒द्ध॒न इति॑ सं - वृ॒द्ध॒ने	च नमः
नमो॑ अ॒ग्रि॒याय॑	अ॒ग्रि॒याय॑ च
च प्र॒थ॒माय॑	प्र॒थ॒माय॑ च
च नमः	नम आ॒श॒वे >
आ॒श॒वे च	चा॒जि॒राय॑
अ॒जि॒राय॑ च	च नमः
नमः॑ शी॒घ्रि॒याय॑	शी॒घ्रि॒याय॑ च
च शी॒भ्याय॑	शी॒भ्याय॑ च

शिव स्तुति

च नमः	नम ऊर्म्याय
ऊर्म्याय च	चावस्वन्याय
अवस्वन्याय च	अवस्वन्यायेत्यव – स्वन्याय
च नमः	नमः स्रोतस्याय
स्रोतस्याय च	च द्वीप्याय
द्वीप्याय च	चेति च

16.6 श्री रुद्रक्रमः षष्ठः अनुवाकः

नमो ज्येष्ठाय	ज्येष्ठाय च
च कनिष्ठाय	कनिष्ठाय च
च नमः	नमः पूर्वजाय
पूर्वजाय च	पूर्वजायेति पूर्व – जाय
चापरजाय	अपरजाय च
अपरजायेत्यपर – जाय	च नमः
नमो मद्ध्यमाय	मद्ध्यमाय च
चापगल्भाय	अपगल्भाय च
अपगल्भायेत्यप – गल्भाय	च नमः
नमो जघन्याय	जघन्याय च

शिव स्तुति

च॒ बु॒दि॒ध्न॒याय॑	बु॒दि॒ध्न॒याय॑ च
च॒ नमः॑	नम॒स्सो॒भ्याय॑
सो॒भ्याय॑ च	च॒ प्र॒ति॒स॒र्याय॑
प्र॒ति॒स॒र्याय॑ च	प्र॒ति॒स॒र्या॑येति॒ प्रति॑ – स॒र्याय॑
च॒ नमः॑	नमो॑ या॒म्याय॑
या॒म्याय॑ च	च॒ क्षे॒म्याय॑
क्षे॒म्याय॑ च	च॒ नमः॑
नम॑ उ॒र्व॒र्याय॑	उ॒र्व॒र्याय॑ च
च॒ ख॒ल्याय॑	ख॒ल्याय॑ च
च॒ नमः॑	नमः॑ श्लो॒क्याय॑
श्लो॒क्याय॑ च	चा॒व॒सा॒न्याय॑
अ॒व॒सा॒न्याय॑ च	अ॒व॒सा॒न्या॑येत्यव – सा॒न्याय॑
च॒ नमः॑	नमो॑ व॒न्याय॑
व॒न्याय॑ च	च॒ क॒क्ष्याय॑
क॒क्ष्याय॑ च	च॒ नमः॑
नमः॑ श्र॒वाय॑	श्र॒वाय॑ च
च॒ प्र॒ति॒श्र॒वाय॑	प्र॒ति॒श्र॒वाय॑ च

शिव स्तुति

प्रति॒श्रवा॑येति॒ प्रति॒ – श्र॒वाय॑	च॒ नमः॑
नम॑ आ॒शुषे॑णाय	आ॒शुषे॑णाय च
आ॒शुषे॑णायेत्याशु॒ – से॒नाय॑	चा॒शुर॑थाय
आ॒शुर॑थाय च	आ॒शुर॑थायेत्याशु॒ – र॒थाय॑
च॒ नमः॑	नमः॑ शू॒राय॑
शू॒राय॑ च	चा॒वभि॑न्दते
अ॒वभि॑न्दते च	अ॒वभि॑न्दत इत्य॒व – भि॑न्दते
च॒ नमः॑	नमो॑ वर्मि॒णे >
वर्मि॒णे च॑	च॒ वरू॑थिने >
वरू॑थिने च	च॒ नमः॑
नमो॑ बि॒ल्मिने॑ >	बि॒ल्मिने॑ च
च॒ क॒वचि॑ने >	क॒वचि॑ने च
च॒ नमः॑	नमः॑ श्रु॒ताय॑
श्रु॒ताय॑ च	च॒ श्रु॒तसे॑नाय
श्रु॒तसे॑नाय च	श्रु॒तसे॑नायेति॒ श्रु॒त – से॒नाय॑
चेति॑ च	

16.7 श्री रुद्रक्रमः – सप्तमः अनुवाकः

नमो दुन्दुभ्याय	दुन्दुभ्याय च
चाहनन्याय	आहनन्याय च
आहनन्यायेत्या – हनन्याय	च नमः
नमो धृष्णवे	धृष्णवे च
च प्रमृशाय	प्रमृशाय च
प्रमृशायेति प्र – मृशाय	च नमः
नमो दूताय	दूताय च
च प्रहिताय	प्रहिताय च
प्रहितायेति प्र – हिताय	च नमः
नमो निषङ्गिणे >	निषङ्गिणे च
निषङ्गिण इति नि – सङ्गिने >	चेषुधिमते >
इषुधिमते च	इषुधिमत इतीषुधि – मते >
च नमः	नम स्तीक्ष्णेषवे
तीक्ष्णेषवे च	तीक्ष्णेषव इति तीक्ष्ण – इषवे >
चायुधिने >	आयुधिने च
च नमः	नमः स्वायुधाय

शिव स्तुति

स्वा॒यु॒धाय॑ च	स्वा॒यु॒धाये॑ति सु - आ॒यु॒धाय॑
च सु॒धन्व॑ने	सु॒धन्व॑ने च
सु॒धन्व॑न इति सु - धन्व॑ने	च नमः॑
नम॑स्स्रु॒त्याय॑	स्रु॒त्याय॑ च
च प॒थ्याय॑	प॒थ्याय॑ च
च नमः॑	नमः॑ का॒त्याय॑
का॒त्याय॑ च	च नी॒प्याय॑
नी॒प्याय॑ च	च नमः॑
नमः॑ सू॒द्याय॑	सू॒द्याय॑ च
च सर॑स्याय	सर॑स्याय च
च नमः॑	नमो॑ ना॒द्याय॑
ना॒द्याय॑ च	च वै॒शन्ता॑य
वै॒शन्ता॑य च	च नमः॑
नमः॑ कू॒प्याय॑	कू॒प्याय॑ च
चाव॑त्याय	अव॑त्याय च
च नमः॑	नमो॑ वर्ष्पा॑य
वर्ष्पा॑य च	चाव॑र्ष्पाय

शिव स्तुति

अव॒र्ष्या॒य च॑	च॒ नमः॑
नमो॑ मे॒घ्या॒य	मे॒घ्या॒य च॑
च॒ वि॒द्यु॒त्या॒य	वि॒द्यु॒त्या॒य च॑
वि॒द्यु॒त्या॒येति॑ वि - द्यु॒त्या॒य	च॒ नमः॑
नम॑ ई॒दि॒ध्र्या॒य	ई॒दि॒ध्र्या॒य च॑
चा॒त॒प्या॒य	आ॒त॒प्या॒य च॑
आ॒त॒प्या॒येत्या॑ - त॒प्या॒य	च॒ नमः॑
नमो॑ वा॒त्या॒य	वा॒त्या॒य च॑
च॒ रे॒ष्मि॒या॒य	रे॒ष्मि॒या॒य च॑
च॒ नमः॑	नमो॑ वा॒स्त॒व्या॒य
वा॒स्त॒व्या॒य च॑	च॒ वा॒स्तु॒पा॒य
वा॒स्तु॒पा॒य च॑	वा॒स्तु॒पा॒येति॑ वा॒स्तु - पा॒य
चेति॑ च॒	

16.8 श्री रुद्रक्रमः – अष्टमः अनुवाकः

नमः॑ सो॒मा॒य	सो॒मा॒य च॑
च॒ रु॒द्रा॒य	रु॒द्रा॒य च॑
च॒ नमः॑	नम॑स्ता॒म्रा॒य

शिव स्तुति

ता॒म्राय॑ च॒	चा॒रु॒णाय॑
अ॒रु॒णाय॑ च॒	च॒ नमः॑
नम॑श्शङ्गाय॒	शङ्गाय॑ च॒
च॒ प॒शु॒प॒तये॑	प॒शु॒प॒तये॑ च॒
प॒शु॒प॒तय॑ इति॒ प॒शु – प॒तये॑	च॒ नमः॑
नम॑ उ॒ग्राय॑	उ॒ग्राय॑ च॒
च॒ भी॒माय॑	भी॒माय॑ च॒
च॒ नमः॑	नमो॑ अ॒ग्रे॒व॒धाय॑
अ॒ग्रे॒व॒धाय॑ च॒	अ॒ग्रे॒व॒धाये॒त्यग्रे॑ – व॒धाय॑
च॒ दू॒रे॒व॒धाय॑	दू॒रे॒व॒धाय॑ च॒
दू॒रे॒व॒धाये॒ति दू॒रे – व॒धाय॑	च॒ नमः॑
नमो॑ ह॒न्त्रे॑	ह॒न्त्रे॑ च॒
च॒ ह॒नी॒य॒से॑	ह॒नी॒य॒से॑ च॒
च॒ नमः॑	नमो॑ वृ॒क्षे॒भ्यः॑
वृ॒क्षे॒भ्यो ह॑रि॒केशे॑भ्यः	ह॑रि॒केशे॑भ्यो नमः॑
ह॑रि॒केशे॑भ्य इति॒ ह॑रि – के॒शे॒भ्यः॑	नम॑स्ताराय॒
ता॒राय॑ नमः॑	नमः॑ शं॒भवे॑ >

शिव स्तुति

शं॒भवे॑ च	शं॒भ॒व इति॑ शं॒ - भवे॑ >
च॒ म॒यो॒भवे॑ >	म॒यो॒भवे॑ च
म॒यो॒भ॒व इति॑ म॒यः - भवे॑ >	च॒ नमः॑
नम॑श्शङ्क॒राय॑	शङ्क॒राय॑ च
शङ्क॒रायेति॑ शं॒ - क॒राय॑	च॒ म॒यस्क॑राय
म॒यस्क॑राय च	म॒यस्क॑रायेति॑ म॒यः - क॒राय॑
च॒ नमः॑	नम॑श्शि॒वाय॑
शि॒वाय॑ च	च॒ शि॒वत॑राय
शि॒वत॑राय च	शि॒वत॑रायेति॑ शि॒व - त॒राय॑
च॒ नमः॑	नम॑स्ती॒र्थ्याय॑
ती॒र्थ्याय॑ च	च॒ कू॒ल्याय॑
कू॒ल्याय॑ च	च॒ नमः॑
नमः॑ पा॒र्याय॑	पा॒र्याय॑ च
चा॒वा॒र्याय॑	अ॒वा॒र्याय॑ च
च॒ नमः॑	नमः॑ प्र॒तर॑णाय
प्र॒तर॑णाय च	प्र॒तर॑णायेति॑ प्र॒ - त॒रणाय॑
चो॒त्तर॑णाय	उ॒त्तर॑णाय च

शिव स्तुति

उत्तरणायेत्युत् - तरणाय	च नमः
नम आतार्याय	आतार्याय च
आतार्यायेत्या - तार्याय	चालाद्याय
आलाद्याय च	आलाद्यायेत्या - लाद्याय
च नमः	नमश्शष्याय
शष्याय च	च फेन्याय
फेन्याय च	च नमः
नमः सिकत्याय	सिकत्याय च
च प्रवाह्याय	प्रवाह्याय च
प्रवाह्यायेति प्र - वाह्याय	चेति च

16.9 श्रीरुद्रक्रमः - नवमः अनुवाकः

नम इरिण्याय	इरिण्याय च
च प्रपथ्याय	प्रपथ्याय च
प्रपथ्यायेति प्र - पथ्याय	च नमः
नमः किंशिलाय	किंशिलाय च
च क्षयणाय	क्षयणाय च
च नमः	नमः कपर्दिने >

शिव स्तुति

क॒प॒र्दि॒ने च॑	च॒ पु॒ल॒स्त॒ये॑ >
पु॒ल॒स्त॒ये च॑	च॒ न॒मः॑
न॒मो गो॒ष्ठ्या॑य	गो॒ष्ठ्या॑य च
गो॒ष्ठ्या॑येति गो - स्था॒य	च॒ गृ॒ह्या॑य
गृ॒ह्या॑य च	च॒ न॒मः॑
न॒म॒स्त॒ल्प्या॑य	त॒ल्प्या॑य च
च॒ गे॒ह्या॑य	गे॒ह्या॑य च
च॒ न॒मः॑	न॒मः॑ का॒व्या॑य
का॒व्या॑य च	च॒ ग॒ह्व॒रे॒ष्ठा॑य
ग॒ह्व॒रे॒ष्ठा॑य च	ग॒ह्व॒रे॒ष्ठा॑येति ग॒ह्व॒रे - स्था॒य
च॒ न॒मः॑	न॒मो हृ॒द॒य्या॑य
हृ॒द॒य्या॑य च	च॒ नि॒वे॒ष्या॑य
नि॒वे॒ष्या॑य च	नि॒वे॒ष्या॑येति नि - वे॒ष्या॑य
च॒ न॒मः॑	न॒मः॑ पा॒ञ्च॒स॒व्या॑य
पा॒ञ्च॒स॒व्या॑य च	च॒ र॒ज॒स्या॑य
र॒ज॒स्या॑य च	च॒ न॒मः॑
न॒मश्शु॒ष्क्या॑य	शु॒ष्क्या॑य च

शिव स्तुति

च॒ हरि॑त्याय	हरि॑त्याय च
च॒ नमः॑	नमो॑ लोप्याय
लोप्या॑य च	चो॒लप्या॑य
उ॒लप्या॑य च	च॒ नमः॑
नम॑ ऊ॒र्व्याय॑	ऊ॒र्व्याय॑ च
च॒ सू॒र्म्याय॑	सू॒र्म्याय॑ च
च॒ नमः॑	नमः॑ प॒र्ण्याय॑
प॒र्ण्याय॑ च	च॒ प॒र्णश॑द्याय
प॒र्णश॑द्याय च	प॒र्णश॑द्यायेति॒ प॒र्ण - श॑द्याय
च॒ नमः॑	नमो॑ऽपगु॒रमा॑णाय
अ॒पगु॒रमा॑णाय च	अ॒पगु॒रमा॑णायेत्यप॒ - गु॒रमा॑णाय
चा॒भिघ्न॑ते	अ॒भिघ्न॑ते च
अ॒भिघ्न॑त इत्य॒भि - घ्न॑ते	च॒ नमः॑
नम॑ आ॒क्खि॑दते	आ॒क्खि॑दते च
आ॒क्खि॑दत इत्या॑ - खि॒दते	च॒ प्र॒क्खि॑दते
प्र॒क्खि॑दते च	प्र॒क्खि॑दत इति॒ प्र - खि॑दते
च॒ नमः॑	नमो॑ वः

शिव स्तुति

वः॑ किरिके॑भ्यः॑	किरिके॑भ्यो दे॒वानां॑ >
दे॒वाना॑ꣳ हृदये॑भ्यः॑	हृदये॑भ्यो नमः॑
नमो॑ वि॒क्षीण॑केभ्यः॑	वि॒क्षीण॑केभ्यो नमः॑
वि॒क्षीण॑केभ्य इति वि - क्षीण॑केभ्यः॑	नमो॑ विचिन्व॑त्केभ्यः॑
विचिन्व॑त्केभ्यो नमः॑	विचिन्व॑त्केभ्य इति वि - चिन्व॑त्केभ्यः॑
नम॑ आनिर्ह॑तेभ्यः॑	आनिर्ह॑तेभ्यो नमः॑
आनिर्ह॑तेभ्य इत्यानिः - ह॑तेभ्यः॑	नम॑ आमीव॑त्केभ्यः॑
आमीव॑त्केभ्य इत्या॑ - मीव॑त्केभ्यः॑	

16.10 श्रीरुद्रक्रमः- दशमः अनुवाकः

द्रा॒पे अ॒न्धसः॑	अ॒न्धस॑स्पते
प॒ते दरि॑द्रत्	दरि॑द्रन्नीललो॒हित
नील॑लो॒हितेति॑ नील - लो॒हित	ए॒षां पु॒रुषा॑णां
पु॒रुषा॑णामे॒षां	ए॒षां प॒शूनां॑
प॒शूनां॑ मा	मा भेः॑
भेर्मा॑	माऽऽरः॑
अ॒रोमो॑	मो ए॒षां

शिव स्तुति

मो॒ इति॒ मो॒	ए॒षां किं॒
किञ्च॒न	च॒ नाम॑मत्
आ॒मम॑दि॒त्या म॑मत्	या ते॑ >
ते॒ रु॒द्र	रु॒द्र शि॒वा
शि॒वा त॒नूः	त॒नूशि॒वा
शि॒वा वि॒श्वाह॑भे॒षजी॑	वि॒श्वाह॑भे॒षजी॑ति॒ वि॒श्वाह॑ - भे॒षजी॑ >
शि॒वा रु॒द्रस्य॑	रु॒द्रस्य॑ भे॒षजी॑
भे॒षजी॑ तया॑ >	तया॑ नः॑
नो॒ मृ॒ड	मृ॒ड जी॒वसे॑ >
जी॒वस॑ इति॒ जी॒वसे॑ >	इ॒माꣳ रु॒द्राय॑
रु॒द्राय॑ तव॒से >	तव॒से क॒पदि॑ने॑ >
क॒पदि॑ने॑ क्ष॒यद्वी॑राय	क्ष॒यद्वी॑राय प्र
क्ष॒यद्वी॑रा॒येति॑ क्ष॒यत् - वी॒राय॑	प्रभ॑रामहे
भ॒राम॑हे म॒तिं	म॒तिमि॑ति॒ मतिं॑
यथा॑ नः॑	न॒शं
श॒मस॑त्	अ॒सद्वि॑पदे॑ >

शिव स्तुति

द्वि॒पदे॑ चतु॒ष्पदे॑	द्वि॒पद॑ इति द्वि - पदे॑ >
चतु॒ष्पदे॑ वि॒श्वं >	चतु॒ष्पद॑ इति चतुः - पदे॑ >
वि॒श्वं पु॒ष्टं	पु॒ष्टं ग्रामे॑ >
ग्रामे॑ अ॒स्मिन्	अ॒स्मिन्नना॑तुरं
अना॑तुरमि॒त्यना॑ - तु॒रं >	मृ॒डानः॑
नो॒ रु॒द्र	रु॒द्रो त
उत॑ नः	नो॒ मयः॑
मय॑स्कृ॒धि	कृ॒धि क्षय॑द्वी॒राय॑
क्षय॑द्वी॒राय॑ नम॒सा	क्षय॑द्वी॒रायेति॑ क्षय॒त् - वी॒राय॑
नम॒सा वि॒धेम॑	वि॒धेम ते॑ >
त इति॑ ते	यच्छं
शञ्च॑	च योः॑
योश्च॑	च मनुः॑
मनु॑रायजे	आयजे॑ पि॒ता
आय॑ज इ॒त्या - यजे॑	पि॒ता तत्
तद॑श्याम	अ॒श्याम तव॑
तव॑ रु॒द्र	रु॒द्र प्र॒णीतौ॑

शिव स्तुति

प्रणी॒ता॒वि॒ति॒ प्र - नी॒तौ >	मा नः
नो॒ म॒हा॒न्तं >	म॒हा॒न्त॒मु॒त
उ॒त मा	मा नः
नो॒ अ॒र्भ॒कं	अ॒र्भ॒कं मा
मा नः	न उ॒क्ष॒न्तं
उ॒क्ष॒न्त॒मु॒त	उ॒त मा
मा नः	न उ॒क्षि॒तं
उ॒क्षि॒त॒मि॒त्यु॒क्षि॒तं	मा नः
नो॒ व॒धीः >	व॒धीः पि॒तरं >
पि॒तरं मा	मो॒त
उ॒त मा॒तरं >	मा॒तरं प्रि॒याः
प्रि॒या मा	मा नः
न॒स्त॒नु॒वः	त॒नु॒वो रु॒द्र
रु॒द्र री॒रि॒षः	री॒रि॒षः इति॑ री॒रि॒षः
मा नः	न॒स्तो॒के
तो॒के त॒नये	त॒नये मा
मा नः	न आ॒यु॒षि

शिव स्तुति

आ॒यु॒षि॒ मा॒	मा॒ नः॑
नो॒ गो॒षु॒	गो॒षु॒ मा॒
मा॒ नः॑	नो॒ अ॒श्वेषु॑
अ॒श्वेषु॑ रीरिषः॑	रीरिष॑ इति॑ रीरिषः॑
वी॒रा॒न्मा॒	मा॒ नः॑
नो॒ रु॒द्र॒	रु॒द्र॒ भा॒मितः॑
भा॒मितो॑ व॒धीः॑	व॒धी॒ ह॒विष्म॑न्तः॑
ह॒विष्म॑न्तो॒ नम॑सा	नम॑सा वि॒धेम॑
वि॒धेम॑ ते >	त॒ इति॑ ते
आ॒रा॒त्ते॑ >	ते॒ गो॒घ्ने॑
गो॒घ्न॒ उ॒त॒	गो॒घ्न॒ इति॑ गो॒ - घ्ने॑
उ॒त॒ पू॒रुष॑घ्ने	पू॒रुष॑घ्ने॒ क्षय॑द्वी॒राय॑
पू॒रुष॑घ्न॒ इति॑ पू॒रुष॑ - घ्ने	क्षय॑द्वी॒राय॑ सु॒म्नं॑
क्षय॑द्वी॒राये॑ति॒ क्षय॑त् - वी॒राय॑	सु॒म्नम॑स्मे
अ॒स्मे ते॑ >	अ॒स्मे॒ इत्य॑स्मे
ते॒ अ॒स्तु॒	अ॒स्त्वित्य॑स्तु
र॒क्षा च॑	च॒ नः॑

शिव स्तुति

नो॒ अधि॑	अधि॑ च
च॒ दे॒व	दे॒व ब्रू॒हि
ब्रू॒ह्यध॑	अधा॑ च
च॒ नः॑	नः॑ शर्म॑
शर्म॑ यच्छ	यच्छ॑ द्वि॒बर्हाः॑ >
द्वि॒बर्हा॑ इति॑ द्वि - बर्हाः॑ >	स्तु॒हि श्रु॒तं
श्रु॒तं ग॒र्त्तस॑दं >	ग॒र्त्तस॑दं यु॒वानं॑
ग॒र्त्तस॑दमि॒ति ग॒र्त्त - स॑दं >	यु॒वानं॑ मृ॒गं
मृ॒गन्न॑	न भी॒मं
भी॒म मु॒पह॒लुं	उ॒पह॒लुमु॒ग्रं
उ॒ग्रमि॒त्यु॒ग्रं	मृ॒डा ज॒रि॒त्रे
ज॒रि॒त्रे रु॒द्र	रु॒द्र स्त॒वानः॑
स्त॒वानो॑ अ॒न्यं	अ॒न्यन्ते॑ >
ते अ॒स्मत्	अ॒स्मन्नि॑
नि व॒पन्तु॑	व॒पन्तु॑ से॒नाः॑ >
से॒ना इति॑ से॒नाः॑ >	प॒रिणः॑
नो॒ रु॒द्रस्य॑	रु॒द्रस्य॑ हे॒तिः

शिव स्तुति

हे॒ति॒ वृ॒ण॒क्तु॒	वृ॒ण॒क्तु॒ परि॒
परि॒ त्वे॒ष॒स्य॒	त्वे॒ष॒स्य॒ दु॒र्म॒तिः॒
दु॒र्म॒ति॒र॒घा॒योः॒	दु॒र्म॒ति॒रि॒ति॒ दुः॒ – म॒तिः॒
अ॒घा॒यो॒रि॒त्य॒घ॒ – योः॒	अ॒व॒स्ति॒रा॒
स्ति॒रा॒ म॒घ॒व॒द्भ्यः॒	म॒घ॒व॒द्भ्यः॒ त॒नु॒ष्व॒
म॒घ॒व॒द्भ्य॒ इति॒ म॒घ॒व॒त् – भ्यः॒	त॒नु॒ष्व॒ मी॒ढ्वः॒
मी॒ढ्व॒ स्तो॒काय॒	तो॒काय॒ त॒नया॒य॒
त॒नया॒य॒ मृ॒डय॒	मृ॒डये॒ति॒ मृ॒डय॒
मी॒ढु॒ष्ट॒म॒ शि॒वत॒म॒	मी॒ढु॒ष्ट॒मे॒ति॒ मी॒ढुः॒ – त॒म॒
शि॒वत॒म॒ शि॒वः॒	शि॒वत॒मे॒ति॒ शि॒व॒ – त॒म॒
शि॒वो॒ नः॒	न॒स्सु॒म॒नाः॑ >
सु॒म॒ना॒ भव॒	सु॒म॒ना॒ इति॒ सु॒ – म॒नाः॑ >
भवे॒ति॒ भव॒	प॒र॒मे॒ वृ॒क्षे॒
वृ॒क्ष॒ आ॒यु॒धं॒	आ॒यु॒धं॒ नि॒धाय॒
नि॒धाय॒ कृ॒त्तिं॑ >	नि॒धाये॒ति॒ नि॒ – धा॒य॒
कृ॒त्तिं॑ व॒सानः॒	व॒सान॒ आ॒
आ॒ च॒र॒	च॒र॒ पि॒ना॒कं॒

शिव स्तुति

पि॒नाकं॑ बि॒भ्रत्	बि॒भ्रदा॑
आ ग॒हि	ग॒हीति॑ ग॒हि
वि॒कि॒रिद॑ वि॒लो॒हित॑	वि॒कि॒रिदे॒ति वि॒ - कि॒रिद॑
वि॒लो॒हित॑ नमः॑	वि॒लो॒हिते॒ति वि॒ - लो॒हित॑
नम॑स्ते	ते अ॒स्तु
अ॒स्तु भग॑वः	भग॑व इति॑ भग॑ - वः
यास्तै॑ >	ते स॒हस्रं॑ >
स॒हस्रं॑ हे॒तयः॑	हे॒तयो॑ ऽन्यं
अ॒न्यम॑स्मत्	अ॒स्मन्नि॑
नि॒वप॑न्तु	व॒पन्तु॑ ताः
ता इति॑ ताः	स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑धा
स॒हस्र॑धा बा॒हुवोः॑	स॒हस्र॑धेति॑ स॒हस्र॑ - धा
बा॒हुवो॑स्तव	तव॑ हे॒तयः॑
हे॒तय॑ इति॑ हे॒तयः॑	ता॒सामी॑शानः
ई॒शानो॑ भग॑वः	भग॑वः प॒राची॑ना >
भग॑व इति॑ भग॑ - वः	प॒राची॑ना मु॒खा >
मु॒खा कृ॑धि	कृ॒धीति॑ कृ॑धि

16.11 श्री रुद्रक्रमः – एकादशः अनुवाकः

सहस्राणि सहस्रशः	सहस्रशो ये
सहस्रश इति सहस्र – शः	ये रुद्राः
रुद्रा अधि	अधि भूम्यां >
भूम्यामिति भूम्यां >	तेषां सहस्रयोजने
सहस्रयोजनेऽव	सहस्रयोजन इति सहस्र – योजने
अव धन्वानि	धन्वानि तन्मसि
तन्मसीति तन्मसि	अस्मिन् महति
महत्यर्णवे	अर्णवेऽन्तरिक्षे
अन्तरिक्षे भवाः	भवा अधि
अधीत्यधि	नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः >
नीलग्रीवा इति नील – ग्रीवाः >	शितिकण्ठाः शर्वाः
शितिकण्ठा इति शिति – कण्ठाः >	शर्वा अधः
अधः क्षमाचराः	क्षमाचरा इति क्षमाचराः
नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः >	नीलग्रीवा इति नील – ग्रीवाः >
शितिकण्ठा दिवं >	शितिकण्ठा इति शिति – कण्ठाः >
दिवं रुद्राः	रुद्रा उपश्रिताः

शिव स्तुति

उपश्रिता इत्युप - श्रिताः >	ये वृक्षेषु
वृक्षेषु सस्मिञ्जराः	सस्मिञ्जरा नीलग्रीवाः
नीलग्रीवा विलोहिताः	नीलग्रीवा इति नील - ग्रीवाः >
विलोहिता इति वि - लोहिताः >	ये भूतानां >
भूतानामधिपतयः	अधिपतयो विशिखासः
अधिपतय इत्यधि - पतयः	विशिखासः कपर्दिनः
विशिखास इति वि - शिखासः	कपर्दिन इति कपर्दिनः
ये अन्नेषु	अन्नेषु विविद्ध्यन्ति
विविद्ध्यन्ति पात्रेषु	विविद्ध्यन्तीति वि - विद्ध्यन्ति
पात्रेषु पिबतः	पिबतो जनान्
जनानिति जनान्	ये पथां
पथां पथिरक्षयः	पथिरक्षय ऐलबृदाः
पथिरक्षय इति पथि - रक्षयः	ऐलबृदा यव्युधः
यव्युध इति यव्युधः	ये तीर्थानि
तीर्थानि प्रचरन्ति	प्रचरन्ति सृकावन्तः
प्रचरन्तीति प्र - चरन्ति	सृकावन्तो निषङ्गिणः
सृकावन्त इति सृका - वन्तः	निषङ्गिण इति नि - सङ्गिनः

शिव स्तुति

य ए॒ता॒व॒न्तः॑	ए॒ता॒व॒न्तश्च॑
च भू॒या॒ऽसः॑	भू॒या॒ऽसश्च॑
च दि॒शः॑	दि॒शो रु॒द्राः॑
रु॒द्रा वि॒त॒स्थि॒रे॑	वि॒त॒स्थि॒र इति॑ वि - त॒स्थि॒रे॑
तेषा॑ऽ सहस्रयोजने	सहस्रयोजने॑ऽव
सहस्रयोजन इति॑ सहस्र - योजने	अव धन्वा॑नि
धन्वा॑नि तन्मसि	तन्मसी॑ति तन्मसि
नमो॑ रु॒द्रेभ्यः॑	रु॒द्रेभ्यो॑ ये
ये पृ॒थि॒व्यां॑	पृ॒थि॒व्यां ँ॑ये
येऽन्तरि॑क्षे	अन्तरि॑क्षे ये
ये दि॒वि॑	दि॒वि॑ येषां॑ >
येषा॑मन्नं >	अन्नं॑ वातः
वातो॑ वर्॒षं॑	वर्॒षमिष॑वः
इष॑वस्तेभ्यः	तेभ्यो॑ दश
दश प्रा॑चीः >	प्रा॑चीर्दश
दश दक्षि॑णा	दक्षि॑णा दश
दश प्र॑तीचीः >	प्र॑तीचीर्दश

शिव स्तुति

द॒शोदी॑चीः	उदी॑ची॒र्द॒श
द॒शो॒र्ध्वाः	ऊ॒र्ध्वास्ते॑भ्यः
ते॒भ्यो न॑मः	न॒मस्ते
ते नः	नो मृ॒डय॑न्तु
मृ॒डय॑न्तु ते	ते यं
यं द्वि॒ष्मः	द्वि॒ष्मो यः
यश्च	च नः
नो द्वेष्टि॑	द्वेष्टि॑ तं
तं वः	वो ज॑भे
ज॑भे दधामि	द॒धामी॑ति दधामि

16.12 त्र्यंबकं यैजामहे

त्र्य॑ंबकं यै॒जाम॑हे	त्र्य॑ंबक॒मिति॑ त्रि - अ॒ंबकं >
य॒जाम॑हे सु॒गन्धिं	सु॒गन्धिं पु॒ष्टि॒वर्द्ध॑नं
सु॒गन्धि॑मिति॑ सु - ग॒न्धिं	पु॒ष्टि॒वर्द्ध॑नमिति॑ पु॒ष्टि - वर्द्ध॑नं
उ॒र्वारु॑कमिव	इ॒व ब॑न्धनात्
ब॑न्धनान् मृ॒त्योः	मृ॒त्योर्मु॑क्षीय
मु॒क्षीय॑ मा	माऽमृ॑तात् >

शिव स्तुति

अ॒मृ॒ता॒ति॒त्य॒मृ॒तात् >	यो रु॒द्रः
रु॒द्रो अ॒ग्नौ	अ॒ग्नौ यः
यो अ॒प्सु	अ॒प्सु यः
अ॒प्स्वि॒त्यप् - सु	य ओष॑धीषु
ओष॑धीषु यः	यो रु॒द्रः
रु॒द्रो वि॒श्वा >	वि॒श्वा भुव॑ना
भुव॑नाऽऽवि॒वेश	आ॒वि॒वेश॑ तस्मै॑ >
आ॒वि॒वेशे॑त्या - वि॒वेश	तस्मै॑ रु॒द्राय
रु॒द्राय॑ नमः	नमो॑ अस्तु
अ॒प्स्वि॒त्यस्तु	

17. श्री चमक क्रमः

17.1 श्री चमक क्रमः – प्रथमः अनुवाकः

अ॒ग्ना॒वि॒ष्णू॒ स॒जोष॑सा	अ॒ग्ना॒वि॒ष्णू॒ इत्य॑ग्ना॒ – वि॒ष्णू॒ >
स॒जोष॑से॒माः	स॒जोष॑सेति स – जोष॑सा
इ॒मा व॒र्द्धन्तु॑	व॒र्द्धन्तु॑ वां >
वा॒ङ्गिरः॑	गिर॑ इति गिरः॑
द्यु॒म्नैर्वा॑जेभिः	वा॑जेभिरा
आ॒गतं॑	ग॒तमि॑ति ग॒तं
वा॒जश्च॑	च मे॑ >
मे प्र॑सवः	प्र॑सवश्च
प्र॒सव॑ इति प्र – स॒वः	च मे॑ >
मे प्र॑यतिः	प्र॑यतिश्च
प्र॒यति॑रिति प्र – य॒तिः	च मे॑ >
मे प्र॑सितिः	प्र॑सितिश्च
प्र॒सिति॑रिति प्र – सि॒तिः	च मे॑ >
मे धी॑तिः	धी॑तिश्च
च मे॑ >	मे क्र॑तुः

शिव स्तुति

क्र॒तुश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ स्वरः॑	स्वरश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ श्लोकः॑
श्लो॒कश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ श्रावः॑	श्रावश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ श्रुतिः॑
श्रु॒तिश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ ज्योतिः॑	ज्योतिश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सुवः॑
सुव॑श्च	च॒ मे॒ >
मे॒ प्राणः॑	प्राणश्च॑
प्रा॒ण इति॑ प्र – अ॒नः	च॒ मे॒ >
मे॒ऽपानः॑	अ॒पानश्च॑
अ॒पान इत्य॑प – अ॒नः	च॒ मे॒ >
मे॒ व्यानः॑	व्या॒नश्च॑
व्या॒न इति॑ वि – अ॒नः	च॒ मे॒ >
मे॒ऽसुः॑	अ॒सुश्च॑

शिव स्तुति

च मे > — —	मे चितं — —
चितं च —	च मे > — —
म आधीतं —	आधीतं च —
आधीतमित्या - धीतं > — —	च मे > — —
मे वाक् —	वाक्च —
च मे > — —	मे मनः —
मनश्च —	च मे > — —
मे चक्षुः —	चक्षुश्च —
च मे > — —	मे श्रोत्रं > — —
श्रोत्रं च —	च मे > — —
मे दक्षः —	दक्षश्च —
च मे > — —	मे बलं > — —
बलं च —	च मे > — —
म ओजः —	ओजश्च —
च मे > — —	मे सहः —
सहश्च —	च मे > — —
म आयुः —	आयुश्च —

शिव स्तुति

च॒ मे॒ > — —	मे॒ जरा॑ — —
जरा॑ च॒ —	च॒ मे॒ > — —
म॒ आ॒त्मा॑ — —	आ॒त्मा॑ च॒ —
च॒ मे॒ > — —	मे॒ तनूः॑ —
तनू॑श्च॒ —	च॒ मे॒ > — —
मे॒ शर्म॑ —	शर्म॑ च॒ —
च॒ मे॒ > — —	मे॒ वर्म॑ —
वर्म॑ च॒ —	च॒ मे॒ > — —
मे॒ऽङ्गानि॑ —	अ॒ङ्गानि॑ च॒ —
च॒ मे॒ > — —	मे॒ऽस्थानि॑ —
अ॒स्थानि॑ च॒ —	च॒ मे॒ > — —
मे॒ प॒रू॒षि॑ —	प॒रू॒षि॑ च॒ —
च॒ मे॒ > — —	मे॒ शरी॑राणि —
शरी॑राणि च॒ —	च॒ मे॒ > — —
म॒ इति॑ मे॒ —	

17.2 श्री चमक क्रमः – द्वितीयः अनुवाकः

ज्यैष्ठ्यं च	च मे >
म आधिपत्यं	आधिपत्यं च
आधिपत्यमित्याधि - पत्यं >	च मे >
मे मन्युः	मन्युश्च
च मे >	मे भामः
भामश्च	च मे >
मेऽमः	अमश्च
च मे >	मेऽभः
अंभश्च	च मे >
मे जेमा	जेमा च
च मे >	मे महिमा
महिमा च	च मे >
मे वरिमा	वरिमा च
च मे >	मे प्रथिमा
प्रथिमा च	च मे >
मे वर्ष्मा	वर्ष्मा च

शिव स्तुति

च मे > — —	मे द्राघुया — —
द्राघुया च — —	च मे > — —
मे वृद्धं — —	वृद्धं च — —
च मे > — —	मे वृद्धिः — —
वृद्धिश्च — —	च मे > — —
मे सत्यं — —	सत्यं च — —
च मे > — —	मे श्रद्धा — —
श्रद्धा च — —	श्रद्धेति श्रत् - धा — —
च मे > — —	मे जगत् — —
जगच्च — —	च मे > — —
मे धनं > — —	धनं च — —
च मे > — —	मे वशः — —
वशश्च — —	च मे > — —
मे त्विषिः — —	त्विषिश्च — —
च मे > — —	मे क्रीडा — —
क्रीडा च — —	च मे > — —
मे मोदः — —	मोदश्च — —

शिव स्तुति

च मे > — —	मे जातं — —
जातं च —	च मे > — —
मे जनिष्यमाणं — — —	जनिष्यमाणं च — —
च मे > — —	मे सूक्तं — —
सूक्तं च —	सूक्तमिति सु - उक्तं — —
च मे > — —	मे सुकृतं — —
सुकृतं च —	सुकृतमिति सु - कृतं — —
च मे > — —	मे वित्तं — —
वित्तं च —	च मे > — —
मे वेद्यं > —	वेद्यं च —
च मे > — —	मे भूतं — —
भूतं च —	च मे > — —
मे भविष्यत् — — —	भविष्यच्च — —
च मे > — —	मे सुगं — —
सुगं च —	सुगमिति सु - गं — —
च मे > — —	मे सुपथं > — —
सुपथं च —	सुपथमिति सु - पथं > — —

शिव स्तुति

च मे > — —	म ऋद्धं — —
ऋद्धं च —	च मे > — —
म ऋद्धिः —	ऋद्धिश्च —
च मे > — —	मे क्लृप्तं — —
क्लृप्तं च —	च मे > — —
मे क्लृप्तिः —	क्लृप्तिश्च —
च मे > — —	मे मतिः — —
मतिश्च —	च मे > — —
मे सुमतिः — —	सुमतिश्च — —
सुमतिरिति सु - मतिः — —	च मे > — —
म इति मे —	

17.3 श्री चमक क्रम :- तृतीयः अनुवाकः

शं च —	च मे > — —
मे मयः —	मयश्च —
च मे > — —	मे प्रियं — —
प्रियं च —	च मे > — —
मेऽनुकामः — — —	अनुकामश्च — —

शिव स्तुति

अनु॒काम॑ इत्यनु॒ – कामः॑	च॒ मे॒ >
मे॒ कामः॑	कामश्च
च॒ मे॒ >	मे॒ सौमनसः॑
सौमनसश्च	च॒ मे॒ >
मे॒ भद्रं॑	भद्रं॑ च
च॒ मे॒ >	मे॒ श्रेयः॑
श्रेयश्च	च॒ मे॒ >
मे॒ वस्यः॑	वस्यश्च
च॒ मे॒ >	मे॒ यशः॑
यशश्च	च॒ मे॒ >
मे॒ भगः॑	भगश्च
च॒ मे॒ >	मे॒ द्रविणं॑
द्रविणं॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ यन्ता॑	यन्ता॑ च
च॒ मे॒ >	मे॒ धर्ता॑
धर्ता॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ क्षेमः॑	क्षेमश्च

शिव स्तुति

च मे > — —	मे धृतिः —
धृतिश्च —	च मे > — —
मे विश्वं > —	विश्वं च —
च मे > — —	मे महः —
महश्च —	च मे > — —
मे सम्‌वित् — —	सम्‌विच्च —
सम्‌विदिति सं - वित् —	च मे > — —
मे ज्ञात्रं > —	ज्ञात्रं च —
च मे > — —	मे सूः —
सूश्च —	च मे > — —
मे प्रसूः — —	प्रसूश्च —
प्रसूरिति प्र - सूः —	च मे > — —
मे सीरं > —	सीरं च —
च मे > — —	मे लयः — —
लयश्च —	च मे > — —
म ऋतं — —	ऋतं च —
च मे > — —	मेऽमृतं > —

शिव स्तुति

अ॒मृतं च	च मे >
मे॒ऽयक्ष्मं	अ॒यक्ष्मं च
च मे >	मे॒ऽनामयत्
अ॒नामयच्च	च मे >
मे जी॒वातुः	जी॒वातुश्च
च मे >	मे दी॒र्घायु॒त्वं
दी॒र्घायु॒त्वं च	दी॒र्घायु॒त्वमिति दी॒र्घायु - त्वं
च मे >	मे॒ऽनमि॒त्रं
अ॒नमि॒त्रं च	च मे >
मे॒ऽभयं	अ॒भयं च
च मे >	मे सु॒गं
सु॒गं च	सु॒गमिति सु - गं
च मे >	मे श॒यनं
श॒यनं च	च मे >
मे सू॒षा	सू॒षा च
सू॒षेति सु - उ॒षा	च मे >
मे सु॒दिनं >	सु॒दिनं च

शिव स्तुति

सु॒दि॒न॒मि॒ति॒ सु॒ - दि॒नं॑ >	च॒ मे॒ >
म॒ इति॑ मे॒	

17.4 श्री चमक क्रमः- चतुर्थः अनुवाकः

ऊ॒र्क्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ सू॒नृ॒ता॑ >	सू॒नृ॒ता॑ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ प॒यः॑
प॒यश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ र॒सः॑	र॒सश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ घृ॒तं॑
घृ॒तं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ म॒धु॑	म॒धु च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ स॒ग्धिः॑
स॒ग्धिश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ स॒पी॒तिः॑	स॒पी॒तिश्च॑
स॒पी॒ति॒रिति॑ स॒ - पी॒तिः॑	च॒ मे॒ >
मे॒ कृ॒षिः॑	कृ॒षिश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ वृ॒ष्टिः॑

शिव स्तुति

वृष्टिश्च	च मे >
मे जैत्रं >	जैत्रं च
च मे >	म औद्भिद्यं
औद्भिद्यं च	औद्भिद्यमित्यौत् - भिद्यं >
च मे >	मे रयिः
रयिश्च	च मे >
मे रायः	रायश्च
च मे >	मे पुष्टं
पुष्टं च	च मे >
मे पुष्टिः	पुष्टिश्च
च मे >	मे विभु
विभु च	विभ्विति वि - भु
च मे >	मे प्रभु
प्रभु च	प्रभ्विति प्र - भु
च मे >	मे बहु
बहु च	च मे >
मे भूयः	भूयश्च

शिव स्तुति

च मे > — —	मे पूर्णं — —
पूर्णं च —	च मे > — —
मे पूर्णतरं — —	पूर्णतरं च —
पूर्णतरमिति पूर्ण - तरं > — — — —	च मे > — —
मेऽक्षितिः —	अक्षितिश्च —
च मे > — —	मे कूयवाः —
कूयवाश्च —	च मे > — —
मेऽन्नं > —	अन्नं च —
च मे > — —	मेऽक्षुत् —
अक्षुच्च —	च मे > — —
मे ब्रीहयः — —	ब्रीहयश्च —
च मे > — —	मे यवाः > —
यवाश्च —	च मे > — —
मे माषाः > —	माषाश्च —
च मे > — —	मे तिलाः > —
तिलाश्च —	च मे > — —
मे मुद्गाः — —	मुद्गाश्च —

शिव स्तुति

च मे > — —	मे खल्वाः > — —
खल्वाश्च —	च मे > — —
मे गोधूमाः > — —	गोधूमाश्च —
च मे > — —	मे मसुराः > — —
मसुराश्च —	च मे > — —
मे प्रियङ्गवः — —	प्रियङ्गवश्च —
च मे > — —	मेऽणवः —
अणवश्च —	च मे > — —
मे श्यामाकाः > — —	श्यामाकाश्च —
च मे > — —	मे नीवाराः > — —
नीवाराश्च —	च मे > — —
म इति मे —	

17.5 श्री चमक क्रमः— पञ्चमः अनुवाकः

अश्मा च —	च मे > — —
मे मृत्तिका —	मृत्तिका च —
च मे > — —	मे गिरयः — —
गिरयश्च —	च मे > — —

शिव स्तुति

मे॒ पर्व॑ताः	पर्व॑ताश्च
च॒ मे॒ >	मे॒ सि॒क॒ताः
सि॒क॒ताश्च	च॒ मे॒ >
मे॒ वन॑स्प॒तयः॑	वन॑स्प॒तयश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ हि॒र॒ण्यं
हि॒र॒ण्यं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ऽयः॑	अ॒यश्च॑
च॒ मे॒	मे॒ सी॒सं॑ >
सी॒सं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ त्र॒पु	त्र॒पुश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ श्या॑मं
श्या॑मं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ लो॒हं	लो॒हं च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ऽग्निः॑
अ॒ग्निश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ आपः॑	आ॒पश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ वी॒रु॒धः

शिव स्तुति

वी॒रुधश्च॑ —	च॒ मे॒ > — —
म॒ ओष॑धयः	ओष॑धयश्च
च॒ मे॒ > — —	मे॒ कृ॒ष्टप॑च्यं
कृ॒ष्टप॑च्यं च॑	कृ॒ष्टप॑च्यमि॒ति कृ॒ष्ट – प॑च्यं
च॒ मे॒ > — —	मे॒ऽकृ॒ष्टप॑च्यं
अ॒कृ॒ष्टप॑च्यं च॑	अ॒कृ॒ष्टप॑च्यमि॒त्यकृ॒ष्ट – प॑च्यं
च॒ मे॒ > — —	मे॒ ग्रा॒म्याः
ग्रा॒म्याश्च॑	च॒ मे॒ > — —
मे॒ प॒शवः॑	प॒शव॑ आ॒र॒ण्याः
आ॒र॒ण्याश्च॑	च॒ य॒ज्ञेन॑
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पन्तां॑	क॒ल्पन्तां॑ वि॒त्तं
वि॒त्तं च॑	च॒ मे॒ > — —
मे॒ वि॒त्तिः॑	वि॒त्तिश्च॑
च॒ मे॒ > — —	मे॒ भू॒तं
भू॒तं च॑	च॒ मे॒ > — —
मे॒ भू॒तिः॑	भू॒तिश्च॑
च॒ मे॒ > — —	मे॒ व॒सु

शिव स्तुति

वसु च	च मे >
मे वसतिः	वसतिश्च
च मे >	मे कर्म
कर्म च	च मे >
मे शक्तिः	शक्तिश्च
च मे >	मेऽर्थः
अर्थश्च	च मे >
म एमः	एमश्च
च मे >	म इतिः
इतिश्च	च मे >
मे गतिः	गतिश्च
च मे >	म इति मे

17.6 श्री चमकः क्रमः – षष्ठः अनुवाकः

अग्निश्च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे सोमः
सोमश्च	च मे >

शिव स्तुति

म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ स॒वि॒ता
स॒वि॒ता च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ स॒र॒स्व॒ती
स॒र॒स्व॒ती च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ पू॒षा
पू॒षा च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ बृ॒ह॒स्प॒तिः॑
बृ॒ह॒स्प॒तिश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ मि॒त्रः॑
मि॒त्रश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ व॒रु॒णः॑

शिव स्तुति

वरुणश्च —	च मे > — —
म इन्द्रः —	इन्द्रश्च —
च मे > — —	मे त्वष्टा [॥] > —
त्वष्टा च —	च मे > — —
म इन्द्रः —	इन्द्रश्च —
च मे > — —	मे धाता — —
धाता च —	च मे > — —
म इन्द्रः —	इन्द्रश्च —
च मे > — —	मे विष्णुः —
विष्णुश्च —	च मे > — —
म इन्द्रः —	इन्द्रश्च —
च मे > — —	मेऽश्विनौ [॥] > —
अश्विनौ च —	च मे > — —
म इन्द्रः —	इन्द्रश्च —
च मे > — —	मे मरुतः — —
मरुतश्च —	च मे > — —
म इन्द्रः —	इन्द्रश्च —

शिव स्तुति

च मे > — —	मे विश्वे > —
विश्वे च	च मे > — —
मे देवाः — —	देवा इन्द्रः —
इन्द्रश्च	च मे > — —
मे पृथिवी — — —	पृथिवी च — —
च मे > — —	म इन्द्रः —
इन्द्रश्च	च मे > — —
मेऽन्तरिक्षं —	अन्तरिक्षं च —
च मे > — —	म इन्द्रः —
इन्द्रश्च	च मे > — —
मे द्यौः —	द्यौश्च —
च मे > — —	म इन्द्रः —
इन्द्रश्च	च मे > — —
मे दिशः —	दिशश्च —
च मे > — —	म इन्द्रः —
इन्द्रश्च	च मे > — —
मे मूर्ध्ना — —	मूर्ध्ना च —

शिव स्तुति

च मे > — —	म इन्द्रः —
इन्द्रश्च —	च मे > — —
मे प्रजापतिः — —	प्रजापतिश्च —
प्रजापतिरिति प्रजा - पतिः — — — —	च मे > — —
म इन्द्रः —	इन्द्रश्च —
च मे > — —	म इति मे —

17.7 श्री चमक क्रमः – सप्तमः अनुवाकः

अ॒ञ्शुश्च — —	च मे > — —
मे रश्मिः — —	रश्मिश्च —
च मे > — —	मेऽदाभ्यः —
अदाभ्यश्च —	च मे > — —
मेऽधिपतिः —	अधिपतिश्च —
अधिपतिरित्यधि - पतिः — —	च मे > — —
म उपा॒ञ्शुः — — — —	उपा॒ञ्शुश्च — — — —
उपा॒ञ्शुरित्युप - अ॒ञ्शुः — — — — — —	च मे > — —
मेऽन्तर्यामः — — —	अन्तर्यामश्च — — —
अन्तर्याम इत्यन्तः - यामः — — — —	च मे > — —

शिव स्तुति

म ऐन्द्रवायवः — — — — —	ऐन्द्रवायवश्च — — — — —
ऐन्द्रवायव इत्यैन्द्र – वायवः — — — — —	च मे > — — — — —
मे मैत्रावरुणः — — — — —	मैत्रावरुणश्च — — — — —
मैत्रावरुण इति मैत्रा – वरुणः — — — — —	च मे > — — — — —
म आश्विनः — — — — —	आश्विनश्च — — — — —
च मे > — — — — —	मे प्रतिप्रस्थानः — — — — —
प्रतिप्रस्थानश्च — — — — —	प्रतिप्रस्थान इति प्रति – प्रस्थानः — — — — —
च मे — — — — —	मे शुक्रः — — — — —
शुक्रश्च — — — — —	च मे > — — — — —
मे मन्थी — — — — —	मन्थी च — — — — —
च मे > — — — — —	म आग्रयणः — — — — —
आग्रयणश्च — — — — —	च मे > — — — — —
मे वैश्वदेवः — — — — —	वैश्वदेवश्च — — — — —
वैश्वदेव इति वैश्व – देवः — — — — —	च मे > — — — — —
मे ध्रुवः — — — — —	ध्रुवश्च — — — — —
च मे > — — — — —	मे वैश्वानरः — — — — —
वैश्वानरश्च — — — — —	च मे > — — — — —

शिव स्तुति

म ऋतुग्रहाः	ऋतुग्रहाश्च
ऋतुग्रहा इत्यृतु - ग्रहाः	च मे >
मेऽतिग्राह्याः >	अतिग्राह्याश्च
अतिग्राह्या इत्यति - ग्राह्याः >	च मे >
म ऐन्द्राग्नः	ऐन्द्राग्नश्च
ऐन्द्राग्न इत्यैन्द्र - अग्नः	च मे >
मे वैश्वदेवः	वैश्वदेवश्च
वैश्वदेव इति वैश्व - देवः	च मे >
मे मरुत्वतीयाः >	मरुत्वतीयाश्च
च मे >	मे माहेन्द्रः
माहेन्द्रश्च	माहेन्द्र इति माहा - इन्द्रः
च मे >	म आदित्यः
आदित्यश्च	च मे >
मे सावित्रः	सावित्रश्च
च मे >	मे सारस्वतः
सारस्वतश्च	च मे >
मे पौष्णः	पौष्णश्च

शिव स्तुति

च मे > — —	मे पालीवतः — — —
पालीवतश्च — — —	पालीवत इति पाली – वतः — — —
च मे > — —	मे हारियोजनः — — — —
हारियोजनश्च — — — —	हारियोजन इति हारि – योजनः — — — —
च मे > — —	म इति मे —

17.8 श्री चमक क्रमः – अष्टमः अनुवाकः

इद्ध्मश्च — — —	च मे > — —
मे बर्हिः — —	बर्हिश्च —
च मे > — —	मे वेदिः —
वेदिश्च —	च मे > — —
मे धिष्ण्याः —	धिष्ण्याश्च —
च मे > — —	मे सुचः —
सुचश्च —	च मे > — —
मे चमसाः — —	चमसाश्च — —
च मे > — —	मे ग्रावाणः —
ग्रावाणश्च —	च मे > — —
मे स्वरवः —	स्वरवश्च —

शिव स्तुति

च मे > — —	म उपरवा: — —
उपरवाश्च —	उपरवा इत्युप — रवा: — —
च मे > — —	मेऽधिषवणे — —
अधिषवणे च — —	अधिषवणे इत्यधि — सवने — —
च मे > — —	मे द्रोणकलशः — —
द्रोणकलशश्च — — — —	द्रोणकलश इति द्रोण — कलशः — — — —
च मे > — —	मे वायव्यानि — —
वायव्यानि च —	च मे > — —
मे पूतभृत् — —	पूतभृच्च — —
पूतभृदिति पूत — भृत् — —	च मे > — —
म आधवनीयः — —	आधवनीयश्च — —
आधवनीय इत्या — धवनीयः — — — —	च मे > — —
म आग्नीद्धं > —	आग्नीद्धं च — —
आग्नीद्धमित्याग्नि — इद्धं > — — — —	च मे > — —
मे हविर्द्धानं > — — — —	हविर्द्धानं च — —
हविर्द्धानमिति हविः — धानं > — — — —	च मे > — —
मे गृहाः — —	गृहाश्च —

शिव स्तुति

च मे > — —	मे सदः —
सदश्च —	च मे > — —
मे पुरोडाशाः > — —	पुरोडाशाश्च — —
च मे > — —	मे पचताः — —
पचताश्च — —	च मे > — —
मेऽवभृथः — —	अवभृथश्च — —
अवभृथ इत्यव – भृथः — — —	च मे > — —
मे स्वगाकारः — — —	स्वगाकारश्च — — —
स्वगाकार इति स्वगा – कारः — — —	च मे > — —
म इति मे —	

17.9 श्री चमक क्रमः – नवमः अनुवाकः

अग्निश्च —	च मे > — —
मे घर्मः — —	घर्मश्च —
च मे > — —	मेऽर्कः —
अर्कश्च —	च मे > — —
मे सूर्यः —	सूर्यश्च —
च मे > — —	मे प्राणः — —

शिव स्तुति

प्रा॒णश्च॑ —	प्रा॒ण इति॑ प्र – अ॒नः — —
च मे॑ > — —	मेऽश्व॑मे॒धः — —
अश्व॑मे॒धश्च॑ — —	अश्व॑मे॒ध इत्य॑श्च – मे॒धः — — —
च मे॑ > — —	मे पृ॒थि॒वी — —
पृ॒थि॒वी च॑ — —	च मे॑ > — —
मेऽदि॑तिः	अदि॑तिश्च
च मे॑ > — —	मे दि॑तिः —
दि॑तिश्च	च मे॑ > — —
मे द्यौः॑ —	द्यौश्च॑
च मे॑ > — —	मे श॑क्वरीः
श॑क्वरीरङ्गु॒लयः॑ —	अङ्गु॒लयो दि॑शः — —
दि॑शश्च	च मे॑ > — —
मे य॒ज्ञेन॑ — —	य॒ज्ञेन॑ कल्पन्तां
कल्प॑न्तामृक् — — —	ऋक्च॑
च मे॑ > — —	मे सा॑म
सा॑म च	च मे॑ > — —
मे स्तो॑मः —	स्तो॑मश्च

शिव स्तुति

च मे > — —	मे यजुः —
यजुश्च —	च मे > — —
मे दीक्षा — —	दीक्षा च —
च मे > — —	मे तपः —
तपश्च —	च मे > — —
म ऋतुः — —	ऋतुश्च —
च मे > — —	मे व्रतं — —
व्रतं च —	च मे > — —
मेऽहोरात्रयोः > — —	अहोरात्रयो वृष्ट्या — —
अहोरात्रयोरित्यहः – रात्रयोः > — — — —	वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे — —
बृहद्रथन्तरे च — — — —	बृहद्रथन्तरे इति बृहत् – रथन्तरे — — — —
च मे > — —	मे यज्ञेन — —
यज्ञेन कल्पेतां —	कल्पेतामिति कल्पेतां — —

17.10 श्री चमक क्रमः – दशमः अनुवाकः

गर्भाश्च —	च मे > — —
मे वत्साः — —	वत्साश्च —
च मे > — —	मे त्र्यविः —

शिव स्तुति

त्र्य॒वि॒श्व	त्र्य॒वि॒रि॒ति त्रि॒ – अ॒विः
च॒ मे॒ >	मे॒ त्र्य॒वी
त्र्य॒वी च॒	त्र्य॒वीति॒ त्रि॒ – अ॒वी
च॒ मे॒ >	मे॒ दि॒त्यवा॒ट्
दि॒त्यवा॒ट् च॒	दि॒त्यवा॒डिति॒ दि॒त्य – वा॒ट्
च॒ मे॒ >	मे॒ दि॒त्यौही
दि॒त्यौही च॒	च॒ मे॒ >
मे॒ पञ्चा॒विः	पञ्चा॒वि॒श्व
पञ्चा॒वि॒रि॒ति पञ्च॒ – अ॒विः	च॒ मे॒ >
मे॒ पञ्चा॒वी	पञ्चा॒वी च॒
पञ्चा॒वीति॒ पञ्च॒ – अ॒वी	च॒ मे॒ >
मे॒ त्रि॒व॒थ्सः	त्रि॒व॒थ्सश्च॒
त्रि॒व॒थ्स इति॒ त्रि॒ – व॒थ्सः	च॒ मे॒ >
मे॒ त्रि॒व॒थ्सा	त्रि॒व॒थ्सा च॒
त्रि॒व॒थ्सेति॒ त्रि॒ – व॒थ्सा	च॒ मे॒ >
मे॒ तुर्य॒वा॒ट्	तुर्य॒वा॒ट् च॒
तुर्य॒वा॒डिति॒ तुर्य॒ – वा॒ट्	च॒ मे॒ >

शिव स्तुति

मे॒ तु॒र्यौ॒ही॑ — — —	तु॒र्यौ॒ही॑ च॑ — —
च॒ मे॒ > — —	मे॒ प॒ष्ठ॒वात् — —
प॒ष्ठ॒वाच्च॑ —	प॒ष्ठ॒वादि॑ति प॒ष्ठ – वात्
च॒ मे॒ > — —	मे॒ प॒ष्ठौ॒ही॑ — — —
प॒ष्ठौ॒ही॑ च॑ — —	च॒ मे॒ > — —
म॒ उ॒क्षा — —	उ॒क्षा च॑ —
च॒ मे॒ > — —	मे॒ व॒शा — —
व॒शा च॑ —	च॒ मे॒ > — —
म॒ ऋ॒षभः॑ — —	ऋ॒षभश्च॑ —
च॒ मे॒ > — —	मे॒ वे॒हत् — —
वे॒हच्च॑ —	च॒ मे॒ > — —
मे॒ऽन॒ड्वान् — —	अ॒न॒ड्वान् च॑ — —
च॒ मे॒ > — —	मे॒ धे॒नुः — —
धे॒नुश्च॑ —	च॒ मे॒ > — —
म॒ आ॒युः —	आ॒यु॒र्य॒ज्ञेन॑ —
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑ —	क॒ल्पतां॑ प्रा॒णः — — —
प्रा॒णो य॒ज्ञेन॑ — —	प्रा॒ण इति॑ प्र – अ॒नः — —

शिव स्तुति

य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑	क॒ल्पता॑म॒पानः॑
अ॒पानो॑ य॒ज्ञेन॑	अ॒पान॑ इ॒त्यप॑ – अ॒नः॑
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑	क॒ल्पतां॑ व॒यानः॑
व॒यानो॑ य॒ज्ञेन॑	व॒यान॑ इति॑ वि – अ॒नः॑
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑	क॒ल्पतां॑ चक्षुः॑
चक्षु॑ र्य॒ज्ञेन॑	य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑
क॒ल्पता॑७ श्रोत्रं॑ >	श्रोत्रं॑ य॒ज्ञेन॑
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑	क॒ल्पतां॑ म॒नः॑
म॒नो य॒ज्ञेन॑	य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑
क॒ल्पतां॑ व॒क्	वा॒ग्य॒ज्ञेन॑
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑	क॒ल्पता॑मा॒त्मा
आ॒त्मा य॒ज्ञेन॑	य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑
क॒ल्पतां॑ य॒ज्ञः॑	य॒ज्ञो य॒ज्ञेन॑
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑	क॒ल्पता॑मि॒ति क॒ल्पतां॑

17.11 श्री चमक क्रमः – एकादशः अनुवाकः

एका॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ तिस्रः॑	तिस्रश्च॑

शिव स्तुति

च॒ मे॒ >	मे॒ पञ्च॑
पञ्च॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ सप्त॑	सप्त॑ च
च॒ मे॒ >	मे॒ नव॑
नव॑ च	च॒ मे॒ >
म॒ ए॒का॒द॒श॑	ए॒का॒द॒श॑ च
च॒ मे॒ >	मे॒ त्रयो॑दश
त्रयो॑दश च	त्रयो॑दशेति॒ त्रयः॑ – द॒श
च॒ मे॒ >	मे॒ पञ्च॑दश
पञ्च॑दश च	पञ्च॑दशेति॒ पञ्च॑ – द॒श
च॒ मे॒ >	मे॒ सप्त॑दश
सप्त॑दश च	सप्त॑दशेति॒ सप्त॑ – द॒श
च॒ मे॒ >	मे॒ नव॑दश
नव॑दश च	नव॑दशेति॒ नव॑ – द॒श
च॒ मे॒ >	म॒ एक॑विंशतिः
एक॑विंशतिश्च	एक॑विंशतिरित्येक॑ – विं॒शतिः॑
च॒ मे॒ >	मे॒ त्रयो॑विंशतिः

शिव स्तुति

त्रयो॒वि॒ंशतिश्च॑	त्रयो॒वि॒ंशति॑रिति॒ त्रयः॑ – वि॒ंशतिः॑
च॒ मे॒ >	मे॒ पञ्च॑वि॒ंशतिः॑
पञ्च॑वि॒ंशतिश्च॑	पञ्च॑वि॒ंशति॑रिति॒ पञ्च॑-वि॒ंशतिः॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सप्त॑वि॒ंशतिः॑
सप्त॑वि॒ंशतिश्च॑	सप्त॑वि॒ंशति॑रिति॒ सप्त॑-वि॒ंशतिः॑
च॒ मे॒ >	मे॒ नव॑वि॒ंशतिः॑
नव॑वि॒ंशतिश्च॑	नव॑वि॒ंशति॑रिति॒ नव॑ – वि॒ंशतिः॑
च॒ मे॒ >	म॒ एक॑त्रि॒ंशत्
एक॑त्रि॒ंशच्च॑	एक॑त्रि॒ंशदि॒त्येक॑ – त्रि॒ंशत्
च॒ मे॒ >	मे॒ त्रय॑स्त्रि॒ंशत्
त्रय॑स्त्रि॒ंशच्च॑	त्रय॑स्त्रि॒ंशदि॒ति त्रयः॑ – त्रि॒ंशत्
च॒ मे॒ >	मे॒ चत॑स्रः
चत॑स्रश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ ऽष्टौ॑	अ॒ष्टौ च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ द्वाद॑श
द्वाद॑श च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ षोड॑श	षोड॑श च॑

शिव स्तुति

च मे > — —	मे वि॒शतिः — — — —
वि॒शतिश्च — — — —	च मे > — —
मे चतुर्वि॒शतिः —	चतुर्वि॒शतिश्च —
चतुर्वि॒शतिरिति चतुः – वि॒शतिः — — — — —	च मे > — —
मेऽष्टावि॒शतिः —	अष्टावि॒शतिश्च —
अष्टावि॒शतिरित्यष्टा – वि॒शतिः — — — — —	च मे > — —
मे द्वात्रि॒शत् —	द्वात्रि॒शच्च —
च मे > — —	मे षट्त्रि॒शत् —
षट्त्रि॒शच्च —	षट्त्रि॒शदिति षट् – त्रि॒शत् — — — —
च मे > — —	मे चत्वारि॒शत् — — — —
चत्वारि॒शच्च — — — —	च मे > — —
मे चतुश्चत्वारि॒शत् —	चतुश्चत्वारि॒शच्च —
चतुश्चत्वारि॒शदिति चतुः – चत्वारि॒शत् — — — — —	च मे > — —
मेऽष्टाचत्वारि॒शत् —	अष्टाचत्वारि॒शच्च —
अष्टाचत्वारि॒शदित्यष्टा – चत्वारि॒शत् — — — — —	च मे > — —

शिव स्तुति

मे वाजः —	वाजश्च
च प्रसवः — —	प्रसवश्च — —
प्रसव इति प्र - सवः — —	चापिजः — —
अपिजश्च — —	अपिज इत्यपि - जः — —
च क्रतुः —	क्रतुश्च
च सुवः —	सुवश्च
च मूर्द्धा — —	मूर्द्धा च — —
च व्यश्जियः —	व्यश्जियश्च
व्यश्जिय इति वि - अश्जियः — —	चान्त्यायनः — —
आन्त्यायनश्च — —	चान्त्यः — —
अन्त्यश्च	च भौवनः — —
भौवनश्च — —	च भुवनः — —
भुवनश्च	चाधिपतिः
अधिपतिश्च	अधिपतिरित्यधि - पतिः — —
चेति च	

17.12 इडा देवहूः

इडा देवहूः	देवहूर्मनुः
देवहूरिति देव - हूः	मनुर्यज्ञनीः
यज्ञनी बृहस्पतिः	यज्ञनीरिति यज्ञ - नीः
बृहस्पति रुक्थामदानि	उक्थामदानि श॒सिषत्
उक्थामदानीत्युक्थ - मदानि	श॒सिषद्विश्वे >
विश्वे देवाः	देवास्सूक्तवाचः
सूक्तवाचः पृथिवि	सूक्तवाच इति सूक्त - वाचः
पृथिवि मातः	मातर्मा
मा मा >	मा हि॒सीः >
हि॒सीर्मधु	मधु मनिष्ये
मनिष्ये मधु	मधु जनिष्ये
जनिष्ये मधु	मधु वक्ष्यामि
वक्ष्यामि मधु	मधु वदिष्यामि
वदिष्यामि मधुमतीं	मधुमतीं देवेभ्यः
मधुमतीमिति मधु - मतीं >	देवेभ्यो वाचं >
वाचमुद्यासं	उद्यास॑ शुश्रूषेण्यां >

शिव स्तुति

शुश्रूषे॑ण्यां॑ म॒नुष्ये॑भ्यः	म॒नुष्ये॑भ्यस्तं
तं मा॑ >	मा॑ दे॒वाः
दे॒वा अव॑न्तु	अव॑न्तु शो॒भायै॑ >
शो॒भायै॑ पि॒तरः॑	पि॒तरोऽनु॑
अनु॑मदन्तु	मद॑न्त्विति॑ मदन्तु

18. एकोनसप्तत्यधिक शतसंख्याक होमं

There are total 169 Svahaakaara Homas to be performed by Rutviks/ Achaaryaas. For 1 to 166 svaahaakaara Homa Ahutis the "yajamaana" has to say the same "prati svaahaakaara mantra as

"आदित्यात्मने रुद्राय इदं न मम" after each of these Homa Ahutis.

"Yajamaana prati svaahaa kaaram" is different for Homa Ahuti numbers 167, 168 & 169 and those are given after the corresponding Mantras.

1st ANUVAKA

- नम॑स्ते रु॒द्र म॒न्यव॑ उ॒तो त इ॒षवे॑ नमः॑ ।
नम॑स्ते अस्तु॒ धन्व॑ने बा॒हुभ्या॑मु॒त ते नमः॑ स्वाहा॑ ॥
- या॒त इ॒षुश्शि॑व त॒मा शि॒वं ब॒भूव॑ ते॒ धनुः॑ ।
शि॒वा श॒रव्या॑या त॒व तया॑ नो रु॒द्र मृ॒ढय॑ स्वाहा॑ ॥
- या॒ ते रु॒द्र शि॒वा त॒नूर॑घो॒रा-ऽपा॑पकाशिनी ।
तया॑ नस्त॒नुवा॑ श॒न्तम॑या गि॒रिश॑न्ता-भि॒चाक॑शीहि स्वाहा॑ ॥

4. यामिषुं॑ गिरिशन्त॑-हस्ते॑ बिभर्ष्यस्तवे॑ ।
शिवां॑ गिरित्र॑ तां कुरु॑ माहि॑सीः पुरुषं॑ जगत् स्वाहा॑ ॥
5. शिवेन॑ वचसा॑त्वा गिरिशाच्छा॑ वदामसि॑ ।
यथा॑ नस्सर्व॑-मिज्जगदयक्ष॑ सुमना॑ असत् स्वाहा॑ ॥
6. अध्यवो॑-चदधिवक्ता॑ प्रथमो॑ दैव्यो॑ भिषक् ।
अही॑श्च सर्वान्॑ जंभयन्॑ सर्वाश्च॑ यातुधान्यः॑ स्वाहा॑ ॥
7. असौ॑ यस्त्रामो॑ अरुण॑ उत बभ्रुस्सुमंगलः॑ । ये चेमा॑ रुद्रा॑
अभितो॑ दिक्षु॑ श्रिता-स्सहस्रशो॑ ऽवैषा॑ हेड॑ ईमहे॑ स्वाहा॑ ॥
8. असौ॑ योऽवसर्पति॑ नीलग्रीवो॑ विलोहितः॑ ।
उतैनं॑ गोपा॑ अदृशन्नदृशन्॑ उतहार्यः॑ ।
उतैनं॑ विश्वा॑ भूतानि॑ स दृष्टो॑ मृडयाति॑ नः स्वाहा॑ ॥
9. नमो॑ अस्तु॑ नीलग्रीवाय॑ सहस्राक्षाय॑ मीढुषे॑ ।
अथो॑ ये अस्य॑ सत्वानो॑-ऽहन्तेभ्यो॑-ऽकरं॑ नमः॑ स्वाहा॑ ॥
10. प्रमुञ्च॑ धन्वनस्त्व॑-मुभयो॑-रर्णियोर्ज्या॑ ।
याश्च॑ ते हस्त॑ इषवः॑ परा॑ ता भगवो॑ वप स्वाहा॑ ॥
11. अवतत्य॑ धनुस्त्व॑ सहस्राक्ष॑ शतेषु॑दे ।
निशीर्य॑ शल्यानां॑ मुखा॑ शिवो॑ नस्सुमना॑ भव स्वाहा॑ ॥

12. वि॒ज्यं॑ ध॒नुः॑ क॒पर्दि॑नो वि॒शल्यो॑ बा॒णवा॑ꣳ उ॒त ।
अ॒ने॒शन्न॑श्ये॒षव॑ आ॒भुर॑स्य नि॒षंग॑थिः स्वाहा ॥
13. या ते॑ हे॒ति॒र्मी॑दु॒ष्टम॑ ह॒स्ते॑ ब॒भूव॑ ते॒ धनुः॑ ।
तया॑ऽस्मा॒न् वि॒श्वत॑स्त्व-म॒यक्ष्म॑या परि॒भुज॑ स्वाहा ॥
14. नम॑स्ते अ॒स्त्वायु॑-धा॒याना॑त॒ताय॑ धृ॒ष्णवे॑ ।
उ॒भाभ्या॑मु॒त ते॒ नमो॑ बा॒हुभ्या॑ं तव॑ ध॒न्वने॑ स्वाहा ॥
15. परि॑ ते॒ धन्व॑नो हे॒तिर॑स्मा॒न् वृ॒णक्तु॑ वि॒श्वतः॑ ।
अथो॑ य इ॒षुधि॑स्त॒वारे॑ अ॒स्मन्नि॑धेहि तꣳ स्वाहा ॥

2nd ANUVAKA

16. नमो॑ हि॒रण्य॑बा॒हवे॑ से॒नान्ये॑ दि॒शां च॑ प॒तये॑ नमः॑ स्वाहा ॥
17. नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॑ हरि॒केश॑भ्यः प॒शूनां॑ प॒तये॑ नमः॑ स्वाहा ॥
18. नम॑स्स॒स्पिञ्ज॑राय त्वि॒षीम॑ते प॒थीनां॑ प॒तये॑ नमः॑ स्वाहा ॥
19. नमो॑ ब॒भ्लु॒शाय॑ वि॒व्याधि॑ने-ऽन्ना॒नां प॒तये॑ नमः॑ स्वाहा ॥
20. नमो॑ हरि॒केशा॑योप॒वीति॑ने पु॒ष्टानां॑ प॒तये॑ नमः॑ स्वाहा ॥
21. नमो॑ भ॒वस्य॑ हे॒त्यै ज॑ग॒तां प॒तये॑ नमो॑ नमः॑ स्वाहा ॥
22. नमो॑ रु॒द्रया॑त॒तावि॑ने क्षे॒त्राणां॑ प॒तये॑ नमः॑ स्वाहा ॥
23. नम॑स्सू॒ताया॑-ह॒न्त्याय॑ व॒नानां॑ प॒तये॑ नमः॑ स्वाहा ॥

24. नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमः स्वाहा ॥
 25. नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमः स्वाहा ॥
 26. नमो भुवन्तये वारिवस्कृता-यौषधीनां पतये नमः स्वाहा ॥
 27. नम उच्चैर्घोषाया-क्रन्तयते पत्तीनां पतये नमः स्वाहा ॥
 28. नमः कृत्स्नवीताय धावते सत्त्वनां पतये नमः स्वाहा ॥

3RD ANUVAKA

29. नमस्सहमनाय निव्याधीन आव्याधिनीनां पतये नमः स्वाहा ॥
 30. नमः कुकुभाय निषङ्गिणे स्तेनानां पतये नमः स्वाहा ॥
 31. नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमः स्वाहा ॥
 32. नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमः स्वाहा ॥
 33. नमो निचेरवे परिचरा-यारण्यानां पतये नमः स्वाहा ॥
 34. नमस्सृकाविभ्यो जिगांसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमः स्वाहा ॥
 35. नमोऽसिमद्भ्यो नक्तं चरद्भ्यः प्रकृन्तानां पतये नमः स्वाहा ॥
 36. नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमः स्वाहा ॥
 37. नम इषुमद्भ्यो धन्वाविभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 38. नम आतन्वानेभ्यः प्रतिधानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 39. नम आयच्छद्भ्यो विसृजद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

40. नमोऽस्यद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 41. नम आसीनेभ्य इश्यानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 42. नमस्स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 43. नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 44. नमस्सभाभ्य स्सभापतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 45. नमो अश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

4th ANUVAKA

46. नम आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 47. नम उगणाभ्य स्तृहतीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 48. नमो गृथ्सेभ्यो गृथ्सपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 49. नमो व्रातैभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 50. नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 51. नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 52. नमो महद्भ्यः क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 53. नमो रथिभ्योऽरथेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 54. नमो रथेभ्यो रथपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
 55. नमस्सेनाभ्य स्सेनानिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

56. नमः क्षत्तृभ्यस्सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
57. नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
58. नमः कुलालेभ्यः कमरिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
59. नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
60. नम इषुकृद्भ्यो धन्वकृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
61. नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
62. नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

5th ANUVAKA

63. नमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा ॥
64. नमश्शर्वाय च पशुपतये च स्वाहा ॥
65. नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ॥
66. नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा ॥
67. नमस्सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा ॥
68. नमो गिरिशाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा ॥
69. नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा ॥
70. नमो ह्रस्वाय च वामनाय च स्वाहा ॥
71. नमो बृहते च वर्षीयसे च स्वाहा ॥

72. नमो वृद्धाय च सम्वृध्वने च स्वाहा ॥
 73. नमो अग्रियाय च प्रथमाय च स्वाहा ॥
 74. नम आशवे चाजिराय च स्वाहा ॥
 75. नमश्शीघ्रियाय च शीभ्याय च स्वाहा ॥
 76. नम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च स्वाहा ॥
 77. नमः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च स्वाहा ॥

6th ANUVAKA

78. नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ॥
 79. नमः पूर्वजाय चापरजाय च स्वाहा ॥
 80. नमो मध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ॥
 81. नमो जघन्याय च बुध्नियाय च स्वाहा ॥
 82. नमस्सोभ्याय च प्रतिसर्याय च स्वाहा ॥
 83. नमो याम्याय च क्षेम्याय च स्वाहा ॥
 84. नम उर्वर्याय च खल्याय च स्वाहा ॥
 85. नमश्श्लोक्याय चावसान्याय च स्वाहा ॥
 86. नमो वन्याय च कक्ष्याय च स्वाहा ॥
 87. नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च स्वाहा ॥

88. नम आ॒शु॒षे॒णाय॑ चा॒शु॒रथा॑य च स्वाहा ॥
89. नम॑श्शू॒राय॑ चाव॒भिन्द॑ते च स्वाहा ॥
90. नमो॑ वर्मि॒णे च॑ वरू॒थिने॑ च स्वाहा ॥
91. नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च क॒वचि॑ने च स्वाहा ॥
92. नमः॑ श्रु॒ताय॑ च श्रु॒तसे॑नाय च स्वाहा ॥

7th ANUVAKA

93. नमो॑ दु॒न्दु॒भ्याय॑ चा॒हन॒न्याय॑ च स्वाहा ॥
94. नमो॑ धृ॒ष्णवे॑ च प्र॒मृ॒शाय॑ च स्वाहा ॥
95. नमो॑ दू॒ताय॑ च प्र॒हिता॑य च स्वाहा ॥
96. नमो॑ नि॒षङ्गि॑णे चे॒षुधि॑मते च स्वाहा ॥
97. नम॑स्ती॒क्ष्णेष॑वे चा॒युधि॑ने च स्वाहा ॥
98. नम॑स्स्वा॒युधा॑य च सु॒धन्व॑ने च स्वाहा ॥
99. नम॑स्स्रु॒त्याय॑ च प॒थ्याय॑ च स्वाहा ॥
100. नमः॑ का॒त्याय॑ च नी॒प्याय॑ च स्वाहा ॥
101. नम॑स्सू॒द्याय॑ च सर॒स्याय॑ च स्वाहा ॥
102. नमो॑ ना॒द्याय॑ च वै॒शन्ता॑य च स्वाहा ॥
103. नमः॑ कू॒प्याय॑ चा॒वत्या॑य च स्वाहा ॥

104. नमो॑ वर्ष्पा॑य चावर्ष्पा॑य च स्वाहा॑ ॥
105. नमो॑ मे॒घ्या॑य च वि॒द्युत्या॑य च स्वाहा॑ ॥
106. नम॑ ई॒र्दि॒ध्या॑य चा॒त॒प्या॑य च स्वाहा॑ ॥
107. नमो॑ वा॒त्या॑य च रे॒ष्मि॒या॑य च स्वाहा॑ ॥
108. नमो॑ वा॒स्त॒व्या॑य च वा॒स्तु॒पा॑य च स्वाहा॑ ॥

8th ANUVAKA

109. नम॑स्सो॒मा॑य च रु॒द्रा॑य च स्वाहा॑ ॥
110. नम॑स्ता॒म्रा॑य चा॒रु॒णा॑य च स्वाहा॑ ॥
111. नम॑श्श॒ङ्गा॑य च प॒शु॒प॒त॒ये॑ च स्वाहा॑ ॥
112. नम॑ उ॒ग्रा॑य च भी॒मा॑य च स्वाहा॑ ॥
113. नमो॑ अ॒ग्रे॒व॒धा॑य च दू॒रे॒व॒धा॑य च स्वाहा॑ ॥
114. नमो॑ ह॒न्त्रे॑ च ह॒नी॒य॒से॑ च स्वाहा॑ ॥
115. नमो॑ वृ॒क्षे॒भ्यो॑ ह॒रि॒केशे॑भ्यः स्वाहा॑ ॥
116. नम॑स्तरा॒य स्वाहा॑ ॥
117. नम॑श्शं॒भवे॑ च म॒यो॒भवे॑ च स्वाहा॑ ॥
118. नम॑श्शं॒करा॑य च म॒य॒स्क॒रा॑य च स्वाहा॑ ॥
119. नम॑श्शि॒वा॑य च शि॒व॒त॒रा॑य च स्वाहा॑ ॥

120. नमस्ती॒र्थ्याय॑ च॒ कू॒ल्याय॑ च॒ स्वाहा॑ ॥
121. नमः॑ पा॒र्याय॑ चावा॒र्याय॑ च॒ स्वाहा॑ ॥
122. नमः॑ प्र॒तर॒णाय॑ चो॒त्तर॒णाय॑ च॒ स्वाहा॑ ॥
123. नम॑ आ॒ता॒र्याय॑ चा॒ला॒द्याय॑ च॒ स्वाहा॑ ॥
124. नम॑श्श॒ष्याय॑ च॒ फे॒न्याय॑ च॒ स्वाहा॑ ॥
125. नम॑स्सि॒क॒त्याय॑ च॒ प्र॒वा॒ह्याय॑ च॒ स्वाहा॑ ॥

9th ANUVAKA

126. नम॑ इ॒रि॒ण्याय॑ च॒ प्र॒प॒त्थ्याय॑ च॒ स्वाहा॑ ॥
127. नमः॑ कि॒ञ्शिलाय॑ च॒ क्षय॑णाय च॒ स्वाहा॑ ॥
128. नमः॑ क॒पर्दि॒ने च॑ पु॒ल॒स्तये॑ च॒ स्वाहा॑ ॥
129. नमो॑ गो॒ष्ठ्याय॑ च॒ गृ॒ह्याय॑ च॒ स्वाहा॑ ॥
130. नम॑स्त॒ल्प्याय॑ च॒ गे॒ह्याय॑ च॒ स्वाहा॑ ॥
131. नमः॑ का॒त्याय॑ च॒ ग॒ह्वरे॑ष्ठाय च॒ स्वाहा॑ ॥
132. नमो॑ हृद॒य्याय॑ च॒ नि॒वे॒ष्याय॑ च॒ स्वाहा॑ ॥
133. नमः॑ पा॒ञ्स॒व्याय॑ च॒ रज॑स्याय च॒ स्वाहा॑ ॥
134. नम॑श्शु॒ष्क्याय॑ च॒ हरि॑त्ययाय च॒ स्वाहा॑ ॥
135. नमो॑ लो॒प्याय॑ चो॒ल॒प्याय॑ च॒ स्वाहा॑ ॥

136. नम ऊ॒र्व्या॒य च॒ सू॒र्म्या॒य च॒ स्वाहा ॥
137. नमः॑ प॒र्ण्या॒य च॒ प॒र्ण्य॒श॒द्या॒य च॒ स्वाहा ॥
138. नमो॑ ऽप॒गु॒रमा॒णाय॑ चा॒भिघ्न॑ते च॒ स्वाहा ॥
139. नम आ॒क्खि॒दते॑ च॒ प्र॒क्खि॒दते॑ च॒ स्वाहा ॥
140. नमो॑ वः कि॒रि॒के॒भ्यो दे॒वाना॑ ॐ हृ॒दये॑भ्यः स्वाहा ॥
141. नमो॑ वि॒क्षी॒णके॑भ्यो दे॒वाना॑ ॐ हृ॒दये॑भ्यः स्वाहा ॥
142. नमो॑ वि॒चि॒न्व॒त्के॑भ्यो दे॒वाना॑ ॐ हृ॒दये॑भ्यः स्वाहा ॥
143. नम आ॒नि॒र्ह॒ते॒भ्यो दे॒वाना॑ ॐ हृ॒दये॑भ्यः स्वाहा ॥
144. नम आ॒मी॒व॒त्के॑भ्यो दे॒वाना॑ ॐ हृ॒दये॑भ्यः स्वाहा ॥

10th ANUVAKA

145. द्रा॒पे अ॒न्ध॒स॒स्प॒ते द॒रि॒द्र॒न्नी॒ल॒लो॒हित॑ । ए॒षां पु॒रु॒षा॒णा॒मे॒षां
प॒शूनां॑ मा भे॒र्मा॒ऽरो मो॑ ए॒षां कि॒ञ्च॒ना॒म॒मत् स्वाहा ॥
146. या ते रु॒द्र शि॒वा त॒नू॒श्शि॒वा वि॒श्वा॒हभे॑षजी ।
शि॒वा रु॒द्रस्य॑ भे॒षजी॑ तया नो मृ॒ड जी॒वसे॑ स्वाहा ॥
147. इ॒मा ॐ रु॒द्राय॑ तव॒से क॒प॒र्दि॒ने क्ष॒य॒द्वी॒राय॑ प्र॒भ॒रा॒महे॑ म॒तिं ।
यथा नः श॒म॒सद्-द्वि॒पदे॑ च॒तु॒ष्प॒दे वि॒श्वं पु॒ष्टं ग्रा॒मे
अ॒स्मि-न्न॑नातु॒र ॐ स्वाहा ॥

148. मृ॒डा नो॑ रु॒द्रो तनो॑ मयस्कृ॒धि क्षय॑द्वी॒राय॑ नम॒सा वि॒धेम ते॑ ।
यच्छ॒ञ्च योश्च॑ म॒नुराय॑जे पि॒ता तद॑श्याम॒ तव॑ रु॒द्र प्रणी॑तौ
॥
स्वाहा ॥

149. मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न उ॒क्षन्त॑मु॒त मा न॑ उ॒क्षितं॑ ।
मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र
री॒रिषः॑ स्वाहा ॥

150. मा न॑स्तो॒के तन॑ये मा न आयु॑षि मा नो गो॒षु मा नो॑ अ॒श्वेषु॑
री॒रिषः॑ । वी॒रान्मा॑नो रु॒द्र भा॑मि॒तो व॒धीर्ह॑विष्मन्तो नम॒सा
वि॒धेम ते॑ स्वाहा ॥

151. आ॒रात्ते॑ गो॒घ्न उ॒त पू॒रुष॑घ्ने क्षय॑द्वी॒राय॑ सु॒म्न-म॒स्मे ते॑ अ॒स्तु ।
र॒क्षा च॑ नो॒ अधि॑ च दे॒व ब्रू॑ह्म॒धा च॑ नः शर्म
यच्छ॒द्विर्बा॑र्हाः स्वाहा ॥

152. स्तु॒हि श्रु॑तं ग॒र्त्तस॑दं यु॒वानं॑ मृ॒गन्न॑ भी॒म-मु॑प॒हन्तु॑-मु॒ग्रं ।
मृ॒डा ज॑रि॒त्रे रु॒द्र स्त॑वा॒नो अ॒न्यन्ते॑ अ॒स्मन्नि॑व॒पन्तु॑ से॒नाः स्वाहा॑ ॥

153. परि॑णो रु॒द्रस्य॑ हे॒तिर्वृ॑णक्तु॒ परित्वे॑षस्य॒ दुर्म॑तिर॒घायोः॑ ।
अ॒व स्थि॑रा म॒घव॑द्भ्य-स्त॒नुष्व॑ मी॒ढ्वस्तो॑काय॒ तन॑याय
मृ॒डय॑ स्वाहा ॥

154. मी॒ढु॒ष्ट॒म॒ शि॒वत॒म॒ शि॒वो न॒स्सु॒मना॒ भव॑ । प॒रमे॒ वृ॒क्ष आ॒यु॒धन्नि॒धाय॑
कृ॒त्तिं वँ॒सान॑ आ॒चर॑ पि॒नाकं॑ बि॒भ्रदा॑ग॒हि स्वा॒हा ॥
155. वि॒कि॒रि॒द॒ वि॒लो॒हित॑ न॒मस्ते॑ अ॒स्तु भ॒गवः॑ ।
या॒स्ते स॒हस्र॑ँ हे॒तयो॑ऽन्य-म॒स्मन्नि॒वप॑न्तु ताः स्वा॒हा ॥
156. स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑धा बा॒हुवो॑स्त॒व हे॒तयः॑ ।
तासा॑मी॒शानो॑ भ॒गवः॑ प॒राची॑ना॒ मुखा॑ कृ॒धि स्वा॒हा ॥

11th ANUVAKA

157. स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑शो ये रु॒द्रा अ॒धि भू॒म्यां ।
तेषाँ॑ स॒हस्र॑योज॒ने ऽव॑ध॒न्वानि॑ त॒न्मसि॑ स्वा॒हा ॥
158. अ॒स्मिन्-म॒ह॒त्य॒र्ण॒वे-ऽन्त॑रि॒क्षे भ॒वा अ॒धि ।
तेषाँ॑ स॒हस्र॑योज॒ने ऽव॑ध॒न्वानि॑ त॒न्मसि॑ स्वा॒हा ॥
159. नी॒लग्री॑वाः शि॒ति॒कण्ठाः॑ श॒र्वा अ॒धः क्ष॑मा॒चराः॑ ।
तेषाँ॑ स॒हस्र॑योज॒ने ऽव॑ध॒न्वानि॑ त॒न्मसि॑ स्वा॒हा ॥
160. नी॒लग्री॑वा-शि॒ति॒कण्ठा॑ दि॒वँ रु॒द्रा उ॒पश्रि॑ताः ।
तेषाँ॑ स॒हस्र॑योज॒ने ऽव॑ध॒न्वानि॑ त॒न्मसि॑ स्वा॒हा ॥
161. ये वृ॒क्षेषु॑ स॒स्पि॒ञ्जरा॑ नी॒लग्री॑वा वि॒लोहि॑ताः ।
तेषाँ॑ स॒हस्र॑योज॒ने ऽव॑ध॒न्वानि॑ त॒न्मसि॑ स्वा॒हा ॥

162. ये भू॒ताना॑-मधि॒पतयो॑ वि॒शिखा॑सः क॒प॒र्दिनः॑ ।
 तेषां॑ सह॒स्रयो॑जने ऽव॒धन्वा॑नि तन्म॒सि स्वाहा॑ ॥
163. ये अ॒न्नेषु॑ वि॒विध्य॑न्ति पा॒त्रेषु॑ पि॒बतो॑ ज॒नान् ।
 तेषां॑ सह॒स्रयो॑जने ऽव॒धन्वा॑नि तन्म॒सि स्वाहा॑ ॥
164. ये प॒थां प॒थिर॑क्षय॒ ऐल॑बृ॒दा यव्यु॑धः ।
 तेषां॑ सह॒स्रयो॑जने ऽव॒धन्वा॑नि तन्म॒सि स्वाहा॑ ॥
165. ये ती॒र्थानि॑ प्र॒चर॑न्ति सृ॒काव॑न्तो निष॒ङ्गिणः॑ ।
 तेषां॑ सह॒स्रयो॑जने ऽव॒धन्वा॑नि तन्म॒सि स्वाहा॑ ॥
166. य ए॒ताव॑न्तश्च भू॒याँसश्च॑ दि॒शो रु॒द्रा वि॑त॒स्थिरे॑ ।
 तेषां॑ सह॒स्रयो॑जने ऽव॒धन्वा॑नि तन्म॒सि स्वाहा॑ ॥

167. नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये पृ॒थिव्यां॑ यै॒षाम॑न्नमिष॒व स्ते॒भ्यो द॑श प्रा॒चीर्द॑श
 दक्षि॒णा द॑शप्र॒तीची॑ द॒शोदी॑ची द॒शोर्ध्वा-स्ते॒भ्यो नम॑स्ते नो
 मृ॒डय॑न्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो द्वेष्टि॒ तं वो॑ जंभे॒ दधा॑मि स्वाहा ॥
 (पृथिवीद्भ्यो रुद्रेभ्य इदं न मम)

168. नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये॒न्तरि॑क्षे येषां॑ वा॒त इ॒षव॑ -स्ते॒भ्यो द॑श प्रा॒चीर्द॑श
 -दक्षि॒णा द॑शप्र॒तीची॑ द॒शोदी॑ची द॒शोर्ध्वा-स्ते॒भ्यो नम॑स्ते नो

मृ॒डयन्तु॑ ते॒ यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं॒ वाँ जं॑भे॒ दधा॑मि॒ स्वाहा॑ ॥

(अन्तरिक्षषड्भ्यो रुद्रेभ्य इदं न मम)

169. नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये दि॒वि येषां॑ व॒र्षमि॑षव॒ -स्तेभ्यो॑ द॒शप्रा॑ची॒र्दश॑-
दक्षि॑णा द॒शप्र॑तीची॒र्दशो॑दीची॒र्दशो॑र्ध्वा-स्तेभ्यो॑ नमस्ते॒ नो
मृ॒डयन्तु॑ ते॒ यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं॒ वाँ जं॑भे॒ दधा॑मि॒ स्वाहा॑ ॥

(दिविषड्भ्यो रुद्रेभ्य इदं न मम)

18.1 चमक होमः

For Chamak Homa Ahutis the "yajamaana" has to say the same
"prati svaahaakaara mantra as –

“अग्नाविष्णुभ्याम् इदम् न मम । ”

अग्नाविष्णू सजोषसेमा वर्द्धन्तु वां गिरः । द्युमनैर् वाजैभिरागतं ।

1. वाजश्च मे प्रसवश्च मे ---- शरीराणि च मे स्वाहाः ।
2. जैष्ठ्यं च म ----- सुमतिश्च मे स्वाहाः ।
3. शं च मे ----- सुदिनं मे स्वाहाः ।
4. ऊर्क्च मे ----- नीवाराश्च मे स्वाहाः ।
5. अश्मा च मे ----- गतिश्च मे स्वाहाः ।
6. अग्निश्च म इन्द्रश्च मे ---- प्रजापतिश्च म इन्द्रश्च मे स्वाहाः ।
7. अंशुश्च मे ----- हारियोजनश्च मे स्वाहाः ।
8. इक्षश्च मे ----- स्वगाकारश्च मे स्वाहाः ।
9. अग्निश्च मे घर्मश्च मे ---- यज्ञेन कल्पेतां स्वाहाः ।
10. गभाश्च मे ----- यज्ञो यज्ञेन कल्पतां स्वाहाः ।
11. एका च मे ----- भुवनश्चाधिपतिश्च स्वाहाः ।

Chamaka Homam is followed by "vasoordhaaraa", "poornahuti.
Then Chartur- Veda paarayanam, which may include ghanam,
geetham, padyam, gadyam etc .

The Section 19.1 gives the uttaraanga Puja that is performed to the
Kalasha/Kumbha before udvaapanam.

This is detailed in Rudra Ekadasini and Maharudram.

19. उत्तराङ्ग पूजा

19.1 कलश उद्वापनं

नि॒ध॒न॒प॒त॒ये॒ नमः॑	नि॒ध॒न॒प॒ता॒न्ति॒का॒य॒ नमः॑ ।
ऊ॒र्ध्वा॒य॒ नमः॑	ऊ॒र्ध्व॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑
हि॒र॒ण्म॒या॒य॒ नमः॑	हि॒र॒ण्य॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑
सु॒व॒र्णा॒य॒ नमः॑	सु॒व॒र्ण॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑
दि॒व्या॒य॒ नमः॑	दि॒व्य॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑
भ॒वा॒य॒ नमः॑	भ॒व॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑
श॒र्वा॒य॒ नमः॑	श॒र्व॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑
शि॒वा॒य॒ नमः॑	शि॒व॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑
ज्व॒ला॒य॒ नमः॑	ज्व॒ल॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑

शिव स्तुति

आत्माय नमः

आत्मलिङ्गाय नमः

परमाय नमः

परमलिङ्गाय नमः

ए॒तत्सोम॑स्य॒ सूर्य॑स्य॒ सर्व॑लिङ्गं॒ स्थाप॑यति॒ पाणि॑मन्त्रं॒ पवि॑त्रं ।

सद्यो॑ जा॒तं प्र॑पद्यामि॒ सद्यो॑ जा॒ताय॑ वै नमो॑ नमः॑ ।

भवे॑ भवे॑ नाति॑भवे॒ भव॑स्व मां । भवो॑द्भवाय॒ नमः॑ ॥

वा॒मदे॑वाय॒ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॑ नमो॑ रु॒द्राय॑ नमः॑ का॒लाय॑ नमः॑

क॒लवि॑कर॒णाय॑ नमो॑ ब॒लवि॑कर॒णाय॑ नमो॑ ब॒लाय॑ नमो॑ ब॒लप्र॑मथ॒नाय॑

नमः॑ स॒र्वभू॑तद॒मनाय॑ नमो॑ म॒नोन्म॑नाय॒ नमः॑ ।

अ॒घोरे॑भ्योऽथ॒घोरे॑भ्यो॒ घोर॑घोर॒तरे॑भ्यः ।

स॒र्वेभ्यः॑ स॒र्वश॑र्वे॒भ्यो नम॑स्ते अस्तु॒ रुद्र॑रूपेभ्यः ॥

तत्पु॑रुषाय॒ विद्महे॑ म॒हादे॑वाय॒ धीमहि॑ । तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॑चोदयात् ॥

ई॒शानः॑ स॒र्ववि॑द्याना-मीश्वरः॑ स॒र्वभू॑तानां॒

ब्र॒ह्माधि॑पति॒ ब्र॒ह्मणो॑ऽधिपति॒ ब्र॒ह्मा शि॒वो मे॑ अस्तु॒ सदा॑ शि॒वो ॥

नमो॑ हि॒रण्य॑बा॒हवे॑ हि॒रण्य॑वर्णा॒य हि॒रण्य॑रूपा॒य हि॒रण्य॑प॒तये॑ ऽंबिकाप॒तये॑

उ॒माप॑तये॒ पशु॑प॒तये॑ नमो॑ नमः॑ ॥

19.1.1 रुद्र एकदाशिनि / महा रुद्रं

नमः प्रा॒च्यै दि॒शेयाश्च॑ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये ता॒भ्यश्च॑ नमो,
 नमो दक्षि॑णायै दि॒शेयाश्च॑ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये ता॒भ्यश्च॑ नमो,
 नमः प्र॒तीच्यै॑ दि॒शेयाश्च॑ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये ता॒भ्यश्च॑ नमो,
 नम उ॒दीच्यै॑ दि॒शेयाश्च॑ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये ता॒भ्यश्च॑ नमो,
 नम ऊ॒र्ध्वायै॑ दि॒शेयाश्च॑ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये ता॒भ्यश्च॑ नमो,
 नमोऽध॑रायै दि॒शेयाश्च॑ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये ता॒भ्यश्च॑ नमो,
 नमोऽवा॑न्तरायै दि॒शेयाश्च॑ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये ता॒भ्यश्च॑ नमो,
 नमो गंगा॑ यमु॒नयो र्म॑द्ध्ये ये वस॑न्ति ते मे प्रस॑न्नात्मा-नश्चिरं
 जी॒वितं॑ वर्द्ध॑यन्ति ,
 नमो गंगा॑ यमु॒नयो र्मु॑निभ्यश्च॑ नमो नमो गंगा॑ यमु॒नयोर्
 मु॑निभ्यश्च॑ नमः ॥

शि॒वेन॑ मे स॒न्तिष्ठ॑स्व स्यो॒नेन॑ मे स॒न्तिष्ठ॑स्व सु॒भूतेन॑ मे
 स॒न्तिष्ठ॑स्व ब्र॒ह्मव॑र्च॒सेन॑ मे स॒न्तिष्ठ॑स्व य॒ज्ञस्य॑र्धि म॒नु स॒न्तिष्ठ॑
 स्वो॒प ते य॒ज्ञ नम॑ उप॒ ते नम॑ उप॒ ते नमः॑ ॥

19.1.2 धूपं

धूर॑सि धूर्व॑ धूर्व॑न्तं धूर्व॑तं यौ॑ऽस्मान् धूर्व॑ति तं धूर्व॑यं व॑यं
धूर्वा॑मस्त्वं दे॒वाना॑मसि स॒स्त्रित॑मं प॒प्रित॑मं जु॒ष्टत॑मं व॒हित॑मं
दे॒वहू॑तम-म॒हुत॑मसि ह॒विर्धा॑नं दृ॒ष्ट्वा ह॒स्व मा॒ह्वा मि॒त्रस्य॑ त्वा चक्षु॑षा
प्रेक्षे॑ मा भे॒र्मा सँ॑वि॒क्ता मा त्वा हि॑सिषं ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । धूपं आघ्रापयामि ।

19.1.3 दीपं

उद्दी॑प्यस्व जा॒तवे॑दोऽप॒घ्नन् नि॒र्ऋतिं॑ म॒म । प॒शुञ्च॑ म॒ह्यमा॑व॒ह जी॑वनं
च दि॒शो दि॒श । मा॒नो हि॑सी-ज्जा॒तवे॑दो गाम॑श्चं पु॒रुषं॑ जगत् ।
अ॒बिभ्र॑द॒ग्न आ॑ग॒हि श्रि॒या मा परि॑पातय ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

19.1.4 नैवेद्यं

ओं भूर्भु॑वस्सु॒वः । तथ्स॑वि॒तु व॑रि॒ण्यं भ॑र्गो दे॒वस्य॑ धीम॒हि ।
धि॒यो यो नः॑ प्र॒चोद॑यात् । दे॒व स॑वि॒तः प्र॑सु॒वः ।
स॒त्यं त्व॑र्त्तेन परिषिञ्चामि ।

अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहाः । ओं अपानाय स्वाहाः ।

ओं व्यानाय स्वाहाः । ओं उदानाय स्वाहाः ।

ओं समानाय स्वाहाः । ओं ब्रह्मणे स्वाहाः ।

मधु॒वा॒ता॒ ऋ॒ता॒य॒ते मधु॑क्षरन्ति सिन्ध॒वः ।

मा॒ध्वी॒र्नः स॒न्त्वोष॑धीः । मधु॒न॒क्त॒ मु॒तोष॑सि मधु॒म॒त् पार्थि॑व॒ञ् रजः॑ ।

मधु॒द्यौ॒रस्तु॑ नः पि॒ता । मधु॑मा॒न्नो व॒नस्प॑ति॒ र्मधु॑मा॒ञ् अस्तु॑ सूर्यः ।

मा॒ध्वी॒र्गावो॑ भवन्तु नः ॥ मधु॑ मधु॑ मधु॑ ॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

(**दिव्यान्नं, घृतगुळपायसं, नाळिकेरखण्डद्वयं, कदलीफलं ...)

महानैवेद्यं निवेदयामि ।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि ।

हस्तप्रक्षाळनं समर्पयामि । पादप्रक्षाळनं समर्पयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

19.1.5 तांबूलं

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदळैर्युतं ।

कर्पूरचूर्णं संयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यतां ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।
आचमनीयं समर्पयामि । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

19.1.6 पञ्चमुख दीपं

सप्र॑थ स॒भां मे॑ गोपाय । ये च स॒भ्याः स॒भा सदः॑ ।
तानिन्द्रि॑यावतः कुरु । सर्व॑मायु-रुपा॑सतां । अहे॑ बु॒ध्निय॑ मन्त्रं मे
गोपाय । यमृ॑षयस्त्रै-वि॒दा वि॒दुः । ऋचः॑ सामा॑नि यजू॑षि ।
सा हि श्रीर॑मृता स॒तां । or / and
आत्म॑न्ना-त्म॒न्नित्या-मन्त्र॑यत । तस्मै॑ पञ्च॒म॒ हूतः॑ प्रत्य॑शृणोत् ।
स पञ्च॑हूतो ऽभवत् । पञ्च॑हूतो हवै॑ नामै॒षः । तं वा॑ ए॒तं पञ्च॑हूत॒
सन्तं॑ । पञ्च॑होतेत्या चक्षते॑ परोक्षे॑ण ।
परोक्ष॑प्रिया इव॒ हि दे॒वाः ॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । अलङ्कार-पञ्चमुखदीपं
प्रदर्शयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

19.1.7 कर्पूरनीराजनं

सोमो॑ वा ए॒तस्य॑ रा॒ज्यमा॑दत्ते । यो राजा॑सन् रा॒ज्यो वा सोमे॑न
यज॑ते । दे॒व सु॒वामे॑तानि॒ हवि॑षि भवन्ति ।
ए॒ताव॑न्तो वै दे॒वाना॑ स॒वाः । त ए॒वास्मै॑ स॒वान् प्र॑यच्छन्ति ।

त ए॒नं पु॒नः सु॒वन्ते रा॒ज्याय॑ । दे॒वसू॑ रा॒जा भ॑वति ।

आ॒वाहि॑ताभ्यः सर्वा॒भ्यो दे॒वता॑भ्यो नमः । कर्पू॒रनी॑रा॒जनं॑ प्रदर्शयामि ।

कर्पू॒रनी॑रा॒जनान॑न्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

बृ॒ह॒त्साम॑ क्ष॒त्रभृ॑द् वृ॒द्धवृ॑ष्णियं त्रि॒ष्टुभौ॑ज-इ॒शुभि॑त-मु॒ग्रवी॑रं ।

इन्द्र॑स्तोमे॒न पञ्च॑द॒शेन॑ म॒ध्यमि॑दं वा॒तेन॑ स॒गरे॑ण रक्षा ।

रक्षां॑ धारयामि । ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

रा॒जाधि॑रा॒जाय॑ प्रस॒ह्य सा॒हिने॑ ॥ नमो॑ व॒यं वै॑श्र॒वणाय॑ कुर्महे ।

स मे॒ कामा॑न् काम॒कामा॑य॒ मह्यं॑ ॥ कामे॑श्व॒रो वै॑श्र॒वणो॑ द॒दातु॑ ।

कु॒बेरा॑य॒ वैश्र॒वणाय॑ । म॒हारा॑जाय॒ नमः॑ ।

सुव॑र्णपुष्पं समर्पयामि । पा॒रिजा॑त पुष्पं समर्पयामि ।

19.1.8 मन्त्र पुष्पं

योऽपां॑ पु॒ष्पं वे॑द । पु॒ष्पवान् प्र॒जावान् प॑शु॒मान् भ॑वति ।

च॒न्द्रमा॒ वा अ॒पां पु॒ष्पं ॥ पु॒ष्पवान् प्र॒जावान् प॑शु॒मान् भ॑वति ।

ओं तद्ब्र॑ह्म । ओं तद्वा॒युः । ओं तदा॒त्मा । ओं तत्स॒त्यं ।

ओं तत्सर्वं॑ । ओं तत्पु॒रोर्नमः॑ ।

अ॒न्तश्च॑रति॒ भू॒तेषु॑ गु॒हायां॑ वि॒श्वमूर्ति॑षु । त्वं य॑ज्ञस्त्वं व॑षट्कार
स्त्वमिन्द्र॑स्त्व॒ रुद्र॑स्त्वं वि॒ष्णुस्त्वं ब्र॑ह्मत्वं प्र॒जाप॑तिः ।
त्वं तदा॑प॒ आपो॑ ज्योती॒रसोऽमृतं॑ ब्र॒ह्म भू॑र्भुवस्सुव॒रो ।

न क॑र्मणा न प्र॒जया॑ धने॒न त्यागे॑नैके अमृत॑त्व-मा॒नशुः॑ ।
परे॑ण नाकं नि॒हितं॑ गु॒हायां॑ वि॒भ्राज॑देत-द्यतयो वि॒शन्ति॑ ।
वेदान्त॑ वि॒ज्ञान॑ सु॒निश्चितार्था॑-स्सन्यास॑ यो॒गाद्य॑तयः शु॒द्ध सत्त्वाः॑ ।
ते ब्र॑ह्मलो॒के तु॑ परा॒न्तकाले॑ परा॒मृता॑त् परिमुच्यन्ति॒ सर्वे॑ ।
द॒हं वि॑पापं परमै॒श्वभू॑तं यत्पु॒ण्डरी॑कं पु॒रम॑ध्यस॒स्थं ।
तत्रा॑पि द॒हं ग॑गनं वि॒शोक॑-स्तस्मिन् यदन्त॑स्त-दुपा॒सित॑व्यं ।
यो वेदा॑दौ स्वरः प्रो॒क्तो वेदान्ते॑ च प्र॒तिष्ठि॑तः । तस्य॑ प्र॒कृति॑-
लीन॑स्य यः पर॑स्स म॒हेश्वरः॑ । वेदो॑क्त मन्त्रपु॒ष्पं स॑मर्पयामि ।

19.1.9 चतुर्वेद पारायणं

ओं । अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृ॑त्विजं । हो॒तारं॑ रत्न॒ धात॑मं ।
ओं । इ॒षेत्वो॑र्जे॒त्वा वा॒यवः॑ स्थो पा॒यवः॑ स्थ दे॒वो व॑स्सवि॒ता प्रा॑र्पयतु
श्रेष्ठ॑तमा॒य क॑र्मणे ।

ओं । अ॒ग्न आ॒याहि॑ वी॒तये॑ गृ॒णानो॑ ह॒व्य दा॒तये॑ ।
नि॒होता॑ स॒त्सि ब॒र्हिषि॑ ।

ओं । श॒न्नो दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑ ॥ शं॒यो॒र॒भि॒स्र॑वन्तु नः ॥

19.1.10 आपस्तंब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः

अथातो दर्शपूर्णमासौ व्याख्यास्यामः । प्रातरग्निहोत्रं हुत्वा ।
अन्यमावहनीयं प्रणीय । अग्नीनन्वा दधाति । न गतश्रियोऽन्यमग्निं
प्रणयति । (श्रौत सूत्र वाक्यः)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतां ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे । (पुराण वाक्यः)

19.2 कुंभ /कलश उद्घापनं

19.2.1 कलश उद्घापन मन्त्राः

नि॒घृष्वै र॒स॒मा॒यु॒तैः॑ । का॒लै ह॑रित्व॒मा॒प॒त्रैः॑ । इ॒न्द्रा॒या॒हि स॒ह॒स्र॑युक् ।
अ॒ग्नि वि॒भ्रा॒ष्टि व॒सनः॑ । वा॒युश्च॑त॒सि॒क द्रु॒कः॑ ।
स॒म्॒व॒त्स॒रो वि॒षू॒वर्णैः॑ ॥ नि॒त्या॒स्ते ऽनु॑च॒रा॒स्तव॑ ।
सु॒ब्र॒ह्म॒ण्यो॑ ॐ सु॒ब्र॒ह्म॒ण्यो॑ ॐ सु॒ब्र॒ह्म॒ण्यो॑ ।

ओं तत् पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि ।

तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ॥

धाताः विधाता परमोत सन्दृक् प्रजापतिः परमेष्ठी विराजा ॥

स्तोमाश्चन्दाँसि निविदोम आहुरेतस्मै राष्ट्र-मभिसन्नमाम ।

अभ्यावर्तध्व-मुपमेत साकमयँ शास्ता-ऽधिपतिर्वो अस्तु ।

अस्य विज्ञान-मनुसँ रभध्वमिमं पश्चादनुजीवाथ सर्वे ॥

ओं भूतनाथाय विद्महे भवपुत्राय धीमहि । तन्नः शास्ता प्रचोदयात् ॥

नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि

तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । येऽदो रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ।

येषामप्सु सदः कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।

या इषवो यातु धानानां ये वा वनस्पतीँरनु ।

येवाऽवटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।

ओं सर्पराजाय विद्महे सहस्रफणाय धीमहि ।

तन्नो अनन्तः प्रचोदयात् ॥

ओं नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः ।

नमो॑ वा॒चे नमो॑ वा॒चस्प॑तये नमो॑ वि॒ष्णवे॑ बृ॒हते॑ करोमि ।
(त्रिवारं जपेत्)

वरु॑णाय नमः । सक॑लाराधनैः स्वर्चि॑तं ।
तत्त्वा॑ यामि ब्र॒ह्मणा॑ वन्द॑मानस्तदा शास्ते॑ यज॑मानो हवि॑र्भिः ।
अहे॑डमानो वरु॑णेह बो॒ध्युरु॑शं स॒ मा न॒ आयुः॑ प्रमो॑षीः ॥
ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो । सम॑स्तोपचारान् समर्प॑यामि ।

अस्मात् कुंभात् आवाहितं सकल-तीर्थाधिपतिं वरुणं यथास्थानं
प्रतिष्ठापयामि । (शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च) ।

परि॑ ते धन्व॑नो हेति॒रस्मान्-वृ॑णक्तु वि॒श्वतः॑ ।
अथो॒ य इषु॑धिस्तवारे अस्मन्निधे॑हितं ॥
ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ । मनो॑न्मनाय॒ नमः॑ ।
सम॑स्तोपचारान् समर्प॑यामि ।

त्र्य॑ंबकं यं॒जामहे॑ सुगन्धिं पु॒ष्टिव॑र्धनं ।
उ॒र्वारु॑कमि॒व ब॑न्धनान् मृत्यो॒र्मुक्षी॑य मास्मृता॑त् ॥

गौरी॑ मि॒माय॑ सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदि सा चतु॑ष्पदी ।

अ॒ष्टा॒पदी॒ नव॑पदी॒ ब॒भू॒वुषी॑ स॒हस्राक्ष॑रा प॒रमे॑ व्योमन् ।

नम॑स्ते रु॒द्र म॒न्यव॑ उ॒तोत॑ इ॒षवे॑ नमः॑ ।

नम॑स्ते अस्तु॒ धन्व॑ने बा॒हुभ्या॑मु॒त ते॒ नमः॑ । ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ ।
सद्यो॑जा॒तं प्र॑पद्यामि ।

ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो । अस्मिन् कुं॒भे/कल॑शे महादेवं , शिवं , रुद्रं ,
शङ्करं, नीललोहितं, ईशानं , विजयं, भीमं, देवदेवं , भवोद्भवं,
आदित्यात्मकरुद्रं यथास्तानं प्रतिष्ठापयामि ।

शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च ।

19.3 अभिषेकं

The general order of reciting Sukhtams during abhishekam to the idols/deities are given below. However, the order may vary depending on time availability)

1. Purusha Sukhtam
2. Uttara Naaraayanam
3. Maha Naaraayanam
4. Durga Sukhtham
5. Sri Sukhtham
6. Medha Sukhtam
7. Navagraha Sukhtam
8. Ayushya Sukhtam
9. Shanti Panchakam

19.4 अलङ्कारं, अर्चना, पूजा

This section gives the final puja performed to Deities/idols for which Abhishekam has been performed. These deities are cleaned, decorated and then the puja shall be performed. The Ashtothra Pooja/Archana shall be performed for these idols/deities .

The count of the archanaas performed will vary depending on the function and the paucity of time. It is beneficial to perform Rudra krama archana during Pradhosha Puja.

19.4.1 बिल्वाष्टकं

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुषं ।

त्रिजन्मपाप संहारं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 1

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च-ह्यछिद्रैः कोमलैः शुभैः ।

शिवपूजां करिष्यामि एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 2

अखण्ड बिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे ।

शुध्यन्ति सर्व पापेभ्यो एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 3

साळग्राम शिलामेकां विप्राणां जातु चापर्येत् ।

सोमयज्ञ्य महापुण्यं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 4

साळग्रामेषु विप्रेषु तटाके वनकूपयोः ।

यज्ञ कोटि सहस्राणां एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 5

दन्ति कोटि सहस्राणि वाजपेय शतानि च
कोटि कन्या महादानं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 6

लक्ष्म्याः स्तनुत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियं ।
बिल्व वृक्षं प्रयच्छामि एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 7

दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पाप नाशनं ।
अघोर पाप संहारं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 8

काशीक्षेत्र निवासं च कालभैरव दर्शनं ।
प्रयाग माधवं दृष्ट्वा एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 9

तुळसि बिल्व निर्गुण्डि जंबीरा मलकानि च ।
पञ्चबिल्व मितिप्रोक्तं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 10

बिल्वाष्टकमिदै पुण्ये यः पठेच्छिव सन्निधौ ।
सर्वपाप विनिर्मुक्तः शिवलोक-मवाप्नुयात् ॥ 11

19.4.2 धूपं

धूर॑सि धूर्व॑ धूर्व॑न्तं धूर्व॑तं यो॑ऽस्मान् धूर्व॑ति तं धूर्व॑यं व॑यं
धूर्वा॑मस्त्वं दे॒वाना॑मसि स॒स्त्रित॑मं प॒प्रित॑मं जु॒ष्टत॑मं वह्नि॑तमं दे॒वहू॑तम-

म॒हु॒त॒म॒सि॒ ह॒वि॒र्धा॒नं॒ दृ॒ह॒स्व॒ मा॒ह्वा॒ मि॒त्र॒स्य॒ त्वा॒ च॒क्षु॒षा॒ प्रे॒क्षे॒ मा॒
भे॒र्मा॒ स॒म्वि॒क्ता॒ मा॒ त्वा॒ हि॒सि॒षं॒ ।

आ॒वा॒हि॒ता॒भ्यः॒ सर्वा॒भ्यो॒ दे॒वता॒भ्यो॒ नमः॑ । धूपं॑ आ॒घ्रा॒प॒यामि॑ ।

19.4.3 दीपं

उ॒द्दी॒प्य॒स्व॒ जा॒त॒वे॒दोऽप॒घ्नन्॑ नि॒र्ऋ॒तिं॑ म॒म॒ । प॒शु॒श्च॒ म॒ह्य॒मा॒व॒ह॒ जी॒व॒नं॑
च॒ दि॒शो॑ दि॒श॒ । मा॒नो॑ हि॒सी॒-जा॒त॒वे॒दो॒ गा॒म॒श्च॒ पु॒रु॒षं॑ ज॒गत्॑ ।
अ॒बि॒भ्र॒द॒ग्न॒ आ॒ग॒हि॒ श्रि॒या॒ मा॒ परि॑पा॒तय॑ ।

आ॒वा॒हि॒ता॒भ्यः॒ सर्वा॒भ्यो॒ दे॒वता॒भ्यो॒ नमः॑ । दीपं॑ दर्श॒यामि॑ ।

धूप॑दी॒पा॒न॒न्तरं॑ आ॒च॒म॒नी॒यं॑ स॒मर्प॑यामि ।

19.4.4 नैवेद्यं

ओं॑ भूर्भु॒व॒स्सु॒वः॑ । तथ्स॒वि॒तु॒र्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धी॒महि॑ ।
धि॒यो॒ यो॒ नः॑ प्र॒चो॒द॒यात्॑ । दे॒व॒ स॒वि॒तः॑ प्र॒सु॒वः॑ ।
स॒त्यं॑ त्व॒र्त्ते॒न॑ परि॒षि॒ञ्चामि॑ । अ॒मृतं॑ भवतु । अ॒मृतो॑प॒स्तर॑णम॒सि॒ ।
ओं॑ प्रा॒णाय॑ स्वा॒हाः । ओं॑ अ॒पा॒नाय॑ स्वा॒हाः । ओं॑ व्या॒नाय॑ स्वा॒हाः ।
ओं॑ उ॒दा॒नाय॑ स्वा॒हाः । ओं॑ स॒मा॒नाय॑ स्वा॒हाः । ओं॑ ब्र॒ह्म॒णे॑ स्वा॒हाः ।
म॒धु॒वा॒ता॒ ऋ॒ता॒य॒ते॒ म॒धु॒क्ष॒र॒न्ति॑ सि॒न्ध॒वः॑ । मा॒द्ध्वी॑ नः॒ स॒न्त्वो॑ष॒धीः॑ ।

मधु॑नक्त॑ मु॒तोष॑सि॒ मधु॑मत् पार्थि॑वꣳ रजः॑ । मधु॑द्यौरस्तु नः पि॒ता ।
मधु॑मान्नो॒ वन॑स्पति॒ र्मधु॑मा अस्तु॒ सूर्यः॑ । माध्वी॒र्गावो॑ भवन्तु नः ॥
मधु॑ मधु॑ मधु॑ ॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

(**दिव्यान्नं, घृतगुळपायसं, नाळिकेरखण्डद्वयं, कदलीफलं**)

महानैवेद्यं निवेदयामि ।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि ।

हस्तप्रक्षाळनं समर्पयामि । पादप्रक्षाळनं समर्पयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

19.4.5 तांबूलं

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदळैर्युतं । कर्पूरचूर्णं संयुक्तं तांबूलं

प्रतिगृह्यतां । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

कर्पूर तांबूलं निवेदयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

19.4.6 पञ्चमुख दीपं

सप्र॑थ सभां मे गोपा॑य । ये च स॒भ्याः सभा॑ सदः॑ ।

तानिन्द्रि॑यावतः कुरु॑ । सर्व॒मायु॑-रुपा॒सतां॑ ।

अहे॑ बु॒ध्निय॑ मन्त्रं॑ मे गोपाय॑ । यमृ॑षयस्त्रै॑-वि॒दा वि॒दुः ।

ऋचः॑ सा॒मानि॑ यजू॑षि । सा हि श्रीर॑मृता॑ स॒तां । or/and

आ॒त्मन्ना॑-त्म॒न्नित्या॑-मन्त्र॑यत । तस्मै॑ पञ्च॑म॒ हूतः॑ प्रत्य॑शृणोत् ।

स पञ्च॑हूतो ऽभवत् । पञ्च॑हूतो ह॒वै ना॒मैषः॑ ।

तं वा॑ ए॒तं पञ्च॑हूत॒ सन्तं॑ ॥ पञ्च॑हो॒तेत्या॑ चक्षते॑ प॒रोक्षे॑ण ।

प॒रोक्ष॑प्रिया॒ इव॑ हि दे॒वाः ॥

आवा॑हिताभ्यः सर्वा॑भ्यो दे॒वता॑भ्यो नमः ।

अल॑ङ्कार-पञ्च॑मुखदीपं प्रदर्श॑यामि । आच॑मनीयं समर्प॑यामि ।

19.4.7 कर्पूर॑नीराजनं

सोमो॑ वा ए॒तस्य॑ रा॒ज्यमा॑दत्ते । यो रा॒जासन्॑ रा॒ज्यो वा॑ सोमै॑न॒ यज॑ते ।

दे॒व सु॒वामे॑तानि॒ हवि॑षि॒ भव॑न्ति । ए॒ताव॑न्तो॒ वै दे॒वाना॑ स॒वाः ।

त ए॒वास्मै॑ स॒वान् प्र॑यच्छन्ति । त ए॒नं पुनः॑ सु॒वन्ते॑ रा॒ज्याय॑ ।

दे॒वसू॑ रा॒जा भ॑वति ।

आवा॑हिताभ्यः सर्वा॑भ्यो दे॒वता॑भ्यो नमः । कर्पूर॑नीराजनं प्रदर्श॑यामि ।

कर्पूर॑नीराजनानन्तरं आच॑मनीयं समर्प॑यामि ।

बृ॒ह॒थ्साम॑ क्ष॒त्रभृ॑द् वृ॒द्धवृ॑ष्णियं त्रि॒ष्टुभौ॑ज-शु॒भित॑-मु॒ग्रवी॑रं ।

इन्द्र॑स्तोमे॑न पञ्चद॑शेन॑ मध्य॑मिदं॑ वा॒तेन॑ स॒गरे॑ण रक्षा ।

रक्षां॑ धार॒यामि॑ । ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

राजा॑धिराजा॑य प्रस॒ह्य साहि॑ने॑ । नमो॑ वयं॑ वैश्र॒वणा॑य कुर्महे ।

स मे॑ कामा॒न् काम॑कामा॒य मह्यं॑ । कामे॑श्वरो॒ वैश्र॒वणो॑ ददातु ।

कु॒बेरा॑य वैश्र॒वणा॑य । म॒हारा॑जाय॒ नमः॑ ।

सुवर्ण॑पुष्पं॒ समर्प॑यामि । पारिजा॑त पुष्पं॒ समर्प॑यामि ।

19.4.8 मन्त्र पुष्पं

योऽपां॑ पुष्पं॒ वेद॑ । पुष्प॑वान् प्रजा॒वान् पशु॑मान् भवति ।

चन्द्र॑मा वा अ॒पां पुष्पं॑ । पुष्प॑वान् प्रजा॒वान् पशु॑मान् भवति ।

य ए॒वं वैद॑ ॥ 1

योऽपा॑माय॒तनं॑ वैद॑ । आय॑तन॒वान् भव॑ति । अ॒ग्निर्वा अ॒पा॒माय॑तनं ।

आय॑तन॒वान् भव॑ति । योऽग्ने॑राय॒तनं॑ वैद॑ । आय॑तन॒वान् भव॑ति ।

आपो॑ वा अ॒ग्नेरा॑या॒तनं॑ । आय॑तन॒वान् भव॑ति । य ए॒वं वैद॑ ॥ 2

योऽपा॑माय॒तनं॑ वैद॑ । आय॑तन॒वान् भव॑ति । वा॒युर्वा अ॒पा॒माय॑तनं ।

आय॑तन॒वान् भव॑ति । यो वा॒योरा॑य॒तनं॑ वैद॑ । आय॑तन॒वान् भव॑ति ।

आपो॑ वै वा॒योरा॑या॒तनं॑ । आय॑तन॒वान् भव॑ति । य ए॒वं वैद॑ ॥ 3

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । असौ वै तपन्नपा-मायतनं ।
 आयतनवान् भवति । योऽमुष्य-तपत आयतनं वेद ।
 आयतनवान् भवति । आपोवा अमुष्य-तपत आयतनं ।
 आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ 4

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । चन्द्रमा वा अपामायतनं ।
 आयतनवान् भवति । यश्चन्द्रमस आयतनं वेद । आयतनवान् भवति ।
 आपो वै चन्द्रमस आयतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ 5

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । नक्षत्राणि वा अपामायतनं ।
 आयतनवान् भवति । यो नक्षत्राणा-मायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।
 आपो वै नक्षत्राणा-मायतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ 6

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । पर्जन्यो वा अपामायतनं ।
 आयतनवान् भवति । यः पर्जन्य-स्यायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।
 आपो वै पर्जन्य-स्यायतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ 7

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । सँवथ्सरो वा अपामायतनं ।
 आयतनवान् भवति । यस्सँवथ्सर-स्यायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।
 आपो वै सँवथ्सर-स्यायतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ 8
 योऽप्सुनावं प्रतिष्ठितां वेद । प्रत्येवतिष्ठति ॥ 9

ओं तद्ब्रह्म । ओं तद्वायुः । ओं तदात्मा । ओं तत्सत्यं ।
 ओं तत्सर्वं । ओं तत्पुरो नमः ।
 अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु । त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार
 स्त्वमिन्द्रस्त्वं रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्मत्वं प्रजापतिः ।
 त्वं तदाप आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरो ।

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्व-मानशुः ।
 परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजदेत-द्यतयो विशन्ति । 1

वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्था-स्सन्यास योगाद्यतयः शुद्ध सत्त्वाः ।
 ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे । 2

दहं विपापं परमेश्वभूतं यत्पुण्डरीकं पुरमध्यसंस्थं ।
 तत्रापि दहं गगनं विशोक-स्तस्मिन् यदन्तस्त-दुपासितव्यं । 3

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः ।

तस्य प्रकृति-लीनस्य यः परस्स महेश्वरः । 4

वेदोक्त मन्त्रपुष्पं समर्पयामि । सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि ।

पारिजात पुष्पं समर्पयामि ।

19.4.9 प्रदक्षिण नमस्कार :

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥ 1

प्रकृष्ट पाप नाशाय प्रकृष्ट फलसिद्धये

प्रदक्षिणं करोमीश प्रसीद परमेश्वर ॥ 2

गजाननं भूतगणादि सेवितं । कपित्थ जंबू फलसार-भक्षितं ।

उमासुतं शोकविनाश कारणं । नमामि विघ्नेश्वर पाद पङ्कजं ॥ 3

अगजानन पद्मार्कं गजानन महर्निशं ।

अनेकदं तं भक्तानां एकदन्त-मुपास्महे । 4

हालास्य नाथाय महेश्वराय । हालाहालालं-कृतकन्धराय ।

मीनेक्षणायाः पतये शिवाय । नमो नमः सुन्दर-ताण्डवाय । 5

कृपासमुद्रं सुमुखं त्रिनेत्रं । जटाधरं पार्वती वामभागं ।

सदाशिवं रुद्र-मनन्तरूपं । चिदंबरेशं हृदि भावयामि । 6

नमश्शिवाभ्यां नवयौवनाभ्यां । परस्पराश्लिष्टवपूर्धराभ्यां ।

नागेन्द्र-कन्या-वृषकेतनाभ्यां । नमो नमः शङ्कर-पार्वतीभ्यां । 7

नमश्शिवाय सांबवाय सगणाय ससूनवे ,

सनन्दिने सगंगाय सवृषाय नमो नमः । 8

महादेवं महेशानं महेश्वर-मुमापतिं ,

महासेनगुरुं वन्दे महाभय निवारणं । 9

ऋण-रोगादि-दारिद्र्य पापक्षुदपमृत्यवः,

भयक्रोध मनःक्लेशाः नश्यन्तु मम सर्वदा । 10

सर्व मंगळ मांगल्ये शिवे सर्वात्थ साधिके ।

शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते । 11

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।

विश्वाकारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगं ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृद्ध्यान-गम्यं ।

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथं ॥ 12

भानो भास्कर मार्ताण्ड चण्डरश्मे दिवाकर ,
आयुरा-रोग्य-मैश्वर्यं श्रियं पुत्रांश्च देहि मे । 13

अनायासेन सायुज्यं विना दैन्येन जीवनं,
देहि मे कृपया शंभो त्वयि भक्तिमचञ्चलां । 14

बालोऽहं बालबुधिश्च बालचन्द्रार्ध शेखर,
नाहं जाने तवाच्चां वै क्षम्यतां करुणानिधे । 15

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष महेश्वर 16

अनन्तकोटि प्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि ।

19.4.10 उपचारं

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमो नमः ।

- | | |
|-------------------|------------------------|
| 1. छत्रं धारयामि | 2. चामरे वीजयामि |
| 3. वाद्यं घोषयामि | 4. नृत्तं दर्शयामि |
| 5. गीतं श्रावयामि | 6. आन्दोलिकां आरोपयामि |

7. अश्वं आरोपयामि

8. गजं आरोपयामि

9. रथं आरोपयामि

समस्त राजोपचारान्-देवोपचारान् समर्पयामि ॥

19.4.11 चतुर्वेद पारायणं

ओं । अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृ॑त्विजं॑ । हो॒तारं॑ रत्न॒ धात॑मं ।

ओं । इ॒षेत्वो॑र्जे॒त्वा वा॒यवः॑ स्थो पा॒यवः॑ स्थ दे॒वो व॑स्सवि॒ता प्रा॑र्पयतु
श्रेष्ठ॑तमाय॒ कर्म॑णे ।

ओं । अ॒ग्न आ॒याहि॑ वी॒तये॑ गृ॒णानो॑ ह॒व्य दा॑तये ।

नि॒होता॑ स॒त्विर् ब॑र्हिषि ।

ओं । श॒न्नो दे॒वीर॑भिष्ट॒य आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑ ।

शँ॒योर॑भि स्रवन्तु नः ॥

19.4.12 आपस्तम्ब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः

अथातो दर्शपूर्णमासौ व्याख्यास्यामः । प्रातरग्निहोत्रं हुत्वा ।

अन्यमावहनीयं प्रणीय । अग्नीनन्वा दधाति ।

न गतश्रियोऽन्यमग्निं प्रणयति । (श्रौत सूत्र वाक्यः)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतां ।

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे । (पुराण वाक्यः)

19.5 नन्दिकेश्वर पूजा

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । अस्यां घण्ठयां नन्दिकेश्वरं ध्यायामि ।

आवाहयामि । स्नानं समर्पयामि ।

(शिवाभिषेक निर्माल्य तीर्थं अभिषिच्या) ।

स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

गन्ध-पुष्प धूप-दीपैः सकलाराधनैः स्वर्चितं ।

ओं भूर्भुवस्सुवः॑ । तत्स॑वितु॒ वरे॑ण्यं ।

भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि । धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दयात्॑ ॥

देव सवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि ।

ओं नन्दिकेश्वराय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहाः । ओं अपानाय स्वाहाः ।

ओं व्यानाय स्वाहाः । ओं उदानाय स्वाहाः ।

ओं समानाय स्वाहाः । ओं ब्रह्मणे स्वाहाः ।

बाण रावण चण्डेश नन्दि भृंगिरिटादयः ,

महादेवप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु शांभवाः ॥

ओं नन्दिकेश्वराय नमः । निर्माल्यदेवताभ्यो नमः ।

शिवनिर्माल्यं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि । आचमनीयं समर्पयामि ।

ई॒शानः॑ सर्व॑विद्या॒ना-मी॒श्वरः॑ सर्व॑भू॒तानां॑ ब्र॒ह्माधि॑पति॒ ब्र॒ह्म॒णोऽधि॑पति॒
ब्र॒ह्मा शि॒वो मे॑ अस्तु सदा॒शिवो॑ ॥ ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

(अनन्तरं श्रीशक्ति पञ्चाक्षरी मन्त्रं जपेत्-(see Chapter 11.6)

हृत्पद्म कर्णिकामध्यं उमया सह शङ्कर ,

प्रविश त्वं महादेव सर्वैरावारणैः सह ।

(इति निर्माल्यं आघ्राय, स्तोत्रादिकं पठेत्)

19.6 क्षमा प्रार्थना

यथक्षर-पदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद् भवेत् ।

तत् सर्वं क्षम्यतां देव नारायण नमोस्स्तुते ।

विसर्ग-बिन्दु-मात्राणि पद-पादाक्षराणि च

न्यूनानि चातिरिक्तानि क्षमस्व पुरुषोत्तम । 1

मन्त्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं महेश्वर ।

यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते । 2

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा, बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि । 3

करचरण कृतं वा कायजं कर्मजं वा, श्रवण नयनजं वा मानसं
वाऽपराधं । विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शंभो ॥ 4

श्री रुद्रं न जानामि , न जानामि चमकं ।
सूक्तानि न जानामि, न जानामि स्तोत्राणि ।
आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनं ।
पूजा विधिं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर ॥ 5
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्य-भावेन रक्ष रक्ष महाप्रभो । 6

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु ।
न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतं । 7

अनया पूजया सपरिवारः श्री साबपरमेश्वरः प्रीयतां ।
ओं तत् सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

20. स्वस्ति वचनं

स्वस्ति मन्त्राः सत्याः सफलाः सन्त्विति भवन्तोऽनुगृह्णन्तु । 1

(तथास्तु)

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्यायेन मार्गेण महीं महिशाः ।

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ 2

(तथास्तु)

अस्य यजमानस्य (अनयोर् दंपत्योः, कुमारस्य कुमर्याश्च,) वेदोक्तं

दीर्घमायुष्यं भूयासुरिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 3 (तथास्तु)

कर्मणि मुहूर्तः सुमुहूर्तोऽस्त्विति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 4

(तथास्तु)

तल्लग्नपेक्षया आदित्यानां नवानां ग्रहाणामानुकूल्यं भूयासुरिति भवन्तो

महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 5 (तथास्तु)

ये ये ग्रहाः शुभस्थानेषु स्थिताः तेषां ग्रहाणां शुभस्थान-फलावाप्ति-

रस्त्विति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 6 (तथास्तु)

अस्य यजमानस्य / अनयोर् दंपत्योः आयुर्बलं यशोवर्चः

पशवःस्तैर्यं सिद्धिर्लक्ष्मीः क्षमाकान्तिः सद्गुणा ऽऽनन्तो नित्योस्सवो

नित्यश्री नित्यमंगळमित्येषां सर्वदा ऽभिवृद्धिदितिर् भवन्तो

महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 7 (तथास्तु)

सर्वे जनाः निरोगाः निरुपद्रवाः सदाचारसंपन्नाः आढ्याः निर्मथ्सराः

दयाळवश्च भूयासुरिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 8 (तथास्तु)

देशोऽयं निरुपद्रवोऽस्तु । 9

(तथास्तु)

सर्वे जनाः सुखिनो भवन्तु । 10

(तथास्तु)

समस्त सन्मंगळानि सन्तु । 11

(तथास्तु)

अनेन पूजाविधेन भगवान् सर्वात्मकः सपरिवारः श्री सांबपरमेश्वर

सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा अस्य यजमानस्य, (एतत् समाजस्थानां,

कर्मप्रवर्तकानां, प्रोत्साहकानां, साहाय्यकारीणां, नानाद्रव्य दातृकाणां,

अखिल-भूमण्डल-निवासानां, साश्रित बन्धुमित्राणां, सर्वेषां

महाजनानां)क्षेम-स्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याणां

अभिवृद्धिप्रदः, सर्वदा धर्मे मतिप्रदश्च सांबपरमेश्वर पादारविन्दयोः

अचञ्चल निष्कपट भक्तिवन्तः भूयादिति भवन्तो

महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 12

(तथास्तु)

अस्मत् गृहे वसतां द्विपदां चतुष्पदां च सर्वेषां निरोग पूर्णायुष्य
सिद्धिप्रदो भूयादिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 13 (तथास्तु)

उत्तरे कर्मणि अविघ्नमस्तु । उत्तरोत्तरा-भिवृद्धिरस्तु ॥ 14 (तथास्तु)

20.1 प्राशनं प्रसाद विनियोगं , दक्षिण स्वीकरणं

20.1.1 शंखतीर्थ प्रोक्षणं

शंखमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि ।

अंगलग्नं मनुष्याणं ब्रह्महत्यायुतं दहेत् ।

20.1.2 अभिषेक- तीर्थप्राशनं

साळग्राम शिलावारि पापहारी शरीरिणां

आजन्मकृत पापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने ॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणं

सर्वपापक्षयकरं शिवपादोदकं शुभं ।

20.1.3 पञ्चगव्य प्राशनं

यत्वक् अस्थिगतं पापं देहं तिष्ठति मामके
प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहतु अग्रिरिव इन्धनं ।

20.1.4 प्रसाद विनियोगं (to yajamaanan)

शत॑मानं॒ भवति॑ शता॒युः॑ पुरु॒षश्शते॑न्द्रि॒य
आयु॑ष्येवेन्द्रि॒ये प्रति॑तिष्ठति । 1

श्रीर् वर्च॑स्व-मायु॑ष्य-मारो॑ग्यमावी॒धा-च्छो॑भा॒मानं॑ मही॒यते॑ ।
धान्यं॑ धनं॑ पशुं॑ बहु॒पुत्र॑ला॒भं शत॑सं॒वत्सरं॑ दी॒र्घमा॒युः॑ ॥ 2

क्षत्र॑स्य राजा वरु॑णोऽधि॒राजः॑ । नक्ष॑त्राणां॒ शत॑भि॒षग् वसि॑ष्ठः ।
तौ दे॒वेभ्यः॑ कृ॒णुतो॑ दी॒र्घमा॒युः॑ । 3

सां॒ग्रह॑ण्येष्ट्या॑ यज॒ते । इ॒मां जन॑तां संगृ॑ह्णानीति॑ ।
द्वा॒द॒शा र॒त्नी र॒शना॑ भवति । द्वा॒द॒श मा॒सा स्सं॑वत्सरः ।
सं॒वत्सर॑ मे॒वा वरु॑न्धे । मौ॒जी भव॑ति । ऊ॒र्वे मुञ्चाः॑ ।
ऊ॒र्ज मे॒वा वरु॑न्धे । चि॒त्रा नक्ष॑त्रं भवति ।
चि॒त्रं वा ए॒तत् कर्म॑ । यद॒श्चमे॑ध स्समृ॑द्ध्यै ॥ 4

य॒श॒स्करं॑ ब॒लव॑न्तं प्र॒भु॒त्वं तमे॑व रा॒जाधि॑पति॒र्बभू॑व ।
सं॒की॒र्ण॑ ना॒गाश्च॑पति॒र्नरा॑णां सु॒मङ्ग॑ल्यं स॒ततं॑ दी॒र्घमा॑युः ॥ 5

20.1.5 दक्षिण स्वीकरणं

हि॒र्णय॑गर्भं ग॒र्भस्थं॑ हे॒म बी॑जं बि॒भाव॑सोः

अ॒नन्त॑ पु॒ण्य फ॑ल॒दम॑तः शा॒न्तिं प्र॑यच्छ॒मे ।

अ॒स्मिन् रु॒द्रैका॑द॒शन्या॑ख्य॒महा॑प्रायश्चित्त॒कर्म॑णि तत्फल॒स्वीकर॑णार्थं

उ॒क्तद॑क्षिणा प्र॒त्याम्ना॑य॒त्वेन॑ इ॒दं हि॑रण्यं पू॒जाज॑प॒कर्तृ॑भ्यो ब्रा॒ह्मणे॑भ्येः
संप्र॑ददे ।

नमः॑ । न म॑म । ओं तथ्स॑त् । ब्र॒ह्मार्प॑णमस्तु ॥

-----शुभं-----

21. Appendix

21.1 शिवाष्टोत्तर-शत-नामावलि:

- | | |
|-------------------------|----------------------------|
| 1. ॐ शिवाय नमः | 2. ॐ महेश्वराय नमः |
| 3. ॐ शम्भवे नमः | 4. ॐ पिनाकिने नमः |
| 5. ॐ शशिशेखराय नमः | 6. ॐ वामदेवाय नमः |
| 7. ॐ विरूपाक्षाय नमः | 8. ॐ कपर्दिने नमः |
| 9. ॐ नीललोहिताय नमः | 10. ॐ शङ्कराय नमः |
| 11. ॐ शूलपाणये नमः | 12. ॐ खट्वाङ्गिने नमः |
| 13. ॐ विष्णुवल्लभाय नमः | 14. ॐ शिपिविष्टाय नमः |
| 15. ॐ अम्बिकानाथाय नमः | 16. ॐ श्रीकण्ठाय नमः |
| 17. ॐ भक्तवत्सलाय नमः | 18. ॐ भवाय नमः |
| 19. ॐ शर्वाय नमः | 20. ॐ त्रिलोकेशाय नमः |
| 21. ॐ शितिकण्ठाय नमः | 22. ॐ शिवप्रियाय नमः |
| 23. ॐ उग्राय नमः | 24. ॐ कपालिने नमः |
| 25. ॐ कामारये नमः | 26. ॐ अन्धकासुर सूदनाय नमः |
| 27. ॐ गङ्गाधराय नमः | 28. ॐ ललाटाक्षाय नमः |
| 29. ॐ कालकालाय नमः | 30. ॐ कृपानिधये नमः |

- | | |
|---------------------------------|--------------------------------|
| 31. ॐ भीमाय नमः | 32. ॐ परशुहस्ताय नमः |
| 33. ॐ मृगपाणये नमः | 34. ॐ जटाधराय नमः |
| 35. ॐ कैलासवासिने नमः | 36. ॐ कवचिने नमः |
| 37. ॐ कठोराय नमः | 38. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः |
| 39. ॐ वृषाङ्गाय नमः | 40. ॐ वृषभारूढाय नमः |
| 41. ॐ भस्मोद्धूलित विग्रहाय नमः | 42. ॐ सामप्रियाय नमः |
| 43. ॐ स्वरमयाय नमः | 44. ॐ त्रयीमूर्तये नमः |
| 45. ॐ अनीश्वराय नमः | 46. ॐ सर्वज्ञाय नमः |
| 47. ॐ परमात्मने नमः | 48. ॐ सोमसूर्याग्नि लोचनाय नमः |
| 49. ॐ हविषे नमः | 50. ॐ यज्ञमयाय नमः |
| 51. ॐ सोमाय नमः | 52. ॐ पञ्चवक्त्राय नमः |
| 53. ॐ सदाशिवाय नमः | 54. ॐ विश्वेश्वराय नमः |
| 55. ॐ वीरभद्राय नमः | 56. ॐ गणनाथाय नमः |
| 57. ॐ प्रजापतये नमः | 58. ॐ हिरण्यरेतसे नमः |
| 59. ॐ दुर्धर्षाय नमः | 60. ॐ गिरीशाय नमः |
| 61. ॐ गिरिशाय नमः | 62. ॐ अनघाय नमः |
| 63. ॐ भुजङ्ग भूषणाय नमः | 64. ॐ भर्गाय नमः |
| 65. ॐ गिरिधन्वने नमः | 66. ॐ गिरिप्रियाय नमः |

- | | |
|--------------------------|-------------------------|
| 67. ॐ कृत्तिवाससे नमः | 68. ॐ पुरारातये नमः |
| 69. ॐ भगवते नमः | 70. ॐ प्रमथाधिपाय नमः |
| 71. ॐ मृत्युञ्जयाय नमः | 72. ॐ सूक्ष्मतनवे नमः |
| 73. ॐ जगद्व्यापिने नमः | 74. ॐ जगद् गुरवे नमः |
| 75. ॐ व्योमकेशाय नमः | 76. ॐ महासेन जनकाय नमः |
| 77. ॐ चारुविक्रमाय नमः | 78. ॐ रुद्राय नमः |
| 79. ॐ भूतपतये नमः | 80. ॐ स्थाणवे नमः |
| 81. ॐ अहये बुध्न्याय नमः | 82. ॐ दिगम्बराय नमः |
| 83. ॐ अष्टमूर्तये नमः | 84. ॐ अनेकात्मने नमः |
| 85. ॐ सात्विकाय नमः | 86. ॐ शुद्धविग्रहाय नमः |
| 87. ॐ शाश्वताय नमः | 88. ॐ खण्डपरशवे नमः |
| 89. ॐ अजाय नमः | 90. ॐ पाशविमोचकाय नमः |
| 91. ॐ मृडाय नमः | 92. ॐ पशुपतये नमः |
| 93. ॐ देवाय नमः | 94. ॐ महादेवाय नमः |
| 95. ॐ अव्ययाय नमः | 96. ॐ हरये नमः |
| 97. ॐ भगनेत्रभिदे नमः | 98. ॐ अव्यक्ताय नमः |
| 99. ॐ दक्षाध्वरहराय नमः | 100. ॐ हराय नमः |
| 101. ॐ पूषदन्तभिदे नमः | 102. ॐ अव्यग्राय नमः |

103. ॐ सहस्राक्षाय नमः

104. ॐ सहस्रपदे नमः

105. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः

106. ॐ अनन्ताय नमः

107. ॐ तारकाय नमः

108. ॐ परमेश्वराय नमः ॥

यस्त्रिसन्ध्यं पठेन्नित्यं नाम नामोष्टोत्तरं शतं ।

शतरुद्रत्रिरावृत्या यत् फलं लभते नरः ।

तत फलं प्राप्नुयान्नित्यं एकावृत्या न संशयः ।

सकृद्वा नामाभिः पूज्य कुलकोटिं समुद्धरेत् ॥

बिल्वपत्रैः प्रशस्तैश्च पुष्पैश्च तुळसीदलैः ।

तिलाक्षतै र्यजेद्यस्तु जीवमुक्तो न संशयः ॥ (स्कान्द पुराणं)
